वैद्य-प्रिया

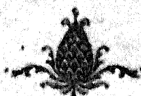
(अपूर्व वैद्यक-ग्रंथ)



लेखक,

पं० श्रीखेतसिंहजी के प्रधान शिष्य

लाला जवाहिरसिंह श्रीवास्तव.



संशोधित संस्करण.

बाबू चंद्रिकाप्रसाद गुप्त.

वैद्य-प्रिया

प्रणेता

पं० श्रीखेतसिंहजी के शिष्य

लाला जवाहिरसिंह श्रीवास्तव

जिसमें

दूत-परीक्षा, शकुन-अशकुन-परीक्षा, रोगी, के साध्य-असाध्य-लक्षण, मूत्र-परीक्षा, नाड़ी-परीक्षा, ज्वर-अवस्था, जल-विचार, वमन, क्षार, सब प्रकार के ज्वरों की चिकित्सा, तेरहों रस, संग्रहणी, विसूचिका, क्षयी, उन्माद, रक्त-कुष्ठ, प्रसूति-रोग, मूत्ररोध तथा विविध रोगों पर अनेक सुप्रसिद्ध और परम लाभकारी पाकों, अवलेहों, क्वाथों और रसों आदि का वर्णन है।

नवीन संशोधित संस्करण

लखनऊ

केसरीदास सेठ, सुपरिंटेंडेंट द्वारा

नवलकिशोर-प्रेस में मुद्रित और प्रकाशित

सन् १९२४ ई०

पाँचवीं बार]

निवेदन



"वैद्य-प्रिया" हिंदी-भाषा का, वैद्यक-विषयक, काव्य-ग्रंथ है। जिसप्रकार महाकवि केशवदासजी ने काव्य-विषयक "कवि-प्रिया" ग्रंथ लिखा है, उसी ढंग पर वैद्यों, वैद्यक-शास्त्र के विद्यार्थियों, एवं वैद्य-विद्या से प्रेम रखनेवालों के लिये ग्रंथकर्त्ता ने, विविध प्रकार के छन्दों में, इस 'वैद्य-प्रिया' ग्रंथ की रचना की है। वैद्य-प्रिया काव्य मानों वैद्यक-शास्त्र की एक नायिका है, जो सोलह प्रकरण-रूप सोलह शृंगारों से सुशोभित है। वैद्यक-विद्या का ग्रंथ होते हुए भी इसकी कविता ऐसी सरल और मधुर है कि पढ़ने में मन लगता है और तत्काल याद हो जाती है। प्रत्येक शृंगार में विषयों का चुनाव इस ढंग से किया गया है, और ऐसे अनुभूत प्रयोगों, ऐसे चुटीले नुसख़ों का संग्रह किया गया है कि इस एक ही ग्रंथ को कंठ करके मनुष्य अच्छा वैद्य बन सकता है। क्योंकि छोटा होने पर ग्रंथ सांगोपांग है।

इस ग्रंथ के लिखने का कारण और ग्रंथ की सामग्री के विषय में ग्रंथकर्त्ता ने लिखा है--

गीतिका-छंद

एक दिवस इच्छा भई मन में पुर करहिया को गए;
जहँ राज्य करत पँवार क्षत्रिय नीतिमय देखत भए।

गुणवंत बसत अनेक ता पुर देखिकै शोभा भली ;
कछु दिवस बिरमे जाइके अब सुनहु जो रचना चली ।

दोहा

हरीसिंह कायथ तहाँ, बसतबुद्धि-गुण-खानि;
बढ़ी प्रीतितिनसों अधिक, द्वितियभावबिलगान।
ग्रंथ-चारि छह देखि हम, करत रहत उपचार ;
हरीसिंह हमसों कह्यो, यक दिन यहै विचार ।
रचहु ग्रंथ यह सबनि को, वैद्य-प्रिया धरि नाम ;
परमारथ के हेतु यह, दुःखहरण सुख-धाम।
तब गुरुको सुमिरनकियो, मन में बारंबार ;
वैद्य-प्रिया सुंदरि सुमुखि, सोलह रचे शृँगार ।

ग्रंथ रचने का यह हेतु बताकर ग्रंथकर्त्ता ने उन ग्रंथों को भी बतला दिया है, जिनको देखकर आपने इस ग्रंथ को रचा है। आप कहते हैं—

रच्यो ग्रंथ छह ग्रंथ को, यह ओषधि यक दाम;
जिते ग्रंथ या महँ कहे, ते बरनौ अभिराम।
वैद्यरतन[1], अरु नयनसुख[2], वैद्यमनोहर[3] जानि ;
रामविनोद[4] सुकोक[5] पुनि, भिषजप्रिया[6] सुख दानि।

इनके अतिरिक्त ग्रंथकर्त्ता ने जहाँ-जहाँ से सहायता ली, उसका भी उन्हों ने उल्लेख कर दियाहै। यथा—

सार ओषधी लखि परी, ते या महँ कहि दीन ;
समुझि ग्रंथ ओषधि करौ, जो कोउ वैद्य प्रवीन।
अपर कविन के छंद कछु, अरु कछु छंद नवीन ;
क्षमा करहु अपराध कछु, जानि मोहिं अतिदीन ।

ग्रंथ-परिचय और ग्रंथ-रचना का हेतु एवं उसका उपादान मालूम करने के पश्चात् ग्रंथ रचने का समय और ग्रंथकर्त्ता का परिचय पाने की इच्छा स्वभावतः ही होगी। सो उसके विषय में जो कुछ मालूम हो सका लिखा जाता है।

ग्रंथकर्त्ता श्रीवास्तव कायस्थ थे और आप का नाम जवाहिरसिंह था। आप विंध्याचल-पर्वत के निकटवर्ती गिजौरा ग्राम के प्रजावत्सल नीति-धर्म-निपुण राजा मानसिंह के दीवान् थे। गिजौरा की प्रशंसा में ग्रंथकर्त्ता का कहना है कि वह एक बहुत उत्तम स्थान है। उसमें विविध प्रकार की बस्ती है और चारों वर्ण के मनुष्य रहते हैं जो एक से एक नीतिज्ञ, धर्मिष्ठ, ज्ञानी, गुणी और विद्वान् हैं। वहाँ अनौटा नाम का एक परम पुनीत तीर्थ है, जिसमें देवादिदेव श्री-महादेव-पार्वती का मंदिर है और उसके चारों ओर सिंह-व्याघ्रादि से पूर्ण विशाल सघन वन है जिसमें अनेक साधु महात्मा और सिद्धजन वास करते हैं। वहाँ अनेक यात्री दर्शन करने आते हैं और दर्शन करके अपने पाप दूर करते हैं। इन बातों को ग्रंथकर्ता के शब्दों में पढ़िये—

अब बरनों अस्थान निज, नाम गिजौरा जान ;
विंध्याचल-गिरिनिकटही, सो अब करहुँ बखान।
चारिवर्ण तहँ बसत हैं, बस्ती विविध प्रकार ;
नीति धर्म गुण ज्ञान तहँ, विद्या को अधिकार।
तीरथ परम पुनीत तहँ, नाम अनौरा जास ;
शिव-गिरिजा शोभित तहाँ, वन भारी चहुँ पास।
सिंह बाघ वन-जीव बहु, सिद्ध रहे बिरमाय ;
दर्शन ते अघ जात टरि, शोभा कही न जाय।
मानसिंह नृप राव तहँ, नीति धर्म अवतार ;

प्रजा पुत्र-सम पालहीं, सब विधि सुख-दातार।
नाम जवाहिरसिंह कहि, तिन नृप के दीवान ;
कायथ पुनि श्रीवास लखि, इष्ट धर्म ईमान।
श्रीगुरु-चरण-प्रताप ते, श्रीदुर्गा उर धारि ;
रचौं ग्रंथ यह वैद्य-प्रिय, रोगी की सुखकारि।

ग्रंथकर्ता अपने गुरुदेव के बड़े भक्त थे। वे इस ग्रंथ की रचन
अपने गुरुदेव की कृपा का ही प्रसाद समझते थे। यहाँ तक कि
ने ग्रंथ के अध्यायों की समाप्ति की इतिश्री में अपने गुरुदेव व
नाम रक्खा था, मानों इस ग्रंथ की रचना का श्रेय वे अपने गुरुदे
को देना चाहते थे। उनके गुरुदेव का नाम पंडितराज श्रीखेत
जी था। अपने गुरुदेव के स्थान-वर्णन में उन्होंने लिखा है—

नाराच छंद

शोभिजै दिलीप नग्र चारि वर्ण धर्म हैं ;
बसैं तहाँ अनेक विप्र वेद उक्ति कर्म हैं।
भाँति-भाँति के तहाँ अनेक सुक्ख देखिये ;
लहै न दुःख रंक हू सो राजनीति पेखिये।

दोहा

राजा पारीक्षित तहाँ, राजत राज नरे
नीति-धर्म-मय देखिये, जिमि गुण लखहु सुरे
तेहि पुर में सो बसत हैं, सो कहि पंडितरा
खेतसिंह जू नाम है, शुभगुण ज्ञान-समा
करी दया बहु भाँति तिन, दियो शिष्य-पद म
तिनकी कृपा सुदृष्टि ते, पातक डारे ख

और—

श्रीगुरु परम दयाल, ज्यहि की कृपा सुदृष्टि ते ;
रच्यो ग्रंथ कर माल, गुरु सुमेरु या महँ कहे ।

श्रीजवाहिर सिंह जी गुरुभक्त होने के साथही निरभिमान और अंतःकरण के बड़े सरल प्रतीत होते हैं, क्योंकि ग्रंथ की समाप्ति में आपने बड़ी नम्रता से अपनी भूलों के लिये क्षमा मांगी है। आप लिखते हैं—

गुरु की कृपा-कटाक्ष ते, कह्यो ग्रंथ गुण धाम ;
तिन श्रीगुरु के चरण को, बारंबार प्रणाम ।
चूक क्षमा करि आदरहिं, ग्रंथ सकल अभिराम ;
बुधजन जे वर वैद्य पुनि, तिनको दंड-प्रणाम ।
कछू न चातुरता कही, बुधि कछु नाहीं जोर ;
ग्रंथन ते औषधि कही, कहा अधिकता मोर ।
ताते मो बिनती सुनो, भूल चूक सब कोय ;
मनसा वाचा कर्मणा, सेवक जानो मोय ।
पर-निंदा पर-ईरषा, पर-दुख सदा सुहाय ;
तिनको बहु बिनती करौं, दोष सो हृदय लगाय ।
देव कोटि तेंतीस पुनि, तिन सब रचे सुपंथ ;
तिनको उर धरि ध्यान राचि, वैद्य-प्रिया यह ग्रंथ ।

ग्रंथ रचने का काल भी समाप्ति में दिया हुआ है जिससे विदित हुआ कि मिती मार्गशीर्ष शुक्ल ५, शनिवार, संवत् १८७२ को यह ग्रंथ पूरा हुआ। इस समय संवत् १९८० है, अतः कहना चाहिये कि यह ग्रंथ १०८ वर्ष का पुराना है। समाप्ति के दोहे ये हैं—

संवत शत अष्टादशहि, अधिक बहत्तरि जानि ;
मार्ग शुक्ल पाँचै जु शनि, तिहि दिन ग्रंथ बखानि ।

पूरण कीनो ग्रंथ यह, रोगी को सुखदा
याहि समुझिकै वैद्यवर, औषधि करियो ता

इस ग्रंथ की पांडु-लिपि इस यंत्रालय को लखनऊ-निवासी रामदयाल साहब कंपौंडर द्वारा प्राप्त हुई और सौ वर्ष पहले ग्रंथों का जो ढंग था, उसी शैली से यह ग्रंथ छापा गया। परं पुस्तक की उपादेयता और उपयोगिता का यह ज्वलंत प्रमाण उस रूप में भी इसकी चार आवृत्तियाँ निकल गईं। अब नवलकि यंत्रालय के उत्साही अध्यक्ष श्रीमान् मुंशी विष्णुनारायणजी की इच्छा है कि यंत्रालय के समस्त पुराने ग्रंथों का जीर्णोद्धार किय और उन्हें आजकल की शैली से नए रूप-रंग में प्रकाशित किया अत एव अध्यक्ष की इच्छानुसार बुकडिपो के मैनेजर श्रीमान् हरीरामभार्गव की आज्ञानुसार यह उपादेय ग्रंथ इस रूप में कर गया है। आशा है, इसका यह नवीन कलेवर पाठकों को पसंद आवेगा।

नवलकिशोर-प्रेस, (बुकडिपो)
हज़रतगंज, लखनऊ
ता० २१ जुलाई सन् १९२४
} चंद्रिकाप्रसादगुप्त

ॐ नमः शिवाय

वैद्य-प्रिया

की

शृंगार-क्रम से विषयानुक्रमणिका

विषय.	पृष्ठ.

दूसरा शृंगार

तीसरा शृंगार

चौथा शृंगार

नवाँ शृंगार

दशवाँ शृंगार

ग्यारहवाँ शृंगार

बारहवाँ शृंगार

चौदहवाँ शृंगार

(धातुक्रिया-विधि)

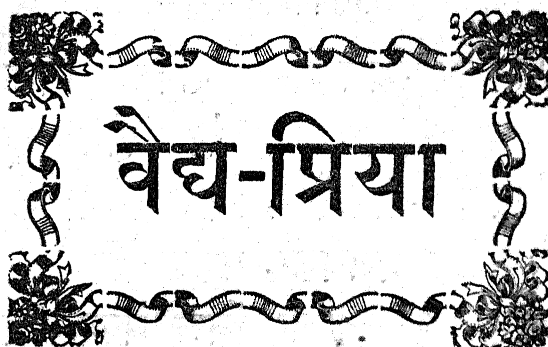
उपधातु-वर्णन

पंद्रहवाँ शृंगार

पाकविधि

वैद्य-प्रिया की विषयानुक्रमणिका समाप्त।

श्रीगणेशाय नमः



पहला श्रृंगार

मंगलाचरण, दूत-परीक्षा, शकुन-अशकुन-परीक्षा, रोगी के साध्य-असाध्य-लक्षण, मूत्र-परीक्षा, नाड़ी-परीक्षा, ज्वर-अवस्था, जल-विचार, वमन, क्षार, सब प्रकार के ज्वरों की उत्पत्ति, वृद्धि, लक्षण और चिकित्सा

श्रीगणेश-शारदा-वंदना—दोहा

श्रीगिरिजा-सुत गुण-सदन, गणपति बुद्धि गँभीर।
तुम दर्शन अघ बहु डरै, आनँद होत शरीर॥
बंदहुँ शारद-मातु-पद, जो शुभ मति दातार।
सादर सुमिरन करत ही, बाढ़ै बुद्धि अपार॥

श्रीविष्णु-लक्ष्मी-वंदना—सोरठा

विष्णु सकल-गुण-ईश, कमल-नयन घनश्याम प्रभु।
दुख टारन जगदीश, सुर महिसुर भुवि भक्त के॥

दोहा

श्रीलक्ष्मी कमला रमा, सिंधु-सुता के चरन।
बंदहुँ सुख-दायक सदा, सकल सिद्धि सुख-करन॥

श्रीशिव-गिरिजा-स्तुति

करि प्रणाम उर ध्यान धरि, शंकर दीनदयाल।
तिनकी कृपा-कटाक्ष ते, रंक होय भूपाल॥
आदि शक्ति श्रीपार्वती, त्रिभुवन-व्यापक शक्ति।
उत्पति पालन प्रलयकर, सकल देव करि भक्ति॥
गुण-दायक संकट-हरण, निज सेवक-सुखदानि।
सहस शेष अरु शारदा, सकहि न गुणन बखानि॥
श्रीदुर्गा जग-मातु अब, कृपा करहु जन जानि।
'वैद्य-प्रिया' यह ग्रंथ है, ताहि कहहुँ सुख मानि॥

दूतमुख-परीक्षा

वैद्य आप बैठो भवन, आवै टेरन दूत।
अक्षर ता मुख-वचन के, करै जोरि कै कूत॥
लै अक्षर निज नाम के, सबको करै समान।
हरै तीनि के भाग सों, शेष बचै अनुमान॥
एक बचै तो रोगिया, नीको होय तुरंत।
दोय बचैं तो साध्य है, कष्ट होय बलवंत॥
शून्य बचै जीवै नहीं, यत्न करो कोइ लाख।
रहै वैद्य घर बैठिकै, दूत-परीक्षा भाख॥
उठै प्रश्न मनभावती, तौ सँग जइए ताहि।
चलतहोइअशकुनशकुन, ते समुझैचितमाँहि॥

शकुन-परीक्षा—कबित्त

विप्रवर तिलक दिए, नारी शिर कुंभ लिए, कन्या पुनि वर्ष आठ लौं की अनुमानिए। कमलन की माल आँखैं सहित शिशु बाल मिलै, मीन दधि और गान गणिका बखानिए॥ चंदन अरु अक्षत फल फूल शंख भेरि नाद, देव-सिंहासन द्विज वेदध्वनि ठानिए। रूपो अरु तामो नृप शीश चौंर वृषभ बाजि सम्मुख ये मिलैं वैद्य शकुन शुभ जानिए॥

अशकुन-परीक्षा—कुँडलिया

ऐसे मिलहिं कुयोग ते महिष ऊँट खर जाहि।
तेली सर्प जु हीन-कुल अंधा व्याकुल आहि॥
अंधा व्याकुल आहि हाड़ अरु रोग चर्मकर।
रक्त बसन अरु श्याम घोर कर में मूशल धर॥
त्रिया फिकारेहि मुंड श्वान कहुँ रोवहिं जैसे।
जियै न रोगी सोइ जाहि कहुँ मिलत जु ऐसे॥

सोरठा

ऐसो अशकुन देखि, आगे पाउँ न दीजिए।
जाइ तो अपयश लेखि, रोगी जियै न कोटि विधि॥

दोहा

शकुन प्रश्न नीकी मिले, जाइ वैद्य गृह तास।
तब रोगी के लक्षणनि, देखै दृष्टि प्रकास॥

रोगी के साध्य लक्षण—अरिल्ल

जिह्वा कोमल सरल दृष्टि शुभ देखही ।
सुनै कर्ण रुचि नाद तस कर लेखही ॥
नासा कर पद तस दंत उज्ज्वल सही ॥
रोगी मरे न सोय ग्रंथ भाषो यही ॥
सरल श्वास कफ-हीन तृषा यश ही नहीं ।
सुख निद्रा पुनि स्वाद गंध-गुण चीनहीं ॥
इंद्रिय सब चैतन्य वदन प्रफुलित जिन्हें ।
लहै वैद्य यश जहाँ करै औषधि तिन्हें ॥

रोगी के असाध्य लक्षण

वर्ण-हीन तन कँपै मूत्र नाहिं साधि सकै ।
जिह्वा कठिन जु श्याम भूलि बातें बकै ॥
नासा कर पद शीत दंत पुनि श्यामही ।
रोगी जीवै नहीं जाइ यम-धाम ही ॥
निशा दाह, दिन शीत, कंठ कफ आवही ।
गुदा भ्रष्ट पुनि श्वास कास उपजावही ॥
व्याकुल हिचकी घनी शोथ तन बासही ।
रोगी जियै न गेह करै यम-वास ही ॥

मूत्र-परीक्षा—चौपाई

अंत निशा लखि घटिका चारि ; नीकी भाँति लेय निरधारि
मूत्र-परीक्षा-लक्षण देखि ; वैद्य औषधी करो विशेखि

काँसे का बेला मँगवावहि ; ता महँ रोगी मूत्र करावहि
तिलको तेल मँगाकरि लेय ; किंचित तेल मूत्र महँ देय
पसरहि तेल मूत्र महँ जाय ; जानहु साध्य कोपबहुवाय
बहुतै बुंद तेल की जानो ; तापै पित्त-कोप पहिचानो
सलिल रंग अश्लेषम देखो ; बूड़ै बुंद काल-वश पेखो
किनका जिते तेल के होंय ; रोगी मरै गए दिन सोय
फटै तेल तौ गरमी शीत ; मिलै निखालिस गरमी मीत
पीत वर्ण पित्तज्वर जाय ; जलपटोल कफ कोप दृढ़ाय
श्यामस्निग्ध वात अधिकार ; कृष्ण वर्ण तो काल प्रचार
अजयामूत्र समान दिखाइ ; ज्वरअजीर्ण तेहिजानहु भाइ
मलसम जीर्णतापकोजानो; श्यामदेखिसनिपातबखानो
रक्त-वर्ण त्रय दोष जनाइ ; जानहु मूत्र-परीक्षा भाइ

नाड़ी-परीक्षा—भुजंगप्रयात

लगाए तनं तेल न्हावे शरीरं ।
क्षुधावंत सोयो तृषावंत नीरं ॥
त्रिया-संग रतिकै चलो पंथ आवै ।
किधौं रोष कै क्रोध जी माहँ छावै ॥
किधौं जोरकै हाथ ऊँचो उठायो ।
किधौं साँझकै प्रात नाहिं भेद पायो ॥
गहै जासु नारी नहीं भेद आवै ।

करै बैदकी रोग योगै न पावै ॥
गहै हाथ नाड़ी पुरुष-अंग दायें ।
यही भाँति निरखै त्रिया-अंग बायें ॥
धरै अंगुली तिनि अँगुठान मूलं ।
लखो पित्त कफ वात के रोग शूलं ॥
कहो मध्य कफ पित्त आदै बखानो ।
बली हो सुतप्पै महातेज जानो ॥
गहो फेरि नागे यथा चाल जाकी ।
लखो रोग ज्ञानी व्यथा अंग ताकी ॥
चलै पित्त की मेडुकी काग-चालं ।
कफै जान केकी कपोतं मरालं ॥
बहै वायु की जोंक अहि वात जातं ।
बटेरी लवा तीतुरं सन्निपातं ॥
कहूँ मेडुकी यों कहूँ सर्प भांतं ।
गनो वैद्य तौ दोष दो पित्त वातं ॥
कहूँ सर्प-जैसी कहूँ हंस चाली ।
लखै नाड़िका दोष कफ वात घाली ॥
चलै हंस मानो रुरै मीन जैसे ।
बधै नाड़िका दोष कफ पित्त ऐसे ॥
थिरा तप्तदमनी बड़ी आयु जानो ।

क्षुधा चंचला उष्ण रक्तै बखानो ॥
तजै थान नाड़ी चढ़ी चक्र डोलै ।
चलै मोर की चाल भ्यानंक बोलै ॥
भरे होय सूक्षम परै जानि नाहीं ।
जियै को कहै कालके मुक्ख माहीं ॥
कहूँ पित्त के गेह बोलंत नारी ।
कहूँ वात घर जाय संकष्ट भारी ॥
कहूँ जाय कफ-मंदिरनि बीच सोहै ।
कहौ रोगिया को जिवावंत को है ॥
कहूँ तरफरा नाडिका जोर चालै ।
थकै केरि जैसे तगातूल हालै ॥
रहै बार-बारं चलै बार-बारं ।
लिए रोगिये काल चाहै युधारं ॥
गनो पित्त कफ सन्निमल धातुपंगं ।
चलै जाय जो मेघ मारुत प्रसंगं ॥
बड़े नाड़िका-भेद बिस्तार भारी ।
सुने मैं जिते ते कहे ग्रंथ धारी ॥

दोहा

लक्षण सबै बिचारि कै, अरु नाड़ी-गति देखि ।
चतुर वैद्य औषधि करै, जबै ग्रंथ महँ पेखि ॥

रोगी के सब रोग को, समुझै ग्रंथ मँझार ।
पहले कीजै तासु के, संयम को निरधार ॥
पहले ज्वर के रोगिये, लंघन कहो प्रधान ।
ये अनुचित जाको कहे, ताको करों बखान ॥

ज्वर में लंघन वर्जनीय—चौबोला

बालक बूढ़ो क्षुधित वातज्वर क्षयज्वर वारो ।
गर्भिणि नारी निरखि देह निर्बल दुख भारो ॥
ऊर्ध्व वात जिहि होय सभय अंतर लखि लीजै ।
लंघन ऐसे निरखि भूलिकै करन न दीजै ॥

ज्वर-अवस्था-मर्याद

सात राति लौं तरुण जानि ज्वर बारह मध्य बखानो ।
बारह ते निशि अधिक होय तब जीर्णज्वर पहिचानो ॥
सात राति में पकै वायुज्वर पित्त राति दश जानो ।
द्वादश में कफ पकै ग्रंथ मत समुझो रुचिर बखानो ॥

जल-विचार—कुंडलिया

पानी बिन सूखै कमल उर में उपजै दाह ।
नयनज्योति पुनि नाशही घटै अंग ते आह ॥
घटै अंग ते आह मोह व्याकुलता छावै ।
बढ़त मोह के तबै देह ते प्राण छुटावै ॥
ऐसी शिक्षा दई बड़े पंडित जे ज्ञानी ।
जनि हटकहु वर वैद्य रोगिये पीवत पानी ॥

शीतल जल-विचार—चामर छंद

रक्त दाह पित्त के शरीर गर्भ छावही।
कि दाह देह मूरछा सुपित्त त्रास पावही॥
श्रमंत पंथ आतपं पियो हलाहलं जिन्हैं।
पिवाउ नीर शीतलं अधार होइ तो तिन्हैं॥

गुनगुन जल-विचार—छप्पय

उदर रोग अधिकार अरुचि मंदागिनि भारी।
मुख भिरिबो पीनास अंग मंडल अधिकारी॥
नयन-व्याधि ज्वर शोथ जाय ज्वर फिर फिर आवै।
फोड़ा अरु मदमेद कंठ जाके कछु छावै॥
ऐसे सुजान लक्षण निरखि हृदय शोधि सब लीजिए।
भाषो सुग्रंथ ऐसे नरनि नीर गुनगुनो दीजिये॥

खरभरात जल-विचार

ज्वर नवीन पीनास अरुचि अतिवात व्यथा अति।
और पसुरियानि पीर गुल्म पुनि कास श्वास रति॥
रोग खरे गृह जाइ रोग कफ को अधिकारी।
आधमान परसंग अंग पुनि भंग निहारी॥
पीवे सनेह पानी अधिक ये लक्षण लखि लीजिए।
दुख रोग हरनि ऐसे नरनि नीर खरभरो दीजिए॥

उष्णजल-विचार

औटै जल निरवेग विमल बिन फेनहि लहिए।

आधो बाकी रहै उष्ण जल ताको कहिए ॥
कास श्वास कफ मेद वात पुनि आनि मिटावहि।
जठर अग्नि अति करहि उष्ण ऐसे गुण ल्यावहि॥
चरणहीन जल वातहर आधो पित्त विनाशही।
कफ हरत अंश चौथे रहत सुदीपन वचनप्रकाश ही ॥

दोहा

सन्निपात पुनि युग्म ज्वर, रहत रोग के मूल।
देहि वैद्यवर रोगिये, उष्ण नीर अनुकूल ॥
जाके होइ त्रिदोष-बल, उष्ण नीर दे ताहि।
दिन को दिन भरि दीजिये, राति राति को प्याहि॥
दिनकोनिशनिशकोदिवस, जल ताता करि लेइ।
भारी होय विकार जो, या विधि करि नहिं देइ॥
वमन विरेचन जब कहो, वर्षा शरद वसंत।
जो वर वैद्य कहावहीं, नरसुख लहै न अंत ॥

वमन-वर्जनीक

तिमिर गुल्म उररोग पुनि, निर्बल बूढ़ो होय।
गर्भिणि त्रिय व्रण बालतन, रूखो जानै सोय ॥
हृदयधड़कअरुक्षुधितअति, व्याधी व्याकुलमान।
उदावर्त आतुरहि नहिं, वमन न कहौ सुजान॥

वमन-करावन—पद्धरी छंद

भ्रम कास श्वास अतिशय प्रमेह।

पीनास मेद ज्वर जोर देह ॥
मंदाग्नि और कफ वृद्धि देखि ।
पुनि अपसमार बहु वायु लेखि ॥
विष दोष शलीपद दाद अंग ।
जिनि जान अतीसर बल प्रसंग ॥
अरु नाक पकै बहु कान पीर ।
गलशोथ जुड़ाई अति अधीर ॥
उनमत्त पित्त रक्तादि जोर ।
विस्फोटक जीरन पीर घोर ॥
ऐसे शरीर लखि रोग जाय ।
करवाउ वमन सुख होइ ताय ॥

वमन-उपचार—दोहा

परवर अरु सौ नींब के, पातनि को करि क्वाथ ।
पियत पित्त के दोष सब, जाइँ वमन के साथ ॥

पुनः

दूध साथ दै मैनहर, ताको देय खवाय ।
शोधो ताते नीर सों, ताको देय पियाय ॥

पुनः

अरँडपात तरु आगरे, डारत दोष बिलाय ।
खाय औषधी वमन की, ऊँचे बैठे जाय ॥

वमन में वर्जनीय

अति भोजन अति जलपियन, अति तातो नहिं खाय।
तेल न ल्यावै एकदिन, जो नर वमन कराय॥

विरेचन-विधि—दोहा

कह्यो क्षार ज्वर अंत में, जे बुध चतुर सुजान।
देन कहौं जिन रोग पै, ते अब सुनहुँ सुजान॥
हृदय-रोग कृमि शोथ शिर, कान नाक मुख जानि।
गुल्म प्रमेह विसूचिका, रक्तवात पहिचानि॥
शूल कोढ़ भग-लिंग-व्रण, छर्दि गुदा के रोग।
अरस भगंदर ज्वर पिलह, पांडु अजीरण योग॥
मूत्रकृच्छ्र विद्रधि कठिन, धातु-भंग दुख देह।
इन रोगनि को दीजिये, कहौं क्षार सुख ग्रेह॥

अभिमत क्षार—चौपदी

मिर्च पीपरै सोंठिजु हेरो। हर्र आँवरो और बहेरो
ले इलायची वायुबिडंग। अरु मोथा के करौ प्रसंग
अरु पत्रज लै इन मधि डारि। टंक टंक लै सब निरधारि
लेइ टंक चालीस निसोत। अरुदश टंक लौंगको गोत
औषध चूरण यहै बनावै। असीटंक मिश्रीजु मिलावै
सोरह माशे चूरण खाय। शीरो जल बहुबार पिवाय
यहअतिसुंदरअभिमतक्षार। निकरै खात रोग निरधार

मोदक झार—पद्धरी छंद

लै हर्र मिर्च अरु सोंठि संग ।
अथंक पीपरि लीजै बिडंग ॥
तजपत्रज अरु आँवरे आनि ।
सम सकल पीसि सो वस्त्र छानि ॥
दात्यूणि लेइ तिगुनी मँगाय ।
अठगुण निसोत तामें मिलाय ॥
छहगुणी और मिश्री नवीन ।
मधु संग कर्षभरि गोटकीन ॥
उठि खाय प्रात गोली सुजान ।
ठंढो सनेह जल करि सु पान ॥
पीवंत नीर यों शीत सोइ ।
त्यों झरहि उदर मल वेगि होइ ॥
पीवंत जबहिं सो तप्त नीर ।
मल तुरत बँधे होइ सुख शरीर ॥
मंदाग्नि विषमज्वर पांडुरोग ।
नाशहि प्रमेह उर-दाह योग ॥
दृग-रोग क्षयी कफ कास श्वास ।
गलगंड भगंदर कर विनास ॥
भ्रम मूत्रकृच्छ्र पथरी हरेह ।

पुनि अरस कोढ़ तजि जात देह ॥
गुल्म पिलह अधमान अंग ।
सब पीठि पशूलिनि पीर भंग ॥
मोदक हमेश नर खाइ जोय ।
बूढ़ो सुवेगि नहिं होइ सोय ॥

इच्छाभेदी झार—कुँडलिया

पारो मिर्च सुहाग अरु चित्रक गंधक लेय ।
अजयपाल ढिग पहर यक सुंदर खरल करेय ॥
सुंदर खरल करेय संग अद्रक रस दीजै ।
दो घुँघुची भरि बरी बाँधिकै नीके लीजै ॥
सीरे जलसँग खाइ प्रबल मल तुरत बिडारो ।
सकल रोग दुख हरै करै सुखसागर पारो ॥

दोहा

झार लगै शीतल सलिल, ताते ते बँधि जाय ।
बंद करै मल रोगियै, दीजै पथ्य खवाय ॥
नातर उर गर्मी करै, होइ अधिक उर दाह ।
लंघन करन न दीजिए, कह्यो ग्रंथ निर्वाह ॥

नाराच झार—कुँडलिया

गंधक त्रिकुट सुहाग लै शोधि धरै जयपाल ।
पारो संग मिलाय कै खरल पहर भरि डाल ॥
खरल पहर भरि डाल संग घृत मिश्री डारो ।

माशे भरि भष प्रात सलिल शीतल सुविचारो ॥
तप्त नीर सों बंद झरै मल ज्वर हरसंधक।
आमशूल अरु व्याधि हरै खाये सों गंधक॥

पुनः

पारो मिर्च सुहागै टंक टंक भरि आनि।
सोंठि टंक त्रय पीसि कै गंधक तितै बखानि॥
अजयपाल नौ टंक लै शोधि सकल खरलाय।
रती एक भरि खाँड़ सँग शीतल नीर पिवाय॥
पियत तप्त जल बंद पथ्य दधि भात विचारो।
रक्त-विकार फिरंग हरै यह सुंदर पारो॥

सुहागादि झार—चौपाई

पहिल सुहाग फुलै करि ल्याय। अजयपाल पारो शुधवाय
सेंधो नोन सोंठि मँगवावै। अद्रक रस सों बरी बँधावै
प्रात रती भरि ताहि खवावहु। ऊपर शीतल नीर पियावहु
जिते चुल्लू जल पीवै सोय। तिते दस्त ता नर को होय
ताते पियत बंद हो जाय। सकल रोग को देइ बहाय

त्रिकुटादि झार

त्रिकुटा गंधक पारो लेय। फुलै सुहाग तासुमें देय
सबसम विजयपालको आनहु। कूटि खरलमें बस्तर छानहु
खाँड़ संग घुँघुची भरि देय। शीतल नीर पियन को देय
जब उरव्याधि निझरि मल जाय। तातो नीर पियावहु जाय

तातो दूधभात पथ खाय। बंद होय सब रोग बहाय
यहत्रिकुटादि झार सुखरूप। याकेगुण अति रुचिरअनूप

मेघनाद झार

दोउ हरदी जीरे दोउ आनो। हंसपाक ईंगुर पहिचानो
बच बिडंग दात्यूणि निसोत। त्रिकुटा हींग सुहागा होत
सब जितनी जितनो जयपाल। करि एकांत खरल में घाल
जंभीरी रस की पुट तीन। रतीरती भरि गोली कीन
ताते पानी सों दै एक। झार लगै अति सहित विवेक
मठा भात पथ दीजै खान। मेघनाद रस कियो बखान

छुरीकाल झार—दोहा

किरमालौ सारोमिरच, सोंठि हींग सम आनि।
पुंगीफल शोधो हरद, दंती बकुची जानि॥
गंधक ईंगुर आनिये, और बहेरे ल्याय।
सब समान जयपाल लै, निंबुआ रस खरलाय॥
पहर एक भरि खरलिये, गोली रती समान।
खाय प्रात ऊपर कहे, तब बीरा छह पान॥
मठा-भात के खातही, बंधन ताको होय।
बड़ी व्याधि जानो खड़ो, तीक्षण यह रस जोय॥

कुटकी आदि झार—चौपाई

कुटकी पैसा सवा मँगावहि। मिर्च टंक दश सुंदरि ल्यावहि
अजमोदा लै टंक सुराखै। पैसा डेढ़ मुनक्का दाखै

बीजा काढ़ि तासुके लेय ; पीसि कूटिकै गुटी करेय
गोली ताकी तीन बनावहि ; ताते पानी एक खवावहि
छर्दिरोग सनिपात नशाइ ; कब्ज खुलै शिरशूल पराइ
मिटै अजीरणमलझरिजाय; ऊपर दालि भात पथ खाय
साठी चावल मोठसुदारि ; यह पथ खाय होय सुखकारि

पुनः झार—दोहा

तीनि अधेला भरि भली, सोनामाखी लेय ।
अदरक-रस में कूटिकै, गोली तीनि करेय ॥
पानी पैसा चारि भरि, गोली घोरि पिवाय ।
जगत रहै सोवे नहीं, तब हीं मल झरि जाय॥
जे इंद्री के दोष सब, और फिरंग समेत ।
मृगीरोग गर्मी मिटै, दाल भात पथ देत ॥

पुनः

दाखै सिता सनाय लै, इमिली समपल दोय ।
किरमालो की कौस को, गूदो सब सम होय ॥
सेर एक जल मेलिकै, निशिकै भोजन देउ ।
मंद आँच दै प्रातही, अष्टशेष करि लेउ ॥
आधपाव बाकी रहै, छानि पिवावहु ताहि ।
ऊपर तातो जल पियै, आमाशय झरि जाहि ॥
शिर बोझिल जाको रहै, पेट कसरि कछु वाहि ।
ताहि पियावै वेगि दै, खिचरी पथ दै जाहि ॥

पुनः

ल्याइ सुहागा मोहरो, अजयपाल पिसवाय।
शिंगरफ पारो सहित सब, लीजै सबै शुधाय॥
करि चूरण पारे सहित, निंबुआ रस खरलाय।
मूँग तुल्य गोली करै, सोंठि संग करि खाय॥
गोली दो कै तीनि खा, जायँ सर्व ज्वर भागि।
जरै आँव पथ खीचरी, खट्टो ब्यारो त्यागि॥
दशज्वर याके लेतही, तनुते सकल नशाहिं।
यह रस जे भक्षण करैं, रोग अनेक पराहिं॥

पुनः

लै जयपाल सुहाग को, अंड-तेल मर्दाहि।
लेपन कीजै नाभि पै, लगै विरेचन ताहि॥

पुनः

अजयपाल गुर बाँटिकै, बाती एक बनाउ।
दश अंगुल की गुदा में, डारि दस्त लगवाउ॥

पुनः—चौपाई

अजयपाल लै टंक सुपाँच ; मिर्चत्रयी गुरु एक सुसाँच
चारि टंक गुड़ जूनो आन ; गोली छोटे बेर प्रमान
ऊन्हा पानी सो दै ताहि ; लगै विरेच देह सुखदाहि

दोहा

कहे विरेचन सरस अति, करन रोग निर्मूल।
ज्वर प्रवृत्ति लक्षण कहौं, पुनि भेषज अनुकूल॥

ज्वरप्रवृत्ति ज्वरपाचन—चौपाई

हर्रे बड़ी छोटी लै आउ ; सोंठि धना देवदारु मिलाउ
तप्त नीर सों चूरण खाय; ज्वर पाचन अरु मल छिगिजाय
मल ढीलो जब ज्वर घटिजाहि; करै विरेचन वैद्य सुताहि
सर्व ज्वरन को पाचन जानी; अवशि सबरे कहौं बखानी

पित्तज्वर की वृद्धि—दोहा

मीठो मेवा खायकै, खट्टो खारो खाय।
तातो खा पानी पियै, तेल संग दधि खाय॥
त्रियारमण करिकै तुरत, जो कहुँ बैहरि खाय।
जल पीवै सपरै यदपि, दोष बढ़ै बहुताय॥
बोझ धरै मारग चलै, डारि शीत जल न्हाय।
खाइ महेरी घाम में, तुरतहि बैठे जाय॥
सोकै जगि पानी पियै, शीरो ताते न्हाय।
तापै मीठो खाय अरु, मधुर दुग्ध खा जाय॥
ऐसे योगन सों बढ़ै, पित्त विकारहिं माख।
देखि अनेकन ग्रंथ को, बुधजन कीन्ह्यो भाख॥

पित्तज्वर के लक्षण

मुख कडुवो तनु ताप बहु, व्याकुल देही होय।
तृषा बहुत परलाप बहु, नींद न आवै कोय॥
नयन जरैं अरु लाल पुनि, सूखै अधर कठोर।
रक्त नील पीरो वदन, पलभा तीक्षण छोर॥

कान भनक लागै बहुत, चहै खटाई खान।
मूत्र पीत अरु गर्म पुनि, कफ मुख कडुवो जान ॥
कर पद तप्त हियो जरै, ये लक्षण लखि लेय।
पित्तहि को यों जानिकै, पाछे औषध देय ॥

पित्तज्वर का प्रतीकार

पित्तपापड़ो टंक दो, जल सँग पीस सुजान।
पियत पित्तज्वर दाह को, करै वेगि यह मान ॥

पुनः

मुस्तक चंदन पीपरा, लोचनबाला आनि।
शुंठी नीर उशीर सों, पियत पित्तज्वर हानि ॥

पुनः

कुटकी अभया दाख पुनि, मोथा परपट लेय।
पियत नीर सँग पित्तज्वर, दाह दूरि करि देय ॥

पुनः

लै चिरायतो पीपरा, वासा और प्रियंग।
कूटि जवासो शर्करा, करै क्काथ जल संग ॥
प्रात पियत नाशै तुरत, रक्तदाह ज्वर पित्त।
होय सुखी व्याधी तुरत, करै तीन दिन नित्त ॥

पुनः

चंदन मोथा रेणुका, अरु उशीर जल संग।
पियत नशै व्रण ज्वर तृषा, दाह दोष करि भंग ॥

पुनः

धना गुर्च पद्माक पुनि, नींब सुचंदन लाल।
पियत पित्तज्वर तृषा टर, वमनदोष को टाल॥

पुनः

सहत शोधि घृत लेप ते, मिटै पित्त को दाह।
कै पर्पट अभया गुरच, पियत पित्तको दाह॥

पुनः

लघु इलायची दाख तज, पत्रज मालखजूरि।
मिश्रि मधुपलै एक सब, करै पीसिकै चूरि॥
गोली कीजै सहत सँग, बेर एक अनुमानि।
प्रात समय नर जे भखैं, होत पित्तज्वर हानि॥
रक्तपित्त भ्रम मूरछा, वमन दोष स्वरभेद।
खाय दोष तनु ना रहै, पित्त दाह को खेद॥

पुनः

चंदन शुंठि चिरायतो, क्काथ करै सब जोरि।
ताही क्षण में पित्तज्वर, डारै तोरि मरोरि॥

पुनः

दाख हर्र वासा सहत, खाँड़सहित जो खाय।
रक्त पित्तज्वर कास कफ, ये सब दूरि कराय॥

पुनः

किरवरदलको क्काथ मधु, संग पियत हरचित्त।
कै पर्पट अरु आँवरे, गुर में सेवै नित्त॥

पुनः

कमलगटा पद्माक अरु, लोध सारिवा डारि।
मिलवै मिश्री क्काथ सों, पियत पित्तज्वर टारि॥

कफज्वर की वृद्धि—चौपाई

ककरी कुँदुरू खीरा खाय; तेल मठा दधि दूध बनाय
बेर मांस पुनि दाखहि खावै; घीउ खाय खाटो पुनि भावै
सोइ जगै सीरो जल पीवै; या पकवान दूध दधि लीवै
सीरो तातो पीवहि पानी; खट्टो खाय लेत घिउ सानी
मीठो खाकरि पीवहि नीरा; तेल खायकै खावहि बीरा
ऐसी विधि जो खाय अहार; होय तासु के कफ अधिकार

कफज्वर के लक्षण—दोहा

वदन लाल पुनि लाल दृग, आलस होवै श्वास।
वमन करै लघु नींद पुनि, बेदिल नयन उदास॥
जरै शीश खाँसी बहुरि, जीभ करेरी जानि।
करिहां पीर पिराय अति, गल गेही जड़ मानि॥
अति अभूख मीठो वदन, भीतर गरो खुजाय।
हिय भारी अरु पीठ पुनि, नासास्वर मुँदि जाय॥
भूख प्यास थोरी लगै, मंदी अग्नि शरीर।
देह वदन फीको लगै, यों कफ जानहु चीर॥
केंकी हंस कपोत की, चलै नाडिका बाल।
तौ कफ को यों जानिये, परखौ वैद्य विशाल॥

मास फाल्गुन चैत में, कफ को जानो राज।
अब भेषज वर्णन करौं, वैद्यप्रिया सुखसाज॥

कफज्वर का प्रतीकार—छप्पय

चाब मिरच तालीस तौलिये सब सम आनहु।
इनते दूनों भाग पीपरामूल बखानहु॥
तिगुणी सोंठि मँगाय पीपरै चौगुण लीजै।
ले इलायची बहुरि और तज पत्रज दीजै॥
प्रथम भाग ये संग गुड़ पुंगी सम गोली करहि।
नर खात प्रात कफज्वर प्रबल सहित पीर तात्क्षण टरहि॥

पुनः—दोहा

पीपरि पीसि कटेहरी, फाँकै ताते नीर।
ताके उर में ना रहै, सब कफज्वर की पीर॥

पुनः

कृष्णा कटू कटेहरी, पीसहु पुष्करमूरि।
करु अवलेही सहत सँग, खातहि कफज्वर दूरि॥

पुनः

लै पलोट त्रिफला कटू, पीपरि मूल गिलोय।
वासा मधु अवलेहते, कफज्वर रहै न कोय॥

पुनः—चौबोला छंद

पीपरि अकरकरा अरु सिंगी पुष्करमूरि मँगावै।
बाँटि कायफल सहतसंग अवलेही रुचिर बनावै॥

प्रात साँझ रोगी को दीजै श्वास कास दुख नाशै।
कफज्वर वमन तृषा व्रण आलस ऐते रोग विनाशै॥

पुनः—दोहा

भारंगी मोथा गुड़च, देवदारु कंटाइ।
सोंठि पीपरै पीपरामूर मिलै कै खाइ॥
सकल ग्रंथ को सार यह, करै सुमति करि कोय।
नाशै कास श्वास ज्वर, तृषा अधिक रुचि होय॥

पुनः

बीजपूर जल ल्याय कै, मोथा सोंठि कचूर।
जवाखार को लीजिये, अरु लै पीपरिमूर॥
कफज्वर नाशै वमन पुनि, अरु हड़फूटनि जाइ।
यहै क्वाथ लुकमान ने, दीन्हों सरस बताइ॥

पुनः—तोमर छंद

त्रिफला पटोल मँगाइ। वासा गिलोय सुखाय॥
कुटकी बहुरि सम आनि। पीपरि सुमूल बखानि॥
मधु संग करि अवलेहु। उठि प्रात नर को देहु॥
कफज्वर हरै यह खात। शुभ कही गोरख बात॥

पुनः—दोहा

त्रिकुटी छिकनी कायफल, पीसै वरभर छानि।
प्रातहि नास जु लीजिये, कफज्वर की है हानि॥

पुनः

त्रिफला कूट कचूर पुनि, शिवा किरात मिलाय।

लोध्र हरमली कायफल, पुष्करमूल मिलाय ॥
कुटकी सम सब पीसिकै, तीन कपरछन होय।
मलै हिये संधान ज्वर, स्वेद जाय कफ सोय ॥

पुनः

पीपरि शुंठी कटुकफल, मिरचै सब सम लेय।
तासु देतही नीर सँग, कफज्वर दूरि करेय ॥

वायुज्वर-वृद्धि—चौबोला छंद

खट्टो खारो खाय लोन को जो नर संग सजोवै।
बासी खाय बहोरि होय वश निद्रा बाहर सोवै ॥
बहुत जागरण करै रातिकै तापै देह सिंकावै।
न्हाय तपावै अंग न्हायकै ताते दूधहि पावै ॥
बड़ो खाय तनु घाम जायकै रूखो भोजन खावै।
सोवा गाजर खाय सेम पुनि ऊपर नीर पियावै ॥
दालि उरदकी खाय और पुनि तेल मठा दधि खाई।
तेल लगाय अंग नर मूरख ताते नीर हनाई ॥
चना तेल जो संग खाय पुनि दूध दही सँग पाई।
मांस मठा के संग तेल दधि ऊपर काँजी खाई ॥
मीठा तीखा खाय एक सँग या विधि योग जुरैजू।
करै वायु अति कोप तासुके भीतर अंग उरैजू ॥

वायुज्वर-लक्षण—दोहा

चित्तभ्रम अरु ताप तनु, पीड़ित होय अधीर।

देही शीतल होय पुनि, नींद न आवै वीर ॥
टूटै तन आलस बहुरि, तालू जरै अचेत।
वचन कठिन रोवै हँसै, बाद करै बिनु हेत ॥
लेय जम्हाई तन कँपै, चलै ताप उर शूल।
पेट पीर फूलै बहुरि, नींद नहीं गतिशूल ॥
चौंकि उठै जिह्वा कठिन, लकरी सी ऐंठाय।
लगै थरहरा देह में, ताहि जानि ज्वर बाय ॥
पौष माघ आषाढ़ पुनि, सावन भादौं मास।
अरु मारग छह मास जे, वायु राज परकास ॥
सर्प जोंकलौं कामिनी, नाड़ी चाल विचार।
वायु जानिकै वैद्य तब, करि पाछे उपचार ॥

वायुज्वर का प्रतीकार

पीपरि मिरच चिरायतो, सोंठि मोचरस पाय।
देवदारु कुटकी हरड़, चूरण नाशत बाय ॥

पुनः

चित्रक सोंचर लौंग लै, त्रिकुटा कटुक बँटाय।
चूरण पीवै तप्त जल, दूरि होय ज्वर बाय ॥

पुनः—गीतिका छंद

पीठोन सोंठि उशीर सरवन और गोखुरू पाइये।
कुटकी गिलोय किरात मोथा काशमीरी ल्याइये ॥

शुभ सोंठि पीपरिमूल चारु गिलोय नूतन लीजिये।
हनुमानतात कपात को यह क्काथ करिकै दीजिये॥

पुनः

सोंठि जवायनि कायफल, बच कचूर असगंध।
जाय भाजि ज्वर बेगिही, मर्दत सब तन-संध॥

पुनः

दश लौंगैं दश पीपरैं, माशे शोधि सुहाग।
करि अवलेहो सहत-सँग, जाय वायुज्वर भाग॥

पुनः—चौपाई

मोथा कटू गिलोय मँगावै; बालो शुंठि किरातहि पावै
लै पटोल पुनि बिल्व मँगाई; दोइ कटेरी भेषज पाई
करै क्काथ पीवै परभात; दावौ लेय नयो हरषात
चलै प्रस्वेद वायुज्वर जाय; दीनो काढ़ो सरस बताय

पुनः

सेंधो माशे दोय मँगावै; चारि टंक लै सोंठि सुआवै
तातें जल सँग चूरण खाय; सात दिवस ज्वर वायु पराय

मलज्वर की वृद्धि

सीरो न्हावै सीरो खाय; भोजन करि थोरो जल पाय
निशिकै ब्यारू अधिकी करै; पीवै नीर न बाहर परै
सीरो रक्त देह को होय; जठर अग्नि तब मंदिर जोय
याते आँत गाँठि बँधि जाय; मैलु जमै आँतें लिपटाय
तबहीं मल को बढ़ै विकार; ताके लक्षण कहौं विचार

मलज्वर के लक्षण—दोहा

दाह शोष परलाप बहु, मूर्छा भृकुटी भंग ।
हियो वज्र मुख लार पुनि, ज्वर बहु चिलकै अंग॥
हियो धुकधुकै कटकटै, अस्थि पीर दृग लाल ।
कर पद नासा शीत उर, पीठि पीर बेहाल ॥
लाल होय ये सावतिहु, मलज्वर जानो ऐन ।
ऐसे लक्षण समुझिकै, पाछे औषध दैन ॥

मलज्वर का प्रतीकार—चौपाई

चित्रक शिवा जवाइनि दोय; निम्बू कचरी जीरा होय
सब सम बाँटि फँकी दै ताहि; मलज्वर वेगि बिदा ह्वै जाहि

पुनः

पीपरि कुटकी लेहु मँगाय; शिवा किरात मुसब्बर ल्याय
बाँटि नीर सँग तप्त करेय; लेप उदर ऊपर करि देय
याते मल टूटहि ततकाल; पथ सँग भात मोठ की दाल
यहै लेप भाष्यो सुखदाय; मल समेत ज्वर जाय बिलाय

पुनः—दोहा

किरमालो मोथा हरड़, कुटकी पीपरिमूल ।
क्वाथ पियत मलज्वरतृषा, त्रिविध दोष हर शूल ॥

अजीर्णज्वर की वृद्धि

बहुतखायं लघु जल पियै, जगै राति नर सोय ।
अन्न पचै नहिं तासुको, लोहू शीतल होय ॥

जठर अग्नि मंदी परै, हीन तासु बल जोय।
आँत ऐंठि गाढ़ी परै, तबै अजीरण होय॥

अजीर्णज्वर के लक्षण—चौपाई

ज्वर-आगमन उदर-दुख होय ; मूर्छित देह लखो सब कोय
अस्थि पीर कहुँ देह कँपाय ; अधिक अरुचि अरुवमन कराय
स्वर नासिका भ्रष्ट मुख लाल ; कर पद तप्त जरै पुनि भाल
सूखे अधर और दृगदाह ; देखत दशन मलिन अति जाह
ऐसे लक्षण जाके जानो ; ताहि अजीरण ज्वर पहिंचानो
सिंह-गमन नाड़ी-गति जाकी ; समुझि औषधी दीजौ ताकी

अजीर्ण ज्वर का प्रतीकार—दोहा

सोंचर नोन हरीतकी, अजमोदा समचूर।
पीसि पिये जल तप्त सों, होय अजीरण दूर॥

पुनः—मोतीदाम छंद

सोंठि मिरच्च लै पीपरिमूल। हरित सुपीपरि लै समतूल
कह पुनि सैंधव सोंचर नोन। करै किन चूरण छानि सुतोन
मिलै गोतक्र चुरै पुनि लेय। भये अति गाढ़ गुटी करि देय
भखै इक टंक अजीरण नास। मिटै कफ कास रहै नहिं श्वास

पुनः—पद्धरी छंद

पीपल मिरचैं सैंधव सुल्याय। लै सिरस-बीज रजनी मँगाय
समबाँटि सबै गोतक्र पीसि। आँजत तहि अजीरणज्वर सुखीसि
दृगदोष शीश की व्यथा जाय। यह अंजन देतहि दुख पराय

पुनः

लै मुस्तकटू शुंठी मँगाय। मिलवै किरात परवर सचाय
वासा परपट पुष्करैमूल। सहिमा पुनि पीपरिमूल तूल
घमहा कटाय लीजै कचूर। सम आनि कर्करासिंग पूर
सब टंकटंक भरि तौलि लेय। सब बाँटि छानि भक्षण करेय
शीतल सुनीर दीजै पिवाय। ज्वर जोर जाय क्षणमें बिलाय
करि तप्त बहुरि जलसंग सान। तातो सुपेट लेपहु सुजान
मलगिरहिउदरदायकसुशूल। मूर्छाप्रलाप करिजरनिमूल
शिरपीरअजीरणमिटहिअंग। सुख अमित होय देहीप्रसंग

खेदज्वर के लक्षण—दोहा

अस्थिपीर निद्रा घनी, जिह्वा तनुपर स्वेद।
नयननीर पीड़ा अधिक, ये लक्षण ज्वरखेद॥

खेदज्वर का प्रतीकार

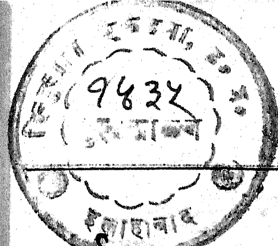
बाँटि कटुकफल तेल सँग, मर्दन करै शरीर।
न्हाय तप्त जल सुघर नर, मिटै खेदज्वर पीर॥

दृष्टिज्वर के लक्षण

तनु अशक्त जिह्वा बदन, देह उदर अतिपीर।
पुनि पीरो तनु देखिये, गनौ दृष्टिज्वर भीर॥

दृष्टिज्वर का प्रतीकार

पीपरि मिरच चिरायतो, हींग सोंठि सम घालि।
चूरण दीजै टंक दो, दृष्टिताप कहँ टालि॥



रक्तज्वर के लक्षण

ऊर्ध्वश्वास मुखरक्त-वर, अंग अंग अतिपीर।
भाष्यो ग्रंथ विचारि करि, यहै रक्तज्वर भीर॥

रक्तज्वर का प्रतीकार—अरिल्ल

कुटकी वासा पर्पटा लीजै बहुफली।
लै चिरायतो बहुरि जवासो समभली॥
डारि घमाहा क्वाथ सिता भुरकाइये।
बिडरै ज्वर मुख स्रवत रुधिर थम्भाइये॥

पुनः—दोहा

दूबहि दाड़िमफल मिलै, बाँटि निकारै नीर।
जल तंडुल सँग नासदै, मिटै रुधिर वमिपीर॥

चार प्रकार के ज्वर का लक्षण

इकाहिक द्वाहिक तृतिय अरु, पुनि चतुर्थकी टेक।
ये ज्वर अरु ज्वरकाम के, लक्षण जानो एक॥
कंठ शोष शीतल सुभ्रम, मुख कषाय शिरपीर।
रोमहर्ष तनु तामसह, सहित कामज्वर भीर॥

सब प्रकार के ज्वरों का उपाय

तीन टंक त्रिफला कहो, त्रिकुटी टंक सुतीन।
द्वादश टंक सुनीम लै, पाँच लोन सम कीन॥
पाँच टंक अजवाइनै, सब सँग बाँटि छनाउ।
चूरण पीजै तप्त जल, ये ज्वर तप्त भजाउ॥

एकाह्िक ज्वर का उपाय

कुटकी लीजो इंद्रयव, अरु पटोल के पान।
क्वाथ प्रात करि पीजिए, एकाहिक ज्वर हान॥

द्वाहिक ज्वर का उपाय

मोथा पाढ़ा दाख पुनि, अरु पटोल मँगवाय।
करै पान परभात ही, द्वितिय ताप मिटि जाय॥

त्र्याहिकज्वर का उपाय

त्रिफला त्रिकुटा मुस्तका, दाख पटोलहि आनि।
पियै क्वाथ मिश्री सहित, होय तृतिय ज्वर हानि॥

चातुर्थिक ज्वर का उपाय

चंदन कटू चिरायतो, मोथा सोंठि गिलोय।
संग आमरे क्वाथ ते, चातुर्थिक ज्वर खोय॥

पुनः

रस अगस्त के पात को, नास नाक सों लेय।
ज्वर चातुर्थिक जात है, छाँड़ि तासु की देह॥

ज्वर पर दीपन-विधि

पाँच पीपरै प्रथम दिन, पुनि दश पंद्रह बीस।
दूध-संग पच्चीस पुनि, पीसि जु पीवै तीस॥
तीस बहुरि पच्चीस पुनि, बीस जु पंद्रह ऐन।
दशते ले पुनि पाँच लौं, यह पीपरि सुखदैन॥
या विधि संयम जो करै, कास श्वास पुनि वात।
पाँच अरसअरुशोथपुनि, रक्तविकार बिलात॥

गुल्म उदर की व्याधि बहु, और विषमज्वर जाय।
वर्द्धमान पीपरि भली, दूध भात पथ खाय॥

कालज्वर के लक्षण

अंग स्वेद कफ कास बहु, स्वाद हिये पुनि जाल।
पद नासा शिर शीत अति, ये लक्षण ज्वर-काल॥

प्रतीकार

चढ़ो कालज्वर जानिये, औषध झूठी जान।
तासों कहिये राम भजि, दे ले रे कछु दान॥
दश ज्वर की औषध कही, देखि ग्रंथ परमान।
अब त्रिदोष लक्षणसहित, औषध कहौं निदान॥

वात-पित्त-ज्वर के लक्षण—सवैया

है भ्रम चित्त तृषा उर दाह उछाह करै दृग नींद न आवै।
मोह जम्हाई पिराय शरीर सुगाँठिन पीर बड़ी उपजावै॥
तीर से ठौरनि ठौर लगै पुनि हर्षत रोम शिरै दुख पावै।
आनन कंठ बिषे अति शोथ सुलक्षण मारुत पित्त बतावै॥

वायु-पित्त-ज्वर के प्रतीकार—सोरठा

लै उशीर कनिजाल, मोथा मिलवै पीपरा।
काथ वात कफ काल, पित्त-दाह दीरघ हराहि॥

पित्त-कफ-ज्वर के लक्षण—कुँडलिया

जब ते करुवो लिरिबिरो मुख अरु तन्द्रा होय।
मोह कास बाढ़ै अरुचि दाह प्रकाशै सोय॥
दाह प्रकाशै सोय लगै तनु फिरि फिरि जाड़ो।

क्षणभरि रहै न चैन रोगिये अतिदुख बाढ़ो ॥
आलस लहत न नींद उबाकी जानो जबते ।
इन लक्षण ते पित्त जानिये कफज्वर तबते ॥

पित्त-कफ-ज्वर का उपचार—गीतिका

नींब-छाल गिलोय कटुकी इंद्रयव शुंठी कही ।
पुनि रक्त-चंदन पान परवर मुस्तका ल्यावहु सही ॥
ये बाँटिकै सम क्वाथ तामें बाँटि पीपरि मेलही ।
प्रात पीवै पित्तकफज्वर व्याधि तनुते ठेलही ॥

पुनः—दोहा

चंदन मुरहारी कटू, परवर पाठ गिलोय ।
पियत पित्तज्वर कफज्वरहि, इमि कंडू की खोय ॥

पुनः—अरिल्ल

चंदन मोथा गुड़च कटेरी ल्यावही ।
कटुचिरात भारंग पटोल मँगावही ॥
इंद्रयवा जड़ नींब अड़ूसो क्वाथही ।
पियत पित्तकफ छर्दि जाय ज्वर साथही ॥

पुनः—दोहा

एक भाग कुटकी कही, शक्कर दूनी ल्याय ।
तप्त नीर सों पियत कफ, ज्वर इत्यादिक जाय ॥

पुनः

मिलवै चंदन रक्त लै, धना और पदमाख ।
पियत क्वाथ ज्वर पित्तकफ, दूरि होय पुनि भाख ॥

वात-कफ-ज्वर के लक्षण—नाराच छंद

गाँठि गाँठि पीर होय शीश दुःख पावही ।
होय पीरहीन जोर नींद अंग छावही ॥
होय वेग मध्य स्वेद नेकहू न आवही ।
लगै समीर शोक अंग रंगहू न भावही ॥
अरुचि होय कास श्वास वक्रविरस देखिये ।
ज्वर अताप सहितप्रकृति वातकफ सो लेखिये ॥

वात-कफ-ज्वर का उपाय—दोहा

पुष्करमूल गिलोय पुनि, शुंठी दाख मँगाय ।
वात पित्त कफज्वर हरण, यह काढ़ो शुभ आय ॥

पुनः

लौंग लाइची कायफल, पुष्करमूल कचूर ।
काकरसिंगी सम सकल, करौ पीसिकै धूर ॥
अद्रक रस की सात पुट, देकै गुटी बँधाय ।
टंक दोय की प्रात खा, ज्वर कफ वात पराय ॥
कासश्वासस्वरभंगता, हिचकी जाय बिलाय ।
पीर पसुलियन की मिटै, सात दिवस जो खाय ॥

पुनः—मोतीदाम छंद

कटू कटु शृंग भरंगि मँगाय ।
कायफल और सुमुस्तक ल्याय ॥
धनै इल पीपरि शुंठिय आनि ।

कही मोरेठिय रोहिष जानि ॥
बिलासिनि हाट कहौ सुरदार ।
करो इन क्वाथ सबै समभार ॥
पिये कफ मारुत खाँसिय कास ।
घुले रुज हिक्क त्रिदोष विनास ॥

त्रिदोष-लक्षण—दोहा

कंठ शोष तंद्रा घनी, अरुचि नींद को नास ।
भ्रमअचेत जिह्वा कठिन, बढ़ै कंठ कफश्वास ॥
पीठि पिछोही पीर अति, सुधि न रहै गति भूल ।
दाह ताप परलाप ये, गनि त्रिदोष के शूल ॥
सुन्न देह जस अंग पुनि, अल्पताप बहुस्वेद ।
भंग होइ ग्रीवा सही, चित्त न थिर अति खेद ॥
याकी कछू न ओषधी, महात्रिदोष विचार ।
हाथ न घालै वैद्यवर, यह ईश्वर आधार ॥

त्रिदोष-उपाय—पद्धरी छंद

लै शुंठि कटेरी पुष्कर सुमूर ।
पुनि छिन्नारुहा समतूल पूर ॥
यह क्वाथ करहि त्रयदोष दूर ।
ज्वर अरुचि कास अरु श्वाससूर ॥

पुनः—भुजंगप्रयात

फलं कंटकी मुस्त रोहिष्य लीजै ।

बचं शृंग भारंगि कुटकी मिलीजै ॥
हरीतं धना सोंठि मधु देव जानो ।
मिलै पीपरा हींग काढ़ो-बखानो ॥
पिये जो प्रभातै महा कास-श्वासं ।
मुखं रोग पीड़ा कफं दिव्य नासं ॥
धड़का उरोरोध शीताधि पीरा ।
मिटै कंठरोधं सुदाहं समीरा ॥

पुनः

भरंगी कुड़ा पीपरामूल आनो ।
पुष्कर शतावरि सुसुरदारु जानो ॥
कही भंगरा सन्निपाठं कटेरी ।
बचं चाब निर्गुंडि अभयारि लेरी ॥
मँगा कायफल अजवाइन सुभाई ।
यहै क्काथ रोगीहि प्रातहि पिवाई ॥
बुधं भ्रंशि सन्नं सुसीतं प्रस्वेदं ।
कफं व्याधि ज्वर वात दुखशूल छेदं ॥
नशै वायु विद्रधि प्रसूतं नशावै ।
हरै रोग त्रयदोष काढ़ो पियावै ॥

पुनः—दोहा

हरड़ सोंठि पैसा भरी, सम गुड़ गोली खाय ।
बुद्धिकरण कफ पित्त मल, मूत्रकृच्छ्र ज्वर जाय ॥

पुनः

मैनशिल पीपरि नींबफल, करहेला रस पाय।
गोली आँजत नयन युग, ज्वर त्रिदोष टरिजाय॥

पुनः

बड़ी लौंग दो टंक लै, तप्त नीर सों देय।
सन्निपात त्रयदोष ज्वर, ताही क्षण हरि लेय॥

पुनः

सोंठि कंटकी अमृता, कणा काथ में डारि।
पीवत ताकी देह ते, ज्वर त्रिदोष को टारि॥

पुनः

किरमालो मोथा गुड़ुच, परपट संग उसीर।
या काढ़े ते मिटत हैं, वात पित्त कफ पीर॥
पुष्करमूल गिलोय अरु, दाख सोंठि सम घालि।
क्काथ वातज्वर पित्त कफ, दुख त्रिदोष को टालि॥

विषम-ज्वर का उपचार

लै हरीत मोथा कटू, अरु पटोल मँगवाय।
पिये क्काथ बहु सहत सों, विषमज्वर तजि जाय॥

पुनः—चौपाई

मोथा और कटाई छोटी; सोंठि आमरे मिलवै मोटी
पीपरि सहत डारिकै खावै; काढ़ो विषमज्वरहि नशावै

पुनः

लेहु कटाई पुष्करमूल; सोंठि गिलोय लेहु समतूल
याको क्काथ पिये सुख पाय; कफ अरु श्वास विषमज्वर जाय

पुनः—अरिल्ल

चित्रक सेंधो नोन हरड़ पुनि पीपरै।
मिर्चैं लेहु समान बाँटि चूरण करै॥
पिये नीर सँग प्रात कर्षभरि जो सही।
सर्वज्वरनि दुखहरणि ग्रंथ भाष्यो यही॥

पुनः—दोहा

पुष्करमूल गिलोय लै, सोंठि कटाई आनि।
क्काथ पियत कफकास अरु, श्वास विषमज्वर हानि॥

पुनः

गुड़ जीरो दोऊ मिलै, पैसा भरि नित खाय।
वात वेदना विषमज्वर, तुरत बिदा हो जाय॥

पुनः

गुड़ मोथा अरु आमरे, सोंठि पीपरै आनि।
ल्याइ कंटकी क्कथ करै, सहत तासु में सानि॥
पिये प्रात दिन सात जो, विषमज्वर हरि लेय।
जो न जाय तो मधु हरड़, खात दूरि करि देय॥

पुनः

भँगरा की जड़ कान में, बाँधे डोरा डारि।
ज्वर आवत है राति कै, ताको देहि बिडारि॥

दाह-ज्वर का उपचार

चंदन सोंठि उशीर लै, पीपरि धना समांन।
पियत क्काथ बसि दाहज्वर, तृषा रोग की हान॥

पुनः

पात नींब अरु बेरिके, मति उपजावै फेन।
ताहि लगावै देह सों, दाह मिटै ज्वर ऐन॥

पुनः

हरदी लाख मँजीठ को, कल्क करै बुधिबीर।
लेइ तेल ते छहगुनो, बहुत दही को नीर॥
छाछि कलक वा तेल में, डारै कलक पचाय।
तेल लगावै अंग सों, दाह शीतज्वर जाय॥

पुनः—चौपाई

दाह देह जाकी अतिजरै; ताको पहिल उतानो करै
फिर काँसे को बासन आनै; जामें गरुवाई बहु जानै
बासन ल्याइ टुड़ी पर धरै; शीतल सलिल धार तहँ परै
शीतलता बहु ब्यापै जौं जौं; तनते दाह मिटै वह तौं तौं

सन्निपातज्वर का प्रतीकार—दोहा

तीनि दिवस कै पाँच दिन, दश दिन करै उपास।
सन्निपात ज्वर जानिकै, कहँ जीबे की आस॥

उपाय

दोय कटाई गोखुरू, दोय बलारे आनि।
सोनाबेलि कुम्हेरि अरु, पाढ़रि अरणी जानि॥
काढ़ो यह दशमूल को, पीपरि डारि पिवाउ।
सन्निपातज्वर जोर अति, ताको वेगि नशाउ॥

पुनः

धना इंद्रयव लीजिये, गजपीपरि अनुकूल।
कुटकी सोंठि चिरायतो, दारुहरद दशमूल ॥
ये ओषधि सब जोरिकै, पीवे क्काथ बनाय।
श्वास कास तंद्रा अरुचि, दाह मोह ज्वर जाय॥

पुनः

दोउ हरदी त्रिफला बहुरि, कुटकी मोथा लेहु।
नींब छाल अरु पटोलदल, अल्प कटाई देहु ॥

पुनः—चौपाई

पुष्करमूल कटुक फल लीजै ; त्रिकुटा ककड़ासिंगी दीजै
डारि कलौंजी और जवासो ; चूरण करै कपरछन खासो
सहत डारि चूरन वह चाटै ; हिचकी कासश्वास कफ काटै
कंठ रुधिर सोऊ मिटिजाय ; सन्निपातज्वर वेगि नशाय

पुनः—दोहा

मिलवै मोथा सोंठि लै, अरु चिरायतो डारि।
चूरण अदरक-रंग सों, चाटै कफहि बिडारि ॥

धूरा

बच चिरायतो कायफल, कुटकी लेहु समान।
करौ सुधूरा कूटि कै, देहु कलौंजी सान ॥
ज्वर त्रिदोष को जाय अरु, हरै अंग परस्वेद।
या विधि मुनिजन कहतहैं, या ओषधिको भेद ॥

पुनः

सोंठि मिरच पीपरि हरड़, लोध सुपुष्करमूर ।
कूट कलौंजी इंद्रयव, कुटकी और कचूर ॥
इन मधि डारि चिरायतो, चूरण करै बनाय ।
सन्निपातज्वर हरण को, भलो उधूरा आय ॥

पुनः

कुलथी भूँजि पिसायकै, करो उधूरा अंग ।
सन्निपात ज्वर सब मिटै, सकल पसीना संग ॥

नास

बच पीपरि शोधो हरड़, अरु नहुआ को सार ।
नास देत चेतै सुनर, भयो अचेत अपार ॥

कर्णमूल का उपचार

आदि मध्य ज्वर अंत में, कर्णमूल अधिकाय ।
वह असाध्य ज्वर साध्य सुख, साध्य जु क्रमते आय॥
सोंठि कलौंजी कायफल, कुलथी ये सम आनि ।
कर्णमूल को गुनगुनी, लेपन फिरिफिरि जानि ॥

पुनः—चौपाई

दूनी सोंठि सतावरि आनो ; देवदारु रसना फिरि जानो
और बिजोरे की जड़ आनि ; कर्णमूल को लेपन ठानि

सर्वज्वर को उपाय—चंचला छंद

मँगाय शुंठि मुस्तका किरात पीपरा समान ।
गिलोय आनि पीपरै कटू कटाइ वस्त्र छान ॥

पीउ प्रात नीर-संग अंगते त्रिदोष जाय।
सर्वज्वर समेत दाह जाय देह ते पराय॥

पुनः धूरा—प्रियाछंद

असगंध शुंठि चिरायतो। सम कूटि सरसों ल्यायतो॥
करि धूरि मरदो अंगसो। ज्वर वात पित करिभंगसो॥
सब जाय चूभनि देहकी। यह रोगनाशक नेहकी॥

पुनः—दोहा

पीपल पुष्करमूल पुनि, काकड़ासिंगी लेय।
बाँटि छानि सम कायफल, सहत मिलैकै देय॥
श्वास कास कफ ज्वर हरै, कंठरोग मिटि जाय।
सन्निपात तेऊ मिटै, नियम बाँधि जो खाय॥

पुनः

लै मँजीठ क्षुद्रा बड़ी, कूट शतावरि जानि।
जटा मानसी मुरहरी, दोऊ रजनी आनि॥
इंद्रायण जड़ लाख पुनि, रासन शोधो लेय।
बाँटि छानि ये औषधै, बासन में धरि देय॥
तेल सर्षपा सेर जो, छाछ दही की हारि।
धरै कड़ाही आँच पर, तामें औषधि डारि॥
छाछ पचै जब तेल को, नीचे धरै उतारि।
देह लगावै सर्व ज्वर, वात वेदना टारि॥

पुनः

पीपल सोंठि चिरायता, मोथा पीपलमूर।

हरै निसोतहि आनिकै, तामें मिलै कचूर ॥
पखरदल अरु पीपरा, युग्म कटाई पाय ।
त्रायमाण गजकेसरी, और धमासो ल्याय ॥
मिलवै शोधो सहित सब, सम करि चूरण छानि ।
टंक दोय जल तप्त सँग, खात दशौ ज्वर हानि ॥
षोड़शांग यह नाम है, चूरण सरस बखान ।
महाप्रबल ज्वर मत्तगज, तिनको केहरि जान ॥

पुनः

सोंठि मिरच अरु पीपरै, टंक आठ परमान ।
गंधक विष पारद कहौ, दोय टंक ये जान ॥
बीज धतूरे टंक बिबि, पीसि जु ओषधि सेय ।
नागबेलि रस मर्दिकै, गोली गुंजा देय ॥
अद्रक को रस डारिकै, गोली दीजै प्रात ।
जे त्रिदोषज्वर विषमज्वर, करै दशौं ज[illegible] घात ॥
वैद्य मनोत्सव ग्रंथ ते, महाज्वरांकुश जानि ।
होय सुखी नर खाय जब, उदरव्याधि की हानि ॥

पुनः

शंखभस्म हरताल सम, आठौ टंक विचारि ।
नीलाथोथा टंक दो, त्रिकुटा देहु कुमारि ॥
ओषधि संपुट में धरै, ताको गजपुट देय ।
पहर चारि पावक रहै, शीतल भये जु लेय ॥

एक रती दै खाँड़ सँग, पथ्य दूध अरु भात।
रोग बहुत ज्वर आदि दै, या खाये नशि जात॥

पुनः रस—चौपाई

त्रिकुटा नोन पाँचहू लेय ; जीरे दोऊ सौंफ मिलेय
तीनि खार तेऊ लै धरै ; ये ओषधि लै चूरण करै
शोधो पारो गंधक लीजै ; मारो अभ्रक तिन मधि दीजै
ओषधि ये सब लेहु समान ; अद्रक को रस काढ़ि सुजान
रस में ओषधि सबै सनाय ; एक दिना भरि खरलौ ताय
याको वीरभद्र रस नाम ; प्रात साँझ खैबे को ठाम
आदौ शोधो चित्रक लीजै ; अनोपान जल सों घिसि दीजै
माशो एक डारि रस खात ; दीजै पथ्य दूध अरु भात
सन्निपात ज्वर को यह काल ; खातहि दूरि करै ततकाल

तिजारी का उपाय

साजि मैनशिल थूथौ आनि ; ये तीनों लीजै सम जानि
चूना इनते दूनो ल्याय ; सब ये ओषधि एक कराय
पुनि पाठारस की पुट दीजै ; धरि सरवा कपरौटी कीजै
गजपुट आंच पहर त्रय देय ; शीतल भये काढ़ि सो लेय
रती तीन खैबे को दीजै ; सात दिना यह संयम कीजै

दोहा

कै पय सँग कै खाँड़ सँग, कै पुनि घृत सँग खाय।
अनोपान ये समुझिकरि, तुरत तिजारी जाय॥

पुनः

मिलवै सोंठि चिरायतो, नागरमोथा आनि ।
धना कटाई इंद्रयव, जड़ै अडूसै जानि ॥
गजपीपरि पद्माक पुनि, पीपरि बर के पान ।
चंदन रक्त मँगाय कै, भारंगी सम जान ॥
सब सम ओषधि पीसिकै, काढ़ो करै बनाय ।
सात रोज के पियत ही, तुरत तिजारी जाय ॥

पुनः

सोंठि धना चंदन गुड़च, मोथा आनि उशीर ।
क्काथ पियत मधु खाँड़ सँग, मिटै तिजारी भीर ॥

पुनः

एक सहस जप प्रात करि, हनूमंत के नाम ।
जाय तिजारी बेगिही, परै और के धाम ॥

एकांतरे का उपाय—चौपाई

परवर-पात नींब की छालि ; दाख और किरमालो घालि
त्रिफला और अडूसौ ल्याउ ; काढ़ो अनोपान यह प्याउ
सहत डारिकै पीवै कोय ; तुरत एकंतरो डारै खोय

पुनः—दोहा

त्रिफला परवर इंद्रयव, मोथा नींब सुदाख ।
हरै एकंतरो क्काथ यह, कही बार दश लाख ॥

पुनः

हरै जवासो इंद्रयव, परवर मिलवै नीम ।

क्वाथ पियत यह सत्य सुनि, तजै एकंतरौ सीम ॥

शीतज्वर का उपाय—चौपाई

इंद्रयवा अजवाइन दाखै ; लै गड़ि सोंठि अरु सोनामाखै
घमिरा बीज पवाँर के लीजै ; सब सम चूरण काढ़ो कीजै
खातहि शीतज्वर। मिटिजाय ; सिंह नृपति यह दई बताय

पुनः

सोंठि कचूर पीपरा दारू ; मोथ जवास कटाई डारू
कुटकी अरु चिरायतो लेउ ; काढ़ो यह पीपरि सों देउ
शीत त्रिदोष विषमज्वर जाय ; सिंह नृपति यह दियो बताय

पुनः—दोहा

सोंठि पीपरै चाब पुनि, ग्रंथिक चित्रक जानि।
टंक टंक ये पंच पुनि, भारंगी को मानि ॥
सोरह भाग चिरायतो, टंक बीस गुड़ लेय।
सबै पीसि एकांत करि, तीनि टंक नित देय ॥
शीत ताप तन ना रहै, अरु जाड़े को जोर ॥
एक घरी दबि जाय सो, चूरण खाकै भोर।

पुनः

गोमा मिलवै पीपलै, सोंठि ल्याय सम कूटि।
छानि नीरि सँग प्रात पिव, शीत ताप तब छूटि ॥

शीत-ज्वर के लक्षण

शीत लगै बहुसार सों, कास श्वास कफ होय।
मस्तक पीड़ा छर्दि कहि, शीतलज्वर यह सोय ॥

जीर्णज्वर के लक्षण

रहै जासु की देह में, ज्वर बहुते दिन छाय।
जीर्णज्वर सो जानिये, कास पिलोह बढ़ाय ॥

जीर्ण ज्वर का उपचार

लेय टंक दश पीपलै, गुड़ तिगुनो लै खाय।
टंक चारि परभात ही, जीर्णज्वर तजि जाय ॥

पुनः

क्षुद्रा पीपल टंक दो, तीस दिवस लगि पीव।
पथ करि जीर्णज्वर हरै, अतिसुख पावै जीव ॥

दाहशीत की औषधि

हल्दी लाख मँजीठ पुनि, सोंठि बाँटिकै छान।
लेय तेल ते छहगुनो, दधि को नीर प्रमान ॥
डारि कराही आँच दै, डारै छाछि पचाय।
नित्य लगावै देह सो, दाह शीतज्वर जाय ॥

दशज्वर उपद्रव-नाम—अरिल्ल

श्वास मूर्च्छा अरुचि छर्दि अतिसारही।
मलबंधि हिक्का कास तृषा उच्चारही ॥
अंग अंग अति पीर इते लक्षण भनै।
कहै उपद्रव दशौ दशौं ज्वरते गनै ॥

श्वास का उपद्रव—दोहा

पंचमूल त्रिकुटा बृहत, मोथा और कचूर।
पथरसगा लीजे बहुरि, पुनि सँग पुष्करमूर ॥

मिलै गुडुच काढ़ो करै, प्रात पियन को देय।
श्वास उपद्रव को तबै, तुरत बिदा करि देय॥

मूर्च्छा-उपद्रव

किरमालो कुटकी हरड़, दाखै बड़ी उशीर।
काथ पीपरा संग करु, मिटै मूरछा पीर॥

अरुचि-उपद्रव

बार बार मुख में धरै, सोंठि मिरच को नीर।
अरुचि-हरण को मुख धरै, कै निंबुआ रस धीर॥

छर्दि-उपद्रव

चिनीखांड़पलभरि बहुरि, गोघृत पलभरि सानि।
देय प्रात उठि रोगिये, छर्दि उपद्रव हानि॥

अतीसार-उपद्रव

लै चिरायतो पीपरा, मोथा और गिलोय।
सोंठि कटू पुनि इंद्रयव, पाढ़ सबै सम होय॥
ये ओषधि सब आनिकै, काथ करौ परभात।
पिये रोगिया जो कहूँ, अतीसार की घात॥

हिक्का-उपद्रव

सैंधव सूक्षम पीसिकै, घोरै सूक्षम नीर।
नासु देय ताको तबै, हिचकी तजै शरीर॥

कास-उपद्रव

हिंसबदन को रस तबै, काढ़ो सहत मिलाय।
ताके खाये तुरत ही, कासरोग मिटिजाय॥

पुनः

ग्रंथिककिरनासोंठिपुनि, कुड़ा बाँटि समचूर ।
खाय सहत से सानिकै, करै कास दुख दूर ॥

तृषा-उपद्रव

तज पत्रज अरु लायची, चंदन दाख उशीर ।
सिता-संग चूरण भखै, जाय तृषा ज्वर पीर ॥

मलबंध-उपद्रव

गोविंद गोविंद नाम जपि, प्रेम-समेत हजार ।
दिनप्रति सुमिरै सकलज्वर, जाय उपद्रव हार ॥

ज्वरआदि का उपाय

गंधक अरु हरताल पुनि, पारो और सुहाग ।
नीलाथोथा आनि सम, खरल पहर भरि लाग ॥
गोली मिरच-प्रमाण करि, देय रोगि को प्रात ।
शीतज्वर अरु सर्वज्वर, करै यहै रस घात ॥

ज्वरांकुश—चौपाई

टंक एक विष लेय सुजान; मिरचै टंक कह्यो परमान
दोय टंक पारो पुनि लेय; ता समान लै गंधक देय
टंक चारि तामें करवाय; कनकबीज तहँ टंक मिलाय
येती वस्तुइ बाँटि सुजान ; आदे रसहि तीनि पुट सान
अरकदूध पुट तीन सुजान; गोली बाँधि गुंजा परमान
गोली एक जो मिरचै सात; विषमज्वर को करिहै घात

कफ नासै येही संयोग; सान्निपात को जैहै शोग
जीगीदास कहै अभिराम; रस ज्वरअंकुश याको नाम

दाहज्वर पर लाक्षादितैल

तेल समान लाखसो लीजै; जलसों औंटि लालरँग कीजै
छगुनो मही गाय को आनि; तेल मध्य सो पचवो छानि
हरदी सोंठि कूट सो कही; लै मँजीठ मुलहेठी सही
हंसपदी अरु हरदी डारु; रातौ चंदन अरु देवदारु
चंदन श्वेत मुरहरी ल्याय; करि काढ़ो लै तिन्हैं पचाय
पचै महावर तेल न जरै; शुभ किरिया सों तेलहि करै
चुपरै हाथ पाँव ज्वर जाय; दाहशीत पुनि तुरत नशाय

पुनः—लाक्षादिक—चौबोलाछंद

तेल समान लाख को काढ़ो गोदधि चौगुन लेय।
तौल करष सब ओषधि आनौ करिकै चूरण देय॥
सौंफ हरद मुरहारी असगँध आमल कूट मँगावै।
कटू रेणुका देवदारु पुनि सुरती चंदन ल्यावै॥
मुलहेठी अरु मोथा लीजै सब एकत्र करावै।
तेल माँझ करि धरै कराही मंदी आँच पचावै॥
जरै दही तब तेल सिद्ध कहि तन सों मर्दन कीजै।
कास श्वास अरुसर्वविषमज्वर अपस्मार हरिलीजै॥
वात पित्त अरु पीर कुष्ठ की तन दुर्गंधि नशावै।
खाजु जाय त्रियगर्भ रहै पुनि ऐसे गुण यह ल्यावै॥

पुनः—चटनी

पीपरि औ इलायची छोटी दाखै सम करि ल्यावै।
जिते बीज दाखनि में निकरैं तेती मिर्च मिलावै॥
चूरण करि मधु अद्रक-रस में चटनी सरस बनावै।
खाय जाय ज्वर वायु पचै मल रुचि सों भूख लगावै॥

कालज्वर-उपाय—दोहा

त्रिफला त्रिकुटा नींब की, छालि चिरायतो ल्याय।
ऊँटकटारो लघुकटू, दोनों की जड़ पाय॥
अष्ट अंग काढ़ो करै, प्रात पियन को देय।
कालज्वर यासों मिटै, कै हरि को भजि लेय॥

पुनः

दशज्वर के लक्षण कहे, ओषधि सहित यतन्न।
ग्रंथ समझि वर्णन करौं, सुनि अब तेरह सन्न॥

दूसरा शृंगार

तेरह सन्निपातों के नाम, वृद्धि, मर्यादा, प्रतीकार और तेरह रस

दोहा

संधक अंतिक दाह पुनि, चित्तभ्रम शीतांग ।
तंद्रिक कंठ सुकुब्ज अरु, कर्णिक भग्न अनांग ॥
रक्तस्रव परलाप अरु, जिह्वक अरु अभिन्यास ।
वैद्य धन्वंतरि ने कहे, तेरह सान्नि प्रकास ॥

सन्निपात-वृद्धि

होय पहिलतन पित्तबल, सीरो जल पी जाय ।
यहै योग के जुरत ही, ताते उपजत बाय ॥
ता पाछे भक्षण करै, तेल घीव बहु अन्न ।
ताते उपजै कफ बहुत, यो त्रिदोष बल जन्न ॥
जब त्रिदोष तन में भयो, बढ़ै परस्पर वैर ।
सान्नि होइ ताते प्रकट, ईश्वर चाहै खैर ॥

सन्निपात-लक्षण—भुजंगप्रयात

खरी दृष्टि नयनानि लाली झलक्कै ।
रहै नीरभरि कर्णनादं झनक्कै ॥
कहूँ अंक जाड़ो कहूँ दाह जोरं ।
बढ़ै मोह परलाप भ्रमाचित्त घोरं ॥

हृदो नासिका मस्तकं पानपानं ।
मनो आय इन अंग हिम कीन थानं ॥
बढ़ी मस्तकं पीर संधानि हाड़ं ।
भई खरखरी जीभ जनु ज्वाल डाड़ं ॥
धुनै शीश दुख होइ उपजंत कासा ।
शिथिलअंग तृष्णा न निद्रा पियासा ॥
कफं पित्त मुख है स्रवै और लोहू ।
हिये पीर भारी हरै वेगि कोहू ॥
भए दुर्दरा पीर देहंत छीनं ।
कँपै नाक मुख वात विकलंत दीनं ॥
जगै रैनि सारी दिनं भूलि सोवै ।
कहूँ गीत हासं कहूँ नाचि रोवै ॥
कहूँ चुप्पसाधे न हालै हिलायो ।
चलै श्वास कफकंठ घरकंत छायो ॥
घनो स्वेद मलसंग नीठंत भूतं ।
लगै शीत देहं कँपै सो अकूतं ॥
न सूझै कछू ख्याल अति दुःख गातं ।
इते लक्षणं जानिये सन्निपातं ॥
बटेरी लवा तीतरं चालि नाड़ी ।
गई दुत्ति ज्यों जानिये काल ताड़ी ॥

डसो सर्पवारो दबो सुन्नमाहीं।
जिये कै मरै तासु मर्याद नाहीं॥
कहै लक्षणं सन्नि तेरह बखानै।
कहौं भिन्न जाते परो वेगि जानै॥

सन्नि की तेरह मर्यादा—दोहा

सप्तदिवस संधिक दिवस, पंद्रह अंतक जानि।
दाह बीस दिन चित्त-भ्रम, पुनि दशदिन पहिचानि॥
पंद्रह दिन शीतांग दिन, पच्चीसक तंद्रीक।
कंठकुब्ज की जानिए, दिन तेरह भरि लीक॥
तीनि मास कर्णिक दिवस, आठ भग्न दै होय।
रक्त स्रवै बारह दिना, कह्यो है सोरह सोय॥
चौदह दिन परलाप पुनि, अभिन्यास दसपाँच।
अब लक्षणयुत औषधी, कहौं ग्रंथ लखि साँच॥

अलग-अलग तेरह सन्निपात

संधिक-लक्षण—सोरठा

होइ जो कफ को नाश, वायुशोथ तनुशूल उर।
संधिक सन्नि-प्रकाश, ताप होय ता पुरुष को॥
लंघन कहौं प्रमान, सन्निपात संधिक बिषे।
भोजन विष दै खान, तेल सँभालू मर्दिये॥

उपचार

प्रथम बिधारो लेय, देवदारु शुंठी बहुरि।

और शतावरि देय, लहसुन विश्वा जायफल ॥
पुनि गूगर मुरकाय, सब सम काढ़ो कीजिए ।
चौदह दिन लों प्याय, याही विधि करि क्वाथ नित ॥

दोहा

तंडुल कण रोटी करै, श्याम सोंठि पथ खाय ।
खट्टो खारो परिहरै, संधिक सन्नि पराय ॥

पुनः

बाँसाको करि क्वाथ पुनि, ग्रंथक अरु किरमाल ।
आठ तेल अवलेह ते, वातव्याधि को टाल ॥

अंतक सन्नि के लक्षण

अंदर बाहर दाह ज्वर, व्याकुल देही होय ।
हिचकी खाँसी कंपशिर, सर्प डस्यो जनु सोय ॥

उपाय

अति असाध्य यह रोग है, अंतक अति बलवान ।
याको नाहिं उपाय कछु, भेषज धर्म प्रधान ॥

दाह-सन्निपात-लक्षण

कंठ अंग पीड़ा अधिक, दाह श्वास ज्वर शूल ।
चलि बोले अति प्यास जिहि, यहै दाह दुखमूल ॥

प्रतीकार

अभया परपट मोथरा, कुटकी पुनि गिरिमाल ।
दाख क्वाथकरि पीवही, दाह वमन को टाल ॥

पुनः

चंदन मोथा अगर नख, लै कपूर नवनीत।
धूप दीजिए आग पर, मिटै दाह विपरीत॥

चित्तभ्रम-सन्नि-लक्षण—अरिल्ल

पीड़ा भ्रम अति दाह ताप उन्मादही।
विकट नयन मुख हास्य गीत नित वादही॥
विकल शीश परलाप जासुकै जानिए।
चित्त-भ्रम यह सन्नि यहै पहिचानिए॥

प्रतीकार—दोहा

क्षुद्रा निम्ब पटोल पुनि, मोथा चंदन लाल।
तिक्ताभ्रक पद्माक लै, पर्पट घमहा डाल॥
नैपाली शुंठी कही, और बहेड़ा लेय।
पुष्करमूल मँगाय कै, इंद्रयवा सँग देय॥
भारंगी बेसन सहित, करै पान परभात।
आठौं ज्वर मूर्च्छा वमन, दाँत समेत नशात॥
कास श्वास पुनि चित्तभ्रम, तृष्णा हिचकी शूल।
इते रोग या क्वाथ ते, तनु में रहैं न मूल॥

शीतांगसन्निपात-लक्षण

अश्लेषम अँग शिथिल अति, श्वास कास बहुशीत।
अति पियास पुनि छर्दि कफ, ये लक्षण हैं मीत॥

उपचार—गीतिका छंद

तज लौंग केसर त्रिकुटा ब्राह्मी ग्रंथि सोवा चित्रका।

पुष्करी शतावरि शंखाहूली जायफल जावित्रिका ॥
अकरकरा अरु सार अभ्रक तेजबल मुकुलंजनं ।
यह सर्व औषध शुद्ध लीजै और लीजै जो भनं ॥
नागकेसर अरु जवायनि गुड़च ये सम लीजिए ।
दूनी मुनक्का दाख कूटैं टंक गुटिका कीजिए ॥
खाय प्रात जु कुष्ठबृंद मिटाय शक कफ कासनं ।
रोगी लहै सुख चित्तभ्रम शीतांग सन्नि विनाशनं ॥

कंठकसन्नि-लक्षण—दोहा

देहकंप पुनि ताप बहु, शीश कंठ अतिपीर ।
जिह्वा कृश परस्वेद अति, मूर्च्छा मोह अधीर ॥

उपचार—चौपाई

मोथा परवर त्रिफला आनो; देवदारु शुंठी सम जानो
पीलू छालि नींब की आनो; कुटकी त्रयी रासना जानो
लै उशीर घमहा सम भाइ; नेत्र सुबाला अभया ल्याइ
पाठ पीपरामूलहि लेय; मुलहेठी पुनि आनहु तेय
ये सब सम काढ़ो खा प्रात; कंठ कुब्ज की होय जु घात

तंद्रिकसन्नि-लक्षण—दोहा

अतीसार कफ छर्दि भ्रम, जिह्वा श्याम कठोर ।
श्वासकास तनु ताप बहु, नयन द्रवैं नाहिं जोर ॥
कंडू तंद्रा भ्रम वचन, ये तंद्रिक-गुण जान ।
अब ताकी ओषधि सुनो, यथायोग्य परमान ॥

प्रतीकार

अभया पुष्करमूल पुनि, बृहती लेउ मँगाय ।
विश्वामृता भरंगिनी, ककरासिंगी ल्याय ॥
पान करत परभातही, तंद्रिक दूरि पराय ।
और वायु कफ नाश है, दालि मोठ की खाय ॥

अंगद सन्निपात-लक्षण

ज्वर विलाप परलाप बहु, अरु अचेत पुनि श्वास ।
कंठ सोज पीड़ा अधिक, भ्रम पुनि मोह उदास ॥
दृष्टिभंग इन लक्षणहिं, जानहु वैद्य सुजान ।
ताकी अब ओषधि यथा, सो पुनि कहों प्रमान ॥

उपचार—चौबोला

त्रिफला मोथा कटू कंटकी रजनी दोनों लीजै ।
जड़ पटोल अरु नींब आनि सम काढ़ो करिकै दीजै ॥
दृष्टिभंग को नाश होय पुनि कास श्वास भ्रमजाय ।
कंठसोज परलाप मोहभ्रम ऐते रोग नशाय ॥

पुनः दोहा

कणा मिरच मनशिलसहित, जल सों नयननिआँजि ।
तुरत देह को सुख बढ़ै, अंगद को दुखभाँजि ॥

कर्णिक सन्नि-लक्षण—अरिल्ल

कँपै बहुत तन पीर बकै बकबादही ।
कर्णग्रंथ दुखदीह कंठ कफ छावही ॥

मोह श्वास परलाप स्वल्पता जासुको।
उर उत्कर्णिक सन्नि विचारौ तासुको॥

प्रतीकार—दोहा

देवदारु को बाँटिकै, चुरै आँच पै लेय।
कर्णिक के सब सूज को, तुरत बिदा करि देय॥

पुनः

दारु हरद शुंठी अरणि, चीता रास निवास।
बीजपूर जल लेपते, शोथव्यथा को नास॥

पुनः—चौबोला

सोंठि कलौंजी कुरथी आनौ और कायफल लीजै।
लेप गुनगुनौ कर्णमूल को बार बार करि दीजै॥

पुनः

सोंठि शतावरि अरणी रासन देवदारु को आनौ।
लेपो डारि बिजौरे की जड़ कर्णमूल तजि जानौ॥

रक्तस्राव-सन्निपात-लक्षण—दोहा

रक्त स्रवै मुख नासिका, छर्दि ताप-उर-शूल।
अरुचि होय परलाप पुनि, अतीसार दुखमूल॥
हिचकी जिह्वा कास पुनि, श्वास होय मुख ताहि।
रक्तस्राव को जानिबो, इन लक्षण ते आहि॥

प्रतीकार

चंदन लै पद्माक पुनि, नेत्रबाल को ल्याहि।
तज इलायची कायफल, नन्हीं जड़ सम ताहि॥

बाल्यो और प्रियंगु लै, धवै फूल सम आन।
मिश्री सोरह भाग लै, करि पूरण परिमान॥
पंच टका परभातही, खातै रक्त थँभाय।
वैद्य-प्रिया या ग्रंथ में, भाषी रुचिर बनाय॥

पुनः

भेदपषाणहिं आनिकै, गो-घृत सों दे नास।
रक्त स्रवै मुख नासिका, ताको करै विनास॥

पुनः

धनियाँ और पटोल पुनि, तंडुल जल में बाँटि।
रक्तसान्नि के रोग की, नाश वेगि जड़ काटि॥

प्रलाप-सन्नि-लक्षण—अरिल्ल

अंतर बाहर दाह कंप परलापहू।
कंठपीर बहु होय सोज पुनि दापहू॥
बहु चिंता सो करे सुरति नहिं थिर रहै।
सन्निपात परलाप के यह लक्षण कहै॥

प्रतीकार—पद्धरी छंद

लै शुंठी हींग अरु चिंच बिडंग।
सेंधव जीरो चित्रक भरंग॥
पीपरै कूट मिरचै मँगाय।
अजमोद चिरातो शिवा ल्याय॥

एक एक चिरायता भाग लेय।
गुरु दूनों सबते तौलि लेय॥
गोली करि पूंगीफल समान।
तब प्रात रोगिये देय खान॥
जैहैं चौरासी वायु अंग।
परलाप सन्नि दुख होय भंग॥
पुनि वायुगुल्म नाना प्रकार।
सब अरस भगंदर को विकार॥
कफ वात पित्त को दोष जाय।
अरु कंठरोग जैहैं पराय॥
विस्फोटक मंत्र अरु यंत्र तंत्र।
राक्षस पिसाच भूतो प्रयंत॥
थावर जंगम विष करणमूल।
अजीरण विसूची हरणशूल॥
येते शरीर ते रोग जायँ।
ज्यों सिंह देखि गजगण परायँ॥
करि नेम नित्य बंध्या सुखाय।
तो पुत्र होय सब सुक्खदाय॥
यह वैद्य धन्वंतरि भाषि दीन।
करि देय रुचिर औषध प्रवीन॥

जिह्वकसन्नि-लक्षण—अरिल्ल

कंठ सु होय कठोर जीभ तालू लगैं।
कास श्वास परकास नयन निशि दिन जगैं॥
नयन लाल ज्वर जोर इते लक्षण गिनै।
ऐसी विधि सनिपात कहै जिह्वक भनै॥

प्रतीकार—दोहा

त्रिकुटा तिक्ता पीपरा, लेकर मेलि समान।
घृत सों चूरण खाइयो, जिह्वकसन्नि परान॥

पुनः

पीपल मिरच चिरायतौ, सेंधव नोन पिसाय।
बीजपूर रस डारिकै, खावै सानि न रहाय॥

पुनः

सोंठि मिर्च पुनि इंद्रयव, अकरकरा मँगवाय।
बीजपूर रस लेपिये, तुलसी बीज जमाय॥
जिह्वा कोमल लेपते, तुरत होय पर दीन।
लेप यहै लुकमान ने, अति नीको कहि दीन॥

अभिन्न सन्निपात-लक्षण—अरिल्ल

वात पित्त कफ नींद बहुत जेहि आवही।
वदन चीकनो होय विकलता भावही॥
बोलै वचन कठोर कछू नहिं जानिए।
इन लक्षण ते वैद्य अभिन्नहि मानिए॥

प्रतीकार—दोहा

गुड़च भरंगी अंडजड़, वासा लेय कचूर।
लेय कलौंजी सम सबै, कल्क करै यह मूर॥
टंक दोय गोमूत्र सों, प्रात नियम सों देय।
भिन्न सन्नि को बल हरै, अंग पीर हरि लेय॥

हारिद्रक सन्निपात-लक्षण

तित्ता अभया पीपरै, और अतीस मिलाय।
कंटारी रस गोटिका, बेर समान कराय॥
प्रात साँझ के खातही, पीर हरिद्रक जाय।
कहि अश्विनीकुमार ने, सुंदर यहै उपाय॥

कालरस संन्यादि सर्व रोगों पर—तोमर

पारा सुगंधक आनि। विष सिंगिया पहिंचानि॥
मिरचै सुहागा लेउ। पुनि जायफल धरि देउ॥
बीजा धतूरा बंक। ये तीन तीन सुटंक॥
दश टंक पीपरि डारि। सब खरलि घटिका चारि॥
रसरती एक कि दोय। माशो भरो कै सोय॥
बल देह को लखिलेय। तैसो समुझि करि देय॥
भ्रम-चित्त-सन्नि जरेय। शीतांग को हरि लेय॥
मूर्च्छा जुवायु बिलाय। इमि काल-रस गुण आय॥

और कालरस

लै अकरकरा हि मँगाय। मिरचै अफीम जुल्याय॥

महिहर सुधा घृत लेय। पुनि कनकबीजा देय॥
सम खरलिये रस पान। करि गुटी उरद प्रमान॥
अब तासुगुणनिबखानि। होय सन्नि तेरह हानि॥
ज्वर द्वादशो तजि जाय। अरु असी बायु नशाय॥
शीतांग गुल्म प्रमेह। अरु कास श्वास तजेह॥
पुनि पान-रस सों सानि। बीछी बिषे पहिंचानि॥
तँह लेपिए हित पाय। विष तुरत जाय नशाय॥
यह दूसरो रस काल। दुखहरण परम कृपाल॥

सर्व रोगों पर लोकसुदर्शन-रस—चौपाई

पारौ विष सुबंग हरतार ; त्रिकुट सुहागा त्रिफला रार
गंधक हरड़ तौलसम लेय ; दिन दो घालि खरल में देय
गोली चना-प्रमाण कराय ; रक्तवात को गोली खाय
तेरह सान्नि रक्त हू वात ; कफ मूर्च्छा न रहै कहुँ गात

रस

पारो विष जयपाल चिताह ; टंक टंक प्रति जीरो स्याह
अद्रक-रस में सबै मिलाय ; पहर चारिलौं खरलै ताय
खात रती भरि रोग नशायँ ; नाम बहुत से गिने न जायँ

सान्नि पर कलिकामत

विष त्रिकुटा युत बंग मँगाय ; द्वै अजवायनि पीसि छनाय
दो दो टंक सु औषधि लेउ ; एक टंक विष तामहिं देउ
खरलि धतूरा सों इक याम ; बहुरि एक अद्रक रस ताम

चूरण देय रती पुनि चारि ; वात शीतज्वर देय निकारि
शीत जाय उष्ण ह्वै देह ; सर्व कफज्वर नाशै येह
जाके गुण विचित्र सुख लहौ ; महादेव यह चूरण कहौ

पुनः—अरिल्ल

त्रिफला त्रिकुटा हींग कटू बच ल्याइये ।
पीसि जु सेंधो और सिरस फल चाहिये ॥
सरसों लेय समान बाँटि दृग आँजिये ।
अजा मूत्र के संग इते दुख भाँजिये ॥
मृगीरोग सनिपात जाय उन्मादसो ।
तिमिर रोग निशिअंध भूतभ्रम वादसो ॥

पुनः—दोहा

कुमकुम और चिरायतौ, अकरकरा सुमँगाय ।
पीपल अद्रक नीर सों, टंक दोय नित खाय ॥
सन्निपात उन्माद कफ, तंद्रा मारुत कास ।
शीशशूल भ्रममोहज्वर, इनको करै विनास ॥

पुनः—अरिल्ल

पीपल पुष्करमूल कलौंजी आनिये ।
ककड़ासिंगी और कायफल जानिये ॥
ल्याइ जवासो बाँटि छानि चूरण करै ।
डारि सहत में चाटि सन्नि को सो हरै ॥

कंठरोध पुनि कास मिटै बहु बासही।
हिचकी तनु ते जाय करै कफ नाशही॥

पुनः

बच चिरायतौ और कायफल लीजिये।
कूटौ कुटकी संग कलौंजी दीजिये॥
ज्वर त्रिदोष को जाय अंग मर्दन करै।
और अंग परस्वेद सन्नि तनुते हरै॥

पुनः

त्रिकुटा पुष्करमूल कलौंजी ल्याइये।
कुटकी कुड़ा कचूर किरात मँगाइये॥
हरद लोध सम पीसि छानि चूरण करै।
सन्निपात ज्वर स्वेद रोग धूरा हरै॥

पुनः—दोहा

कुल्थी भूँजि पिसायकै, मरदै सगरे अंग।
सन्निपात ज्वर स्वेद को, करै देह ते भंग॥

पुनः—प्रिया छंद

त्रिफलासों कुटकी लीजिये। दो हरद तामें दीजिये।
पुनि दल पटोल मँगाइये। सम मुस्तकाको ल्याइये॥
लै नींबछाल मँगाइये। इन क्वाथ करिकै प्याइये।
चैतन्य ह्वैहै गातजू। ज्वरसन्निपात बिलातजू॥

पुनः—दोहा

बच पीपल सैंधव सहित, अरु महुआ को सार।
बाँटि नास दीजै तुरत, चैतन होय सम्हार॥

पुनः—नाराच छंद

पित्तपापरो मँगाइ सोंठि कूट आनिये।
श्वेत स्याह जीरकं कुलात्थिका बखानिये॥
फलं कटूक ल्याय आजमोद या जवायनं।
मूलपीपला मँगाय राख कौड़ियाभनं॥
कीजिये एकंत छानि सर्व अंग मर्दनं।
सन्निपात जोर होत ताहि मारि गर्दनं॥

पुनः—दोहा

सोंठि बिड़ंग चिरायतो, सौंफ कचूर मँगाय।
बच-युत मर्दत देह को, संधि-पीर मिटि जाय॥

पुनः—चौबोला

बच चिरायतो कुटकी लहसुन तिगुनो लेय मँगाय।
कूट कायफल त्रिकुटा हीरा हींग भाग त्रय भाय॥
अजवायनि दो भाग मँगावै यमराशी के पत्ता।
बकरा की पेशाब कलौंजी बाँटै सम करि तत्ता॥
तेरह सन्नि मिटैं तनु मर्दत भ्रम मूर्च्छा अरु दाहा।
हाथ पावँ सीरे उन्मादी सब तनुते निर्बाहा॥

उठे खाट ते भगि भगि चालै हालौहलै न सोय।
टेरे सुनै न ताको मर्दत तुरत सचेतन होय॥

पुनः— चौपाई

अजवायनि अरु कौड़ीखाख; अरु लीजै कंडा की राख
सन के बीज चना भुँजवाय; कुल्थी कोदों दोऊ ल्याय
चूना बान पुरानो लेय; खात आनि त्यौरानो लेय
या विधि धूरा सूखो करै; सन्नि पसीना सबको हरै

पुनः कनक सुंदरी—अरिल्ल छंद

मिरच पीपरै सोंठि सुगंधिक आनिये।
पारद विष सब तौलि टंक प्रति जानिये॥
कनकमूल त्रय टंक बाँटि चूरण धरै।
भृंगराज-रस सानि खरल त्रय दिन करै॥
गुंजा के परमाण सुगोली कीजिये।
रोगी को परभात खान को दीजिये॥
मंदागिनि उन्माद सन्नि शीतांगही।
भ्रम कफ हिमज्वर जाय वेगि या संगही॥

पुनः—दोहा

मोथा धना चिरायतो, कटू इंद्रयव जानि।
सोंठि देवतरु मूलदश, अरु गजपीपलि आनि॥
क्वाथ जुकरिकै पीजिये, सन्निपात ज्वर जाय।
तंद्रा हिचकी वमन कफ, कास श्वास मिटि जाय॥

पुनः

मोथा सोंठि चिरायतौ, कटू गिलोय मिलाय।
क्वाथ जुकरिकै पीजिये, सन्निपात ज्वर जाय॥

पुनः

कुमकुम लौंग जु पीपरे, अकरकरा जु मिलाय।
अद्रक-रस सों पीसिकै, टंक एक जब खाय॥
सन्निपात उनमत्त कफ, तंद्रा मारुत कास।
शीत शूल भ्रम मोह ज्वर, इनको करै विनास॥

पुनः

गंधक पारद पीपलै, मिरचै जीरे दोय।
पंचलवण अरु खार विष, अभ्रक शुंठि जु होय॥
अद्रक-रस सों पान सों, सब ओषधि पुट देय।
परमिति चना प्रमाण ही, गोली सुमति करेय॥
रस चिंतामणि यह कहौ; करै नाश सनिपात।
आम बवेसी शूल कफ, होय विषमज्वर घात॥

सोरठा

लक्षण अरु प्रतिकार, बरणे तेरह सन्नि ये।
रस बहुते सुखकार, वैद्यप्रिया याते रुचिर॥

तीसरा शृंगार

अतीसार, संग्रहणी, अर्श, भगंदर और अजीर्ण रोगों की वृद्धि, लक्षण और प्रतीकार

अतीसार-वृद्धि—अरिल्ल

जठर अग्नि बलहीन नीर मल संगही।
होय पवन आधीन करै दुख अंगही॥
स्रवै बारही बार करै दुर्गंधही।
अतीसार छह भाँति असन निरबंधही॥

अतीसार-लक्षण—चौबोला छंद

हाथ पावँ बहु तपैं स्वेद बहु अरुचि प्यास बहुताय।
हृदय जरै अति शीतल चाहै मुख फीको परिजाय॥
नासा चपल अति विकल हीनबल ये लक्षण अतिसारा।
या विधि समुझि वैद्य ज्ञानी करि पाछे दे उपचारा॥

अतीसार-प्रतीकार—त्रिभंगी छंद

धनासोंठि मोथा सुबेरं उशीरं। करै क्काथ परभात पीवंतधीरं
पचै अन्न दीपंत मेटंत शूलं। जरै आँव उररोग मेटंत मूलं

दोहा

चूरण चित्रक सहत सँग, करै रोगि दिन सात।
रक्तपित्त बहु दिनन को, अतीसार को घात॥

पुनः

मोथा कुड़ा उशीर पुनि, चंदन रक्त अतीस।
पाठ धाय के फूल लै, दाड़िम क्वाथ करीस॥
पिये प्रात उरदाह पुनि, रक्त आँव उरशूल।
अतीसार या क्वाथते, तनु म रहै न मूल॥

पुनः

कूटै बकला कुरे को, चावल धोवन संग।
गोली करि जामूनि के, पात लपेटै रंग॥
कुश सों ताहि लपेटिकै, माटी सानि मँगाउ।
गोली करि दै आँचमें, लाल भये निकसाउ॥
ताको रस लै बाँटिकै, सहत संग नित खाय।
अतीसार के हरण को;यह ओषधि सुखदाय॥

पुनः

सोंठि अंड के रंग में, पीस करै पुटपाक।
शूलअरुचिअतिसार को, मधुयुत चाटि निसाक॥

लीलावती की गुटिका

लोध मुलहठी धाय पुनि, दाड़िम कली मँगाय।
माई मिरचै मस्तगी, गुठली आम निकाय॥
माजूफल लै मोचरस, कुड़ा जायफल आन।
वंशलोचना और पुनि, कीकर फूल बखान॥
क्वाथ भाग सम लीजिये, चौगुण पाठा बीज।

पुस्ता जल सँग बाँटिके, टंक गुटी करि लीज ॥
तंडुल जल सों दीजिये, पथ्य मठा अरु भात ।
अतीसार ज्वर तुरत ही, तनुते करै निपात ॥

गंगाधर-चूर्ण

मोथा अरल सोंठि पुनि, बेलु अतीसै आनि ।
धायफूल अरु मोचरस, लोध लजालू जानि ॥
लोचनबाला इंद्रयव, पाठ आम के पात ।
मधु-सँग तंडुल नीर सों, खाय बड़े परभात ॥
मठा भात भोजन करै, अतीसार की हानि ।
गंगाधर चूरण यहै, भाखो रुचिर बखानि ॥

पुनः

आममिंगीअरुजायफल, कुड़ा अफीम मँगाय ।
लेपै जल घिसि नाभि पर, अतीसार थँभि जाय ॥

पुनः

बाँटि अतीस अफीमसम, जलयुत नाभि लगाय ।
अतीसार या लेपते, वेगि बिदा हो जाय ॥

पुनः

अजमोदा अरु मोचरस, सोंठि धाय के फूल ।
छाछ-संग पिउ ना रहै, अतीसार को शूल ॥

पुनः

मोथा बेलु अतीस पुनि, नेत्र इंद्रयव लेय ।
क्वाथ पियत शोणित-सहित, अतीसार हरि लेय ॥

पुनः

धायबेलि मोथा कुड़ा, लोध मोचरस आनि।
गुड़ सँग गोली खात ही, अतीसार ज्वर हानि॥

पुनः

सैंधव शिवा अतीस बच, सोंचर हींग मिलाय।
अतीसार ज्वर आँव को, तप्त नीर सँग प्याय॥

पुनः—पद्धरी छंद

जाठौनिपाठकुटकी मँगाय। धवकुसुमआँवलेमुस्तल्याय
पुनि बेलु आमजामूनि बीज। सम सोंठि इंद्रयव लोध लीज
पारौ अतीस तिनके समान। समबाँटि खरलमहँ वस्त्रछान
दधिसंग टंक दो खाय लेय। ज्वर अतीसार नहिं रहन देय

पुनः—दोहा

बेल-सहित गुड़ सेवही, आधे जल अनुमानि।
कास श्वास ज्वर वमन पुनि, शोथ मूर्च्छा हानि॥
आमवात बेबंधविट्, और कृच्छ्र के शूल।
हिचकी अनरुचि व्याधि ये, तनुमें रहै न भूल॥

पुनः

गुड़ा सोंठि मिलवै धना, औरे रात अतीस।
पादसहित यह पीजिये, अतीसार ज्वर खीस॥

पुनः

बेल मोचरस धवकुसुम, धना इंद्रयव लोध।
सोंठि तक्र गुड़सों पिये, अतीसार मिटि शोध॥

पुनः

सोंठि मोचरस धव कुसुम, अरु अजमोद पिवाय।
तक्रसहित कै पान सों, अतीसार मिटि जाय॥

पुनः

पानी हँड़िया मेलि कै, ज्यों ज्यों औटि पिवाय।
वाके पानी पियत सों, अतीसार थँभि जाय॥

पुनः—चौबोला

मुरदासन लै शर मोचरस भंग जायफर ल्याइ।
पाँच पाँच ये टंक मँगावै आफू टंक अढ़ाइ॥
सब सम मिलवै गोली बाँधै पाँच टंकभरि खाय।
सातैं तीनि खाय जो रोगी अतीसार मिटि जाय॥

पुनः

गूदो बेल गादि सेमर की खैर पापरी ल्यावै।
शर खाँड़ सब समकरि औषध चूरण सरस बनावै॥
पलभरि प्रात खान को दीजै उर गर्मी मिटि जावै।
लोहू आँवँ रक्त अतिसारा ये सब वेग नशावै॥

पुनः—चौपाई

पाढ़ अतीस कुरे की छालि; कटू इंद्रयव मोथा घालि
रसौंत सोंठि धाय अरु बेल; इनको चूरण करिये मेल
चावल के धोवन सँग खाय; रक्त आँव संग्रहणी जाय
अरस निठाई सहित नशाय; सिंह नृपति यह दई बताय

पुनः—दंडक

आम की गुठली पुरानी की मिंगी लेय आँवरे पुराने अरु खाँड सँग लिजिये । तीनों ये तीस टंक बेल गूदो पाँच टंक रार आनि पाँच टंक चूरण शुभ कीजिये ॥ खाय दिन सात दो कर्षभरि संयम सों खैबे को पथ्य दालि चावल को दीजिये । रक्त अतीसार जाय खूनी बवासीर और आँवशूल ग्रहणी की प्रबल पीर छीजिये ॥

पुनः—दोहा

त्रिकुट घामरो इंद्रयव, निम्बु किरात अतीस ।
दारु हरद चित्रक कटू, पाढ़ आनि सम पीस ॥
कुरोछालिसबसमखरल, मधु सों देय चटाय ।
अथवा सौंठी नीर सँग, अतीसार ज्वर जाय ॥

पुनः—पाचन

देवदारु शुंठी धना, और कटेरी दोय ।
अतीसार पचि जाय तब, काढ़ो पीवत सोय ॥

संग्रहणी-वृद्धि—दोहा

बालापन अति लाड़-वश, बहु गुरिआई खाय ।
रक्त परै सो आँत उर, अति पतरो ह्वै जाय ॥
गिरिहि संधि सब टूट ही, रक्त प्रवाह अधीर ।
संग्रहणी तब होति है, करहि उदर में पीर ॥

संग्रहणी-लक्षण

कंठसूख उरदाह पुनि, अरुचि तृषा पर प्रीति ।

अन्न अपच लोहू गिरै, निर्बल होय सभीति ॥
नाक शब्द बोलै बहुरि, नाड़ी चंचल जानि।
संग्रहणी इन लक्षणन, वैद्य लेत पहिंचानि ॥

संग्रहणी-प्रतीकार

सोंठि बेल मोथा धना, लोचनबाला आनि।
आँवशूल ग्रहणी हरै, यह काढ़ो सुखदानि ॥

पुनः

मोथा गुर्च अतीस पुनि, सोंठि तप्त जल पीस।
खाय शूल ग्रहणी अरुचि, आँव रोग करि खीस ॥

पुनः

लोध लजालू पाढ़ धना, मोथा बेल अतीस।
सोंठि गुर्च लोचन कुड़ा, धाय ल्याय सम पीस ॥
क्वाथ पिवावै प्रात पुनि, अरुचि सँग्रहणी शूल।
दीजै ओदन तक्र सँग, होय रोग निर्मूल ॥

पुनः

धना अतीस गिलोय सत, सोंठि पीसि नित खाय।
मंदअग्नि अरु आवँ-दुख, संग्रहणी कटि जाय ॥

पुनः

घृतसँग शुंठी कल्क नित, खात कास अरु श्वास।
वायुबेगि संग्रहणि को, येते रोग बिनास ॥

पुनः

सोंठि बेल चित्रा धना, चाब बाँटि कर चूर।

पानि तक्र के संगही, करि संग्रहणी दूरि ॥

पुनः

चूरण चित्रा मिर्च को, सहत तक्र करि खाय ।
गुल्म पिलीहा उदर-दुख, संग्रहणी मिटि जाय ॥

पुनः

बेल इंद्रयव मोचरस, मोथा सम घृत खाय ।
अतीसार संग्रहणि उर, रुधिर आवँ मिटि जाय ॥

पुनः

छालि कुरे की इंद्रयव, कुटकी पाढ़ मँगाय ।
मोथा बेल रसौंत पुनि, धायफूल लै आय ॥
सोंठि अतीस जु पीसिकै, सब सम बस्तर छान ।
चावल धोवन सों सहत, मिलै दीजिये खान ॥
अरस गुदा की पीर सब, संग्रहणी अतिसार ।
या औषध के खातही, इते रोग निरधार ॥

पुनः—अरिल्ल

सोंठि कटाई बेल लजालू आनिये ।
कुरे आम की छालि इंद्रयव जानिये ॥
मोथा लोध उशीर अतीसहि लीजिये ।
और मोचरस लेय तौलि सम कीजिये ॥
सोना बहुरि मँगाय बाँटि सम छानिये ।
चावल धोवन सहत कर्षभरि सानिये ॥

खात रक्त अतिसार सँग्रहणी ना रहै।
यह चूरण दुखहरण बड़े मुनिजन कहै॥

पुनः—दोहा

धना सोंठि सामस बहुरि, बेल जु और सलौन।
क्राथ देत संग्रहणि उर, राखनवारो कौन?

पुनः

बेल पाढ़ कुटकी धवै, फूल रसौंत अतीस।
जाती बिश्वा मुस्तका, कुड़ा ल्याय सम पीस॥
क्राथ जु चावल नीर सों, कर्ष बराबरि खाय।
संग्रहणी अरु उदर दुख, तन ते वेगि पराय॥

पुनः

मोथा सोंठि अतीस पुनि, गुर्च संगकरि क्राथ।
संग्रहणी अतिसार दुख, जाय आवँ यक साथ॥

पुनः

सोंठि धना के फूल अरु, मोथा बेल मँगाय।
छालि कुरौ अरु इंद्रयव, कुटकी पाढ़ जु ल्याय॥
मेलि अतीस रसौंत पुनि, चूरण सरस बनाय।
चावल जल सों घोरिकै, सहत डारिकै खाय॥
पित्त संग्रहणि अरुचि अरु, गुदाभ्रष्ट अतिसार।
नागरादि चूरण हरै, इते रोग निरधार॥

पुनः—चौपाई

शोधव विष यकटंक मँगाय; पारो टंक दोय शुधवाय

चारि टंक लै रुचिर अफीम ; टंक आठ पीपरि की सीम
गंधक टंक दशक लै आउ ; बीज धतूरे बीज शोधाउ
सात टंक कौड़ी बरवाय ; खरल मध्य लै सकलपिसाय
तीनि रतीभरि रस यह खाय ; अनोपान करि सहत मिलाय
कैजारे के साथ खवाय ; संग्रहणी अतिसार नशाय
आमाशय सब रोग बिलाय ; भूख बढ़ै नर अति सुख पाय

पुनः

एक और मत सुंदर आय ; सो तुम वैद्य करौ हठि चाय
लेय मठा दिनप्रति मँगवाय ; सो पुनि ताको देय पिवाय
मन भावै तितनो पी लेय ; और कछू न खान तेहि देय
जिते दिनानि में मल बाँधि जाय; तौलौं केवल मठा पिवाय
अन्न बस्तु कछु खान न पावै ; जो खैहै तौ मल बिचलावै
संग्रहणी याको रुकि जावै ; क्रम क्रम सों तब मठा बढ़ावै
एकहि बेर न छोड़ै ताहि ; ताते नाहिं बिकार हो जाहि

अरस-रोग-वृद्धि—दोहा

मिष्ट शीतल चीकना, रूखौ तिक्ता खाय ।
आमवात परचंड अति, ताके उर अधिकाय ॥
उष्ण खाय तब कफ बढ़ै, सोवत ही पुनि पित्त ।
इमि त्रिदोष लोहू उमड़ि, बसै गुदा करि हित्त ॥
गुदा मध्य तब माँस के, अंकुर जमै कठोर ।
कहे अरस छह भाँति के, लक्षण कहौं बहोर ॥

अरस-लक्षण—अरिल्ल

हाथ पाँव मुख गुदा पीर पुनि सोजही।
हृदय पशूलिनि पीर होय दुख रोजही॥
रुधिर गुदा हो स्रवै कंडु तृष्णा बढ़ै।
औषध सो नहिं जाय तौ सुख काटै कटै॥

अरसरोग-उपचार—दोहा

मिर्च एक दो शुंठि पुनि, चित्रक भाग सुचारि।
आठ भाग सूरन बहुरि, सब समान गुड़ डारि॥
गोली पैसा भरि करै, खात गुल्म अरु कास।
श्लीपद अरस मिटावही, उदर अग्नि परकास॥

पुनः—चूर्ण

पैसाभरि लै लायची, तज दुइ पैसा डारि।
पत्रज पैसा तीनिभरि, गजकेसरि पुनि चारि॥
मिर्च पाँच पैसा भरी, पीपरि छह भरि आनि।
सोंठि सात पैसा भरी, बाँटि औषधै छानि॥
सब सम मिश्री डारिकै, देखि रोगिये खान।
अरसअरुचि हिय रोग पुनि, गुल्म शूल की हान॥

पुनः

जैसे कोढ़ विनास को, खैर बिजौरो जान।
अरसहरण को तैसही, भिलमा कुरो बखान॥

पुनः

शोरा हरदी सों मिटैं, सब प्रमेह के रोग।
त्यों गुद अंकुश अरस को, साजी चित्रक योग॥

पुनः

सूरन सोरह भाग पुनि, चित्रा आठ विवेक।
चारि भाग शुंठी कही, मिर्च भाग लै एक॥
बाँटि छानि चूरण धरै, समगुड़ गोली खाय।
सातरोज करि नियम सों, अरस रोग मिटि जाय॥

पुनः

सेंधव दधि के नीर में, बाँटि बीज देवदारु।
गुद अंकुर पै लेप दै, अरसरोग निरधारु॥

पुनः

केसरि नैनू खाँड़ के, तिल नैनू नित खाय।
खाय दही शक्कर मठा, अरसरोग मिटि जाय॥

पुनः

सेंधव शुंठी इंद्रयव, अरलू चित्राबेलि।
चूरण पीवै तक्र सों, रोग बवेसी ठेलि॥

पुनः

कुड़ा सोंठि बच मूशली, सूरन लेहु मँगाय।
पीसि छाँछि पीवहि तुरत, अरस वेगि टरि जाय॥

पुनः

पीवै पीपरि डारिकै, मठा मधुर नित कोय।

देवदारु के क्वाथ सों, नित गुद डारै धोय ॥
दै धूनी देवदारु की, करै नेम दिन साठि।
तौ ताके गुदमध्य में, जरै अरस की गाँठि ॥

पुनः

त्रिफला त्रिकुटा तेजबल, कूठ लायची आनि।
ले ग्रंथिक तालीस पुनि, औरै विद्या जानि ॥
न्यारी न्यारी सब करै, चारि चारि लै टंक।
मिलवाँ शोरा चित्रका, बिडँग शतावरि अंक ॥
आठ आठ सो टंक ये, चूरण आनि बनाय।
सब ते दूनों आनि गुड़, इनमें देहु मिलाय ॥
घीउ टंक दश मेलिकै, गोली टंक सुपाँच।
खाय नित्त तनते मिटै, रोग बवेसी आँच ॥

पुनः

गजकेसरि मिश्री मिलै, चूरण सम करि खाय।
सातै तीनि सुटंक द्वै, देत बवेसी जाय ॥

पुनः

पानदुधी के राधि कै, सात दिवस लगि खाय।
साँठी चावल गोद ही, खात अरस गिरि जाय ॥

भगंदर-वृद्धि

लोहू उमड़ै देह को, काम धातु बहु होय।
दाना परते धातु को, अस्तंभन करि सोय ॥

अमरी जवरी के बिषे, भरै आनिकै सोय।
तबै रक्त के जोर ते, पाकै फूटै होय॥

लक्षण

मल फूटै पेशाब के, अति दुख होय शरीर।
जाते भारी ताप पुनि, कर पद तस अधीर॥
अति दुख पावै देह में, तृषा बहुत-सी आहि।
पंडित लेहु विचार कै, कहत भगंदर ताहि॥

भगंदर-उपचार—चौबोला छंद

दंडीहरद आमरे जलसँग लेपत दुख नहिं होवै।
लै त्रिफला-रस अस्थि बिलारी लेप भगंदर खोवै॥
सेंधव सोंठि हरद षटपल्लव जायपत्र मिलवेई।
जाय भगंदर जलसँग बाँटै लेप लगावै येई॥

पुनः—चौपाई

त्रिफलातोलितीनिपलआनो; कृष्णाबहुरितीनिपलजानो
गूगर पाँचै पल लै धरो; चारि टंक भक्षण नित करो
गोली खात भगंदर नाश; गुलमशोथ अरु अरस-विनाश

पुनः—दोहा

पुनर्नवा मिलवै बहुरि, सोंठि रीठ बरपात।
पीसि भगंदर लेपिये, तो फोड़ा मिटि जात॥

पुनः

तिल मँजीठ सेंधव सहत, गजकेसरि जु निसोत।
घृत दात्यूनि लगाय लै, फिरि न भगंदर होत॥

पुनः

करहारी दात्यूनि अरु, कुरौ हरद अरु आक।
बीजपूर के बीज अरु, नोन तेल करु पाक॥
इनको कलक बनायकै, तेल बनावै ऐन।
तेल लगाये ते मिटै, रोग भगंदर चैन॥

अजीर्ण-रोग की वृद्धि

वात सहसरस वृद्धि ते, विषमअशनकफपित्त।
अब ताके लक्षण कहौं, होत अजीरण हित्त॥

अजीर्ण-लक्षण

अधिकअरुचिमुखवमनपुनि, बोझिलअरुमुखलाल।
नाड़ी ताकी परखिये, सिंह ठवानि की चाल॥
अति डकार सूखैं अधर, दशन मलिन अति होय।
ऐसे लक्षण निरखिकै, कहौ अजीरण सोय॥

अरुचि-अजीर्ण-प्रतीकार—दोहा

एक भाग पुनि सोंठि लै, सैंधव दोय मँगाय।
तीनि भाग गंधक कहौ, लीजै बाँटि छनाय॥
निंबू रस चूरण तबै, एक प्रहर मर्दाय।
सवा टंक भरि प्रातही, करि संयम सों खाय॥
उदर अग्नि बाढ़ै बहुरि, जाय अजीरण सोय।
बढ़ै भूख नाशै अरुचि, दीपन पाचन होय॥

पुनः

सोंचर पीपरि हरड़ सम, बाँटि छाँछि में देय ।
मिटै अजीरण अरुचि पुनि, गुल्मवात हरि लेय ॥

पुनः

जीरे दोऊ सोंठि पुनि, पीपरि मिर्च समान ।
सेंधव पुनि अजमोद लै, बाँटि लेय तब छानि ॥
चूरण ते आठों हिसा, हींग भूँजि कै लेय ।
चूरण भोजन भात घृत, पहल खान को देय ॥
वात रोग तनते मिटै, उदर अग्नि अधिकाय ।
अरुचिहु मिटै क्षुधा बढ़ै, और अजीरण जाय ॥

पुनः

एक हींग दो बच कही, तीनि पीपरै आनि ।
आदौ चारि विभाग तहँ, पाँच जवाइनि जानि ॥
लै हरीत छह भाग पुनि, चित्रा सात सु लेय ।
आठ कूट चूरण दही, छाँछि संग तब देय ॥
कै मदिरा जल तप्त सों, खाय बड़े परभात ।
अरुचिअजीरणवातदुख, करै पिहल को घात ॥
गुदाचित्त वेदनि हरै, करै उदर सुखधाम ।
याचूरणकोमुनिजनानि, कह्यो अग्निमुख नाम ॥

पुनः

कै गुड़सँग कै सोंठिसँग, कै सेंधव सँग खाय ।
हरड़रोग जो रहत दिन, उदरअग्निअधिकाय ॥

पुनः

तीनों सम लै खाइये, हरड़ पीपरै शुंठ।
नाशै रोग त्रिदोष बहु, बढ़ै अग्नि उर कंठ ॥

पुनः—सवैया

पीपरि चित्रक चाब मँगाय हरीतकि पीपरामूल बखानो।
सोंठि कही पुनिसेंधव नोन सबै सम बाँटिकै चूरण छानो॥
खाय प्रभात बड़ेदो टंक विलाय अजीरण रोग पुरानो।
है यह निर्मल चूरण चारु कह्यो बड़वानल नाम बखानो॥

पुनः

पीपरि सोंठि हरीत बिड़ंग शतावरि संग तबै बच लीजै
और कह्यो विष लैकरि शोधि बहेरन भिलम साथ धरीजै
गायकेमूत्र सों बाँटि बनाय गुटी घुँघुची भरि तौलिकै कीजै
एक ते भाग बढ़ाय अरुचि के सर्पहि सन्न को लै करिदीजै

पुनः—दोहा

जवाखार सम सोंठि लै, प्रात घीउ सों खाय।
भूख लगै अति रुचि बढ़ै, अन्न तुरत पचि जाय ॥

पुनः

सेंधव सोंठि बिड़ंग पुनि, मिर्च पीसि सम छानि।
तप्तोदक सों दीजिये, होय अरुचि की हानि॥

पुनः

अभया सोंचर सोंठि पुनि, पीपरि बायबिड़ंग।
हींग शतावरि लीजिये, अरु अजमोदा संग ॥

मोथा डारि मँजीठ पुनि, करि चूरण नित खाय।
शीतल जलसों टंक द्वै, अन्न तुरत पचि जाय॥

बड़वानल-चूर्ण

अभया शुंठी पीपरै, चित्रा बायबिड़ंग।
लीजै पत्र करंज के, और बहेरे संग॥
दूनी मिश्री डारिकै, टंक तीनि नित खाय।
अन्न बहुरि भोजन करै, सो पचि तुरत नशाय॥

पुनः—दंडक

छेरी के मूत में समफल चुरै जु लेय त्रिकुटा लायची शतावरि को लीजिये। खुरासानी अजवाइन जीरे द्वौ तंतरीष जातीफल जायपत्री अजमोदा दीजिये॥ त्रायमान अजवाइनि त्रिफला बिड़ंग चूक लौंगें अरु दाड़िम के बकलनि सों रीझिये। पाँच पाँच टंक ल्याय निंबु-रस सेर एक औषधिपीसि सबै चूरण शुभ कीजिये॥

दोहा

बड़वानल चूरण यहै, तीनि टंक नित खाय।
क्षुधा बढ़ै बहु गुण करै, अरुचि अजीरण जाय॥

पुनः

गंधक सेंधव लेइ सम, तिन सम शुंठी पाय।
निम्बू रस की तीनि पुट, छायामाँझ सुखाय॥
भखै गुटी बड़ बेर सम, शूल अजीरण जाय।
पचै अन्न मूर्च्छा वमन, वायुगोल मिटि जाय॥

पुनः

मिश्री आधो सेर लै, मिर्च टंक दश आन।
पुनर्नवा की जड़ कही, टंक पचास प्रमान॥
पीसि इन्हैं चूरण करै, पैसा भरि नित खाय।
भूख लगै अरु रुचि बढ़ै, अग्निकाम रस आय॥

पुनः—भुजंगप्रयात

दलचीनि अरु चंदनं चारु लीहं।
एला कना लौंग जातीफलीहं॥
इते औषधैं टंक लै पाँच पाँचं।
सवा टंक अकरकरा ल्याय साँचं॥
दोनों हरड़ शुंठि बक्कल बहेरं।
कली आमेर लेय चोखी निबेरं॥
इन्हैं आनिये टंक दश दश प्रमानं।
भली चित्रकं पावसेरे बखानं॥
करै चूर्ण पुनि वस्त्र में छानि दीजै।
महूखं सवासेर चोखी सुदीजै॥
धरै अग्नि पै सूक्ष्मै आँच दीजै।
सबै ओषधी तासुके मध्य कीजै॥
गुलाबं जलं आधपावं मिलाई।
भखै सांझ प्रातं सुटंकै अढ़ाई॥
करै भूख गातं बलं पुष्टिकारी।

हरै वातपीरं प्रमेह प्रहारी ॥
हड़ं कूटनं त्रयदशं सन्निपातं।
कटिं पीर सूजाक उचकं बिलातं॥
यकंगी हरै वायु अरु मूत्रकृच्छं।
भखै रोज चालीस चटनी सुअच्छं ॥
वैद्यप्रिया ग्रँथ भाषी सुधीरं।
भखै रोगिया सुक्ख पावै शरीरं ॥

पुनः

लवंगैं कणा चित्रकं हरड़ एला।
लियं आँवले टंक दो-दो सुभेला॥
लिये टंक आठं सुदाडिम्म दानं।
कह्यो नोन सेंधव छटंक प्रमानं॥
इती औषधैं बाँटि चूरण करैनं।
पचै अन्नप्रातं भखै टंक तीनं॥

पुनः—चौपाई

त्रिफला त्रिकुटा चित्रक आनि; अजमोदा लै सेंधव जानि
चारि चारि ये टंक मँगाउ; जीरो सात टंक लै आउ
दै पुट निंबुआ रस की ताहि; चारि टंक भरि प्रात खवाहि
बाढ़ै भूख अजीरण जाय; चूरण नाम अग्निमुख आय

पुनः

पकी जँभीरी ल्यावै तोरि; पाँच सेर रस लेय निचोरि
तीनि सुटंक हींग पुनि लेय; हींग भूँजि बुकुनू करि देय

त्रिकुटा बिड़ँग जवाइनि लेउ; राई सेंधव लौंगैं देउ
दश-दश टंक लेउ ये पीसि; सोचर नोन टंक चालीस
शिशी काँच की में रस भरो; तामें ये सब भेलै करो
दिन इकईस भूमि में गाड़ि; बंद रहै पुनि लीजै काढ़ि
सिद्ध जँभीरी रस जब लेय; धेला भरि खैबे को देय
बाढ़ै भूख अजीरण जाय; व्यथा शूल की सकल नशाय

पुनः—छप्पय

पीपल सोंठि निसोत हरड़ सोंचर लै आवै ।
ये सब लेय समान कूटि चूरण करवावै ॥
चूरण खाय प्रभात होय रुचि अग्नि बढ़ै पुनि ।
अरस गुल्म नहिं रहै होय बहुतै बल लै सुनि ॥
आद्यमान मिटि जाय अरु उदररोग सब नशै इम ।
टंक चारि परिमाण यहि चूरण नाम सुपंचसम ॥

पुनः—चौपाई

गंधक पारो सेंधव देय ; टका-टका भर लीजै सोय
हरड़ टका द्वय सोंठि सुतीन ; सेंधव मिर्च पीपरै लीन
तीन-तीन लै टका प्रमान ; चारिटका भरि विजया जान
निंबुआ रस की दै पुट चारि ; सूखे घाम में करै सम्हारि
यह रस अच्छे खरल कराय ; गोली रती एकभरि खाय
दीपन पाचन रोचक भारी ; दूनो खाय भूख अधिकारी
नाम अजीरणअरि है जाको; नाश करै यह शूलव्यथा को

चौथा शृंगार

कष्टोदर, विसूचिका, छर्दि-रोग, शूल-रोग, गुल्म-रोग और कमल-रोग की वृद्धि, लक्षण और प्रतीकार

कष्टोदर की वृद्धि—दोहा

रक्त बढ़ै बहु देह में, सीरो बासो खात।
खाय सुबासो सेंकिकै, अरु लोहू जमिजात॥
नाभि तरे यक ठौर में, गाढ़ो लोहू होय।
ऐसी विधि जब होति है, कष्टोदर कहि सोय॥

कष्टोदर के लक्षण

अतिहू लखिजै ताहिको, भूख हीन बल हीन।
पेट कठिन फीको वदन, मूर्च्छित देह मलीन॥
चबरी तुमरी होति है, नाड़ी मंदी जानि।
ऐसे लक्षण देखिकै, कष्टोदर पहिंचानि॥

प्रतीकार

लौंग सुहागा एलुआ, सोरा त्रवी समान।
टंक एक जो निगलिये, कष्टोदर की हान॥

विसूचिका-वृद्धि

पाय अजीरण वात पुनि, सूचीसम दुख देत।
या विधि होत विसूचिका, यहै मूल को हेत॥

लक्षण

वमन विरेचन होय नहिं, अन्न गहै कफ वात।
अब ताकी ओषधि कहौं, सुनहु सहित विख्यात॥

विसूचिका का प्रतीकार

सोरह टंक सुगूखुरू, काढ़ो करै सुधारि।
खात विसूची रोग को, तुरतहिं देय निकारि॥

पुनः

तेल तिली को आनिकै, कर पर मरदै ताय।
सिद्धयोग पंडित कहै, रोग विसूची जाय॥

पुनः

जटा बिजौरा हरद पुनि, बीज करंज मँगाय।
काँजी मथि अंजन करै, रोग विसूची जाय॥

पुनः

सोंठि मिर्च अरु पीपलै, लहसुन लेहु मँगाय।
सेंधव अजवायनि सरस, लौंगै हींग सुल्याय॥
निंबूरस में मेलिकै, चूरण ताको देय।
रोग विसूची की व्यथा, क्षणक माँझ हरि लेय॥

पुनः

चूक कूट सेंधव कलक, चुरवै लै करि तेल।
तेल लगावत अंग ही, रोग विसूचिक ठेल॥

पुनः

त्रिकुटा हरद करंज पुनि, और बिजौरे मूल।
अंजन कीजै छाछिसों, मिटै विसूचिक शूल॥

पुनः—चौबोला

बच अतीस अरु हरड़ भंगरा हींग इंद्रयव आनो।
सोंचर नोन मिलै कै चूरण करिकै बस्तर छानो॥
चूरण तुष के नीर छानिकै प्रात होत नर खाय।
शूल विसूचिक अरुचि अजीरण तुरत देह तजि जाय॥

पुनः—दोहा

लौंग रुपैया एक भरि, क्वाथ करौ चौथाय।
रोगी पीवै तुरत ही, रोग विसूची जाय॥

छर्दिरोग की वृद्धि

बल त्रिदोष को पायकै, वायु पित्त कफ योग।
लटी वस्तु देखै बढ़ै, छर्दि विविध विधि रोग॥

छर्दिरोग-लक्षण—अरिल्ल

मूर्च्छा तृष्णा दाह श्वास अति दुःख है।
भ्रम तालू अति पीर स्वेद मुख सुक्ख है॥
कफ डकार बहु फेन होय अति दर्द ही।
वमन नील पुनि पीत पित्तकै छर्दिही॥

वात-छर्दिका प्रतीकार—दोहा

त्रिकुटा लेकर दूध सँग, जो नर पीवै कोय।
वायु-छर्दि को नाश ह्वै, अति सुख पावै सोय॥

पुनः

घिउ टंकत्रय लीजिये, सेंधव एक मिलाय।
तीनि बेर के खात ही, वायु-छर्दि मिटि जाय॥

पुनः—पित्त-छर्दि का प्रतीकार

चंदन माशे चारि घिसि, अभया के रस बीर।
सहत संग खातनि मिटै, पित्त-छर्दि की पीर॥

पुनः

अभया टंक जु पीसिकै, खाय सहत के संग।
पित्त-छर्दि ता देह ते, होय तुरत ही भंग॥

पुनः—कफ-छर्दि का प्रतीकार

पीपल सेंधव मैनफर, निंब धना पुनि खंड।
चूरण खातहि छर्दि-कफ, तनु ते होय बिहंड॥

पुनः

त्रिफला सोंठि बिरंग पुनि, सहत संग जो खाय।
छर्दि जाय अश्लेषमा, उर सुख अति अधिकाय॥

सब प्रकारकी छर्दि का उपाय

कृष्णा मिर्च कपित्थ पुनि, तंडुल जलसँग जानि।
भाष्यो मधु सों खात ही, सकल छर्दि की हानि॥

पुनः

पथ्या त्रिकुट धनेहला, जीरो लै सम दोय।
सहतसंग करि चाटिये, छर्दि दूरि सब होय॥

पुनः

बेरि मिंगी लघु लायची, मोथा आनि लवंगु।
धना खील कृष्णा बहुरि, चंदन और प्रियंगु॥

सब सम मिश्री डारिकै, सहत संग अवलेह।
वात पित्त कफ छर्दि हर, अतिसुख पावहि देह॥

पुनः

सतुआ शुंठी खाड़ सम, पीसि टंक दो खाय।
वमन उबाकी को हरै, हर्ष अंग अधिकाय॥

पुनः

पीपल लौंग इलायची, मोथा चंदन आनि।
बेलगिरी लज्जाउरी, और कमलफल आनि॥
मिश्री गजकेसरि बहुरि, और प्रियंग मँगाय।
सहत संग के खात ही, सर्व छर्दि मिटिजाय॥

पुनः

सोंठि हींग अजमोद लै, सोचर हरड़ मँगाय।
लौंगरु बच सब सहत सँग, खात उबाकी जाय॥

पुनः

कमलबीज अरु लायची, लज्जा सिता लवंग।
छर्दिरोग तनु ना रहै, खात सहत के संग॥

पुनः

कमलभिंगी अरु लायची, और छुहारे लेइ।
पीसि नीर सँग तुरत ही, छर्दि दूरि करि देइ॥

पुनः

केवल कंजा पात लै, नोन खटाई डारि।
बड़े भात ही खायकै, दीजो छर्दि बिडारि॥

पुनः

लै जामुन अरु आमके, पात क्वाथ करवाय ।
सहत खील चूरण करै, खाय छर्दि मिटि जाय ॥

पुनः

असगँध सोंठि जु पीपलै, लौंग जु मिश्री पाय ।
जल सों पीवै पीसिकै, छर्दि रोग न रहाय ॥

पुनः

लौंग आक के फूल सम, पीसि गुटी करवाय ।
प्रातहि उठिकै पाइये, छर्दि उबाकी जाय ॥

पुनः

मिर्च धना अजमोद लै, त्रिफला सोंठि बिड़ंग ।
देवदारु तज लायची, पीपरि मूल लवंग ॥
सुरसी वायु प्रियंगु लै, परवर पात मँगाउ ।
गजकेसरि सब पीसिकै, चूरण सरस बनाउ ॥
दूनी मिश्री डारिकै, पैसा भरि दै खान ।
दो सातैं भरि खातही, सर्व छर्दि की हान ॥

शूलरोग की वृद्धि

वात पित्त कफ पित्तकफ, पित्तवात कफवात ।
श्वास आम तिरदोष ते, शूल आठ कहि जात ॥
शीतवृद्धि शीतल अशन, रुधिर सूखि उर जाय ।
आँत इठै जब पेट में, तबै शूल उपजाय ॥

शूल रोग के लक्षण

वमन करै हिचकी बहुरि, अरुचि पेट अति पीर।
आँत उदर सूखी गड़ै, नींद न निबल शरीर॥

शूलरोग का प्रतीकार

कंजा सोंचर सोंठि अरु, हींग भूजि समतूल।
पियत तप्त जल संगही, जाय त्रिदोषहि शूल॥

पुनः—छप्पय

मिरच हरड़ अजमोदा पीपर सोंठि मिरच पुनि।
सैंधव तापर हींग नोन साँभरि साजी सुनि॥
सोंचर पुष्करमूल निसोतहि तिगुन मिलावहि।
करि चूरण जल तप्त टंक दो प्रात खवावहि॥
नाशय विबंध बिट आम उर अफरा वायुविकार सुनि।
पुनि गुल्म अजीरण शूल अति जाय खात चूरण सुपुनि॥

पुनः—दोहा

धानतुषा जल पीसि तिल, करै पोटली योग।
ताती फेरहि पेट पर, मिटै शूल को रोग॥

पुनः

पीसि मैनहर छाँछ सँग, करै नाभि पर लेप।
ताके उर ते शूल की, करै वेदना छेप॥

पुनः—चौबोला

अंड चितावरि और गूखुरू पुनर्नवा पुनि लेय।
छीप वारि चूरण सब सम करि ताते जल सँग देय॥

बिकट शूल परिणाम पीर अति करै वेग निरमूला।
कै पय सँग तिल गुड़ शुंठी को काढ़ो मेटै शूला॥

पुनः

सोंचर सेंधव जवाखार पुनि तुम्बर पुष्करमूला।
बायबिड़ंग जवायनि अभया टंक-टंक समतूला॥
त्रबी टंक त्रयकरि सम चूरण तप्त नीर में प्यावै।
आमवात कफ अफरा नाशै गुल्मशूल मिटि जावै॥

पुनः—दोहा

सोंठि हींग सोंचर बहुरि, पुष्करमूल समान।
तप्त नीर सँग पियत ही, शूलरोग की हान॥

पुनः

त्रिकुटा साजी संग करि, तप्त नीर सँग पीव।
शूलरोग तनते मिटै, अति सुख पावै जीव॥

पुनः

सेंधव त्रिकुटा हींग अरु, अजमोदा द्वय जीर।
भात घीव सँग खात ही, मिटै शूल की पीर॥

पुनः

पीपल सोंठि हरीतकी, सोंचर तिबी समान।
तप्त नीर सों पीजिये, नाश शूल को जान॥

पुनः—चौबोला

बर सेंधव साँभरि सोंचर कारो नोन मँगावै।
भया हींग निसोत बिड़ंगै यवाखार को ल्यावै॥

पुष्करमूल जवायनि बच लै सम करि कूटि छनावै।
ताते जल सँग पियै टंक दो शूल बेग मिटि जावै ॥

पुनः—दोहा

अजमोदा सोंचर हरड़, लीजै पुष्करमूल।
छह छह टंक मँगाइये, चारै टंक कचूर ॥
चूरण ताते नीर सँग, ताको देय खवाय।
पेट दूखतो शूल पुनि, या चूरण ते जाय ॥

पुनः—मंत्र

ॐनमःइटितिटि मितिटि उदरव्याधिनी सव्यती स्वाहा।

दोहा

पढ़ै बार इकईस पुनि, फेरि उदर पै हाथ।
पेट दूखिबो शूलदुख, जाय एकही साथ ॥

पुनः

हींग भूजिकै घीउ में, लीलै घी के साथ।
शूल वेदना उदर की, तुरत बिदा ह्वै जात ॥

पुनः

कंजा की भूजै मिंगी, अग्नि माँझसों आप।
ताके खाये ते मिटै, विकट शूल संताप ॥

पुनः

मरो लोह पीपरि हरड़, ताहि सहत सों चाटि।
व्यथा शूल परिणाम को, ताहि तुरत ही काटि ॥

पुनः—अरिल्ल

सैंधव पीपल सोंठि मिर्च सब ल्याइये।
गंधक कौड़ी खार जु पारौ पाइये॥
नागबेलि रस पीसि गुटी करवाइये।
दोय रती भरि खाय शूल मिटि जाइये॥

पुनः—दोहा

दारो हरद चिरायतो, रसवत थोथा आनि।
वासा भित्तवाँ बेल को, काढ़ो करौ सुजान॥
मधुमिश्री अरु पान सों, सीरौ क्वाथ पिवाय।
शारँगधर भाष्यो यहै, उदरशूल मिटि जाय॥

पुनः

देवदारु लै सोंठि पुनि, चित्रक चाब समान।
बुकनी करि काढ़ो करै, गायमूत्र अनुपान॥
रोगी पीवै प्रात ही, उदरव्याधि सब जाय।
वैद्य-प्रिया में यह कह्यो, शूलरोग मिटि जाय॥

पुनः

पथ्यारोहिष क्वाथ करि, अनोपान सों प्याय।
जवाखार पीपल मिलै, पलभरि देय खवाय॥
उदरव्याधि प्लीहा गुलुम, वात जलोदर छीन।
पथ्यादिक काढ़ो सुभग, वैद्य-प्रिया कहि दीन॥

पुनः—चौबोला

सोंठि मिरच पीपल अरु सेंधव साँभर नोन मँगावे ।
शंख राख अरु हींग लेय सम सबको लेय छनावे ॥
बाँटि नीर सों गोली बाँधै रोगी खाय बिहानै ।
बायुशूल कफशूल पित्तदुख एते शूल परानै ॥

गुल्मरोग की वृद्धि—दोहा

शीत कोप देही निबल, आँत वायु भरि जाय ।
वायु भरे नस के बिषे, गोला उपजै आय ॥

गुल्मरोग का लक्षण

चपल गाँठि नस की परै, हृदय नाभि के बीच ।
गुल्म पंच विध होत है, अपर दोष ते नीच ॥
मूत्रकृच्छ्र अरु श्वेतदृग, मुख हरियो है ताहि ।
दुख पीड़ा गोसै बड़ी, गोसै नस चढ़ि जाहि ॥

वायुगोला का उपचार—चौपाई

घीउ सेर साढ़े छह लेय ; पाँच सेर गुड़ तामें देय
पानी पाँच पसेरी ल्यावै ; तीनि पाव लै अधिक मिलावै
सहत सवा त्रयसेर मँगावहि ; घी के बासन मध्य मिलावहि
त्रिफला त्रिकुटा बायबिड़ंग ; मारो सार जवायनि संग
मोथा और चितावरि लाय ; बासन में सब देहु मिलाय
सेर पावई औषधि जानि ; पाव पाव भरि सबरी आनि
महिना सात मूँदि धरि राखहि ; चटनी रोज खाय मुनि भाषहि

गुल्म रोग ग्रहणी को नास; पांडु कुष्ठ जु श्वास पुनि कास
जठर अग्नि प्लीहा मिटिजाय; कोढ़ शोथ अरु अरस नशाय
यह रस मंडल भरिकै खाय ; वैद्य-प्रिया भाष्यो सुखदाय

पुनः—दोहा

खानो चूना टंक छः, गूगल बारह लाय।
गुड़ में खाय लपेटिकै, तुरत गुल्म मिटि जाय॥

पुनः

सोंठि हींग सेंधव हरड़, सोंचर नोन मँगाय।
पीपरि अजमोदा बिड़ँग, जवाखार सम ल्याय॥
इनको चूरण करि सरस, घृत सों खाय मिलाय।
गोला शूल विसूचिका, सर्व अजीरण जाय॥

पुनः

टंक हींग बच दो बहुरि, तीनि हरड़ को लेय।
चारि टंक लै सोंठि पुनि, पाँच चितावरि देय॥
बायबिडंग सुटंक छः, सात जवायनि आनि।
पीपल टंक सु आठ लै, चूरण कीजे छानि॥
मदिरा सँग कै तप्त जल, दोय टंक भरि देय।
गुल्म शूल संग्रहणि पुनि, कासश्वास हरिलेय॥

पुनः

हींग सोंठि राई बहुरि, तंतरीष लै नोन।
या चूरण के खात उर, गुलुम राखिहै कौन ?

पुनः

पारो गंधक पीपरै, लै हरीत सम भाय।
किरमालै के क्वाथ में, पहर एक औटाय॥
फिर थूहर के दूध में, मर्दन करै बनाय।
सहत संग माशे भरौ, यह रस देय खवाय॥
गुल्म जलंधर त्रियन को, मिटै पथ्य दधिभात।
अनोपान इमिली पनो, यहै ग्रंथ की बात॥

कमल रोग की वृद्धि—चौपाई

दही मही अरु अपर खटाई; जो कोउ तेलसंग करि खाई
ताको पित्त फाटि जब जाय; कमलवायु तब प्रकटै आय

कमल रोग के लक्षण

नयन वदन अति पीरो होय; पीली धातु बहुरि ता जोय
धातु फटै पतली हो जाय; मूत्रधार सँग निकसै आय
मुख कडुवो अरु हृदय सुजरई; औचकि परहि नींदनहिं परई
वमन करै अरु अंग खुजावै; चलत फिरत भ्रमसो उपजावै
नेत्रदाह बलहीन सुभूख; सीरो जल चाहिये अहूख
नाड़ी मेंडुक गमनी होय; जानहु कमलवायु तन सोय

कमल-वायु का प्रतीकार—दोहा

त्रिफला कटू चिरायतो, वासा नीम गिलोय।
या काढ़े के पियत ही, नाश पांडु को होय॥

पुनः

त्रिफला रजनी आमले, लोहचून घृत लेय ।
सहत संग के खात ही, कमल पांडु हरि लेय ॥

पुनः

सैंधव सोंठि मिलाय कै, नास लेय बहु बार ।
ताके तनु ते बेगिही, कमल वायु है छार ॥

पुनः

बंदाली फल कूटिकै, रस को लीजै नास ।
कमलवायु ता अंग ते, तुरतहि करै विनास ॥

पुनः

गेरू हरदी आमरे, दृग आँजै जल संग ।
खाय मसूरै पथ्य को, कमलवायु तब भंग ॥

पुनः

आधसेर गोदूध में, सोंठि पीसिकै पीव ।
कमलवायु दिन तीनि में, मिटै होय सुख जीव ॥

पुनः

अभया मधु गुड़ संगही, अवलेही करि खाय ।
सात दिना के खात ही, कमला पांडु बिलाय ॥

पुनः

देवदारु त्रिफला मिरच, मोथा कटू बिड़ंग ।
रस गिलोय गुटका भखै, मिटै कमल परसंग ॥

पुनः

लोहचून त्रिफला कटू, रजनी दोऊ लेय ।
कमलताप तबहीं हरै, मधुघृत के सँग देय ॥

पाँचवाँ शृंगार

रक्त-पित्त-कासरोग, श्वासरोग, क्षयीरोग, धाँसी खाँसी रोग की वृद्धि, लक्षण और प्रतीकार

रक्तपित्त की वृद्धि—दोहा

कटु खारो तीक्षण अमल, रस जारतु है पित्त।
पित्त जरावत रुधिर को, यह उतपति करि हित्त॥

रक्तपित्त का लक्षण

गुद मुख नासा राह है, लोहू डारत कोय।
रक्तपित्त को जानिये, इन लक्षण ते होय॥

रक्तपित्त का प्रतीकार

ऊमरि पकै खजूरि पुनि, फल कुम्हेरि के लेहु।
रक्तपित्त को हरड़ लै, दाख सहत सँग देहु॥

पुनः

सिंहवदन रस सहतसँग, सम दोऊ नित खाय।
रक्त पित्त के नाश को, यह ओषधि शुभआय॥

पुनः

सहत संग वासा हरड़, दाख संग दिन तीन।
रक्तपित्त जाते मिटै, कासश्वास सब छीन॥

पुनः—दुर्मिला छंद

कमल नील अरु दोय कटाई जामुनि सारु मोचरसल्यावै।
कमलगटा दाड़िम के बकला नागकेसरी लोध मँगावै॥
आममिंगी केसरि अरु मोथा पीठ मँजीठ रसौत बखानो।

बेल अतीस कुरौ अरु जाठौ चंदन एला खाँड़ सुजानो ॥
टंक टंक भरि ये सब ओषधि लै उशीर दो टंक मिलावै।
चूरण अनोपान मधु के सँग कै चाँवल के नीर खवावै ॥
रक्तपित्त मद अरस भयज्वर अतीसार पुनि गर्भ थँभाई।
मूर्च्छा छर्दि रक्त को थाँभै प्रात खाय त्रयदोष नशाई ॥

पुनः—दोहा

इंद्राणी जड़ कूटिकै, बारह टंक छनाय।
गायदूध सँग पीजिये, मुख लोहू थँभि जाय ॥

पुनः—चौपाई

लै पाषाणभेद मँगवाय ; पाँच टंक सों तौ लिपटाय
नागरमोथा टंक अढ़ाई ; टंक आठ गोखुरू मँगाई
मालबावची पैसा भाई ; अन्य ओषधी लेहु मँगाई
मिश्री पैसा चारि प्रमान ; बाँटि छानि कै खाय सुजान
लोहू परत वेगि थँभि जाय; रामविनोद सुदई बताय

कासरोग का लक्षण—दोहा

वमन करै हिचकी बहुरि, गलग्रह माथे पीर।
हाथ पाँव टूटैं बहुरि, करिहाँ पीर अधीर ॥
पेट करेरो कफ हृदय, बोझिल गरो खुजाय।
अति आरस अरु मूरछा, ज्वर उर में अधिकाय ॥
तनु बोझिल बोझिल हृदय, नयन और शिर जान।
हंस गमन नाड़ी चलै, लक्षण कास प्रमान ॥

कास का प्रतीकार—चौबोला

सोंठि काकड़ासिंगी पीपल और बहेड़े लीजै।
भारंगी कुसुमेर छाल सब पीसि इकट्ठे कीजै॥
गोली करै नीर सँग नीकी टंक दोय निशि खाई।
या औषध के खात कास की पीड़ा देय बहाई॥

पुनः—दोहा

वासा शुंठी पीपरै, सहत संग दो टाँक।
खात कास पीड़ा मिटै, कफ न रहै इक आँक॥

पुनः

पीपलमिर्च गिलोय पुनि, हरड़ सोंठि सम खाय।
दीपन पाचन कास यह, चूरण है सुखदाय॥

पुनः

वासा शुंठी पीपरै, चंदन बच कंटाय।
तप्त नीरसँग पियत ही, खाँसी धाँसी जाय॥

पुनः

हरड़ भरंगी कायफल, रोहिष मोथा आनि।
देवदारु बच सोंठि पुनि, ककड़ासिंगी जानि॥
पित्तपापड़ा धना सँग, काढ़ो करिकै देय।
हींग सहत सँग सानिकै, खात कास हरि लेय॥
कंठ और मुखरोग हर, शूल हिक्क ज्वर नाश।
इते रोग नाशै तुरत, सात रोज के खात॥

पुनः

कर्ष कर्ष भरि लीजिये, मिर्च पीपलै दोय ।
दाड़िम के बकला कहे, कर्ष दोय भरि सोय ॥
जवाखार आधो करष, आठ करष गुरु जान ।
गोली माशे चारि करि, कहिये नितही खान ॥
खाटो ब्यारो छाँड़िकै, संयम सों रहि सोय ।
कास बहुत यों भाँति के, यासे रहै न कोय ॥

पुनः

फूल जायफल जायफल, लै माशे बत्तीस ।
सोरह माशे लौंग पुनि, सोंठि अठगुनी पीस ॥
मिरचैं पैसा एक भरि, बाँटि छानि सब लेय ।
चूरण सम मिश्री मिलै, तबै खान को देय ॥
कर्ष बराबर खात ही, श्वास कास परमेह ।
मंदागिनि ज्वर अरुचि सब, यह चूरण हरिलेय ॥

पुनः

त्रिफला त्रिकुटा चित्रका, रासन और बिड़ंग ।
चूरण मिश्री संग ते, होत कास दुख भंग ॥

पुनः

मिर्च भरंगी पीपरै, वासा हरद कटाय ।
बृहत शुंठि घन संग इक, खात कास मिटिजाय ॥

पुनः

पंचमूल को क्वाथ करि, पीपल चूरण पाय ।

खाय प्रात उठि तो तुरत, श्वास कास ज्वर जाय ॥
खील छुहारे दाख घृत, मिश्री पीपरि डारि ।
मधु सों गोली बाँधि कै, खाय कास दे टारि ॥

पुनः—दुर्मिला छंद

त्रिफला सेंधव जीरे दोऊ सज्जी सोंचर हींग फुलावै ।
त्रिकुट धना बच चूरण करिकै सब सम यवको चून पिसावै॥
सेंहुड़ दूध सानि करि रोटी वनके कंडा बारि सिंकावै ।
गढ़ा हाथभरि करि लेंडी भरि बीच रोटु धरि अग्नि पचावै॥
रोटी बारि काढ़ि बुकुनी करि माशो भरि तब प्रात खवावै ।
खाटो ब्यारो तजो नियम करि महाप्रबल खाँसी मिटि जावै॥

पुनः—छप्पय

कारी जीरी सोंठि मिर्च पीपरि लै आवै ।
अकरकरा अरु लौंग बहेड़े हरड़ मिलावै ॥
दोय कटाई लेय आमले चोखे लीजे ।
बीज धतूरे और जवायनि ये सम कीजे ॥
वासा अनार बकला पढ़ा अद्रक-रस गोमूत्र पुनि ।
जुदे जुदे करि रस सबै पहर-पहर भरि खरल सुनि ॥

दोहा

गोली चना प्रमाण करि, जो नर सुख सों खाय ।
संयम सों सेवन करै, खाँसी प्रबल पराय ॥

पुनः—चौपाई

पात अडूसे के लै आउ; सेर भरे गोमूत्र उटाउ
तिनको रस निचोरि कै धरै; औटि कड़ाही गाढ़ो करै
सोंठि मिरच पीपरि को लेय; हरड़ बहेरे अमला देय
टंक टंक भरि दे सब डारै; अद्रक को रस तबै निकारै
मधु छटाँक द्वै लेय मँगाय; ये दोऊ तामें डरवाय
मिलै सबै अवलेह करेय; टंक एक खैबे को देय
बिगरै नहीं सुनो दै कान; यह वासा अवलेह सुजान
महाप्रबल खाँसी मिटि जाय; खाटो ब्यारो सबै तजाय

पुनः—दोहा

लै अजवायानि जायफल, अकरकरा मँगवाय।
कनक बीज आफू सरस, जवाखार को ल्याय॥
बाँटि यहै चूरण करै, कनकफलनि भरि देय।
गेहूँ चून लपेटि कै, अग्नि माँझ धरि देय॥
काढ़ि ताहि बुकुनी करै, माशे भरि नित खाय।
महाप्रबल खाँसी मिटै, ब्यारो सबै तजाय॥

पुनः

मोथा खारक जायफल, पत्रज त्रिफला दाख।
हरड़ बहेड़े आमले, दूजे जानो भाख॥
दालचिनी जीरो धना, नेत्रबाल को लेत।
वंशलोचना लायची, जानो चंदन श्वेत॥

असगँध लै कंकोल पुनि, टंकटंक सब आनि।
मिश्री पैसा दोय भरि, चूरण कीजै छानि॥
टंक डेढ़ नित खातही, खाँसी ज्वर तजि जाय।
भूख लगै अति बल बढ़ै, बड़े यत्न पथ खाय॥

श्वासरोग की वृद्धि

दूध मांस घृत खाय पुनि, पिये तमाकू और।
तापै सीरो जल पियै, तबै कंठ के ठौर॥
मैल बढ़ै चरबी जमै, अधिक कंठ की राह।
कफ को भाँड़ो भरि रहै, पवन झीक निर्बाह॥

श्वास रोग के लक्षण—चौपाई

हिय भारी कफ को अधिकार ; गलग्रह रहै शीशदुख भार
हाथ पाँव अति पीड़ा होय ; बोभिल पिंड तासु को जोय
नयन श्वेत मुख रक्त समान ; नाड़ी चलै मोर मति जान
देही में दुख उपजै घनो ; हिये गरे में सलभल मनो
मीठा खान चहन मन होय ; शरदी पै रुचि थोड़ी होय
श्वास पेट में जब भरि रहै ; झीनो कंठ प्रवाहहि गहै
देखत दुख अति दारुण दाह ; एते लक्षण श्वास निबाह

श्वासरोग का प्रतीकार—सोरठा

काकड़ासिंगी आन, सोंठि मिर्च अरु पीपरे।
भारंगी को जान, पुष्करमूल कचूर पुनि॥

और सुपारी लेय, मस्तंगी सब पीसि सम।
ताते जल सँग देय, महाश्वास यामें मिटै॥

पुनः—दोहा

कुलथी वासा सोंठि अरु, पुष्करमूल कटेरि।
तप्त नीर सों पियत ही, श्वास न उपजै फेरि॥

पुनः

त्रिकुटा और हरीतकी, बाँटि छानिकै लेय।
गुड़ सों गोली खातही, श्वास दूरि करि देय॥

पुनः

मोथा सोंठि हरीतकी, गुड़सँग गोली लाय।
बहुरि बहेड़े राखि मुख, श्वास कास विनशाय॥

पुनः

अदक को रस काढ़िकै, तामें सहत मिलाय।
श्वास कास के थँभन को, यहि औषध को खाय॥

पुनः

जटामानसी काकरा सिंगी लेय मँगाय।
त्रिफला त्रिकुटा कंटका, ये सब बाँटि छनाय॥
नोन पाँचहू दै मिलै, भारंगी रस सानि।
ताते पानी सँग पियत, कासश्वास कफ हानि॥

पुनः

धना सोंठि गुड़ हरड़ सँग, गोली करि नित खाय।
ताके उर ते श्वास पुनि, कास रोग मिटि जाय॥

पुनः

गुड़ अरु काले तिलन लै, एक बीस दिन खाय।
यह तुम निश्चय जानियो, श्वास न फिरि नियराय॥

पुनः

कुम्हड़ा की जड़ पीसिकै, ताते जल सँग खाउ।
श्वास कास दारुण महा, यासों तुरत नशाउ॥

पुनः

क्वाथ करो दशमूल को, लेपौ पुष्करमूल।
श्वास कास पसुरिन व्यथा, शूल करै निर्मूल॥

पुनः

पारो शोधि सुहाग विष, मनाशिल गंधक आन।
टंक टंक भरि शोधि सब, मिरचै आठ प्रमान॥
खरल मध्य इकइक मिरच, डारत घोटत जाय।
फिर त्रिकुटा षट्षट् मिलै, चूरण देय मिलाय॥
खरलि सबै चूरण सरस, शीशी में धरवाय।
पान संग सो प्रात ही, एक रती भरि खाय॥
श्वास कास कफ मोहज्वर, सन्निपात नशिजाय।
वैद्य-प्रिया रस नाम यह, श्वासकुठार बताय॥

क्षयीरोग के लक्षण

करत पित्तज्वर शोक तनु, दाह कंठ कफ संग।
लोहु उमँगि लै पांडु कृशा, श्वास क्षुधा स्वर भंग॥

दीन छर्दि विषवर वचन, पुनि पीले सित नैन।
तृषा वमन मंदाग्नि क्षय, रोग जानिये ऐन॥

क्षयीरोग का प्रतीकार—पद्धरी छंद

लै फूल आक के जो प्रमान।
तितनोई त्रिकुटा तौलि आन॥
बाँटो समस्त गुड़ संग सान।
गोली पैसा भरि करि सुजान॥
इक साँझ एक दीजै प्रभात।
क्षयरोग कास कफ होय घात॥
ज्वर खेद श्वास मूर्च्छा सुशूल।
इहि खात जात सुद्धा जु मूल॥

पुनः—दोहा

खाँड सहत जो खाय नित, नैनू घीउ मिलाय।
क्षयी रोग की पीर सब, या औषधि ते जाय॥

पुनः

कौहा के बकला बहुरि, जड़ गेरुआ की लेय।
बीजा और करेछ के, बाँटि छानि धरिदेय॥
खाँड़ सहत घृत में मिलै, खान दीजिये प्रात।
श्वास कास क्षयरोग को, या औषधि ते घात॥

पुनः

मधु नवनीत मँगाइ के, और भेद-पाषान।
कुमुद्बंध तनु की क्षयी, या ओषधि ते हान॥

पुनः

सिंह बदन रस सहत सों, जो कोइ खावै नित्त।
तौ ताके तनते भगै, क्षयी रोग उन्मत्त॥

पुनः—चौपाई

एक कुम्हेड़ो लेय मँगाय; आध सेर मिर्चै पुनि ल्याय
चूरण करिकै तामें भरै; दिना तीनि को अंतर परै
सरसों तेल सेर दो जानि; तामें धरौ कुम्हेड़ो आनि
आगि पचाय तबै चुरिजाय; काढ़ि टका भरिकै नित खाय
कै ताते पानी सों देय; साँक तासु की तब हरि लेय

पुनः—अरिल्ल

त्रिफला पीपल पीसि सहत में डारिये।
खाय टंक द्वै प्रात क्षयी अति टारिये॥
अश्लेषम पीनास कास पुनि ना रहै।
कंठ खुजाहट जाय रोगिया सुख लहै॥

पुनः—दोहा

धनियाँ पाँचक सेर लै, तिते अडूसे पात।
औंटि निंबोरे पात रस, सेर एक रहि जात॥
बकला दाड़िम पीपरै, अकरकरा को ल्याय।

पाँच पाँच लै टंक ये, सत में देय मिलाय ॥
गोली छोटे बेर सम, खात क्षयी मिटि जाय।
खट्टो न्यारो तेल गुड़, इनको भूलि न खाय ॥

पुनः

ज्वर में चूरण में कह्यो, पहिल जु तालीसादि।
ताकी या क्षय रोग में, नीके करियो यादि ॥

पुनः

खाँड़ सहत अरु नोन लै, नर चाटै जो रोज।
तौ निश्चय क्षय रोग को, सहज मिटावै खोज ॥

पुनः—चौपाई

माशे तीनि रोज पिसवाय ; जड़ गँगेरुआ की सो ल्याय
दूध टकाभरि तामें डारि ; खाय महीना भरि निरधारि
बढ़ती सों यह औषध खाय ; प्यावै दूध नाज छुटि जाय
होय पुष्ट बल होय निरोग ; क्षयीरोग को यह है भोग

पुनः—दोहा

कौहर बकला आनिकै, बीज करेछ मँगाय।
जड़ गँगेरुआ ल्यायकै, सब सम पीसि छनाय ॥
खाँड़ सहत घृत संगही, रोज खाय उठि प्रात।
क्षयीरोग अरु श्वासदुख, ताते वेगि परात ॥

पुनः—छप्पय

लौंगैं अगर कपूर कमल के गटा सुचंदन।

जीरो और उशीर लायची मोथा दै मन ॥
जटामानसी तगरु वंशलोचन अरु वारो ।
पीपरि अरु कंकोल जायफल तज निरधारो ॥
लेय नागकेसर सरस मिश्रीचूरण अरध सम ।
गुनगुन विधानचूरणकह्यो लवंगादि यह सुनि परम ॥
रुचि उपजावै बहुत तृषा बल करै अधिक पुनि ।
वात पित्त कफ हरै हरै पीनस बहुरो सुनि ॥
कंठरोग हियरोग कास हिचकी विनशावै ।
अतीसार अरु प्यास तामसहि क्षुधित भजावै ॥
संग्रहणी परमेह सब गुल्मरोग क्षयरोग वर ।
यह खाय रोग सब हरण को लवंगादि चूरण सुघर ॥

पुनः रस

गंधक तोला एक शोधि तोलै लै पारो ।
अभ्रक तोला एक तीनि ये सम निरधारो ॥
मनशिल तोला एक ल्याय तोलो ईंगुर धरि ।
छह तोले लै सार खरल में सब एकै करि ॥
काढ़ि शतावरि रस सरस देय भावना चारि दस ।
यहिभाँति सिद्ध जब होतु है यह कामोदक नाम रस ॥
रती दोय कै तीनि मिरच मिश्री लै खइये ।
वात पित्त कफ जाय क्षयी ते निश्चय रहिये ॥

ज्वर आदिक मिटि जायँ और कफ कास नशावै ।
सेवै येही भाँति रोग तनु निकट न आवै ॥
अंग नहीं निर्बल परै श्वेत बार नहिं होयँ तन ।
को वर्णि सकै याके गुणनि बढ़ै धातु कामी सुमन ॥

पुनः—घनाक्षरी

सोनेके तबक अरु पारे ये समान दोऊ, दोऊ के समान फेरि डारै मोती आनि कै। पारे के बराबरि लै गंधक पुनि चौथे हिसा, सज्जी ताहि मध्यही मिलाय देय जानि कै ॥ एक दिना खरल माहिं डारि मरदन करै, गोली मध्य धान तुषा सलिल सों सानिकै। हँड़िया में नोनभरि तामें पुनि गोली धरि, एक दिना आँच देय हितु पहिंचानि कै ॥

दोहा

यह मृगांक-रस पीपरै, सहत संग जब खाय ।
तीनि रती कै दो रती, क्षयी दूरि हो जाय ॥
और रोग सब विकट ये, तन में अति दुखदाय ।
यही खाय नर अमर है, या सम और न आय ॥
संग्रहणी यासों मिटै, मंद अग्नि मिटि जाय ।
शीतल हित अरु पित्तहर, दीन्हों पथ्य बताय ॥

पुनः—छप्पय

गुड़च बहेड़े हरड़ आमले चोखे ल्यावै ।

दो दो पल ये लेय नीर सौ सेर मँगावै ॥
काढ़ो करै पचाय सेर चारिक भरि राखै ।
दो पल गूगल ल्याय तासुके मध्य जु नाखै ॥
औटै जु छानि लखि लीजिये होन लगै गाढ़ो सु तब ।
तेहि मध्य डारि ओषधि इती तेती वर्णन करहुँ सब ॥
त्रिफला द्वादश टंक इतौ त्रिकुटा निरधारो ।
टंक पाँच दात्यूणि पाँच गुरचै सत डारो ॥
इतनो लेय निसोत बिड़ंगै इतना लीजै ।
गुटका टंक प्रमाण प्रात खैबे को दीजै ॥
खटो बियारी गुड़ तजहि खाय मास छह नियम करि ।
गूगल किशोर यह नामहै याके गुण सुनि चित्त धरि ॥

दोहा

क्षयी चिनग कटिवात अरु, हड़फूटनि मिटि जाय ।
गाठिया जंघा वात पुनि, अपस्मार टरिजाय ॥
रक्तविकार फिरंग अरु, मृगी दाँत के रोग ।
उदर रोग नाशै सबै, कायाकल्प सो योग ॥

पुनः

देवदारु तज लायची, पत्रज अरु पदमाख ।
त्रिफला सोंठि बिड़ंग पुनि, मिरच पीपरै भाख ॥
लौंग पीपरामूल लै, गजकेसरि सम भाय ।
दूनी मिश्री डारिकै, खाय क्षयी मिटि जाय ॥

खाँसी-धाँसी के लक्षण

उठै कास सूखी अधिक, नयन नीर भरि जाय।
पीर अधिक उर में उठै, वेगि नहीं नियराय॥

प्रतीकार

वासा सोंठि जु पीपरै, ककरासिंगी पाय।
पीसि पियै जल तप्त सों, खाँसी धाँसी जाय॥

पुनः

सिंगी त्रिफला त्रिकुट बच, लोन भरंगी ल्याय।
पुष्करमूल जु कंटकी, ये सब लेहि पिसाय॥
ताते जलसँग टंक दो, खात धाँस अरु कास।
ऊर्ध्व श्वास हिचकी जु कफ, क्षयीरोग को नास॥

छठा शृंगार

हिक्कारोग, पांडुरोग, धनुर्वात, मन्मथवात, कटिस्तंभीवात, पक्षाघातवात, संधिकवात, बाँहशूलवात, शंखवात, राँघन-वात, पार्श्वशूल, हूकादोष और सूर्यवात की वृद्धि, लक्षण और प्रतीकार

हिक्कारोग की वृद्धि—दोहा

वायु जु कफ होवै जहाँ, होय श्वास को जोर।
पाँच भाँति हिचकी तबै, उपजै महा कठोर॥
शीश बोझ लेवै बहुरि, राह दौरिबो और।
श्वास कास हिचकीनि को, ये इतने हैं ठौर॥

लक्षण

बार बार लघु श्वास ले, हिचकी आवै जासु।
ताको कछू उपाय नहिं, लै जैहें यम तासु॥
नाभी ते हिक्का उठै, अति कंपावै देह।
पुनि पुनि हिचकी आवही, ताहि उपाय करेह॥

हिक्कारोग का प्रतीकार

पियै बिजौरे को सुरस, मधु सोंचर के संग।
यहि ओषधि के नियम ते, हिचकी तजै प्रसंग॥

पुनः

मिश्री मिरच लवंग पुनि, बेलागिरी मधु संग।
हिक्का की पीड़ा घनी, या ओषधि ते भंग॥

पुनः

हरद आमले आनि कै, मनशिल लेय समान।
मुख में धूनी देत ही, हिक्का रोग बिलान॥

पुनः

पीपरि सोंठि हरीतकी, सिता सहित सो खाय।
कै नागर गुड़ नास ते, हिचकी रोग मिटाय॥

पुनः

सोंठि आमले पीपरै, मिश्री मधु सों खाय।
कै पीपरि मधु आमले, खातहि हिचकी जाय॥

पुनः

सोंठि भरंगी पीपरै, तप्त नीर सँग देय।
औषधि कहि दीन्ही सरस, हिचकीदुख हरि लेय॥

पुनः

खरजुरिया की लाख लै, ताही को रस लेय।
पीसि दुहुन को नास लै, हिचकी को दुख देय॥

पांडुरोग की वृद्धि

गर्भिण नारी खाय जो, गाजर माटी सोय।
और खटाई खाय सुत, पांडुरोग ता होय॥

पांडुरोग का लक्षण—छप्पय

काया पीली होय लाल पीलो जाको मुख।
मूत्र नयन गुद पीत धातु बल हीन होय दुख॥
मुख फीको अरु कटुक अरुचि मंदागिनि भारी।

मन मलीन अति रहै ताहि निद्रा अधिकारी ॥
नाड़ी मेडुक गति चलहि पांडुरोग लक्षण सु अस।
ना तरु असाध्य ह्वै है तुरत करिहउ वेगि उपाय तस ॥

पांडुरोग का प्रतीकार—दोहा

क्वाथ करै दशमूल को, सोंठि कपरछन डारि।
अतीसार कफ शोथ ज्वर, पांडुरोग निरवारि ॥

पुनः

कै त्रिफला कै नीमरस, कै गिलोय मधि मेलि।
दारुहरद मधु प्रात ही, कमलै डारै ठेलि ॥

पुनः

त्रिफला कुड़ा चिरायतो, वासा नीम गिलोय।
क्वाथ जु पीवै सहत सों, नाश पांडु को होय ॥

पुनः

त्रिफला रजनी आमले, लोह चूर्ण ल्याय।
बाँटौ घृत मधु पाय कै, पांडु जु कमला जाय ॥

पुनः

लोह चून त्रिफला कुड़ा, दोनों हरदी घालि।
घृत मधु सों जो चाटिये, कमल वायु को टालि ॥

पुनः

गेरू हरद जु आमले, नयनानि अंजन देय।
पथ्य मसूरि को दीजिये, कमल पांडु हरि लेय ॥

पुनः

फल बंदाल जु पीसिकै, करै पोटली योग।
श्वासा सों सूँघत रहै, नाशै कमला रोग॥

पुनः

त्रिफला और बिड़ंग पुनि, तज तमाल मँगवाय।
वंशलोचना मुस्तका, तवाखीर सम भाय॥
गजकेसरि लघु लायची, सोनामाखी लेय।
सब सम मिश्री ल्यायकै, चूरण मध्य करेय॥
गोली करि मधुसंग ही, तीनि टंक दै खान।
शोथ पांडु परमेह पुनि, कमलवायु की हान॥

वात

बात पित्त इक सँग मिलैं, खाय खटाई सोय।
अंग अंग पीड़ा करै, असी वायु तब होय॥

सर्ववात उपचार—चौबोला

गंधक अरु हरताल शतावरि मनाशिल लीजै।
पीपरि पिपरामूल कुरो लै तामहँ दीजै॥
मुरदाशंख पलाश लेय पापरो कायफल।
सिंगी विषहरदिया दुधी तेलिया लेय फल॥
इंद्रयवा पुनि आनि लज्यालू बहुरि मँगावै।
और कलौंजी कुचिला लीजै विषशुंठिया बतावै॥
माजूफल को लेय मैनफल बहुरि बखानो।

कारी जीरी लेउ और नौसादर आनो ॥
हरिया थूथो हरद बावची अरु निरगुंडी।
ब्रह्मडंडीको लेय और लै गोरखमुंडी ॥
नगदबावची पीले सरसों अरु तुमड़ी करिजानो।
लै चिरायतो सरस नीमफल इतने और बखानो ॥
ब्रह्मी लेय कचूर बहुरि भिलवाँ धरि लीजे।
अजवाइनि दो आनि कटाई दोनों दीजै ॥
मालकाँगुनी सालिबामिश्री मिरच आँवले कहिये।
लै गिलोय मुलहेठी सोनामाखी इतनी लहिये ॥
फलबंदाली और निसोत बकाइनि के फल।
महुआ गुदी निकारि कनकबीजा के ले भल ॥
सोवाबीज निकुंभ कौंच के बीज सुहाई।
थोहर छालि बबूर आक की लेहु मँगाई ॥
लेहु गोंदनी बीज बहुरि गाजर के लीजै।
अन्य सकल वातघ्न ओषधी सो सब कीजै ॥
सोंठि उजैनी आनि कुसुम की छालि मँगावे।
दुधी छालि पुनि लेहु कमरबल नीको ल्यावै ॥
अमलासार मँगाय तेजबल नीको ल्यावे।
और आम की छालि सहँजनो छालि मँगावे ॥
हींग गोखुरू बीज पीपरा अंडी भाषी।

कंजामिंगी निकारि नागकेसर लै भाषी ॥
चाक्सू के पुनि बीज बीज अब लेहु पँवारो ।
भेड़ चिरचिटा करड़ बीज लै आजा भारो ॥
जई जवासो आनि रुद्र जंती सहदेई ।
ये सब ओषधि आनि बाँटि नीके कै लेई ॥
तिल को तेल पेराय औषधै मेलि कड़ाही ।
औटै मंदी आँच सिराकरि छानि धराई ॥
कहौं लगावन ताहि वात जाके तनु होई ।
राँघन अरु अर्धंग शूल सब रहै न कोई ॥
अकरसोज पुनि खाजु दादु उकवत को नाशै ।
पीड़ा खसरा केरि अंग के दोष विनाशै ॥
पक्षघात पुनि ग्रंथिवात का खोज मिटावै ।
और वात के रोग तासु तनु निकट न आवै ॥
सन्निपात शीतांग नाश नव ज्वर को करई ।
भ्रम मूर्च्छा मिटि जाय पीर करिहाँ की हरई ॥
शीश शूल सब मिटहि तेल नारायण जानो ।
रोगी के दुखहरण हेतु यह रुचिर बखानो ॥

पुनः—दोहा

तेल तिली को सेर भरि, और धतूरो रंग ।
कनकबीज गुंजा सुविष, पीपरि सोंठि अभंग ॥

चुरै कराही तप करो, मर्दन घामैं बैठि।
मिटै वात तौ देह की, संधि संधि को ऐंठि॥

पुनः—दुर्मिला छंद

पीपरि सोंठि नागकेसर वच अकरकरा भारंगी ल्यावै।
चित्रक हरड़ शतावरि मोथा पाढ़ कबाबचिनी लै आवै॥
पुष्करमूल काकरासिंगी नीमछालि ककई सब आनौ।
ग्रंथिक दालचिनी अरु आमल बायबिडंग धमासो जानौ॥
पत्रज देवदारु कंटाइनि लै मँजीठ बिरजरौ बतायो।
लेय रेणुका पित्तपापड़ो धाय कूट पाठौ मँगवायो॥
पाँच पाँच ये टंक औषधैं सबको चूरण छानि बनावै।
कीट सेर दो लेय तौलि कै लोहौ तीस टंक मँगवावै॥
गुड़ दश सेर माँझ एकांतै करि बासन मुद्रा करवावै।
गाड़ि धरै धरती में ताको दिना सात पीछे कढ़वावै॥
खाय टंक छह प्रात नेम सों कष्टोदर प्लीहा विनशावै।
असी वायु सब रोग नशावै प्रबल वायु की पीर मिटावै॥

पुनः—दोहा

कारे तिल असगंध पुनि, सोंठि खाँड़ घृत जान।
खात प्रात नित वात की, सब पीड़ा अवसान॥

पुनः—पद्धरी छंद

पीपरिचित्रकअसगँधआनि। लैचाबबिड़ंगजवाइनिजानि
सोंठि कलोंजी पिपरामूल। अकरकरा दात्यूनी तूल

ये बाँटि सु लीजै वस्त्र छानि । जूनै गुड़ गोली करहु सानि
पैसा भरि गोली खात प्रात । नाशै चौरासी वायु तात

पुनः

लै चारि टंक शुंठी मँगाय । मिर्चै पुनि चारिहि टंक भाय
त्रय टंक सुहागा शोधि लेय । रस अद्रक गोली बाँधि देय
गुंजा प्रमाण उठि प्रात खात । नाशै चौरासी वात घात
पुनिमिटर्हिंऔरशीतांगरोग । सुचिसंयमसोंनरकरहिभोग
यह त्रिपुरसुन्दरी रस बखान । या को नीके विधि करि सुपान

पुनः—दोहा

पीपरि मूसरि श्वेत लै, नेत्रबाल को जानि ।
अजवाइनि दोऊ कही, अरु अजमोद बखानि ॥
धायफूल चित्रक अगर, तंतरीक लै आय ।
खारख तज सुरही बहुरि, जीरो स्याह मँगाय ॥
ल्याय चिरौंजी मुलहठी, बीज पँवारस जानि ।
लेहु कहेला बच सरस, और गढ़ैलू मानि ॥
टंक टंक दात्यूनि सम, एक सेर घी ल्याय ।
मिलै तासु में औषधैं, टंक एक नित खाय ॥
अपस्मार याते मिटै, अरु चौरासी बाय ।
यह कल्याण सुनाम घृत, वैद्य-प्रिया में आय ॥

पुनः

पीपरिमूरि चिरायतो, अरु भारंगी आनि ।

मोथा कुचिला सोंठि पुनि, पुष्करमूल बखानि ॥
ल्याय कलौंजी कीजिये, काढ़ो लहसुन डारि।
मारुत चौरासी हरै, सन्निपात को टारि ॥

पुनः

उर्द खिरहटी अंडजर, असगँध सुरही ल्याय।
बीज करेल कुटाय कै, काढ़ो करै बनाय ॥
काढ़ो पीवै प्रात ही, डारि हींग औ नोन।
वात बहुत वासों मिटे, वायु राखिहै कौन ॥

पुनः

हींग पाढ़ षटषट त्रिकुट, साजी धना कचूर।
अमलबेत अजमोद बच, सार पीपरामूर ॥
हरड़ बोबई ल्याइये, जीरो अरु जवखार।
तंतरीक झाऊ सहित, सम चूरण करि सार ॥
पैसाभरि नित खात ही, वात अरुचि दुख श्वास।
हृदयरुंध गल शूल अरु, पांडुदुःख अरु कास ॥
उदरबंद प्लीहा मिटै, अफरा एते रोग।
दो सातैं परमाण ही, हिंग लाइहै योग ॥

पुनः—तोमर

रसना जवासो आनि। दो दो सुपैसा जानि ॥
पैसाभरी यक एक। ते लेहु कहहुँ विवेक ॥
बच हरड़ सोंठि गिलोय। असगंध श्याम प्रहोय ॥

लै पियावासो होय। पीपरि अरूसो दोय॥
गोखुरू सोंठि अतीस। मोथा शतावरि पीस॥
देवदारु धना कचूर। लै अमलतास हजूर॥
अरु बिजयसारहि बाट। दो कटाई अरु साट॥
सब जोखि कूटि बनाय। अष्टांश काथ कराय॥
जल सेर एक डराउ। चूरण टका भरि नाउ॥
हाँड़ी जु मध्य धराउ। उटि रहै आधो पाउ॥
करि अनोपानहि खाय। इनमें जु भावै ताय॥
कै सोंठि कै अजमोद। पीपरि जु गूगर शोध॥
कै तेल अंडी ल्याय। ये मिलै काढ़ो खाय॥
पुनि वात अफरा जाय। अरु अंग-कंपन-वाय॥
पक्षघात रांघनवात। भग-लिंग-रोग बिलात॥
अशलीहपद नाशि जात। बीरजहि दोष बिलात॥
दुख लिंगशूल बिलाहि। यह कह्यो वैद्य-प्रियाहि॥
बंध्या सुतिय के रोग। रास्नादि काढ़ो योग॥

पुनः—दोहा

देवदारु रसना मिलै, अंड सोंठि मँगवाय।
सब सम गूगर डारिकै, गोली पैसा भाय॥
खाय वात मस्तकव्यथा, वायु भगंदर रोग।
यह गूगर खाये मिटै, इन रोगन को योग॥

पुनः

लै गइ कनिक कनैरि अरु, आक पात को रंग।
धान तुषा जल साथही, औटि तेल के संग॥
करो अंग या तेल को, मर्दन बारहि बार।
वातव्यथा बहुविधि मिटै, कीन्हे यह निरधार॥

पुनः—दुर्मिला छंद

तेल टका चौंसठि भरि लैकै पहले शुद्ध करावै।
टका टका भरि फिरि ये ओषधि ले लै कल्क बनावै॥
कूट धतूरो रसना विष अरु चोख प्रियंगु मिलावै।
लेहु खुरासानी अरु पीपरि चित्रक मिरचैं ल्यावै॥
अंडमँजीठ कनैरि हरद दो मिश्री त्रिफला जैसे।
देवदारु रस काढ़ि लाख बच सरसों मिलवै वैसे॥
याको प्रात लगाये तनु में वातरोग नाशिजाय।
तेल नाम विषगर्भ कहावै याके गुण बहुताय॥

पुनः—चौपाई

अरणी गुरवै बेल मँगाउ; पाढ़र नींब तहाँ लै आउ
और प्रसरनी असगँध आनो; दोय कटाई इन मधि सानो
ककही और खिरहटी सोऊ; लीजै सरस गोखुरू दोऊ
दश दश पल ये ओषधि लेय; चारि कल्क पानी में देय
चरण एक औटै जल राखै; वह जल लेय तेल में नाखै
सौंफ शिलीरस सेंधव नौन; देवदारु पुनि कहियतु तौन

मासी ल्याय खिरहटी और ; चंदन तगर जानिये तौर
चातुर जाति लायची रसना;पुनर्नवाअसगँधामिलितसना
कूटसहित दो दो पल देउ ; इनको पीसि कल्क करि लेउ
तेहि जलमधियह कल्क पचावै; फेरिशतावरिओषधिल्यावै
तेल बराबरि रस कढ़वावै ; तेल माँझ सब वाहि पचावै
पवै खाय लगावै तेल ; नास देय याको यह खेल
घोड़े हाथी मानस कोय ; वात गहो वह नीको होय
हाथ पाँव वेदानि करिहाँ की ; वातव्यथा सब जाय सुताकी
अंग अंग के वात नशावै ; यह नारायण तेल लगावै

पुनः—दुर्मिला छंद

तिल को तेल सेर चारिक लै माटी टिकिया डारि शुधावै
लैंगड़ि आक धतूरो भँगरा सेंहुड़पात बकायन ल्यावै
अंड कनैर पात के रस लै सेर सेर भरि तेल पचावै
तेल अनूपम वातव्यथा की वेदनि हरै जो अंग लगावै

पुनः स्वच्छंदभैरव रस—छप्पय

गंधक अरु हरताल शोधि पारो लै जैसो।
मारि लोहरज लेउ लेउ सोनो करि तैसो॥
अरनी लैंगड़ि हरड़ सुहागो त्रिकुटा दीजै।
लैंगड़ि को रस काढ़ि एक दिन मर्दन कीजै॥
मुंडीरस सों एक दिन मर्दन करि गोली करहु।
गुंजा समान दै वात को रस स्वच्छंद भैरव धरहु॥

धनुर्वात-लक्षण—दोहा

ज्वर उर में अति कोपही, बदन पीठि दिशि जाय।
अंग संधि पीड़ा घनी, धनुर्वात कहि ताय॥

उपचार

सैंधव नोन मिलाइये, अर्क दूध के संग।
ग्रीवा में मर्दन करै, धनुर्वात करि भंग॥

पुनः—चौपाई

लहसुन कली सेर परमान ; गोपय सेर पचीस बखान
बासन मेलि अग्नि औटाय ; दोय सेर घृत देय मिलाय
याको खोवा करै बनाय ; पीछे गुड़ को पागु कराय
मिरचै पाउ पीपरै पाउ ; शुंठी पाउ बाँटि छनवाउ
यह चूरण खोवा में धरै ; पुनि पगाय गुड़ काढ़ो करै
गोली पाँच टंक परमान ; प्रात साँझ दो दीजै खान
धनुर्वात चौरासी वाय ; मृगी वात पुनि जाय बिलाय
पुष्ट देह अधिकारी करै ; वात व्यथा सब तनु की हरै

मन्मथ-वात का लक्षण—दोहा

ऊँची टेढ़ी नारि हो, पाछे को फिरि जाहि।
मुख ते उगिलै लार सो, मनमथ कहिये ताहि॥

उपचार

बच अजवाइनि सोंठि पुनि, कुटकी कूट मँगाय।
ककई सुरही बृहत दो, औषधि सब सम ल्याय॥

काढ़ो औटि विशेष करि, प्यावै रोज प्रभात।
तीनि दिवस के योग ते, नाशै मन्मथ-वात॥

कटिस्तंभी-वात का लक्षण

पीर बहुत सब अंगही, करिहाँ अधिक पिराय।
कटिअस्तंभी-वात यह, मुनिवर दियो बताय॥

उपचार

अंड कटाई बेल-जड़, मुरहारी मँगवाय।
असगँध मोथा हरड़ पुनि, और खिरहटी ल्याय॥
बहुरि आँवले जड़ सहित, काढ़ो करै बनाय।
कटिअस्तंभी वात सो, या ओषधि ते जाय॥

पक्षघात वात के लक्षण

पुरुष अंग यक दाहिनो, बायें बनिता पीर।
पक्षघात तासों कहैं, जिनकी बुधि गंभीर॥

उपचार

अंडी घुँघची धौल लै, घमिरा को रँग लेय।
रस लै करुई तूमरी, और धतूरो देय॥
बहुरि सहँजनो रस कहौं, बच तामें दे डारि।
घामें में लेपन करौ, पक्षघात को टारि॥

संधिक वात के लक्षण

संधि संधि के बीच अति, गाढ़ै पीर अधीर।
संधिक वात कहावही, अब सुनि ओषधि वीर॥

उपचार

गुरवै करुई पाढ़ जड़, नींब शतावरि जान।
मुरहारी पुनि सहँजनो, जड़ ककही की आन॥
टंक अढ़ाई प्रति समय, काढ़ो करौ सुजान।
तीनि दिना के योग ते, संधिक को अवसान॥

बाँह शूल के लक्षण

करत वायु के हेतु ते, उठत हाथ में शूल।
बाँह-शूल यासों कहैं, मुनि ओषधि अनुकूल॥

उपचार

हरद शतावरि मुरहरी, घुँघची धौल बनाय।
कूट सोंठि बच दारु पुनि, भारंगी को ल्याय॥
पुष्करमूल हरीतकी, सेंधव बाँटि समान।
मर्दन सूखो कीजिये, बाँहशूल की हान॥

शंख वात के लक्षण

हाथ पाँव पीड़ा बड़ी, अँगुरिन चोभनि होय।
शंखवात तासों कहत, वैद्य सयानो सोय॥

उपचार

भारंगी बच सोंठि पुनि, चित्रक सेंधव नोन।
घुँघची पुष्करमूल लै, मुरहारी सँग तौन॥
अजया-मूत्र मँगाय कै, मिलै लेप धरि देय।
शंखवात ता देह ते, तुरत बिदा करि देय॥

राँघनवात के लक्षण

करिहाँ के जड़ते सबै, एक पाँव में पीर।
राँघन तासों कहत हैं, वरणी ओषधि वीर॥

उपचार

सेंधव महुआ सार लै, ग्वारि रेणुका सोय।
अंडी बायबिड़ंग पुनि, राई ल्यावै टोय॥
मूलगोखुरू मैनहर, अरसी निम्बकमूल।
सब सम बाँटै लेप करि, राँघन रहै न शूल॥

पार्श्वशूल के लक्षण

बाईं दाईं पासुरिन, हूक उठै दुख होय।
पार्श्वशूल इमि जानिये, सुनि अब ओषधि सोय॥

उपचार

सोंठि भरंगी पीपरै, अरु तुलसी के पान।
बाँटि पीपरामूल सम, नारंगी रस सान॥
लेपन कीजै पासुरिन, हरै पीर ततकाल।
नर सुख पावै अति घनो, भाषो ग्रंथ विशाल॥

हूका-दोष के लक्षण

बरछी सों हुलका लगै, हृदय पसुरियन दोय।
हूका दोष बताइये, वैद्य सयानो सोय॥

उपचार

छौकर की जड़ बच बहुरि, धव की गादि समान।
लेपै शिशु के मूत्र सों, हूका-दोष बिलान॥

सूर्य वात के लक्षण

जैसो जैसो दिन चढ़ै, तैसी माथे पीर।
सूरजवात कहावही, अब सुनु ओषधि वीर॥

उपचार

फूल लेय मुचुकुंद के, केसर चंदन लाल।
सहित आँवले लेप करि, सूर्यवात को हाल॥

सातवाँ शृंगार

आधाशीशी, वायुशिरोवर्त, पित्तशिरोवर्त, नेत्र-रोग, कर्ण-रोग, पीनस, नाकमालिनि, मुखरोग, दंतरक्त, दंतपीर, मुखझाईं, मुखगंध, मुहासे और मृगीरोग की वृद्धि, लक्षण और प्रतीकार

पित्तशूल-शिरोवर्त्त के लक्षण—दोहा

माथो दूखै शूल पुनि, तबै बदन करवाहि।
खायपरै भ्रमकाइ सो, पित्तशूल कहि ताहि॥

प्रतीकार

बागै सैंधव कूट पुनि, चंदन लाल मँगाय।
नागकेसरी बाँटि सम, छेरी दूध पकाय॥
तातो लेपै मस्तकै, दिवस तीनि परमान।
पित्तशूल की पीर सब, शिर ते जाय परान॥

आधाशिशी की वृद्धि—चौपाई

गरम होय नर शीश तपाय; सरदी ताके बीच समाय
पीपरि जमै शीश में जाते; पीड़ा करहि अधाशी ताते

आधाशीशी के लक्षण—दोहा

आधे शिर पीड़ा घनी, अरु पुनि जीव भ्रमाहि।
नयन गटाभो पीर अति, कहत अधाशी ताहि॥

प्रतीकार

मृगमद मिंगी जु अंड की, बाँटि नासु यह लेय।
आधाशी बहु दिवस की, ताहि बिदा करि देय॥

पुनः

बच मुलहेठी सारिवा, कूट पीपरै आनि।
काँजी सों लेपन करै, अर्धशीश दुख हानि॥

पुनः

मिरच निंबौरी सम करौ, निंबूरस पिसवाय।
अंजन कीजै नयन में, अर्धशिरोवत जाय॥

पुनः

नास दीजिये घीउ में, सेंधव नोन पिसाय।
अर्धशीश की पीर अति, या ओषधि ते जाय॥

पुनः

कूट अंड की जरहि लै, छाँछि मध्य में पीस।
सुमनकली मुचुकुंद के, अर्धशीश दुख खीस॥

पुनः

सोंठि सौंफ पीपरि बहुरि, मोथा और उशीर।
जटा पीसि जाठौ सलिल, तुरत मिटै शिरपीर॥

पुनः

केसर घृत में भूजिकै, तामहँ मिश्री सान।
छोरि दूध में नास दे, अब गुण सुनहु सुजान॥
नाक कान भौंहैं नयन, शिर को शूल बहोर।
अर्धशीश दुख नाशियो, और पवन को जोर॥

पुनः

जाठो सोंठि बिड़ंग पुनि, महुआ घमिरा रंग।
घृत सँग देतहि नासके, अर्धशीश दुख भंग॥

पुनः

हरड़ बहेरे आँवले, गुर्च नींब की छालि।
लीजै हरड़ चिरायतो, एकत हाँड़ी घालि॥
अष्टशेष काढ़ो करै, गुड़ मिलाय कै देय।
संयम से रोगी रहै, रोग सकल हरिलेय॥
कर्ण-पीर शिर-पीर पुनि, दंत-पीर दृग-पीर।
सूर्य-पीर आधी मिटै, शुक्र दोष है धीर॥

पुनः

बड़ी कटाई के फलनि, कूटि निकारै रंग।
गुंजा बाँटै लेप करि, इंद्रलुप्त करि भंग॥

पुनः

मिश्री शीतल नीर सों, घोरि पियावै कोय।
आधाशीशी पीर पुनि, ताको कबहुँ न होय॥

वायु-शिरोवर्त का उपचार

देवदारु अरु कायफल, कूट अंड को तेल।
काँजी सों लेपन करै, वातशीश दुख ठेल॥

कफ-शिरोवर्त का उपचार

छड़ बच मोथा रासना, कूट सुअंड मिलाय।
तप्त नीर सँग लेपिये, कफ शिर-पीड़ा जाय॥

पित्त-शिरोवर्त का उपचार

जर अरंड की क़ायफल, कूट मिर्च जल संग।
तातो करि शिर लेपिये, दुख त्रिदोष करि भंग॥

पुनः

चंदन शिवा कचूर लै, हाऊ बेर उशीर।
दूब कमल के बीज सम, लेपत नाशै पीर॥

पुनः

पीपरि मिर्च हरीतकी, ये तीनों सम बाँटि।
काँजी सेती लेप करि, पित्त शिरो दुख डाँटि॥

नेत्र-रोग की वृद्धि

लोहू उमँगै नयन को, शीतल हो ठहराय।
वायुयोग ते नयन में, चुल हो पीर कराय॥

लक्षण

बात पित्त कफ दोष ते, झिरत नयन ता नीर।
नयन रोग वह कहत हैं, प्रबल करत है पीर॥

उपचार—पद्धरी छंद

लै लोधसंग घृत भूजि लेउ। धरि कपरा में पुटरी करेउ
करि दारुहरद को क्वाथ वीर। दृग पुटरी फेरहु तासु नीर
जे आँखिन परकरिकोप रोग। सब दूरि होयँ पुटरी सुयोग

पुनः

घृत भूजि नींब जाती सुपत्र। दृगपीर हरहि बाँधत सु तत्र

पुनः—दोहा

रूसा त्रिफला गुड़च पुनि, देवदारु को आनि।
चंदन रक्त चिरायतो, नींबछालि कहजानि॥
परवर पत्र अतीस लै, नागरमोथा ल्याय।
इंद्रयवा पुटकी कुरौ, सतुआ सोंठि मँगाय॥

काढ़ो करिकै दीजिये, नेत्र-रोग सब खाय।
पीनस क्षत स्वरभंगता, श्वासदोष मिटि जाय॥

पुनः

गुड़ची त्रिफला आनिकै, काढ़ो करै बनाय।
लिखो ग्रंथ शारंगधर, नेत्र-रोग सब जाय॥

पुनः

दारुहरद सावन बहुरि, जाठौ सेंधव नौन।
गोली जलसों लेपि दृग, पीर राखिहै कौन॥

पुनः

घीउ अजा को भूजिये, सेंधव लोध मिलाय।
काँजी सों करि पोटरी, फेरो दृगनि बनाय॥
खट्टो खारो नहिं भखे, आठ सात दिन तेह।
कंडू पीड़ा दाह पुनि, सगरे रोग हरेह॥

पुनः

त्रिफला चूरण सहत घृत, नयनरोग को खाय।
कै जल पीवै नाक सों, अति दृगज्योति बढ़ाय॥

पुनः

सेंधव गेरू फिटकरी, अभया जलमहँ पीस।
नयनन लेपत ही तबै, सबै रोग करि खीस॥

पुनः

सोंठि नींब के पत्र पुनि, सेंधव जल में बाँटि।
ताते करि दृग लेपिये, सब पीड़ा को डाँटि॥

पुनः

मेहँदी रस में जोश दे, कातिक फल दै गारि।
नयनन अंजन कीजिये, सबरे रोग बिडारि॥

पुनः

काँसे सों काँसा घिसै, सेंधव करुओ तेल।
नयनन आँजत पीर सब, मिटत न लागै झेल॥

पुनः

अजाक्षीर कुलथी भिजै, कूटि करै त्वच हीन।
हरद मिलै दृग आँजिये, पीर रहै न प्रवीन॥

पुनः

सिंगू पत्रन कूटिकै, मधुयुत नयनन आँजि।
एकपलक में नयन की, सब पीड़ा तजिभाजि॥

पुनः

रसवत शोधी फिटकरी, नारी पयहि मिलाय।
कासथान रगड़ा करै, नयन सुपीड़ा जाय॥

नयनफूली का प्रतीकार

लै कपूर वरदूध में, नयनन अंजन देय।
फूली मिटैं छोटी बड़ी, पर संयम करि देय॥

पुनः

लोध लाख त्रिफला बहुरि, पीपरि सेंधव नोन।
भँगराज़ड़ रस आँजि दृग, फूली रखिहै कौन॥

तिमिरफूली का उपाय

चिनी खाँड़ लै चारि पुनि, स्याह कोत्र टँक तीन।

बाँटि छानि जल चूक सों, नयनन अंजन कीन॥
दो सातैं अंजन करै, फूली जाय बिलाय।
तिमिर धुंधि पुनि ना रहै, दृग निर्मल हो जाय॥

पुनः

स्याह काँच सूक्षम करै, तामें बासन मेलि।
काँसे सों दे रगड़िये, निम्बू रस सों मेलि॥
तीनि पहर लौं गाड़िये, दृग आँजै दिन तीस।
मिटै शीतला फुली दृग, बहुअति निर्मल दीस॥

पुनः

हरड़ मिर्च पीपरि कही, किरमाला के बीज।
मधु घृत सों अंजन करै, नाश फुली को कीज॥

तिमिर वायु का प्रतीकार

सुरमा मुरदाशंख लै, सेंधव मनशिल आन।
समुदफेन मिश्री बहुरि, त्रिकुटा आनि समान॥
क्षेरीपय कण जाल युत, पीसि आँजि दृग दोय।
फोनाखोला वायु सी, पीर हरै नहिं कोय॥

पुनः—चौपाई

नींबू तीनिक लेउ मँगाय; तिनकी छह फाँकै करवाय
चिनी खाँड़ भरि तिन में देय; फाँकै सकल चूसि करिलेय
नित्य नित्य यहि भाँति कराय; दिन एकईस नेम करि खाय
तिमिर धुंधिताई मिटि जाय; वैद्य-प्रिया यह कहो उपाय

पुनः

त्रिकुटा हरड़ बहेड़े आन ; मनशिल सुरमा बच लै जान
लीजै साट संग की राख ; और खपरिया ये सम भाख
बाँटि कपरछन कीजै ताहि ; गोली मिर्चप्रमाण बताहि
स्त्रीपय में गोली करै ; ताही पय सों अंजन भरै
छाया तिमिरधुंधि मिटिजाय ; नेत्र-रोग क्षणमाहिं नशाय

सबलवायु का प्रतीकार—दोहा

मारो ताँबो जसद पुनि, नीलाथोथा आनि।
छीपकना अरु फिटकरी, सागरफेन बखानि॥
काँसपात्र महँ रगड़िये, घृत तू वायु मिलाय।
निशा जुअंजन कीजिये, सबलवायु मिटि जाय॥

पुनः

जीरा काही फिटकरी, त्रिफला सोवा ल्याय।
रसवत हालो हरद पुनि, तामहँ लोध मिलाय॥
ये औषध सम आनिकै, करहु पोटली पीसि।
सबलवायु को नाशह्वै, नयनन निर्मल दीसि॥

प्रबाला का प्रतीकार

गुड़ गेरू सेंधव बहुरि, मिर्चैं लेय समान।
जलसों लेपै नयन-युग, छर परबाल नशान॥

पुनः

मूत्र हिरण को ल्यायकै, विषखापरो मिलाय।
अंजन कीजै नेत्र में, परबाला मिटि जाय॥

निशि-अंध का प्रतीकार

सुरमा रजनी युग्मकरि, जाती रस संयोग।
दृग आँजै निश्चय भये, निशि-अंधा निररोग॥

पुनः

सावनवारो बारि कै, दृग अंजन करि देय।
निशि-अंधा के रोग को, यह ओषधि हरि लेय॥

पुनः

मिंगी बहेड़े आम की, जल घिसि अंजन देय।
निशि-अंधा के रोग को, कै दधि मिर्च हरेय॥

नेत्रों के सर्वरोग

सावन गेरू जायफल, और हिरमिंजी लेय।
सम करि घोटै तेल में, नयनन अंजन देय॥
फुली वायु परबाल दुख, आँख दूखती होय।
कंडू रक्तप्रवाह दृग, यासों रहै न कोय॥

पुनः

मिरच मिंगी हिंगोटकी, चूरण सम करि लेय।
भँगरा को रस काढ़िकै, तीनि भावना देय॥
मास एक अंजन करै, कंडू मूर्च्छा जाय।
मथा वायु बिच्छू सरप, इनको जहर मिटाय॥
निशि अंधो फूलीतिमिर, अरु काँवरि विनशाय।
नयन रोग सब हरण को, यह अंजन सुखदाय॥

पुनः—दुर्मिला छंद

तामेश्वर अजमोद लोह चना लौंग सहँजने की जड़ पावै।
समुद्रफेन जावित्री एला खुरासान अजवाइनि लावै॥
ल्याय चिरौंजी और शर्करा तीनि तीनि ये टंक मँगावहु।
कस्तूरी कर्पूर जायफल शीशो टंक टंक प्रति ल्यावहु॥
हरड़-छालि बादाम पीपरैं तालपत्र मुरदासन ल्यावै।
दो-दो टंक लेइ ये ओषधि पाँच टंक पुनि सहत बतावै॥
तज फिटकरी खपरिया जाठो पित्तपापरो सुंदर लीजै।
चारि-चारि ये टंक तौलि फिरि बाँटि सबै चूरण शुभ कीजै॥
अजादूधसों गोलीकरिधरिजलघसिनयननअंजन दीजै।
तिमिरधुंधिद्दगव्यंथाछाँहपुनिमोतीबिंद अकोडक छीजै॥

कर्णरोग-वृद्धि-लक्षण—दोहा

वायुयोग जलयोग कफ, मैल करै अति जोर।
पकैं स्रवैं अरु बधिरता, करहि पीर अति घोर॥

कर्णरोग का प्रतीकार

आक-पत्र तिल-पत्र पुनि, लहसुन घृत सब संग।
मीड़ि निचोरै कान में, पीर बधिरता भंग॥

पुनः

आक-पत्र लहसुन मिलै, बाँटि काढ़ि रस लेय।
तातो डारै कान में, पीर बिदा करि देय॥

पुनः

सौंफ सोंठि सेंधव बहुरि, देवदारु बच आनि।
तातो अजया-मूत्र सँग, डारि श्रवण विष-हानि॥

पुनः

सेंधव छेरी-मूत्र सँग, डारि कान करि तप्त।
पके पान कै आक के, चुपरि मीड़ि रस तप्त॥

पुनः

तुम्बरि शुंठी हींग सों, बाँटै सरसों तेल।
डारि बधिरता शूल दुख, हरै शब्द अनमेल॥

पुनः

बुकनी सागरफेन की, सूखी डारै कानु।
पीब रहै नहिं कान में, अँधियारो जिमि भानु॥

पुनः

बेर बकाइनि पात रस, रजनी अरु मधुझारि।
ये मिलि डारै कान में, कृमि ही पीर बिडारि॥

पुनः

गुड़ गूगर बच हींग पुनि, सेंधव सोंचर आन।
डारि नींबरस खरलिये, नीको बहिरो कान॥

पुनः

वारि आँवरे को तवै, आक-पात रस गारि।
तातो डारै कान में, बहिरो रोग बिडारि॥

पुनः

आजा झारो रंग लै, चुरै तिली के तेल।
डारै नित नर कान में, मिटै बधिरता खेल॥

पुनः

कंजा-पात मँजीठ पुनि, जाठो मोम उशीर।
रजनी सरसों स्याह लै, पात चमेली वीर ॥
टंक टंक दो औटिये, कारे तिल के तेल।
डारि कान में पीर दुख, मिटै बधिरता खेल ॥

पुनः

सूरजमुखी सिंदूरिया, मूल काढ़ि रस लेहि।
डारि किधौं त्रिकुटासहित, पीर कृमी हर तेहि ॥

पीनसरोग की वृद्धि

सबलवायु में तेल अरु, घीव खटाई खाय।
शीतल पीवै नीर तब, पित्त शीत ह्वै जाय ॥
माथे की भेजी जमै, फिर रस निकसै नास।
पीबगंधजलचुवहि पुनि, यों उपजै पीनास ॥

पीनसरोग के लक्षण

गलग्रह कान सुनै नहीं, नाक बहै शिरपीर।
हिय भारी फीको वदन, नींद न आवै धीर ॥
तृषा क्षुधा थोरी बहुरि, कर पद शीतल जास।
नासा ते जल पीत कटि, ये लक्षण पीनास ॥
नाड़ी चलै कपोत-गति, युक्ति कही लुकमान।
वैद्य-प्रिया के ग्रंथ में, परखो वैद्य सुजान ॥

पीनसरोग का प्रतीकार—छंद त्रिभंगी

दधि उत्तम लावै, मिरचमिलावै, गुड़ सँग प्यावै, रुचिभरिकै।

तब पीनस वैसो, कहियतु तैसो, जायसु जैसो, झरि-झरिकै॥
अरु गेहूँ ल्यावै, चून पिसावै, रोटि पकावै, घृत मेलै।
ताके नित खाये, देत बताये, मनभाये, पीनस ठेलै॥

पुनः—दोहा

नाक सूखि बोजी करै, तो यह यत्न बनाउ।
मिश्री पय में डारि कै, दो सातैं लगि प्याउ॥

पुनः

कुरौ कलौंजी पीपरै, बच लै सरिस बटाय।
पुटरी सूँघै जो सदा, तौ पीनस मिटि जाय॥

पुनः

पाट मुलहठी दो हरड़, पीपरि जैती-पात।
अरु दात्यूनि मँगाय करि, बाँटि छानि लै तात॥
चुरै तिली के तेल में, नास लेय नित जास।
या विधि सों पीनास तब, तनते जाय निरास॥

पुनः

शुंठी गुड़ पीपरि मिरच, करि गोली नित खाय।
शीश-पीर पीनास दुख, सो हरि जाय बिलाय॥

पुनः

पीपरमूल जु लीजिये, युग्म कटाई लेय।
मिटै रोग पीनास को, काढ़ो करिकै देय॥

पुनः

नौसादर चूना मिलै, जो कइ सूँघै नास।
ताके तनमें ना रहै, दुखदायी पीनास॥

नाकमालिनि का प्रतीकार

ले इलायची राल पुनि, गो-घृत माहिं मिलाय ।
लेपन कीजै नाक में, मालिनि-रोग मिटाय ॥

पुनः

क्वाथ और सिंदूर पुनि, माखन में मथि ल्याउ ।
मिटै नाक की मालिनी, जो यह लेप कराउ ॥

मुखरोग की वृद्धि

वायु-पित्त-कफ-कोप ते, होत वदन के रोग ।
जीभ-दोष दुर्वासना, फोड़ा फुरिया योग ॥

मुखरोग का प्रतीकार

छालि लेय कचनार की, चुरै करूला प्रात ।
करि जिह्वा-फोड़ा तबै, मिटै तरकिबो वात ॥

पुनः

तवाखीर एलायची, माखन खैर मिलाय ।
मथि लेपै मुखके बिषे, सब पकिबो मिटि जाय ॥

पुनः

राल मैनु घृत डारिकै, गुड़ मिलि लेय बनाय ।
ओंठ दरकिबो कठिनता, मुखपकिबो मिटिजाय ॥

पुनः

कारो जीरो इंद्रयव, कूटि तीनि दिन पीसि ।
वदन-पाक दुर्गंधि व्रण, दूर करै यह मीसि ॥

पुनः—चौपाई

पीपरि बीरबहूटी आनो ; यवाखार रस तुम ये जानो

दारुहरद लै आवै त्योंहीं ; चूरण डारि सहत में ज्योंहीं
गोली करि मुख राखै मेलि ; कंठ-रोग मुख पकिबो ठेलि

पुनः—दोहा

त्रिफला दाख गिलोय पुनि, पात चमेली ल्याय।
दारुहरद अरु पाठ पुनि, ये लीजै सम भाय॥
काढ़ो करि मधु मेलि कै, करै करूला प्रात।
वदनपाक मुख-रोग को, रक्तझिरन को घात॥

दंतरक्त का प्रतीकार

ससवाँसे को सहत सँग, मिलै दंतजर ल्याय।
प्रात सातदिन कीजिये, दंत-रुधिर मिटि जाय॥

दंतरक्तकीट का प्रतीकार

वासा मोथा काथ लै, कटू कूठ मँगवाय।
लोध मँजीठहि पायकै, पीसहु सब सम भाय॥
यह ओषधि दाँतन मलै, रक्त-गमन मिटि जाय।
पीर कीट की प्रबल दुख, मुख ते दूरि पराय॥

दंतपीर का प्रतीकार—अरिल्ल

हरड़ बकायन त्रिकुट बिड़ंगे मोथही।
सुखै नींब के पत्र सुरस सब करि सही॥
गाय-मूत्र सों सानि छाहँ सुखवै वही।
सोवै मुख में नाय दंत दृढ़ हैं कही॥

पुनः—छप्पय

गजपीपरि बच हरड़ कूट अजमोदा लैकै।

सोंठि चमेली-पात पियाबासे को दैकै ॥
पुनर्नवा ये कूटि छानि चूरण मुख राखहु ।
बड़े यत्न करवाइ कहैं मुनि या विधि भाषहु॥
दंतशूल-कृमि-वातहर शिथिल दंत-दृढ़-करन अति।
दुर्गंधि दुखित नाशै सबै वैद्य-प्रिया भाखत सुमति ॥

पुनः—दोहा

पान खात में जो कहूँ, चूना दाँतन खाय।
करत कुरूला तेल के, कै छाछिक करवाय ॥

पुनः—कीलारोग

सरसों सेंधव लोध बच, जलसँग बाँटि बनाय।
वदन प्रात नित लेपिये, कीला रोग पराय ॥

पुनः—दंतपीर का प्रतीकार

थूथो एला फिटकरी, खैर जु सम बँटवाय।
चौदह दिन दंतनि मलै, बहुत पीर कटि जाय ॥

मुख-झाँई का प्रतीकार

लोध हरद कटु लोन पुनि, निंबू रस में गारि ।
ताके मुख की झाइँ स ॅ, सात दिवस में टारि ॥

पुनः

इगुआ सिंगि निकारि कै, जल सों मुख करि लेप।
दिन इकईस विचारि कै, दिन झाँई को छेप ॥

पुनः—चौपाई

तिल कारे जीरे दोउ आनहु; सरसों मिलै क्षीर सों सानहु
करो लेप मुख ऊपर सोइ; मिटै झाइँ सब रहै न कोइ

पुनः—दोहा

बेरीलाख मँगाय कै, केसरि सब सम पाय।
नींबूरस सों लेपिये, मुख की झाईं जाय॥

पुनः

जीरो सरसों पीत लै, बाँटि नीर सों लेप।
कै बाँटै बादाम की, मिंगी लेप ते छेप॥

मुख-गांधि का प्रतीकार

एला लौंग कपूर लै, जातीफल जावित्रि।
तांबूलै धरि खाय नित, दुर्गंधिहि न रहत्रि॥
बेल घनेरी एलची, जावित्री जस पाय।
गजकेसरि अरु जायफल, यह ओषधि समखाय॥
गोली मधु पय सँग करौ, शयन-समय मुखजाय।
आनन की दुर्गंधता, तुरतहि देय बिलाय॥

मुहासे-रोग का प्रतीकार

कूट लोध पय घृत बहुरि, लै मसूर की धूरि।
बररोहे युत ले पिये, होयँ मुहासे दूरि॥

मृगी-रोग की वृद्धि—भुजंगप्रयात

विकारै बढ़ै पित्त को जासु देही।
परैं कीट ता शीश कारं न तेही॥
तपै फेन विषकीट सलबल कराई।
बढ़ै पित्त नयनानि के बीच छाई॥
तबै आनि मूर्च्छा प्रवेशांति तेही।

मृगी-रोग या योग उपजंति देही ॥

मृगी-रोग के लक्षण—दोहा

रक्त-वदन दृग पीतपुनि, मुख कटु व्याकुल अंग।
कर पद तप्त हियो जरै, शीरे जल रुचि संग ॥
देह सुस्त कहुँ वेग पुनि, भूखै आवै भोर।
गिरै मूर्च्छि मुख-फेन अरु, बजे नासिका ठोर ॥
वायु पित्त तनु भरि रहै, मृगी करै तब जोर।
कफ आवै त्रय-दोष ते, पीड़ा करै कठोर ॥
कँपै नासिका स्वर बहुरि, ताती निकसै वात।
काक-चाल नाड़ी चलै, मृगीरोग इमि तात ॥

मृगी-रोग का प्रतीकार

ब्रह्मी सोंठि चिरायतो, पुष्करमूल कचूर।
दारुहरद सुरुदारु बच, मोथा पीपलमूर ॥
अभया रोहिष सिरसफल, कूट क्वाथ सम जानि।
अपस्मार उन्माद भ्रम, रोग बिसूची हानि ॥

पुनः

शहद संग बच लीजिये, खुरासान दो टंक।
दूध भात पथ दीजिये, मृगी रहै नहिं अंक ॥

पुनः

सेंहुड़ में मिरचैं धरै, दिन इकईस विचारि।
नास दीजिये नीर सों, मृगीरोग को टारि ॥

पुनः

बचरस ब्राह्मी कूटि सम, शंखाहूली संग।
गाय घीउ सँग साधिये, मृगी रोग करि भंग॥

पुनः

भौम मँजारा बाँटिकै, जल सँग दीजै नास।
कीड़ा मिरगी को मिटै, उपजै अंग विलास॥

पुनः

सात सात दिन सातई, माछी मारि मँगाय।
वा रोगी की नाक में, दीजै नास दिवाय॥

आठवाँ शृंगार

तृष्णा, भ्रम-भँवर, मूर्च्छारोग, दाहरोग, उन्माद, अपस्मार, आमवात और रक्त-कुष्ठ रोग की वृद्धि, लक्षण और प्रतीकार

तृष्णा-रोग के लक्षण—दोहा

कंठ शोष पुनि श्वासज्वर, कास द्रोह हो जाय।
बार बार पानी पियै, तृप्ति न तृषा बुझाय॥

तृष्णा-रोग का प्रतीकार

धना खील मिश्री बहुरि, दाख समेत खजूरि।
शर्बत करिकै पीजिये, तृष्णा जैहै दूरि॥

पुनः

शिलाजीत मिश्री बहुरि, बड़ी लायची कूठ।
बड़ की जर शुंठी शहद, खात तृषा तन रूठ॥

पुनः

मुलहेठी डौडा बहुरि, दाख मुनक्का पीस।
माख्यो संग मिलाय खा, तृष्णा होवे खीस॥

पुनः

गटा कूट मधि दाख बर, खील समेत पिसाउ।
गोली करि राखै वदन, तृष्णा रोग मिटाउ॥

भ्रम-भवँर-रोग की वृद्धि

कर पद हिरदय नासिका, शीत रुधिर जब हीन।
वायु शीत यक होति है, भवँर होय परबीन॥

भ्रम-भवँर के लक्षण—अरिल्ल

हिक्क दाह शिरकंप शूल होय श्वास ही।
चित्त विकल पुनि जासु नींद को नाशही॥
शीतश्लेषम होय पुनि तृष्णा मूर्च्छा राख ही।
मदभ्रम के ये चिह्न वैद्य गुणि भाषही॥

भ्रम-भवँर का प्रतीकार

सोंचर जीरे मिरच पुनि, अमलबेत कनि जाल।
बड़ी लायची शर्करा, करि चूरण ततकाल॥
खाय प्रात दो टंक पुनि, तौ मदभ्रम मिटि जाहि।
कफ खाँसी धाँसी मिटै, ग्रंथ वृंद कहि याहि॥

पुनः

सोंठि हींग सोंचर बहुरि, चाब जवाइनि मेलि।
शीतल जल सों पीजिये, मदभ्रम को दे ठेलि॥

पुनः

दाख मुनक्का कैथ अरु, दाड़िम पान सु लाय।
मधु मिश्री सों दीजिये, तौ मदभ्रम मिटि जाय॥

पुनः

लाय जवासो घृत सहित, खातहि भ्रम हो हानि।
श्रीदुर्गा के ध्यान ते, नाश रोग को जानि॥

मूर्च्छा के लक्षण

उर पीड़ित जंभा घनी, मृषा चेतना प्रान।
नीलस्याहआकाशदृग, दीसै सुनै न कान॥

भेजी बिन माथे निबल, तामहँ वायु समाय।
अंगशिथिलबुजकैंश्रवण, कहत मूर्च्छा बाय॥
जानि परै दुख सुख नहीं, परै काठ-सम देह।
तासों कहिये मूरछा, छह विधि के संह देह॥

मूर्च्छा-रोग का प्रतीकार

दाख मुनक्का आँवले, विश्वा मधु सों सानि।
प्रात खाय दिन सात लगि, सब मूर्च्छा की हानि॥

पुनः

पंखा जल सों सींचिबो, शीतलमणि-गण-हार।
फूल सुगंध अनेक ये, मूर्च्छा के उपचार॥

पुनः

बेर सिंगी गजकेसरी, पीपल और उशीर।
शीतल जल सों दीजिये, मूर्च्छा की हरि पीर॥

पुनः

पीपल की बुकुनू करै, चाटै शहद मिलाय।
या ओषधि सों मूरछा, नर की तुरत नशाय॥

पुनः

अदरक को रस मिरच लै, नासु देय मुख मूँदि।
मूर्च्छा तबै जगाइये, जो अचेत भयो कूदि॥

दाह के लक्षण

बाहर अंदर पुरिष है, दाह उठै बिकरार।
उदर तप्त मूर्च्छा तृषा, लक्षण दाह निहार॥

दाह का प्रतीकार

चंदन कृष्णा पीसिकै, मिश्री माहिं मिलाय।
जलसों पीवै प्रात उठि, दाह शरीर मिटाय॥

पुनः

नेत्रबाल पद्माक लै, चंदन और उशीर।
चूरण जलसों पीजिये, मिटै दाह की पीर॥

पुनः

घृत धोवै सौ बार पुनि, मथै अंग हर दाह।
कै घृत मिश्री सोंठि सों, जरनि दोष निरबाह॥

पुनः

वंशपात के काथ में, शहद डारिकै खाय।
रुधिर पूर्ण बाढ़ै उदर, दाह दोष बिनशाय॥

पुनः

बेरी पल्लव आमले, तंडुल-जल सँग बाँटि।
हाथ पावँ लेपन करै, तुरत दाह को डाटि॥

पुनः

धान धान्य की खील लै, ज.ठौ मधु बच संग।
बररोहो पुनि कूट दे, दाह-दोष करि भंग॥

पुनः—अरिल्ल

मोथा एला लौंग बेल पुनि आनहू।
नागकेसरी खाँड़ सुचंदन जानहू॥
बेर मिंगी लै शहद पीउ परभात ही।

वमन-दोष त्रय-दोष वेगि मिटि जातही ॥

उन्माद वृद्धि—दोहा

दोष अमारग जायकै, मत्तकर्म मन मोहि ।
व्याधि यहै उन्माद इमि, नाम बतायो तोहि ॥

उन्माद लक्षण—छप्पय

मति विभ्रम अति होय अटपटे वचन निकालै ।
हृदय सुन्न अति दाह हास्य बहु इच्छा चालै ॥
गीत-नृत्य करि रुदन वक्र-जिह्वा इमि चिह्ना ।
तनुहि उठै उन्माद भूत प्रेतौ के चिह्ना ॥
अति ग्रंथि शिथिल जिह्वा विना अंग कँपावै बहु परै ।
ये लक्षण उन्माद के वैद्य-प्रिया इमि उच्चरै ॥

उन्माद-रोग का प्रतीकार—दोहा

कूट लौंग असगंध पुनि, दोऊ जीरे आनि ।
त्रिफला अरु अजमोद लै, शंखाहूली जानि ॥
पाढ़ आनि चूरण करै, ता समान बच लेय ।
ब्रह्मनोनिआ काटिरस, तीनि भावना देय ॥
बहुरि शहद घृत भावना, दै चूरण धरि राखि ।
पैसा भरि उठि प्रात ही, उठिकै चूरण चाखि ॥
साठि दिवस के नियम ते, बढ़ै बुद्धि उर धीर ।
सागरसुत यहि नाम हरि, उन्मादी की पीर ॥
उलटी बुधि नाशै बहुरि, अपस्मार मिटि जाय ।
चतुरानन भाषो यहै, जग जीवन हित पाय ॥

पुनः

गूगर ग्रंथिक हरमली, नील वस्त्र में पाय।
भूत जिन्हैं देखत भजै, अरु उन्माद बिलाय॥

पुनः

कंजा पत्र पलाश के, देवदारु बच आनि।
मालकाँगनी हरद दो, कंजापत्र बखानि॥
त्रिकुटा और मँजीठ पुनि, निरबीसालौ हींग।
बाँटि छानि कै मूत्र में, छानि छाग के रींग॥
मंत्र यंत्र अरु तंत्र ही, भूत प्रेत उन्माद।
और डाकिनी शाकिनी, मेटहि धूप उपाध॥

पुनः—छंद

तेल लगाय सरस सरसों को बाँटि उतानो पारे।
करै घाम माँझ करि चाबुक बोदर लै लै मारे॥
भाँति भाँति डरपावै बंदीखाने सूनो राखै।
उन्मादी के भले करन को वचन भयानक भाखै॥

पुनः

तातो करै लोह लै लै कै अंगनि अंग लगावै।
करै तेल तातो अरु पानी तासों तन छिरकावै॥
ऐसो करै यत्न बहु भाँतिन कै यक वैद्य बतावै।
उन्मादी नर को तब बखतानि चित्त ठिकानो आवै॥

अपस्मार के लक्षण—अरिल्ल

हृदय कंठ जेहि सुन्न मूर्च्छा स्वेदही।

नींदनाश मति मूढ़ कँपै तन खेदही ॥
तृष्णा कफ चक्राक्षि शीत हों अंगही।
ऐसे लक्षण अपस्मार जानो सही ॥

अपस्मार का प्रतीकार—दोहा

पीतो लावे पुष्प में, कुत्ता को उर फारि।
ताको घिसि अंजन करै, अपस्मार दे टारि ॥

पुनः

जाठौ जल सों पीसि कै, घृत सँग धूनी देय।
अपस्मार के खून को, यहै यत्न करि लेय ॥

पुनः

चूरण बच को शहद सँग, खाय नित्य परभात।
दूध भात पथ दीजिये, अपस्मार मिटि जात ॥

पुनः

जाठौ जलसों पीसि कै, तीन दिना लगि पीउ।
अपस्मार नाशै बहुरि, अधिक दिवस लगि जीउ ॥

पुनः

चूरण करि दशमूल को, शहद संग नित खाय।
कै काढ़ो करिकै पियै, अपस्मार मिटि जाय ॥

पुनः

सोंठि मिरच अरु पीपरै, दुइ दुइ माशे लेय।
लै गाडिबीजा ल्यायकै, बारह माशे देय ॥
बाँटि छानि जल घोरिये, तोरौ सहित मिलाय।

अपस्मार अरु हौलदिल, या ओषधि सों जाय ॥

आमवात की वृद्धि—चौपाई

रक्त विकार देह में जान; बहुरि खटाई खाय निदान
जब त्रयदोष चलै बरु पाय; रक्त फाटि देही को जाय
आम बढ़ै कफ को बल देखि; अतिविकारतनुकोतबलोखि
ऐसो फाटि जाय जब श्रौन; आमवात कहियत है तौन

आमवात के लक्षण

रक्त पित्त अति पियरो होय; करपद हियो तपै पुनि सोय
नयन सफ़ेद तृषा अधिकाय; देह अशुद्ध नींद सो हाय
भूख हीन ज्वर अंतर जान; गुदाभ्रष्ट मल नीर समान
जानु जंघ कटि उर में शूल; सूजै आमवात दुख-मूल

आमवात का प्रतीकार—दोहा

पाढ़ कटाई पीपरै, सोंठि हरीत मँगाय।
चित्रक जीरो ग्रंथिका, गजकेसर लै आय ॥
मोथा सब सम लीजिये, बाँटि छानि कै लेय।
तप्त नीर सों रोगिये, प्रात पियन को देय ॥
आमवात पीड़ा मिटै, शूल अहूख बिलाय।
खाँसी धाँसी और कफ, प्लीहा-रोग मिटाय ॥

पुनः

देवदारु विषखापरो, सोंठि सँहजनो आनि।
सरसों काँजी सों मथै, लेप सोज की हानि ॥

पुनः

सोंठि बिड़ंग हरीतकी, देवदारु रज मेलि।
पियै तप्त करि प्रातही, आमवात को ठेलि॥

पुनः

दारुहरद एरंड-जड़, बायबिड़ंग अतीस।
मिरच इंद्र-यव आनि कै, सब सम पीजै पीस॥
तप्त-नीर सों पीजिये, आमवात मिटि जाय।
कृमि की पीड़ा उदर ते, याही सों जरि जाय॥

पुनः

गूगर गुड़ुच पुनर्नवा, शिवा हरिद्रा दाल।
धेनुमूत्र सों पीजिये, सोज अंग की टाल॥
मिंगी अंड की पीवही, दूध साथ नित बीर।
कटिसंधानी सहित हरि, आमवात की पीर॥

पुनः

सतुआ-सोंठि अरंड की, मिंगी खाँड़ सँग खाय।
तौ वहि नर की देह ते, आमवात मिटि जाय॥

पुनः

रसना मिलवै अंड-जर, शुंठी पुनि देवदारु।
आमवात सब अंग को, खातहि देय बिडारु॥

पुनः—छप्पय

आठ टका भरि सोंठि दूध बत्तीस टका भरि।
बीस टका भरि घीउ डारि तहँ लै कसार करि॥

खाँड़ अढ़ाई सेर घोरि कै पाग बनावै।
टका टका भरि सोंठि मिरच पीपरि सोलावै॥
तज पत्रज एला बहुरि पीसि डारि कतरी करहु।
बलपुष्टिकरण अरु सोजहर आमवात ओषधि धरहु॥

पुनः—दोहा

चीत त्रिफल बच कूट द्वौ, जीरे अजमुद मेल।
पीसि खाय कटि पीर हरि, आमवात को खेल॥

वात के लक्षण

रक्तपित्त ते गरम पुनि, तामें वायु समाय।
अंग छुवत जानै नहीं, वृत उपजावत आय॥
मंडल होय विसूचिका, वातरक्त अति दुष्ट।
ताहि बहुत दिन होत ही, रक्त देह में कुष्ट॥

वातरक्त का प्रतीकार—अरिल्ल

सोंठि मँजीठ शतावरि त्रिफला छाल नीम की आनो।
दोऊ हर्र गिलोय खैर लै चंदन लाल बखानो॥
मुरहारी अरु कुटकी बकुची किरमालो मँगवावै।
रासन जटा विड़ंग इँदोरन पीपल पाढ़ बतावै॥
लै निसोथ दात्यूणि जवासो काकमांचिकी लीजै।
परवर-पात मिरच सम काढ़ो लै चिरायतो दीजै॥
क्वाथ पियत परभात नेम करि सेहुक दाद मिटावै।
रुधिर विकार कोढ़ कंडू मिलि वातरक्त बिनशावै॥

पुनः

लेय मालती मूरहरी पुनि मनशिल कूट मँगायो।
कनकपात अरु नागबेलि के इनको रस निकसायो॥
पारे सहित तेल में औटै तब ता अंग लगावै।
कोढ़ बिसर्प बिमाई कंडू सन्निपात न रहावै॥

पुनः—दोहा

अंड-तेल मधु बच दुधी, गूगल और मँजीठ।
या ओषधि जब देत है, रक्तपित्त जब पीठ॥

पुनः

गुरवै को काढ़ो करे, अंडी-तेल मिलाय।
ताके पीते कहत सब, वात-रक्त मिटि जाय॥

पुनः—चौपाई

प्रस्थ एक गूगल कहँ लेय ; एकहि प्रस्थ गुडूची देय
डेढ़ प्रस्थ त्रिफला पिसवाय ; तिगुनो जल तामाहिं मिलाय
काढ़ो चौथे भाग रहाय ; छानि तासु रस फिरि औटाय
घोटि घोटि जब गाढ़ो परै ; तब उतारि धरती में धरै
तामें डारै ओषधि संग ; दंती त्रिकुटा बायबिड़ंग
त्रिफला तज घुँघची सब तोरि ; एक एकपल तौलि बहोरि
चारि टंक भरि मिलै निशोत ; ऐसे मिलै पाक यह होत
टंक तीनि उठि खैहै प्रात ; वातरक्त व्रण को करि घात
आमवात अरु कोढ़ प्रमेह ; तजै भगंदर नहिं संदेह

अमृतागूगल याको नाम ; वैद्यप्रिया वरणो अभिराम

कुष्ठरोग की वृद्धि

जब वनिता फूलनि पर आवै; रक्त हिये को बढ़न न पावै
ऐसे में पति संगति करही ; ताके पेट सुबालक जमही
जब बालक लेवे अवतार ; ताके तनु में रक्त-विकार
पिंड बीच महँ रक्त पराय ; ताते कुष्ठरोग उपजाय
रुधिर पुराने के परसंग ; कटैं कीट ता नर के अंग
अग्नि-वायु ता तनु में होय ; ग्रंथ कालिका भाष्यो सोय

कुष्ठरोग का लक्षण

पहिल प्रस्वेद अंग में आवै ; तप्त चिह्न पुनि पुनि उपजावै
यह ज्वाला पीवै जल शीत ; नेत्र रक्त श्वेत जनु खरीत
देही सगरी रक्त सुहाय ; रोम सकलतनु ते गिरि जाँय
मही दही की बहुती चाहि ; क्षुधा बहुत तिहि निद्रा नाहि
खुजली बहुत अंग में होय ; रक्त पित्त उपजावै सोय
रक्त देह को सब फटि जाय ; कर पद में हो निकसै आय
ता पाछे पुनि कुष्ठी होय ; रक्त विकार जानिये सोय
गज की नाली सो परमान ; ऐसे वैद्य लेहि पहिचान
उग्र पाप कछु पहिलो आय ; कै आहार विरुद्ध बताय
कोढ़ अठारह भाँति बखानि ; इन बातन ते लीजै जान

कुष्ठरोग का प्रतीकार—दोहा

हरद हरड़ बकुची बहुरि, सरसों मोथ बिड़ंग ।

कंजा सब सम बाँटि कै, गाय-मूत्र के संग ॥
शोधि सात दिन लेप करि, जहाँ कोढ़ उपजंत ।
साधै संयम सौं जबै, देही सुक्ख लहंत ॥

पुनः

कूटि बिड़ंगै लायची, सोंठि शतावरि संग ।
श्यामा अरु दात्यूणि पुनि, लै रसौंत पुनि अंग ॥
बाँटि छानि लेपन करै, गायमूत्र पुनि सोय ।
या ओषधि के योग ते, कुष्ठी नीको होय ॥

पुनः

लीजै ग्यारह सेर करि, त्रिफला ही को नीर ।
शोधि भिलावाँ डारि कै, तब औटौ बुधि बीर ॥
हँड़िया में चौथे हिसा, जब जल उटि रहि जाय ।
दश पल गूगल डारि करि, ता महँ देय मिलाय ॥
नीम खैर बीजा बहुरि, और इँदोरन लेउ ।
दोउ हरदी चित्रक हरड़, लै मँजीठ धरि देउ ॥
भारंगी सुरदारु सब, पैसा पैसा तौल ।
बकुची को परमाण यह, एक टका भरि कौल ॥
बाँटि छानि कै ओषधै, वा पानी में घोरि ।
तब ताकी गोली करै, बेर प्रमाण बहोरि ॥
गोली एक प्रभात ही, खात कोढ़ सब जाय ।

सर्वंगी सुंदर बरी, मुनि-जन दई बताय ॥

पुनः—सुन्नबहरी का प्रतीकार

इक थूथो बच टंक दो, तीनि सुटंक सुहाग ।
निम्बु आदि सम मिलै कै, पियै सुन्न दे त्याग ॥

पुनः—चौबोला छंद

लै गड़िया कमकोरि अंड शरफोंका अरणी जानो ।
छैकुरि हींग धतूरो कारो बकला इनको आनो ॥
काटि कपटि लै छाहँ सुखावै यंत्रपताल बनावै ।
तेल काढ़ि माशे भर मंडल खात कोढ़ मिटि जावै ॥

पुनः—चौपाई

पल भरि गंधक पलभरि पारो; मरो सार पलभरि निरधारो
पलभरि गूगल त्रिफला तीनि;चौंसाठि पल घृत उत्तम लीन
पलपल सोंठिशर्तावरिआनो;पलभरितौलिबकाइनिजानो
पलभरि तौलिशिलाजित लेय; भिंगी करंज घीव सम देय
सब चूरण मधु-घृत सों सानो; धरो चीकनो बासन आनो
मासे आठ प्रात उठि खाय; गलित कोढ़ सब जाय बिलाय

पुनः—दोहा

त्रिफला वासा नीम के, खैर पटोल गिलोय ।
चूरण पीवै नीर सों, नाश कोढ़ को होय ॥

पुनः

त्रिफला नीम मँजीठ बच, हरड़ बिड़ंग गिलोय ।

देवदारु कुटकी बहुरि, दारुहरद सम होय ॥
वासा लै चूरण करै, पियै नीर के संग।
कंडू झाईं कुष्ठ दुख, होय देह ते भंग ॥

पुनः

शरफोंका-जड़ बाँटिकै, अष्टविशेष पिवाय।
मंडल भरि काढ़ो पियै, कोढ़ वेगि मिटि जाय ॥

पुनः

सेमर-बीजा बाँटि जल, पैसा भरि पी जाय।
दोष-वर्ण नाशै तुरत, सुन्न वेगि नाशि जाय ॥

लघुमंजिष्ठादि क्वाथ

लै मँजीठ त्रिफला कटू, रजनी नीम गिलोय।
देवदारु बच पीसिकै, काढ़ो करिये सोय ॥
प्रात-समय जो पीजही, वातरक्त न रहाय।
आश्रम मंडल पाम दुख, कंडू कुष्ठ मिटाय ॥

मंजिष्ठादि क्वाथ

लै मँजीठ मोथा कुरो, बच शुंठी सु गिलोय।
दोऊ अरणी इंद्रयव, मुरहारी लै सोय ॥
देवदारु तज पीपलै, त्रिफला पाढ़ मँगाय।
और शतावरि गोखुरू, कुटकी संग बनाय ॥
नीम बकायनिछालि लै, अरु निशोत सम घालि।
इंद्राणी जु अफीम पुनि, अरु अतीस पद डालि ॥

जड़हि अडूस जवास की, छालि सिहारी लेहि।
ये सब ओषधि आनिकै, प्रात क्वाथ करि देहि॥
मंडू खोची कोढ़ पुनि, अष्टादश हरि लेय।
चना अलोनो पथ्य में, संयम सों नित देय॥
कोढ़ मिटै सुख ऊपजै, दिव्य देह हो जाय।
सर्व-रोग के नाश को, यहै ओषधी आय॥

श्वेतदाग का प्रतीकार

नीम घोंघची कूट बच, ये सब लेउ समान।
काँजी सों लेपन करै, श्वेतकुष्ठ की हान॥

पुनः—चौपाई

अर्क-मूलगंधक हरताल; कुटकी रजनी लेउ सँभार
गऊ-मूत्र लेपत दिन सात; श्वेतकुष्ठ को होवै घात

पुनः—दोहा

खैर आमरे क्वाथ करि, डारि बावची दोय।
एक मास में सब मिटै, श्वेत दाग तनु लोय॥

कोढ़ का प्रतीकार—दुर्मिला छंद

त्रेकुटा सरसों मनाशिल कंजा मोठ दारु बच लीजै।
ीडांग असगंध खिरहटी चंदनरक्त गोखुरू दीजै॥
ेवदारु छर पाढ़ कटाई नागरमोथ सहँजनो जानो।
ाहुड़-दूध शतावरि सालिब लै हरताल बहेरो आनो॥
ाब करेछ-बीज लै बनफल गद दशमूल बिड़ंगहि।

बक बड़ अंडी अरु सहदेई ब्राह्मी ल्याउ धतूरे संगहि ॥
बारह-बारह टंक लेय सब सेर बीस सरसों को तेलहि ।
औटि अंगमर्दन अष्टादश कोढ़ हरै गज-चर्महि ठेलहि ॥

पुनः—दोहा

पीपल सरसों-तेल अरु, गाय आक पुनि दूध ।
गाय घीउ ये चारिउ, पाव-पाव भरि सूध ॥
सेंधव नोन सुहाग लै, अरु हरताल मँगाय ।
टंक-टंक ये तौलि करि, दीजै सबै मिलाय ॥
पानी मधि मर्दन करै, दीजै आंख बचाय ।
कोढ़ अठारह औरहू, रक्त-विकार नशाय ॥

श्वेतकुष्ठ-प्रतीकार—चौपाई

लै अंजीर जड़ै भरि सेर ; आठ सेर पानी में मेर
औटत पानी सेरक रहै ; छानि राखि शीशी में लहै
पैसा-पैसा भरि नित खाय ; और दाग पर देय लगाय
उंचास दिना कीजै यह काम; अजितवर्ण नहिं करै सुकाम

नील और स्याह कुष्ठ का प्रतीकार

निंबुआ चारि काढ़ि रस लेय; माशे चारि सुहागा देय
नील कंठिया बाँटि बनाय ; चुरवै अतिपाको होय जाय
सोई तातो देय लगाय ; स्याह भये सो दाग मिटाय

पुनः—दोहा

श्वेत आक जड़ छालि ले, अद्रक के रस गारि ।

गोली घुँघची भरि भषै, छप्पन रोज विचारि ॥
पथ्य अलोनो दीजिये, गेहूँ चावल तासु ।
और वस्तु सबही तजै, कोढ़ अठारह नासु ॥

पुनः—चौपाई

पारो गंधक अरु हरताल ; भारंगी नौसादर घाल
यवाखार थूथो विष आनि ; सज्जी सोंठि फटकरी मानि
चोख सुहागा शोरा लेय ; सब सम चूरण करि पुनि देय
मर्दत तेल सुन्न नशि जात; वायु रक्त संधिक न रहात
सुन्न-काज यह धूरा कह्यो ; वैद्य-प्रिया कछु भेद न लह्यो

पुनः

भिलवाँ सेर एक लै आउ ; सतुआ सोंठि सेर इक पाउ
सेर डेढ़ लैं सहत मँगाय ; घी में भिलवाँ सहत चुराय
जब जरि चुकै तबै कढ़वाय; वा घी में पुनि सहत चुराय
पीछे सोंठि देहु डरवाय ; या समान ओषधि बनवाय
डारि आगि पै काढ़ो करै ; लै अवलेह यतन करि धरै
पैसा एक भरो नित घाय ; रक्त विकार कोढ़ मिटि जाय

पुनः सुंदरबरी

भिलवाँ आध सेर लै धरै ; सेर एक त्रिफला विस्तरै
सोंठिहि पाँच सेर लै नीर ; औटि राखि चौथाई बीर
छानि नीर को धरै उतारि ; तामें येती ओषधि डारि
चिनी खाँड़ ले सेर मँगाय ; पाँच टका भरि गूगल ल्याय

नीम खैर इंद्राणी आनि ; और सकल ओषधि ले सानि
दारुहरद चंदन देवदारु ; हरद मजीठ हरड़ लै डारु
भारंगी सब ओषधि लेउ ; तौल अधेला भरि-भरि देउ
बकुची-बीज टंक दो आनि ; सब चूरण करि लीजै छानि
वा काढ़ा में औटि मिलाय ; गोली बेर प्रमाण बँधाय
खात प्रात संयम सों रहै ; वैद्य-प्रिया या ग्रंथहि कहै
कोढ़ अठारह तजि सुनवाय ; देह शुद्ध पथ चाम खवाय

नवाँ श्रृंगार

पामारोग, खाज, दाद, गजचर्म, कौतारोग, व्रणरोग, शोथरोग, अंडवृद्धि, कंठमाला, ग्रंथिकरोग, श्लीपद, बिस्फोटक, मसूरिका, नहरुवा, डौरुवा, बदरोग, कखारीरोग की वृद्धि, लक्षण और प्रतीकार

पामारोग की वृद्धि—दोहा

जब देही में रक्त की, वृद्धि होत है आन।
ऐसे ही में सो करै, सीरे जल अस्नान॥
सरद गरम के होत ही, रक्त फूटि जब जाय।
सरदहि प्रकटै देह में, खाजु कहत हैं ताय॥

कंडू के लक्षण

जब प्रस्वेद तनु में उठै, चाहै अंत सशीत।
लगै खुजहरी अंग में, करै अनल सों प्रीति॥
सेंके त सुख ऊपजै, मंदी नासा जानि।
ये लक्षण हैं कंडु के, वैद्य-प्रिया सुख-दानि॥

पामारोग का प्रतीकार

हरद बावची नीमफल, और आमले पाय।
टंक दोय गो-मूत्र सों, पीवत कंडू जाय॥

पुनः

मिरचै अरु सिंदूर पुनि, महिषी-घृत-संयोग।
मथिकै लेपन कीजिये, नाशै पामा-रोग॥

पुनः

शिंगरफ कूट विड़ंगपुनि, गंधक चोख समान।
हरद पमा सिंदूर युत, पीसहु सब सम आन॥
कनक निंब ताम्बूल-रस, लेपहु अंग मिलाय।
ब्यौंची पामा दाद दुख, एते रोग नशाय॥

पुनः

नीलाथोथा बावची, गंधक हरद मिलाय।
दूनी सज्जी चोख लै, कटुक तेल में पाय॥
करै उबटनो अंग में, महिषी-गोबर नाय।
कंडू कैऊ भाँति की, या ओषधि ते जाय॥

पुनः

मूरी बीज पवाँर के, त्रिकुटी मठा मिलाय।
सेउ अछाहै दाद दुख, या ओषधि ते जाय॥

पुनः

गंधक चित्रक चोख लै, लोन तेल मथि पाय।
तनुसों मर्दन घाम में, सीरे पानी न्हाय॥

पुनः

मनाशिल आंबा हरद ले, बकुची चोख मँगाय।
गंधक थूथो ल्याय सम, चूरण पीसि बनाय॥
सरसों तेलहि सानि कै, गुझिया करै बनाय।
तामधि सेंकै अग्नि जब, जब गुझिया सिंकि जाय॥

लै कसार वह काटि कै, गुझिया देय खवाय।
बाँटि अंग मर्दन करै, घाम पहर दो खाय॥
भोजन करिये भात के, डारि मही में मेलि।
सरै जल मथि पोतनी, खाजु बिकट लै ठेलि॥

पुनः—चौपाई

रजनी दोउ गंधक हरताल; शिलाजीत लै यव को बाल
पीसि तेल मीठे में देय; लोहे बासन में धरि देय
तीनि दिना लगि घोटै ताहि; गाय-मूत्र में औटि पचाहि
तनु में मर्दन कीजै रोज; खाज दाद को मेटै खोज
छाजन ब्योमा चिरासो जाय; वैद्य-प्रिया में कह्यो उपाय

खाज-दाद-गज-चर्म का प्रतीकार—दोहा

हरद शंख की राख पुनि, चित्रक गुंजा लेय।
सेंहुड़ दूध करेढ के, बीज भँगा कै देय॥
मोथा दूध कुमारि को, और आक के पान।
सेंधव सहत बिड़ंग पुनि, मिरचै लेउ समान॥
लीजै बीज पँवार के, गाय-मूत्र में देय।
खाज दाद गज-चर्म को, यहै उबटनो देय॥

दाद का उपचार

नेनू लीजै गाय की, तामें गंधक नाय।
काँसे बासन मेलिकै, काँसो बेला लाय॥

चारि पहर लगि घोटिकै, घामें बैठि लगाय।
याहि लगाये वेगिही, दाद बिदा हो जाय॥

पुनः

यवाखार हरदी कही, ले पलाश के फूल।
बीज पलाश पँवार के, पाँचहु लै सम तूल॥
अजा भैंस अरु गायके, मूत्र माँझ भिजवाय।
तीनि-तीनि दिन खरलिये, लीजै फेरि कढ़ाय॥
बाँटि मठा सों लेप करि, पहिले दाद खुजाय।
या ओषधि के नियम सों, जैहै दाद बिलाय॥

पुनः

माजूफल गंधक मिलै, जल सों पीसि लगाय।
कै चूना गंधक कहो, दाद रोग बिनशाय॥

पुनः

यव सरसों तिल तीनि के, न्यारे खार बनाय।
बकुची बीज पँवार के, बायबिड़ंग मँगाय॥
और मठा दे गाय को, तीनि दिना सँग वाय।
सात दिवस लगि लेपिये, ओषधि मिहीं बँटाय॥
और सर्व संयम करै, पामा आदिक जाय।
वैद्य-प्रिया भाष्यो यहै, सर्व दाद विनशाय॥

पुनः कालानल तेल—चौपाई

चित्रक चाव हरड़ मँगवाय; मिरच रक्त चंदन सुखदाय
पाँच पाँच यें टंक विचार; पाव-सेर लै बीज पँवार

सेंधव सोंचर साँभरि ल्याय ; यवाखार फटकरी मँगाय
नौसादर अफीम पुनि लेउ ; बीज पलाश बावची देउ
फिरिविरचटकाकोरसआनि ; दश दश टंकलेउ सब जानि
गौके दूध सेर यक कूत ; दो दो सेर मठा अरु मूत
अजा-मूत दो सेर मँगावहु ; घोड़ो मूत सेर दो लावहु
थूहर दूध सेर दो आनि ; आक-दूध यक सेर बखानि
चिरहुलिऔरशतावरि आनि ; सेर एक निंबुआ-रस ठानि
सब ओषधि एकांत करेउ ; पीसि बाँटि कै चूर धरेउ
तीनि दिना बासन में राखि ; चौथे दिना कराही नाखि
पाँच सेर ले तेल मँगाय ; औटै तौलौं रस बरि जाय
सिद्धहोय तब लेय उतारि ; कालानलजिहिनामविचारि
जौन दादु कैसेहू जाय ; याहि लगावत सो न रहाय
कच्छु दादु सब दुःख नशाय ; वैद्यप्रिया यह कह्यो उपाय

कौते रोग की वृद्धि—दोहा

रक्त अंग से नीकलै, फटि करि पानी होय।
देह अंग पीड़ा करै, दुःखद जानो सोय॥
ता माहीं नख विषमिलै, कौते को उपचार।
तिब्बसहाबी को कह्यो, सुरजन परखनहार॥

कौते का उपचार

टाट पुरानो साधिये, गाय-मूत्र में आन।
ताके बाँधे देह में, कौतौ रोग परान॥

पुनः

अरलू बाँधै घृत मथै, धोवै नीर सुजान।
ताहि लगावै तीस दिन, कौते विष की हान॥

व्रणरोग की वृद्धि

एक ठौर तनु में कहूँ, शोथ होय सरदार।
पूरब लक्षण जानिये, व्रण को यह उपचार॥
वात पित्त कफ योगते, अंग त्वचा इमि पाँच।
और होत पुनि रुधिर ते, छह विधि के व्रण साँच॥

व्रणरोग का उपचार

बर ऊमरि पाकर बहुरि, पीपरि बकला-बेत।
घीउ-सहित व्रणशोथ को, यह ओषधि कहि देत॥

पुनः

तेल घीउ सों सानिकै, सतुआ शुंठि तपाय।
बाँधे पकि आवै खता, शूल शोथ मिटि जाय॥

पुनः—चौपाई

पारो गंधक लै सम दोय; मुर्दासंग कमीला होय
हरियाथूथो इतनो आनि; चूरणते घृत तितनो जानि
व्रणशोथनिकामलम बनाय; सबव्रणयाहिलगावतजाय

पुनः—दोहा

हरियाथूथो टंक भरि, लै कसीस दो टंक।
छीपकली लै आठ पुनि, चारि फटकरी अंक॥

सोंठि टका सो लीजिये, करुश्रो तेल मँगाय ।
घोरि तेल में राखिकै, ताको लेय थिराय ॥
फीहा बोरै तेल में, लगै न श्रोषधि ताय ।
जिते खता-छत देह के, मलम लगावत जाय॥

पुनः—चौपाई

सरसों तेल सेर लै श्राध; बीस टंक लै मैन जु साध
हरियाथूथो माशे चार; पाव सेर लै नीकी रार
हरियाथूथो फुलै निशंक; सोनामाखी पाँचौ टंक
सेर समुद्र-सोख लै पाँच; ईंगुर माशे छह धरै साँच
तोलो भरि मस्तंगी देय; लाखकबेर माशे छह लेय
तोला एक निर्मली जान; कुचिला तोलो एक बखान
बाँटि कपरछन करो बनाय; या विधि से सब सिद्ध कराय
कुचिला चुरै तेल में डारि; काढ़ि निते पुनि श्रोषधि डारि
चुरै छानि पुनि लीजै ताय; तबै खता सो लेय लगाय
खता अनेक जातिके होयँ; यहि मलहम ते नीके होयँ

पुनः

खैर पापरी तोलो एक; लेय सुपारी चिकनी टेक
रूमिमस्तगी मुर्दाशंक; हरियाथूथो फुलै निशंक
बाँटि छानिकै श्रोषधि करै; मैन एक तोलो लै धरै
प्रथम तेल में थूथो डारि; ता पाछे सब श्रोषधि डारि

जो सुहोय नीके करि लेय ; खता होय पुनि ऊपर देय
व्रण जु अनेक जाति के होयँ; मलम लगाये नीके होयँ

थंभरोग की वृद्धि—दोहा

सर्व अंग को रक्त फटि, रस पुनि उतरै सोय ।
दूखै सूखै पुनि पकै, फूटै थंभ सु होय ॥

थंभरोग का उपचार

कदली-पत्र सुभस्म करि, तामें हरद मिलाय ।
लेपन कीजे नीर सों, थँभन-रोग मिटि जाय ॥

पुनः

मूरी बीज सुहाग पुनि, चंदन अरु हरतार ।
चूर कचूरी जृम्भ रस, लेप थंभ को डार ॥

शोथरोग की वृद्धि

वात बाहिरी नसनि में, ल्याय रक्त कफ पित्त ।
दोष सुअरु विषचोट ते, करत शोथ नरमित्त ॥

शोथरोग का प्रतीकार

गुड़ पीपरि अरु सोंठि को, चूरण करि कै खाय ।
सहित अजीरण आमदुख, शूल शोथ मिटि जाय ॥

पुनः

गुड़ आदौं गुड़ सोंठि कै, गुड़ हरीत नित खाय ।
पैसा ते छहलौं बढ़ै, सबै शोथ मिटि जाय ॥
कंठ-रोग मुख अरुचि पुनि, कास श्वास पीनास ।
अरस वात कफ रोग ये, तनु ते जात निरास ॥

पुनः

नारंगी विषखापरो, दारुहरद देवदार।
हरद सोंठि चित्रक गुरच, हरद-सहित करि छार॥
चूरण पीसो नीर सों, ताहि लेप करि देय।
हाथ पाँव मुख उदर को, सकल रोग हरि लेय॥

पुनः—सवैया

पीपरि सोंठि कटाइ शतावरि मोथा मँगायकै जीरक आनौ
पाढ़ कटाई हरदी तजपत्रज कूट सबै कपरा मधि छानौ
चूरण सो यह ताते नीरमें पीवै कै लायकै घोरिकै सानौ
शोथ-विकार के टारन को अब याते ऊपर ओषधि जानौ

अंड-वृद्धि—दोहा

वात पित्त कफ मेद पुनि, मूत्र-रोध बढ़ि आँत।
अंड-वृद्धि है सात विधि, वचन करत कहि जात॥

अंड-वृद्धि का प्रतीकार—दुर्मिला छंद

नीलकमल उरई-जर चंदन जाठौं अरु पदमाख मँगावै।
पीसि दूध में लेपन कीजै अंड-वृद्धि के रोग मिटावै॥

पुनः

शुंठी कूट अंड-जड़ लीजै बच अरु हाउबेर मँगवावै।
काँजी संग पीसि कै लेपै अंड-वृद्धि की पीर नशावै॥

पुनः—दोहा

बाँटि बिनौरा की मिंगी, भेड़ दूध सनवाय।
लेपि अग्नि सों सेंकि दे, अंड-पत्र बँधवाय॥

लेपन कीजै अंड पै, कंडा-आँच सिकाय।
सात रोज के नेम ते, अंड-शोथ मिटि जाय॥

पुनः

रासनु जाठौ गुरुखुरू, मिलवै सामस अंड।
अंड तेल-युत काथ से, अंड-वृद्धि करि खंड॥

पुनः

जीरो सेंधव हींग सम, कटुक तेल में सानि।
लेपन कीजै प्रात उठि, अंड-वृद्धि की हानि॥

पुनः

मिश्री पीसि शतावरी, गाय-दूध में मेलि।
या ओषधि के पियत ही, अंड-वृद्धि को रेलि॥

पुनः

मूली को रस सेर यक, सहत सेर लै आउ।
पाँच टंकभरि तौलि कै, मिर्च कपूरी ल्याउ॥
शीशी में भरि राखिये, पल भरि पीवै ताहि।
सात रोज के नियम ते, अंड-वृद्धि मिटि जाहि॥
मूत्रकृच्छ्र मंदागिनी, और अरस मिटि जाय।
रक्त-विकार मिटै सबै, पीर सन्नि बिनशाय॥

वृद्धिरोग की वृद्धि

अरसधाम महँ दोष ते, कछुक शोथ यदि होय।
वृद्धि नाम तासों कहत, मुनि जन पंडित लोय॥

वृद्धि का उपाय

तुरत मारि कौआ उदर, फारि पीठि कटवाय।
लेपन कीजै यत्न सों, वृद्धिरोग तजि जाय॥

पुनः

सेंधव पीपरि हरड़ पुनि, बाँटि छानिकै देय।
भूँजि अंड के तेल में, लेप वृद्धि हरि लेय॥

गंडमाला-वृद्धि

बेर आँवले रस बहुरि, गाँठि होय निरधार।
काँख कंठ कटि आदि में, गंडमाल है सार॥

पुनः

मांस-शोथ हो कंठ में, लटकै अंड समान।
कै छोटो कै अति बड़ो, यह गलगंड प्रमान॥

ग्रंथिरोग की वृद्धि

वात जात जब दोषते, दुखी मांस नस होय।
गोल गाँठि ऊँची उठै, ग्रंथिक जानो सोय॥

कंठमाला, गलगंड और ग्रंथिकरोग का प्रतीकार

सरसों सन अरु सहिंजनो, अरु मूरी के बीज।
पीसि मठा में तप्त करि, तब पुनि लेपन कीज॥
गंडमाल गलगंड अरु, वृद्धि रोग की टेक।
तीनिहुँ रोग विनाश को, यह औषधि है एक॥

पुनः

पल दश त्वच कचनार की, त्रिफला यक पल देय।
त्रिफला त्रिकुटा त्रयपलं, वरुणी यक पल लेय॥
तज पत्रज अरु लायची, कर्ष कर्ष परमान।
गूगल सब सम आनिकै, लै दो टंक समान॥
खैर क्काथ सों पीजिये, करै पथ्य जल तप्त।
कै मुंडी के क्काथ सों, करै रोग यह जप्त॥
मोह भगंदर ग्रंथिगद, अरु बद नाशै दुष्ट।
गंडमाल नाशै बहुरि, होय देह बहु पुष्ट॥

पुनः

पीपरि अरु कचनार पुनि, त्रिफलासम करि आनि।
पीसि पीउ जल तप्त सों, गंडमाल की हानि॥

पुनः

वर्ण त्वचा को क्काथ करि, मधु सों लेपि मिलाय।
गंडमाल के कंठ में, पावत ही मिटि जाय॥

श्लीपद-रोग की वृद्धि

शोथ होय कफ मेद सों, पाँव कान कर नैन।
अश्लीपद लक्षण यहै, वैद्य बतावत ऐन॥

श्लीपद का प्रतीकार

सरसनु और सहिंजनो, पुनर्नवा अरु अंड।
पीसि धतूरो लेप करि, अश्लीपदहि विहंड॥

बद्‌रोग की वृद्धि

वात-पित्त-कफ-रुधिर औ, व्रणत्रिदोष सो मूल।
लोहू वृद्धत त्रयकुचनि, गुल्म सुवृद्धत शूल॥

वृद्धिरोग का प्रतीकार

यव गोहूँ अरु मूगँ ये, पीसै प्रथम उसेय।
लेप करै विद्रधि अपकु, तुरत दूरि करि देय॥

पुनः

काकजंघ सरबंग ही, जलसों पीसि लगाय।
तीनि दिना के लेप ते, कुच-समाधि हो जाय॥

पुनः

ब्रह्मंडी पंचांग लै, जीरे स्याह समान।
तीनि टंक नित खाइये, जानि ग्रंथिकुच हान॥

पुनः

नीम-पात जल संग ही, सूक्षम पीसि लगाय।
अपकु पयोधर पाक ही, शीघ्र वेदना जाय॥

पुनः—मलहम

अरलू सूक्षम पीसिकै, उष्ण जु घृत में पाय।
जलसों मर्दै जाय यक, पानी दूरि कराय॥
काग़ज़ ऊपर लाय कै, तब कुच पै धरि देय।
सात दिवस लेपन करै, सकल पीर हरि लेय॥

विस्फोटक की वृद्धि

फुरिया सगरी देह में, निकसैं खाजु समान।

झिरन लगैं पीड़ा करैं, यह विस्फोटक जान ॥
आगि जरै ऐसे जरैं, फोड़ा अरु ज्वर जोर।
ताते सगरी देह में, रक्त पित्त को तोर ॥

विस्फोटक का प्रतीकार

जाठौ चंदन लायची, तगर हरद लै दोय।
माशो बकला सिरस को, कूट सवारो होय ॥
करै लेप घृत डारिकै, खता दाह-ज्वर जाय।
ओषधि एक विसर्प को, मुनि-जन दई बताय ॥

पुनः

त्रिफला नीम चिरायतो, कुटकी चंदन लाय।
अरु पँवार के पात लै, वासा आनि मिलाय ॥
ये ओषधि सब जोरि कै, करै क्वाथ परभात।
कंडू दाह विसर्प ज्वर, तृष्णा सहित बिलात ॥

पुनः—चौपाई

गुरवै मोथा परवर-पान ; खैर अडूसौ लेय सुजान
लै सलौनि अरु कारो बेत ; नीम पात दोऊ हरि लेत
इनको काढ़ो खाय बनाय ; फोड़ा कोढ़ खाजु मिटि जाय
जाय रसातल कोढ़ विसर्प ; शीत पित्त अरु ज्वर को दर्प

मसूरिका-रोग के लक्षण

फूली होय मसूरि सम, यह मसूरिका जानि।
अंग अंग कंडू अरस, भ्रमज्वर पहिल बखानि ॥

औषधि

बेल बेत को क्काथ करि, वासा डारि मँझार।
प्यावै ताहि मसूरिका, होय नहीं निरधार॥

पुनः

शीतल जल इमिलीपनो, हरद मिलावै सोय।
प्रथम पियावै शीतला, तातन कढ़ै न कोय॥

पुनः—छप्पय

तेल लगावै नहीं मूँड़ दाढ़ी न मुड़ावै।
छाँड़ै मंडल गीत और बाजे न बजावै॥
धोये कपड़ा त्यागि और उत्तम तजि डारै।
लीपै पोतै नहीं और बुहरा नहिं झारै॥
जा घर में बालक परै या घर में ये बात सब।
जबलगि विचार न यह करै रोगी नीको होय जब॥

दोहा

मंत्र पाठ पूजा सु जप, करिये बारहि बार।
एक शीतला को कहै, यहै बड़ो उपचार॥

नहरुवा-रोग की वृद्धि—चौपाई

नस की सनादि टूटि जब जाय; पित्त शोणसों भरै बनाय
रक्त जमै तामें जिउ परै; तबै नहरुवा पीड़ा करै

नहरुवा-रोग की वृद्धि और लक्षण

खुजली होय फफोला परै; रक्त खैंचिकै सूजन करै
याके फुटे मोह पुनि होय; सूत रूप नहरू तब होय

नहरुवा-रोग का प्रतीकार—दोहा

गायमूत्र सों पीसि कै, बीज बबूर लगाय।
रोग नहरुवा शोथ पुनि, पीड़ा तुरत नशाय॥

पुनः—चौपाई

साबुन सेर पाव मँगवाय ; कनिक पाव भरि चोखी ल्याय
लोई ताकी कीजै सानि ; बाँधि नहरुवा मुख पर आनि
तीन दिना लौं बाँधै खैंचि ; ताको कोऊ सकै न ऐंचि
छोरै ताहि बाँधि पुनि सोय ; तीनि बेर में नीको होय
ओषधि बाँधिकै गोली खाय ; बीट कबूतर शहद मिलाय
ऐसेहि यतनहि ओषधि करै ; रोग नहरुवा वेगिहि हरै

पुनः—दोहा

छीप-भस्म करि तुरत ही, युग्म कटाई पाय।
बाँटि नीम-रस लेप करि, रोग नहरुवा जाय॥

पुनः—मंत्र

दक्षिणदेश कमक्षा देवी चाली जावै भस्मंत मेरी भक्ति गुरू की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच

विधि—दोहा

गुरु पलाश के फूल-सँग, गोली कीजै सात।
अर्कवार को मंत्रिकै, गोली दीजै प्रात॥
गोली लै इक हाथ में, मंत्रै बार जु सात।
ताते गोली मंत्र दै, खाय नहरुवा जात॥

पुनः

ॐ नमो वक्रवाकी स्वाहा

विधि

कन्या काती सूत बटि, मंत्र एक सै आठ।
पढ़िकै डोरा बाँधिये, मिटै नहरुवा डाठ॥

डोरुवा-रोग की वृद्धि

घूटे को लोहू फटै, अति सूक्षम रहि जाहि।
वायु करै पुनि सोजही, डोरू कहिये ताहि॥

डोरुवा का प्रतीकार—चौपाई

गंधक मनसिल अरु हरताल; चोखशतावरि पीपरि डाल
बहुरि पीपरामूल मँगाय; बाँटि-ग्रानि कै तेल चुराय
डोरू ऊपर ताहि लगाय; ऊपर आकपात बँधवाय
सात दिना जो बाँधै कोय; ताको डोरू नीको होय

पुनः—मंत्र

ॐ डमरू डिमि-डिमि हाथ-कपाल आवौ भाजतौ डमरू जाय न भाजै तौ पाँच बाण अर्जुन के क्षीणी नारायण के छीछी नौ छिन्न भिन्न-भिन्न जाड-जाड चिता उमंडिया पीर आज फुरै।

मंत्र-विधि—दोहा

थोथा सरसों आँकिये, प्रात साँझ नहिं तीन।
बार बार अभिमंत्रिये, इक्कइस बार प्रवीन॥
चौखुंटे करि भूमि में, आँकत जीये ताहि।

फिरि सिंदूरहि आनि अरु, मीठे तेल मिलाहि ॥
बार एक सै आठ पढ़ि, तेल लगावै कोय ।
डोरू जनुवा विकट ये, तुरतहि डारै खोय ॥

बदरोग का प्रतीकार

कारो जीरा मोचरस, शहद मैनफल जान ।
तप्त नीर सों बाँधिये, बद दुख जाय परान ॥

पुनः

पाठो आनि गुवारि को, तामें बाँटि सुहाग ।
तातो करिकै बाँधिये, बद की पीड़ा भाग ॥

कखारी-रोग का प्रतीकार

राई मिरचै आनिकै, पीसहु मिरच मिलाय ।
ताती करिकै बाँधिये, पीर कखारी जाय ॥

पुनः

बड़ को दूध सुआनि कै, तामें मेलि सिंदूर ।
बाँधि तीन दिन नेम सों, जाय कखारी कूर ॥

पुनः

पीला सरसों मैनफल, काला जीरा साय ।
बाँटि नीर सों लेपिये, बेगि कखारी जाय ॥

दशवाँ शृंगार

हृदयरोग, उदररोग, मूत्रकृच्छ्र, अश्मरीरोग, मूत्ररोग, चिनग, प्रमेह, मेदरोग, कृमिरोग, व्रणरोग, सिंहघाव, सुअरघाव, ऊँटदंत, अग्निदग्ध, सर्प, बिच्छू, चंदन, गोह, कनखजूरा, बर्र, मकरी, बौराहा कुत्ता, पाँवछाले, बिवाईरोग की वृद्धि, लक्षण और प्रतीकार

हृदय-रोग की वृद्धि—दोहा

रस सुखाय कै दोष मधि, निर्गुण नहिं जब जाय।
पीर करै हिय ताहि बुध, हृदय रोग कहि ताय॥

हृदय-रोग का प्रतीकार

कै घृत सों कै दूध सों, कोहाँ तरु की छालि।
बाँटि पिये नर प्रातही, हृदयरोग को टालि॥

पुनः

चूरण पुष्करमूल को, शहद संग खा प्रात।
श्वास कास दारुण महा, हृदय रोग कहि जात॥

उदर-रोग की वृद्धि

श्वेत पसीना कंठ रुकि, हृदय द्वार दपि आपु।
प्राण-यान दुःखित करै, उदर-अग्नि इमि आपु॥
जठर-अग्नि दुख लेय बहु, आधमान बलदाह।
तंद्रा चलै न जाय यह, उदर-रोग की राह॥
खरी वस्तु सों दुष्ट कफ, जामें लोहू दोय।

जिलहा बाढ़ै उदर में, जिलहा चक्रत सोय ॥
जिलहा बाईं ओर कहि, चक्रत दाहिन ओर ।
यहि विधि जिलहा चक्र के, लक्षण कहे कठोर ॥

उदर-रोग जिलहा का प्रतीकार

जवाखार अरु कूट बच, चित्रक जीरो लेउ ।
अजमोदा दात्यूनि लै, हींग चाब पुनि देउ ॥
तीनि नोन साजी बहुरि, पाढ़ सोंठि पिसवाय ।
ताते जल सँग खाइये, उदर-रोग सब जाय ॥

पुनः

जवाखार सेंधव त्रिकुट, हींगसहित पिसवाय ।
बीजपूर सरसों सरस, खातहि जिलहा जाय ॥

पुनः

शरफोंका की पीसि जर, डारि मठा से खाय ।
बहुत दिनन को रोग यह, जिलहा जाय बिलाय ॥

पुनः—चौपाई

जवाखार सोंचर अरु खारी ; बच नोना सज्जी निरधारी
सेंधव नोन सुहागा देऊ ; इन सबको चूरण करि लेऊ
दूधडारि दिन तीनि सुखावै ; यहि विधि और कहौंसो ल्यावै
तीनिभावना इन मधि दीजे ; सब चूरण इकठौरी कीजै
ल्यावै तोड़ि आक के पात ; तर ऊपर राखै यह घात
ये सब लै हाँड़ी में धरै ; हाँड़ी को कपरौटी करै

ताहि आँच गजपुट की देय ; शीतल भये काढ़ि सब लेय
फेरि पीसि चूरण करवावै ; ये ओषधि ता माहिं मिलावै
सोंठि मिरच पीपरि अरु राई ; त्रिफला भूँजी हींग बताई
बायबिडंगै चाब बताई ; जोरि मठा में चूरण खाई
शोथ गुल्म मंदागिनि जाय; जिलहा और जु तक्र को खाय

मूत्रकृच्छ्र-रोग की वृद्धि—दोहा

वात पित्त कफ दोष विष, शुक्रवेग अभिघात।
शुक्ररूप अरु अश्मरी, मूत्रकृच्छ्र बहि जात॥

मूत्रकृच्छ्र का लक्षण

तनक तनक बरिआय कै, मूतै बारम्बार।
तिनकै पीड़ा सहित सो, मूत्रकृच्छ्र निरधार॥

मूत्रकृच्छ्र के प्रतीकार

क्काथ जु गुरुखुरु बीज को, जवाखार युत लेय।
मूत्रकृच्छ्र अति जो रहै, ताहि दूरि करि देय॥

पुनः

शिलाजीत पीपरि बहुरि, और भेदपाषान।
लेय लायची सब समहि, चूरण कीजै छान॥
चूरण चावर नीर सों, ताको देय पिवाय।
मूत्रकृच्छ्र की पीर सब, या ओषधि ते जाय॥

पुनः

जवाखार मिश्री सरस, ये दोउ लेउ समांन।
मूत्रकृच्छ्र को यह कही, ओषधि खाय सुजान॥

पुनः

तनक गुनगुनो दूध में, पीवै लैगाड़ि डारि ।
मूत्रकृच्छ्र अरु अश्मरी, वातरोग को टारि ॥

पुनः

एला वासा गोखुरू, कणा रेणुका पाय ।
अश्मभेद एरंड मधु, काढ़ो करहि मिलाय ॥
शिलाजीत मिश्री बहुरि, सब काढ़े में डारि ।
मूत्रकृच्छ्र पथरी मिटै, देह होय सुखकारि ॥

पुनः

वासा अरु एरंड लै, और लायची आनि ।
प्रात पिये दधि संग तौ, मूत्रकृच्छ्र की हानि ॥

इंद्रिय-जुलाब—कवित्त

दालचिनी लायची कवाबचिनी माशे छह, शोरा और जीरो दश माशे केसर लीजिये । रैनचिनी चोखी सोह माशे पुनि आठधूनी, सबते मँगाय सिता चूरण शुभ कीजिये ॥ करिकै दो भाग गाय-दूध पाव सेर संग, दो दिन प्रभात बड़े नियम करि पीजिये । प्यास लगै दूध में मिलाय नीर तिगुनो पीउ, येही विधि इंद्रिय जुलाब करि दीजिये ॥

दोहा

या विधि गरमी देह की, मूत्र संग बहि जाय ।
तिब्ब यहै लुकमान में, दीनों सरस बताय ॥

पुनः—चौपाई

कुड़ौ-छालि त्रिफला बिजसार ; दारुहरद मोथारस डारि
याको काढ़ो मधु सँग देय ; मूत्रकृच्छ्र को दुख हरि लेय

पुनः—दोहा

रूसो पीपरि लायची, जाठौ लै गाड़ि-बीज ।
ये सब ओषधि आनिकै, घामें माँझ धरीज ॥
सबको क्वाथ बनायकै, कोऊ करै जु पान ।
कच्छू अश्मरी शर्करा, ताको जाय निदान ॥

पुनः

पाहनभेद जु गोखुरू, हरड़ जवासो नाय ।
अरु किरमालौ डारि कै, काढ़ो मधु सों प्याय ॥
दाह पीर अरु बंध युत, कृच्छ्रै देय बहाय ।
करि जो देखै वैद्यवर, बड़ो तमाशो आय ॥

पुनः

तीनि लायची बीज लै, मुख में नाय चबाय ।
ता ऊपर पुनि वंग के, खाये कच्छू नशाय ॥

पुनः

लघुशंका के ठौर जो, बाँधै आनि सिवार ।
मूत्रकृच्छ्र के सहज में, तुरतहि खुलै किवार ॥

पुनः

सरखँड अरु कुशकाश जड़, ऊख उशीर जु ल्याय ।
पित्तमूत्र अरु कृच्छ्रहर, इतने रोग बिलाय ॥

इनहीं को यह कल्क करि, पचइ दूध में डारि।
लोहू गिरत जु लिंग में, सोऊ दे यह डारि॥

पुनः—चौपाई

पाँचो अंग गोखुरू ल्याई; पाँच सेर जल में औटाई
सवा सेर जल बाकी राखि; आध सेर दै खाँड़ सुनाखि
मंद आँच दै पागु बनाय; डारि ओषधी पुनि ये लाय
त्रिकुट नागकेसर लै आय; त्रयीबीज गजकणा मिलाय
जातीफल एला जवखार; कौहारद दो पल निरधार
बंशलोचना आठ जु टंक; मिलै करौ अवलेह निशंक
चिकनी हँड़िया धरि अवलेह; टकाभरौ नित खाय सनेह
मूत्रकृच्छ्र अरु पथरी दाह; तत्क्षण जाय होय निरवाह
मूत्रकृच्छ्र को करै विनाश; वैद्य-प्रिया यह यत्न प्रकाश

अश्मरी-रोग की वृद्धि—दोहा

राह रोकिकै मूत्र की, करि अरु वस्त्र मँझार।
करै वेदना अश्मरी, पथरी कहौ विचार॥

अश्मरी-रोग का प्रतीकार

अश्मभेद को क्वाथकरि, खाँड़ शिलाजित डारि।
पिये प्रात जो अश्मरी, पित्तरोग को टारि॥

पुनः

खाय कादि रस कैथ को, जवाखार गुड़ डारि।
मूत्रकृच्छ्र दै शर्करा, देय अश्मरी टारि॥

पुनः

धनातुषा के नीर सों, घोरि हरड़ गुड़ खाय।
विकट अश्मरी लिंग की, तुरत बिदा हो जाय॥

पुनः—अरिल्ल

भेद आनि पाषाण अंडजा लाइये।
तालबुखारे बीज तुंबरन पाइये॥
औटि कटाई दोय गुरुखुरू संगही।
लेय अश्मरी मूत बंद ओषधि कही॥

पुनः—दोहा

एला बासा गुरुखुरू, मुलहेठी सुरलाय।
पीपरि डारै रेणुका, अश्मभेद मिटि जाय॥
कठ्ठियाको जो कीजिये, शिलाजीत मधु डारि।
मूत्रकृच्छ्र अरु अश्मरी, पुनि परमेहहि टारि॥

पुनः—चौपाई

हरड़ पषानभेद किरमालो; गुरुखुरु कास जवासो डालो
कुश मिलाय जो याको खाय; तौ ताकी पथरी मिटि जाय

मूत्ररोग-वृद्धि—दोहा

वात पित्त कफ दोष-त्रय, मूत्रबंध हो जाय।
पेट अफरिबो शूल पुनि, मूत्ररोध कहि जाय॥

मूत्ररोध का प्रतीकार—पद्धरी छंद

गुरुखुरू जवासो हरड़ आनि, पाषानभेद कर जाल जांनि
यह काढ़ो कीजे शहद मेलि, सो मूत्ररोध को देय रेलि

पुनः—दोहा

त्रिफला सोंठो गुरुखुरू, बीज करकटी पाय।
तप्त नीर सों पीजिए, मूत्र-रोध मिटि जाय॥

पुनः

विष्ठा मूसे की जु लै, पीसौ जल में मेलि।
नाभि तरे जो लेपिये, मूत्र-रोध को ठेलि॥

पुनः

गुड़र जानि जो लीजिये, काँजी सों जो प्याय।
मूत्रबंध मिटि तुरत ही, बहुत सुखी हो जाय॥

पुनः

सोंठि सिता जवखार ही, जे नर पीवैं येह।
मूत्रबंध छूटै तुरत, बहु सुख पावैं देह॥

पुनः

मिश्री पैसा चारि भरि, सोंठि टंक दश खाय।
एक टंक जो फाँकिये, बहुत मूत्रता जाय॥

पुनः—अरिल्ल

सेंधव पैसा चारि मैदा पुनि चारिही।
शक्कर पैसा बीस चोट यह मारही॥
घृत सों पिंडी बाँधि लेउ परभात ही।
बहुत मूत्रता रोध इनहिं सों जातही॥

पुनः—दोहा

बायबिड़ंग महूष सम, तीनि बार नित चाटि।
बहु छूटे पेशाब तिहि, मूत्ररोध कहँ डाटि॥

पुनः

बड़ी लायची पीपरै, आनि भेद पाषान।
शिलाजीत कर्पूर लै, बाँटौ सबै समान॥
चावल-धोवन से पिये, छूटै मूत्र-प्रवाह।
वैद्य-प्रिया में सो लिखो, मूत्र-रोध निरवाह॥

चिनग दुखौतौ का प्रतीकार—चौपाई

मेहँदी पैसा द्वै भरि लीजै; पहर चारि तिहि भीजन दीजै
दो पैसा भरि लीजै निवात; कोढ़ बड़ी दो पैसा घात
मेहँदी नीर बाँटिकै लेउ; पियत दुखौतौ दूरि करेउ

पुनः

तुलसीदल पैसा भरि लेउ; पुनि पैसा भरि मिरचै देउ
शीतल जल सों बाँटि पिवाउ; चिनग दुखौतौ तुरत नशाउ

प्रमेह-रोग की वृद्धि—दोहा

यथा कहे छः पित्त ते, दश कफते हैं साध्य।
चारि वात ते होत हैं, ये परमेह असाध्य॥

प्रमेह-रोग के लक्षण

दंत मलिन अति तासु के, दार चरण अरु पान।
देह सुस्त आलस रहै, जिनहिं प्रमेही जान॥

हरदिया प्रमेह का प्रतीकार

निशा टंक दश लीजिये, द्विगुण आँवले पाय।
मिश्री इन सम पीसिकै, कीजै फंकि बनाय॥
पाँच टंक नित फाँकिये, दो सातैं परमान।
हरद प्रमेही ना रहै, काया-पुष्टि बखान॥

रक्तप्रमेह का प्रतीकार

गोंद गोखुरू मस्तगी, माजूफल जु मजीठ।
त्रिफला मधु सँग चाटिये, रक्तप्रमेही पीठ॥

तेलिया प्रमेह का उपाय

दाल चना की लीजिये, ऊमरि पय पुट सात।
सात टंक नित चाबिये, तेल-प्रमेही जात॥

लालिया प्रमेह का उपाय

कूट शतावरि आमिली, लै करेछ के बीज।
श्वेत मूसरी श्याम सहि, सिता दोगुनी लीज॥
पैसा भरि उठि प्रात ही, तक्र-संग जो खाय।
प्रमेह लालिया ना रहै, याको दशदिन खाय॥

छाछिया प्रमेह का प्रतीकार

दोय टंक लै छाछही, सात-दिवस परमान।
छाछिप्रमेही ना रहै, गरम न दीजे खान॥

मैथिया प्रमेह का प्रतीकार—चौपाई

लै असगंध गँगेरनि छालि; पुनर्नवा गुरुखुरू सु डालि

वंशलोचना और शतावरि ; खाँड़ लीजिए सबनि बराबरि
घीव संग परभातै लेय ; संग मैथिया तजै प्रमेह

ककरिया प्रमेह का प्रतीकार—दोहा

पलाश पीपरि आनिकै, छाँह सुखाय पिसाय।
टंक दोय लै खाँड़ सों, काकरिया मिटि जाय ॥

गुड़िया प्रमेह का प्रतीकार

घृत सिरसाही एक लै, खाँड़ सिरसही दोय।
तंडुल जल सों पीजिये, गुड़िया प्रमेह न होय ॥

सर्व-प्रमेह का प्रतीकार

त्रिफला मोथा दारिवा, निशा धान की खील।
याको काढ़ो दीजिए, हरदी-चूरण मील ॥
सर्व-प्रमेहन की व्यथा, पीवत पल में जाय।
पथ्य रहै जो रोगिया, खरी वस्तु नहिं खाय ॥

पुनः—चौबोला

कैथ आम पीपरि किरमालो बर ऊमरि को आनो।
कौंहा सौंहा जामुनि लीजै अरु आचार बखानो ॥
लोधनीम महुआ त्रिफला पुनि जायठो और मँगावै।
धवँ कंजा की मिंगी इंद्रयव भिलवाँ के फल ल्यावै ॥

दोहा

चूरण कीजै शहद सँग, प्रात दीजिये खान।
मूत्रकृच्छ्र प्रमेह सब, फुरिया मिटै सुजान ॥

पुनः

कूटि आँवले काढ़ि रस, मधु अरु हरद मिलाय।
मिटै बीस परमेह-दुख, यह थोरे दिन खाय॥

पुनः

शहद-संग रस गुड़च को, खाय प्रात दिन सात।
मिटै बीस-परमेह दुख, नर सुख पावै गात॥
त्रिफला-चूरण करि सरस, शहद संग नर चाटि।
तौ नर बीस प्रमेह की, व्यथा वेगिही काटि॥

पुनः

सरसेंमर की छालि को, हर्र-सहित जो खाय।
तौ नर बीस प्रमेह की, व्यथा वेगि मिटि जाय॥

पुनः

मुहँमूँदी दाड़िम-कली, खाँड़ खैर लै श्वेत।
यह चूरण परमेह को, खात बिदा करि देत॥

पुनः

बड़ी लायची खाँड़ सम, चूरण कर्ष प्रमान।
दूध-भात भोजन करै, तौ परमेह परान॥

पुनः

शंखाहूली लायची, शिलाजीत पुनि खाँड़।
खातनि यह चूरण करै, सब प्रमेह को भाँड़॥

पुनः

सहित हरिद्रा हर्र को, जो उठि खैहै प्रात।
तौ पीड़ा परमेह की, तन ते वेगि विलात॥

पुनः इंद्रिय-जुलाब—चौपाई

लेय कबाबचिनी दश टंक; इतनी ले मदचिनी निशंक
पाँच टंक लै जीरो श्वेत; जवाखार इतनो कहि देत
धनियाँ पाँच लायची पाँच; ये ओषधि सब लीजै साँच
कलमी शोरा ढाई टंक; सब सम सिता बराबरि अंक
पीसि छानि चूरण करवाउ; ढाई टंक लसी-सम प्याउ
ऊपर पीवै लसी सुजान; जब-जब प्यास करै तब पान
गरमी मूत्रसंग बहि जाय; वैद्यप्रिया यह कह्यो उपाय

पुनः इंद्रिय की पिचकारी—दोहा

त्रिफला-काढ़ो करि सरस, पीसि रसौत मिलाय।
भरि पिचकारी घालिये, इंद्री-मुख में नाय॥
घरिया बिचली धातु की, ताको देय धुवाय।
सात दिवस के नियम ते, टाँकी सबै मिटाय॥

पुनः—छप्पय

आठ टका भरि ल्याय कपरछन करै सुपारी।
दूध अढ़ाई सेर औटि तामधि दे डारी॥
चारि टका भरि घीउ गाय को तामधि डारो।
मंद आँच सों औटि तुरत नर करै कसारो॥

खाँड़ अढ़ाई सेर शुभ घोरि बनावे पाक जब।
ता मधि कसारु डारै बहुरि डारि औषधै कहत सब ॥
त्रिकुटा अँवलासारमोथ चंदन गजकेसरि।
चारि बेर की मिंगी दोय जीरे की सुधि करि॥
तज पत्रज को आनि लायची धना जायफर।
वंशलोचनै लौंग सिद्ध चूरण करि यह नर॥
लेउ सबै दो-दो करष डारि आमरे को स्वरस।
रस डारि शतावरि अजलरस करै बहुरि गतरी सरस॥
खाय पाक परभात जाय परमेह रोग सब।
अमल पित्त अरु पित्तजाय मंदागिनि सुनि अब॥
आँखि नाक मुख कंठ रुधिर मिटि जात ततक्षन।
पुष्टि होय बल होय ताहि बाढ़हि बहु अँग तन॥
जीर्णज्वर तजि जाय पुनि बढ़ै धातु उर होय सुख।
ताकी त्रिय धारै गरभ वैद्यप्रिया यह हरहि दुख॥

मेद-रोग की वृद्धि—दोहा

दिन सोवै न चलै फिरै, मधुर अन्न रस खाय।
अरु कफकारक खाय जो, मेद-रोग अधिकाय॥

मेद-रोग के लक्षण

उदर पोढ़ कुच मध्य यह, बढ़ै मास कछु मेद।
बल उत्साह घटै बहुरि, ये लक्षण हैं मेद॥

मेद-रोग का प्रतीकार

शीतल जल अरु शहद सम, प्रात पिये जो कोय।
पुष्ट पेट गणपति सरस, तदपि मास छुटि होय॥

पुनः

ताते माड़ पियै बहुरि, कै सतुत्रा दधि नीर।
मिटै खोज मधु को हरै, हलका होय शरीर॥

पुनः—अरिल्ल

सरसों कूटि मँजीठ तुरत मँगवाइये।
दारु हरद तिल हरड़ मुस्तका ल्याइये॥
आम छानि सम आनि बाँटि जल संगही।
करै उबटनो अंग मेद-दुख भंगही॥

पुनः—दोहा

बेलपत्र को रस पियै, बाँटि वस्त्र में छानि।
मेद रोग दुर्वासना, नाश होय यह जानि॥

पुनः

त्रिफला काढ़ो शहद के, अनोपान सों देय।
पथ्य रहै जो रोगिया, मेद-दोष हरि लेय॥

कृमि-रोग के लक्षण

हृदयरोग ज्वर कास भ्रम, वातरोग अतिसार।
होय चिचूना केंचुवा, ये लक्षण निरधार॥

कृमि-रोग का प्रतीकार

करि दाड़िम की छालि को, क्वाथ मेलि तिल तेल।
खाय तीनि दिन गिरि परैं, उदर केंचुवा खेल॥

पुनः

इंद्रयवा त्रिफला त्रिकुट, त्रविरुष्टा खैर कषाय।
गायमूत्र सों लेपिये, उदर-रोग मिटि जाय॥

पुनः

बासी जल सों बाँटिकै, खुरासानि सों प्रात।
अजवायनि गुड़ खायकै, होवें सब कृमि-पात॥

पुनः

लेय कबीला हरड़ अरु, बायबिड़ंग समान।
जवाखार गोमूत्र सों, पियै करै कृमिहान॥

पुनः

त्रयी कबीला लौंग पुनि, बच अजमोदा आनि।
छुइले बीजा तप्त-जल, पियत पेट-कृमि हानि॥

पुनः

रस पलाश के बीज को, मधु के सँग जो खाय।
करि बिड़ंग चूरण शहद, कृमि को देय गिराय॥

शस्त्रादि-व्रण के लक्षण

भाँति-भाँति की धार के, भाँति-भाँति हथियार।
भाँति-भाँति के होत हैं, तिनके घाव अपार॥

व्रण का प्रतीकार

पहिले सींवै घाव को, तगा पाट को ल्याय।

फिर मेदा लोई करै, ताती सों सिकवाय ॥
कै अजमोदा नोन की, पुटरी सों करि सेंक ।
कै विजया अरु हेलुवा, सेंकै घीउ अटेक ॥
कै हरदी अरु प्याज घी, सेंकत घाव मलीन ।
सेंकै बाँधै नियम सों, नीको होय प्रवीन ॥

पुनः

दारु हरद अरु दूब रस, और कबीला लेय ।
तेल पचावै घाव की, पीड़ा रहन न देय ॥

पुनः

जाठो कुटकी हरद पुनि, कंजा के फलपात ।
जाती परवर नींब के, पात मोम कहिजात ॥
घृत में ओषधि मेलिकै, खाँसी मलम बनाव ।
पीर मिटै यासों तुरत, अरु पुरि आवै घाव ॥

पुनः

नीलाथोथा इंगुरहि, मुरदासंग सिंदूर ।
खैर मँजीठहि लीजिये, पैसा पैसा पूर ॥
कटुकतेल पैसा जु तब, तामहँ पीसि पकाय ।
फीहा लागै तासु पै, फेरि घाव पुरि जाय ॥

सिद्धबिसारी व्रण के लक्षण

ईंट काठ पथरा लगै, कटै खाल अरु माँस ।
सिद्धबिसारी नाम तब, लक्षण कहत प्रकास ॥

सिद्धबिसारी ब्रण का प्रतीकार

फटै घाव लखि तुरत ही, सींचे शीतल नीर।
बाँधै कीच लपेटि कै, मिटै प्रबलता पीर ॥

पुनः

घीकुवार सों धोय पुनि, चावल बाँटि लगाय।
कै मँजीठ जाठा मठा, घीउ लेप करवाय ॥

सिंहघाव का प्रतीकार

मनशिल चित्रक चोख लै, मालकाँगनी आनि।
सब सम पुनि हरताल लै, पीसहु बस्तर छानि ॥
मीठे तेल मिलाय कै, बासन में धरि देय।
दिना तीनि लौं राखिकै, सिंहघाव पर देय ॥
सिंहघाव दुख सब मिटै, दिन चौदह परमान।
बाहर ग्रामहि राखिये, चक्की सुनै न कान ॥

पुनः

राल सुहाग इलायची, और सिंदूर मिलाय।
पीसि छानिकै सिंह के, घाव बीच भुरकाय ॥
नागबेलि के पान लै, तापर बाँधै सोय।
खाटो ब्यारो परिहरै, जल्दी नीको होय ॥
घरघराहटो सुनै नहिं, चाकी को सो कान।
सिंहघाव दुख ना रहै, दिन चौदह परमान ॥

पुनः

पंचांगधतूरो लीजिये, मालकाँगनी ल्याय।

मीठो तेल मिलाय कैं, सिंहघाव पर लाय ॥
पथ्य दूध अरु भात को, गेहूँ दलिया खाय।
चाकी सुनै न कान सों, सिंहघाव न रहाय ॥

पुनः

कारो जीरो राल पुनि, खैर सिरस के बीज।
धाय जु निरगुंडी सहित, टंक सु दश-दश लीज ॥
बाँटि छानि कै खाँड़ लै, चीनी सबै मिलाय।
चौदह दिन को लीजिये, पुरिया चौदह भाय ॥
नित्ते पुरिया एक लै, गाय-दूध सँग खाय।
खाटो ब्यारो परिहरै, सिंह-घाव मिटि जाय ॥

पुनः

ककरासिंगि भरंड पुनि, खोपर सोंठि कचूर।
दिवस सात परमाण खा, सिंहरोग करि दूर ॥

पुनः

सोंठि भरंगी कायफल, ककरासिंगी आनि।
रजनीसेवा पुनर्नवा, कारो जीरो जानि ॥
सम करि सबही लीजिये, गुड़ सों टंक प्रमान।
दिवस सात गोली भखै, सिंहघाव की हान ॥

सुवरघाव का प्रतीकार

पारो दंती आमले, पीसहु नीर पिवाय।
दिवससात परमाणलागि, सुव्वरघाव बिलाय ॥

पुनः

हरद आमले पान रस, सिरसपत्र पुनि लेउ।
पानी सों घिसि लेपिये, सुवरघाव हरि लेउ॥

ऊंट दंतघाव का प्रतीकार

राई जीरो लाख रस, मिलवै चित्रक सोय।
पानी सों घिसि लेपिये, निश्चय नीको होय॥

पुनः

हाड़ बिलाई लायची, त्रिफला रस को लेय।
पानीसों घिसि लेपिये, घाव ऊँट को खोय॥

पुनः

पीपर मनशिल नींबफल, चित्रक चोख समान।
मिटै ऊँट के दंतदुख, जल सों लेपि सुजान॥

अग्निदग्ध-लेप

साबुन लेय पुरान अरु, मथि अलसी के तेल।
मथि करि लेपै दग्ध पर, पीर दाह की ठेल॥

पुनः

अजया-लोहू लीजिये, कै काहू को होय।
हाड़ जो ऊपर लेपिये, वेगिहि नीको होय॥

पुनः

एला लीजे पीसिकै, मीठे तेल मिलाय।
मथि करि लेपन कीजिये, दाह-व्यथा न रहाय॥

पुनः—चौपाई

भव तेंदू की भुरकी पीश; ताको देहि दाह के शीश

ऊपर तें दै तेल चुराय ; ऐंठ दाह नीको होय जाय

पुनः—दोहा

चूरण धवई फूल को, मथि अरसी के तेल।
बार बार लेपन करै, अग्नि-दग्ध व्रण ठेल ॥

पुनः

त्रिफला लाय जराय कै, अरसी-तेल मिलाय।
मथि करि लेपन कीजिये, अग्नि-दग्ध मिटि जाय ॥

सर्पविष का प्रतीकार

होय भानु वृषराशि को, सिरसबीज इक एक।
खाय सु ताके निकट अहि, आवै नहीं विशेक ॥

पुनः

अजैपाल की लै मिंगी, निश्चय करिकै पीसि।
निंबुआ-रस की भावना, इन दीजै इकईस ॥
खरलि खरलि बाँधै बरी, सुखै घाम में लेय।
तब मानुष के थूक में, घिसि करि अंजन देय ॥
बिषहर के विष को हरै, निर्विष होय शरीर।
कै मधुघृत पीपरि मिरच, आदो नासै पीर ॥

पुनः

चावल धोवन सों पियै, बारहमासी फूल।
पीपरयुत सों साँप के, विषै करै निर्मूल ॥

पुनः

ल्यावै श्वेत गुरार को, जल सँग पीसि पिवाय।

लहरि निनाई सर्प की, विष निश्चय तहँ जाय ॥

बिच्छूविष का उपचार

लीजै मिंगी करंज की, जलसों पीसि लगाय।
जहाँ डंक तहँ लेपिये, बिच्छू ज़हर मिटाय ॥

पुनः

आाजाझारोलाललखि, ताके पात पिवाय।
बिच्छू काटो होय जो, याको विष विनशाय ॥

पुनः

अजैपाल पिसवाय कै, पानी सों लगवाय।
बिच्छू के विष को तुरत, यासों बिदा कराय ॥

पुनः

हींग कुसेरे में जु धरि, अर्क दूध पुट सात।
घिसि लेपन करि डंकपर, बिच्छू-विष न रहात ॥

चंदन गोह का उपचार

चनाचवक मँगवाइले, दो पैसा भरि भार।
पुटसटीह की दीजिये, गिनि कै ताहि हज़ार ॥
अर्क दूध का सात पुट, गुटिका तब करि लेय।
गोह ज़हर बिच्छू सरप, लेप दूरि करि देय ॥

सर्प काटे सूजनि का उपचार—चौपाई

कारो सर्प मरो लै आाउ; बारि राखि गोघीउ मिलाउ
मलम बनाय लगावै सोय; चौदह दिन में नीको होय

कान में कनखजूरा जाने का उपाय

मनशिल गेरू द्वै हरद, यहै कान में डारि ।
कै दियला के तेल सों, कानखजूरो मारि ॥

पुनः

विषगंधक हरतार लै, समुदफेन पिसवाय ।
पुरुषमूत्र सँग कान में, डारि कीट मरि जाय ॥

पुनः

भूमै ताको मारिकै, नीर कान भरि लेय ।
कीड़ा कढ़ि भाजै तुरत, वैद्य-प्रिया सुख देय ॥

बर्रै-विष का उपचार

सेंधव सोंचर मिरच अरु, सोंठि पान के रंग ।
लेप करत विष बर्र को, तुरत होयगो भंग ॥

मकरी का उपचार

बूटी दूब मँगाय कै, हरदी इमिली लेय ।
जल घिसि लेपन कीजिये, मकरी-विष हरि लेय ॥

बौरहा कुत्ता का उपचार

तांबूलै फलबेत को, कूटि क्वाथ करि खाय ।
करिकै शीतल वेगिही, कुत्ता को विष जाय ॥

पुनः

सरसों सेंधव हींग बच, राई जीरो दोय ।
हरद कूट अरु सोहगी, सम करि लीजै दोय ॥
पाननि-रस गोली करै, सातैं दोय जु खाय ।
खाटो ब्यारो परिहरै, कूकर को विष जाय ॥

पुनः

कारो जीरो पीपरा, वेगहि लेय कचूर ।
गुड़ सँग गोली सात दिन, खाय रोग होय दूर ॥
खाटो ब्यारो मांस पुनि, मीन न खैहै जान ।
वैद्य-प्रिया भाष्यो यहै, श्वानरोग की हान ॥

बिवाई रोग का उपचार

मैन दूध सम घृत मिलै, मज्जनपगानि कराय ।
फटे पांय नीके करै, चलै बहुत सुख पाय ॥

पुनः

सेंधव मधु घृत राल ये, डारि मथै कटु तेल ।
ताके लेपन ते मिटै, चरण बिवाई खेल ॥

पुनः

गूगर गेरू मैनहर, मधु घृत सेंधव होय ।
नेत्रबाल मिलि लेपिये, पाँय दरार न होय ॥

पाँय छाले का उपचार

लकरी लीजै बाँस की, घिसिये नीर मिलाय ।
दिवस सात परमाण लगि, छाल पायँ के जाँय ॥

पुनः

मेहँदी लीजै आमले, जल सँग लेप कराय ।
सात दिना के लेपते, छाले दूरि कराय ॥

पुनः

जीरो लीजै बावची, तीजी सोंठि मिलाय ।
पानी सों घिसि लेपिये, छाले रोग मिटाय ॥

ग्यारहवाँ शृंगार

वीर्यकरण, इंद्रिय प्रफुल्लकरण, योनिशुद्धकरण, गर्भकरण, बंध्या-दोष निवारण, स्त्री-पुरुष-बाँझ, गर्भ-स्रवण, मृतवत्सा, प्रदररोग, प्रसूति-रोग, योनि-रोग, और कुचरोग की वृद्धि, लक्षण और प्रतीकार

वीर्यकरण का प्रतीकार—दोहा

सोरह माशे पीसि कै, जेठी मधु घृत संग।
खाय पियै पुनि दूध सों, दश त्रिय सों रस-रंग॥

पुनः

क्षीरसहित जो ऊचटै, पियै नियम करि सोय।
सौ नारी सों भोगवै, वृद्ध तरुण सम होय॥

पुनः

घृत मधुसहित जो पीवही, बाँटि बिलाई कंद।
अधिक नायकनि सों रमै, ज्यों उडुगण में चंद॥

पुनः

कंद बिलाई दूध घृत, प्रात पियै हित मानि।
ऊमरिसमजो खाय नित, वीर्यकरण को खानि॥

पुनः

तालबुखारो गोखुरू, और शतावरि आनि।
श्यामस और गँगेरुवा, बीज करेछ बखानि॥

सब सम बाँटि छनायकै, पियै दूध सँग जोय।
यह चूरण ताको कहो, जाके सौ त्रिय होंय॥

पुनः

असगँध पीपरि सिंगिया, बीज धतूरे पाय।
नकछिकनी हिंगोट की, मिंगीजोरि सबल्याय॥
पैसा-पैसा भरि सबै, तौलि करै इकठाय।
लाल सुफेद कनेर-जड़, पाव-पाव तुलवाय॥
आठ सेर गो-दूध में, औटि जमाय सो देय।
दही बिलोय सो लीजिये, घीउ काढिकै देय॥
बिना मसाले पान में, चावल भरि धरि खाय।
पुष्ट होय ताको बहुरि, बीरज दृढ़ हो जाय॥
इंद्री सों मर्दन करै, बढ़ै अधिक जड़ होय।
नामरदी मिटि जाय सब, वैद्य-प्रिया कहि सोय॥

पुनः—चौपाई

लै समुद्रफल सात सुटंक; लेय जायफल तितने अंक
खुरासानि अजवायनि आनि; सात टंक तिहि तौलि बखानि
टंक एक आफू मँगवाय; बाँटि सबै भँगरा-रस नाय
खरलि रती-सम गोली करै; प्रात साँझ खैबो चित धरै
दूध भात पथ दीजै ताहि; खट्टो खारो नोन न खाहि
पुष्ट होय बीरज बढ़ि जाय; वैद्य-प्रिया में कह्यो उपाय

पुनः

खारक सोंठि गोखरू लेय; तामें अच्छी मिश्री देय
ये चारों सम लैकै बाँटि; लडुआ बाँधि धरै तर बाँटि
पहले पहल टका भरि खाय; क्रम-क्रम टका चारि बढ़िजाय
भूख बढ़ै अरु बल अधिकाय; लाली बदन रहै ठहराय
सिंहअवचलोंओषधि खाय; सो मैं सबको दई बताय

गंगोदकनाम घृत—छप्पय

चारों बच फटकरी कैथ लै बाय बिड़ंगै।
थूथो असगँध रार समुद्र-फल लै इकसंगै॥
लै सब दो-दो टंक सेर पाँचक घृत लावै।
घी में चूरण मेलि आँच मंदी उटवावै॥
दाखै टंक पचीस लै उतरन बेरा डारिये।
नेक जोश पुनि और दै शीतल छानि उतारिये॥
चिकने बासन धरै खाय नर पाँच टंक नित।
सर्व रोग नशि जायँ पुष्ट होवै शरीर हित॥
बाँझ त्रिया जो खाय पूत ताके प्रकटावै।
टोना टमना मिटै वायु के रोग नशावै॥
पित्त-रोग ब्यालीस हरि अश्लेषम चौबीस टरि।
कफ खाँसी भ्रम-रोग को गंगोदक घृत लेय हरि॥

पुनः—चौपाई

श्रीफल को गोला मँगवाय; तामें छेद करौ सुख पाय

भरै फेरि बड़ दूधहि लीज ; तामे तालबुखारे बीज
भरे दूध तबहीं धरवाय ; तीनि दिवस पाछे ले ताय
गोला सुद्धा पीसि जु लेय ; मिश्री ताहि बराबरि देय
चूरण राखि छुहारे आनि ; गिनती सौ इकईस जुजानि
तिन्है जोशदै गुठिली काय ; तिनमें चूरण भरै बनाय
काचौ सूत लपेटत जाय ; ऐसे भरि सब देय धराय
आध सेर गो-दूध मँगावे ; देहि छुहारे डारि उटावै
शीतल भये छुहारे खाय ; दूध तासु ऊपर पी जाय
रोज करै यह संयम सोय ; पुष्टि बहुत ता नर को होय
मोटी देह जोर ह्वै जाय ; खट्टो खारो गरम न खाय
या खारक गुण खरे अपार ; वैद्य-प्रिया भाष्यो सुखसार

नामर्दी का उपाय—दोहा

ब्रह्मदंडी अरु मोच-रस, हालो गुग्गुरू ल्याय।
मालकांगनी ये सबै, दश-दश पैसा भाय॥
पैसा पाँच प्रमाणहीं, तालबुखारे-बीज।
आधसेर लै खाँड़ पुनि, चूरण एकत कीज॥
आधसेर पय गाय का, लीजै प्रात मँगाय।
चूरण पैसा एक भरि, मेलि वेगि पी जाय॥
मंडलभरिकै खाय नित, नामर्दी मिटि जाय।
बहुत जोर पथ सों रहै, वैद्य-प्रिया कहि ताय॥

लेप

असगँध अरु हरताल लै, पारो ये तुलवाय।
चारि-चारि ये टंक सम, मनशिल आठ जु ल्याय॥
संभल खार सुहाग लै, ये दो टंक मँगाय।
कुचारि औषधैं ये सबै, गो-घृत सब सम ल्याय॥
डारि तासु में मलम करि, घीउ लिंग मरदाय।
शोधि सबै लेपन करै, दृढ़ इंद्री हो जाय॥
नामर्दी मिटि जाय सब, दिन इकईस प्रमान।
मर्द होय संयम रहै, वैद्य-प्रिया हरषान॥

पुनः—अरिल्ल

तालमखानै आनि इंद्रयव बहुफली।
अकरकरा सत गुड़च दोय मूसरि भली॥
लसोरे लघु ल्याय उटंगन बीजही।
रूमामस्तगि बंग मोचरस लीजही॥
बीज खैरही बीज करेछ मँगावही।
सब ओषधि सम आनि पीसि छनवावही॥
दूनी खाँड़ मँगाय पाग पुनि कीजही।
चूरण तामें मेलि गुटी करि लीजही॥
पैसा-भरि की एक खाय नित प्रातही।
नामर्दी मिटि जाय पुष्ट होय गातही॥

इंद्री दृढ़ हो जाय करै रति-संगही।
वैद्य-प्रिया यह कह्यो होय सुख अंगही॥

पुनः—चौपाई

लोहबान दश टंक मँगाउ ; कुचिला टंक बीस लै आउ
बीजे ककड़ी टंक पचास ; बीज-धतूरे तितने पास
अजवाइनि विषदशदशजानि; मालकाँगनी शुंठीआनि
घुँघची-दाल टंक ले बीस ; ओषधि नन्ही करिकै पीस
आक-दूध ले टंक पचास ; मेलि देय चूरण में पास
काचो तेल तिली को ल्याय ; लीजै तीनि पाव तुलवाय
डारि ओषधै तामें देय ; बासन ढूँढ़ि चीकनो लेय
मिही छेद करि ताकी तरी ; ओषधि भरिकै मुद्रा करी
धरती में इक गढ़ा खुदाय ; खोदि गड़ा में गढ़ा बनाय
काँसे बासन तामें धरै ; लगै न आँच यत्न सो करै
ओषधि की हँड़िया तब धरै ; ऊपर गजपुट कंडा भरै
बारै आँच तेल कढ़वाय ; नीचे के बासन में जाय
शीतल भये काढ़िसो लेय ; इंद्री चुपरि तेल सों देय
बाँधे नागबेलि के पान ; लिंग सबै ढकि जाय सुजान
गुण ताको नामर्दी जाय ; इंद्री अति दृढ़ पुष्ट कराय
यही तेल दै ताहि बनाय ; चावल दो भरि वजन बताय
बढ़ै रती दो भरि लौं खाय; दिन इकईस देह सुखवाय

मर्दी बहुत होयगी गात ; वैद्य-प्रिया देखत हरषात

शिथिल-इंद्रिय का उपचार—दोहा

विष्ठा तमचुर मोर को, श्वेत कनेरहि डालि ।
वेद टंक लै तेजबल, बाँधै सब सम घालि ॥
करि गोली गो-घीउ में, जल-सँग पीसि लगाय ।
नित्य साँझ लेपन किये, इंद्री दृढ़ हो जाय ॥

पुनः

कनकबीज भिलवाँ सुफल, तुलसी केरे पान ।
सब समान लै पीसिकै, पाव-सेर पय आन ॥
सबै सहित पय औटि कै, तामें जावन देय ।
परभात ही बिलोय कै, घीउ काढ़ि कै लेय ॥
साँझै मर्दन कीजिए, गज-सम इंद्री होय ।
रहै सुक्ख में कामिनी, सिद्धियोग है सोय ॥

पुनः

रवि दिन छूटे केश पुनि, नाग्नि मरकटी मूल ।
रात्रि लेपि अजमूत्र सों, होय लिंग जिमि शूल ॥

पुनः

असगँध लोध गुरुखुरू, लै कसीस पुनि सोय ।
तेल पकावै लेप करि, लिंग मुशल-सम होय ॥

पुनः

बाजी रिपु बल नागबल, वच घृत लेपै सोय ।
कठिन लिंग दृढ़ होतु है, या लेपत ही सोय ॥

पुनः

विजया-अर्क कनैर-जड़, रस जु धतूरे पाय।
गोली कीजै पीसिकै, लीजै छाँह सुखाय॥
पुरुष-मूत सों पीसिकै, लेप करै इंद्रीय।
दीर्घ कठिन अस्थूल हो, देखत भाजै त्रीय॥

पुनः

असगँध पारा गजकना, रजनी सिता मिलाय।
लेप जु कीजै लिंग पै, वृद्धि स्थूल कराय॥

पुनः

थूहर बच असगंध कहि, गजकेसरि लै बाल।
बड़ी कटाई कनकफल, सबही समकरि डाल॥
सूक्षम जल सों पीसि कै, लेपन संध्या ल्याय।
लिंग मुशल सम होत है, देखत त्रिया नशाय॥

पुनः

भैंसिकान की टेरिकै, ल्याय कलीली साँच।
तिहि सम सरसों तेल लै, पचवै करि दृढ़ आँच॥
इंद्रिय लेपन कीजिये, जड़ दीरघ हो जाय।
कै शुंठी खारक भिंगी, जल सों लेप कराय॥

हस्त-कर्म के द्वारा इंद्रिय-शिथिलता-शक्ति का प्रतीकार

गोखुरू टंक जु तीनि लै, त्रय पैसा तिल स्याह।
सेर एक गो-दूध में, औटि ताहि पी जाय॥

साँझ समय यह खाय नित, एक मास लागि कोय।
हस्त-कर्म दूषण मिटै, वैद्य-प्रिया कहि सोय॥

पुनः

सिता जवायनि तेल गुड़, पैसा पाँच प्रमान।
त्रय सातैं लगि पीवही, हस्तकर्म गति हान॥

पुनः

विष्ठा लै वाराह की, पैसा लै तुलवाय।
चारि टंक मधु आनि कै, तामें देय मिलाय॥
संध्या को लेपन करै, इंद्री दृढ़ हो जाय।
हस्त-कर्म दूषण मिटै, वैद्य-प्रिया कहि ताय॥

पुनः

अकरकरा पुनि जायफल, बंग सोंठि पदमाख।
केसर अरु कंकोल लै, तृष्णा बहुरौ भाख॥
तीनि-तीनि ये टंक लै, सब सम क्वाथ बखान।
क्वाथ-सहित सम शर्करा, गुटिका टंक प्रमान॥
सिता दूध सँग पीवही, नामर्दी मिटि जाय।
हस्त-कर्म दूषण मिटै, थम्भन बल अधिकाय॥

पुनः

अकरकरा दश टंक लै, केसरि टंक जो दोय।
पाँच टंक जातीफलहि, लवँग टंक त्रय होय॥
शिंगरफ टँक त्रय आनहु, गुटिका आफू-संग।
बर समान संध्या-समय, होय बँधेज अनंग॥

पुनः—चौपाई

बच्छनाग गंधक हरताल ; अकरकरा घुँघची जरधार
पीपरि लौंग सबै लै आउ ; चारि-चारि लै टंक तुलाउ
मोठ भटा की जरै खुदाउ ;सिरसबीज कुचिला लै आउ
लेय जायफल तौल बखान ; बारह-बारह टंक प्रमान
चौबिस टंक चिरौंजी लेय ; मालकाँगनी छत्तिस देय
ल्याय कनैर लाल अरु श्वेत ; आधो-आधो सेर सुलेत
बीस टंक लै बीज धतूर ; सबै बाँटि कीजै सम चूर
धरि पाताल यंत्र में ताहि ; लीजै ताको तेल कढ़ाय
ताँबे के बासन में धरै ; दो माशे नित मर्दन करै
मर्दत लिंग जोर अधिकाय ; हस्त-कर्म दूषण मिटि जाय
लिंग शूल मिटि त्रियसुखकारि ;वैद्य-प्रिया के ग्रंथबिचारि

वीर्य-स्तंभन का प्रतीकार—दोहा

अजा सेंहुड़ को दूध पुनि, लज्जालू-जड़ पाय।
करपद नाभि जो लेपिये, थम्भन होय अधिकाय॥

पुनः

तालमखाने भंखड़ी, श्वेत-मूसरी पाय।
करेञ्छ-बीज तज मस्तगी, अकरकरा सुर ल्याय॥
तम्बू लौंग तमालपत, अजवाइनि खुरसान।
तीनि भाग ये दीजिये, एक अफीम समान॥

रस बिजया गुटिका करै, परमित टंक सो एक।
शयन समय भक्षण करै, ललना रमै अनेक॥

पुनः—चौपाई

खुरासानि बच असगँध आनि; अकरकरा जावित्री जानि
जातीफल चीनियाँ कपूर; चोखी विजया रस सिंदूर
डेढ़-डेढ़ लै टंक तुलाय; दूनों गुड़ इन माँझ मिलाय
गोली बाँधै टंक प्रमान; संध्या समय कहौ तिहि खान
ताके ऊपर मूरा खाय; बकला ताको दूरि कराय
अस्तंभन जासों अधिकाय; थंभन मुचिबो निंबुआ खाय
यह थंभन गुण करै अपार; वैद्य-प्रिया भाष्यो सुख-सार

पुनः

सोंठि शतावरि अरु निर्गुंडी; भाग भाँगरो गोरखमुंडी
खाय शहद गोटी बँधवाय; खाय होय थम्भन अधिकाय

पुनः—दोहा

पारौ गन्धक जायफल, लौंग उटंगन-बीज।
आफू केसरि मस्तगी, लौंग कपूर जो लीज॥
जावित्री जो औषधैं, सबै समान पिसाय।
शहद-संग गोली भखै, अस्तम्भन हो जाय॥

पुनः

मधु अरु हींग मिलायकै, लिंग देय लिपिटाय।
अस्तम्भन बहु होय तिहि, वैद्य-प्रिया कहिताय॥

स्त्री के फूलकरन का प्रतीकार

पाव सेर तिल श्याम लै, सेर नीर में डारि।
बाँटि छानि परभात पिउ, होय पुष्प निरधारि॥

पुनः

मुंडीपाती भांगरो, गुड़च शतावरि होय।
दो-दो पैसा लीजिये, पीवै सूक्षम सोय॥
चूरण पैसा एक भरि, सेर नीर औटाय।
पाव सेर बाकी रहै, लीजै तबै सिराय॥
प्रातकाल बनिता पिये, सात दिवस लगि सोय।
फूल अधिक ताके बहुरि, निश्चय बालक होय॥

पुनः

चूनाकली मँगाय कै, गोली टंक बनाय।
प्रातहि निगलै कामिनी, पुष्प होय अधिकाय॥

पुनः

नौसादर अरु कूट पुनि, टंक तीनि प्रति आनि।
घृत सों दश दिन खाय त्रिय, पुष्प होय तू जानि॥

पुनः

सोंठि मिरच अरु पीपलै, अरु ब्रह्मदंडी पाय।
तिल के काढ़े सो पिये, पुष्प होय अधिकाय॥

योनि-शुद्धकरण का प्रतीकार

सिरस कोंपलै जायफल, सागर-फेन मिलाय।
बायबिडंग इलायची, गजकेसरि समभाय॥

जल सों गोली कीजिये, टंक दोय परमान।
भग में राखे जल-सहित, यह ओषधि हितमान॥
बंध्या गर्भ सो होय सुख, योनि दोष सब जाय।
शालि-मूंग-गोक्षीर-घृत, ताको पथ्य कराय॥

स्त्री-गर्भ-करण का प्रतीकार

शंखाहूली मोरशिख, गजकेसरि सम आन।
सूक्ष्म पीसि गुटिका करे, त्रय-त्रय टंक प्रमान॥
ऋतु मज्जन करि प्रातही, गोके पय-सँग खाय।
दूध-भात पथ तीनि दिन, गर्भ होय सुत जाय॥

पुनः

गजकेसरि चंदन कमल, पत्र जमाल मँगाय।
बीज आमरे लीजिये, चंदन रक्त जु लाय॥
त्रय-त्रय माशे सब कहे, जल-सँग पीसौ येह।
छाँह बैठिकै युक्ति सों, गुटिका तीनि करेह॥
टंक एक गुटिका करै, तीनि दिना कै सात।
गो-पय सँग परभात पिउ, गर्भ होय विख्यात॥

पुनः—चौपाई

असगँधऔरशतावरिआनि; गजकेसरि गोरोचन जानि
करि इकईस टंक सब लेय; ताकी पुरिया सात करेय
पुरिया एक गाय के क्षीर; न्हान दिवस त्रय पीवै धीर
सात दिवस लौं नोन न खाय; धरै गर्भ हरि-कृपा कराय

पुनः—अरिल्ल

शरफोंका की मूल अर्क-दिन लीजिये।
आठ टंक भरि सात सो पुरिया कीजिये॥
एक बरस गोक्षीर सोंकचौ ल्याइये।
कन्या कर पर पुड़िया एकनि खाइये॥
पिये प्रात दिन सात आदि न न्हातही।
लौन बिहूनौ क्षीर भात के खात ही॥
सात दिवस इहि भाँति लेय उठि प्रातही।
बंध्या जावै पुत्र होय सुख गातही॥

पुनः

श्वेत कटेरी मूल एक पल लीजिये।
सूक्षम पीसो छानि सु पुरिया कीजिये॥
ऋतु अंतर गोक्षीर संग पिउ प्रातही।
गर्भ धरै ते नारि पथ अरु भातही॥

पुनः—दोहा

पारस पीपरि बीज-त्रय, खाँड़-संग सम पीस।
दिवस तीनि संयम करै, पुत्र देय जगदीस॥

पुनः

गजकेसरि गोक्षीर सों, करि ऋतु दिवसहि पान।
दूधभात भोजन करै, गर्भ होय सो जान॥
गजकेसरि असगँध सिता, गोरोचन अरु शाल।
पय सो बंध्या पीवही, गर्भ रहै ततकाल॥

पुनः

बीज बिजौरे एक के, पीसि दूध में खाय।
न्हान करै जादिन त्रिया, पुत्र होय सुख पाय॥

पुनः

ल्याय पुष्पकौ लक्ष्मणा, शूल दूध घृत दोय।
कन्या सो पिसवाय खा, त्रिय न्हाये सुत होय॥

पुनः

घृत असगँध के क्वाथ सों, सिद्ध दूध त्रिय खाय।
या ओषधि के किये तें, तुरत गर्भ रह जाय॥

पुनः

बेल-मिंगी को एक फल, त्रिया न्हाय गिलि जाय।
चौथे दिन सो बाँझऊ, फल पावै यह आय॥

पुनः

कारे तिल को क्वाथ करि, शीतल करि गुड़ डारि।
त्रिय पावै रज मिटि गये, फेरि कहौं निरधारि॥

पुनः—चौपाई

मोती सीप भस्म करि लेउ ; पाथर जीव तासु में देउ
फूल सुपारी कहे बखानि ; जातीफल माजूफल आनि
कमल-बीज अरु मुंडी कही ; सबसम ओषधि बाँटो सही
बीस सेर गोपय औटाय ; बाँधि पोटली ओषधि खाय
दुगुनी खाँड़ चिनी लै धरै ; जामुन पय लै गोली करै
मंडल भरिकै गोली खाय ; खाटो ब्यारो सबै तजाय

पथ्य करै संयम सों रहै ; वैद्य-प्रिया यह ओषधि कहै
गर्भ धरै तिय बालक जावै ; रामकृपा ते मंगल गावै

पुनः

लज्जालू लै सिता लवंग ; इसपगोल माजूफल संग
वँशलोचना मोचरस ल्याय ; टंक टंक ये तौलि मँगाय
सीप-भस्म माशे दो आनि ; गादि करहटी टंक बखानि
गादि खैर मोखा की लेउ ; गादि सहँजने की पुनि देउ
गोखुरूसोंठिजवाइनिआनि; कमलमिंगीजातीफलजानि
गजकेसरि लीजै दो भाग ; बहुरि कायफल सों अनुराग
टंक-टंक ये ओषधि साँच ; पथरी जीउ टंक लै पाँच
बाँटि सबै लै चूरण छानि ; गोघृत-शहदसंग लै सानि
टंक-टंक ये गोली प्रात ; धरै गर्भ यह गोली खात
गाय-दूध मंडल भरि खाय ; खाटो ब्यारो सब तजि जाय

पुनः

पाव-सेर निरगुंडी आनि ; पाँच टंक जातीफल जानि
लज्जालू जावित्री तौल ; पाँच टंक सब ईसपगोल
मगजी पाँच टंक भरि लेय ; माशे पाँच शतावरि देय
शिलाजीत मिलवै शतजानि; पाँच-टंक ये तौल बखानि
बाँटि छानि सब ओषधि लेय; पाँच सेर बकरी पय देय
अथवा गाय-दूध मँगवाय ; तामें ओषधि सब उटवाय
दूनी खाँड़ चिनी को ल्याय ; गोघृतल्याय बहुतकरि नाय

जामन दीजै बंग मिलाय ; गोली बेर प्रमाण बँधाय
मंडल भरि गोली नित खाय ; पूरो गर्भ ताहि रहि जाय
खाटो ख्यारो खाय न सोई ; दशै मास में बालक होई

पुनः

गाजर-बीज पाँच लै टंक ; नागरबेलि पचीसै टंक
गाय-दूध सँग पीवै नारि ; ऋतु-अंतर में गर्भहि धारि

पुरुषस्त्री-निष्फल- विचार

दो बासन माटी के लावै ; तामैं पीरी माटी नावै
बहुरि तनक लै खात मिलावै ; यव लै ताके बीज जमावै
तिया पुरुष पेशाब जु लेय ; जुदे जुदे कै सींचन देय
ज्यहि पेशाब जमैं यव सोय ; सो निर्दोष जानिये लोय
ज्यहि पेशाब जमैं यव नाहीं ; दूषण ताके कोठा माहीं
इस्त्री उदर जो दूषण होय ; यह ओषधि करि ताकी सोय

स्त्रीदोष का उपचार

बंगेश्वर यक रती मँगाउ ; जातीफल यक माशे भाउ
दोसातैं-भरि या विधि खाइ ; पाहन जीउ संग जो खाइ
गाय-दूध सँग खैहै कोय ; गर्भ धरै तिय बालक होय

पुरुषदोष का उपचार

एक टंक बंगेश्वर होय ; चारि लजालू भाषै सोय
जातीफल दो टंक सुजानि ; बहुरि गुरुखुरू इतनी आनि

चारि टंक दो मूसरि लेय ; जावित्री दो टंक सुदेय
नागकेसरी टंक सु एक ; तवाशीर उतनिहि सविवेक
मुंडी चारि टंक मँगवाय ; झाऊ लै दो टंक मँगाय
ये सब कूटि खरल में धरै ; टंक एक की गोली करै
शहद संग तब गोली खाय ; अति बंधेज रहै सुख पाय
सातैं तीनि पुरुष नित खाय ; वीर्य-स्तंभ अधिक ह्वै जाय
खाटो ब्यारो भूलि न खाय ; जो खैहै बीरज नशि जाय
तिया-संग जबहीं रति करै ; वनिता तबै गर्भ को धरै
चारि भाँति की बाँझ सुहोय; इस्त्री पुरुष कहौं अब सोय

स्त्री-बाँझ के लक्षण

तस बाँझ इक इस्त्री होय ; बीरज पुरुष जाय जरि सोय
शीतल बंध्या दूजी जाय ; पतिबीरज जल ह्वै बहि जाय
बंध्या बहुरि तीसरी बाय ;पति बीरज उर जाय बिलाय
चौथी बंध्या साँची जानि;ताको नहिं भेषज अनुमानि
अति दारिद अस्तनकी जोय; ताकीओषधि करौ न कोय
चारि भाँति की बंध्या कही ;सुजन सबै विधिजानो सही

पुरुष-बाँझ के लक्षण

पुरुष एक अतिअग्निसमान; ताको बीजजायजरिन्यान
पुरुष दूसरो शीतल आय ; बीरज जलसम जानो ताय
तीजो पुरुष वायु के अंग ; ताको बीरज गिरै सो भंग

चौथो जो नामर्दी जानि ; ताकी ओषधि नाहीं आनि

स्त्री के गर्भस्राव के शांतिका उपाय—दोहा

गिरन लगै तिय गर्भ जो, तो यह यत्न कराय।
लै कुम्हार की मृत्तिका, जलसों घोरि पियाय॥

पुनः

तेंदूतर की छाल लै, और कायफल घाल।
करि पुटरी भग मेलि कै, अस्तम्भन ह्वै हाल॥

पुनः

कही हिरमिजी आधपल, मिश्री पल-भरि आन।
शीतल जल सों पान करि, गिरै न गर्भ सुजान॥

पुनः

तीनि टंक लघु लायची, बीट कबूतर एक।
तंडुल जलसों पान करि, गिरै न गर्भ विवेक॥

पुनः

धाय लजालू कमल-फल, अरु मौरेठी पाय।
तंडुल जल सों प्याइये, गर्भपात थम्भाय॥

स्त्री के छाले का उपाय

सोंठि शतावरि भाँगरा, असगँध अरु मौरेठ।
अजाक्षीर सों पान करि, सात आठ दिन हेठ॥
खाटे चुरस न खाइये, छोंड़ वृद्धि प्रतिकूल।
पुत्र जनै निश्चय सही, कछु संदेह न भूल॥

पुनः

लघु इलायची जायफल, तज तमाल वृध दारु।
जीरो बेसन लौंग पुनि, मौरेठी सम धारु॥
सब ही सम मिश्री धरो, चूरण पय सों खाय।
दोय टंक लै नित्त ही, छाल वृद्धि हो जाय॥

पुनः

असगँध लै पुनि गुरुखुरु, शतावरी देवदार।
मिश्री माहिं मिलाइये, चूरण सब समधार॥
पाँच टंक नित लीजिये, जो घृत सों अवलेह।
गर्भ वृद्धि यह करत है, ओषधि नाहिं सँदेह॥

पुनः

सन के बीज अठारही, पीसि तेल सों खाय।
अथवा पीवै क्षीर सों, गर्भ-वृद्धि ह्वै जाय॥

पुनः

सहसमुली पुनि तिरजटा, जीरो लीजै स्याह।
मोरशिखा सबही जु सम, सूक्षम पीसो ताह॥
टंक चारि घृत क्षीर सों, पीवै नारि प्रभात।
दिन चौदह लगि नित्तही, छाल वृद्धि हो जात॥

पुनः

ऊंट कटाई-बीज लै, पौन टंक नित सोय।
साठी चावल को बहुरि, नीर लीजिये सोय॥

जिती बरस की छाल तिय, तैं सातैं भरि खाय।
कृपा रावरे राम की, छाल-वृद्धि ह्वै जाय॥

पुनः

कमलगटा पञ्चाख पुनि, डारो जीरो श्वेत।
लाय सिंघाड़े ये जु सम, चूरण करि तिय हेत॥
टंक तीनि गोक्षीर सँग, चौदह दिवस पियाय।
गर्भ-वृद्धि हो जाय पुनि, वैद्य-प्रिया सुख पाय॥

पुनः—चौपाई

ऊँटकटारे की जड़ खरी; सूखी पंद्रह पैसा भरी
गजकेसरि पैसाभरि सात; एला और बिधारो हात
पैसा-पैसा भरि ये ल्याउ; मिश्री पंद्रह टंक तुलाउ
चूरण करि पीवै तिय प्रात; टका भरी गो-पय सँग खात
सातैं चारि खाय हित मान; गर्भ-वृद्धि कह वैद्यप्रियान

जिसका बालक १,२,३,४ और ५ वर्ष का होकर मर जाय उसका उपाय

पित्त पापरो वारो भाष; लघु इलायची अरु पदमाष
निशा हुताशन अरु देवदार; लै अभया तिनके समधार
तृष्णामुसब्बर बहुरि कचूर; गुंडी विडंग अजमोदा-चूर
कुशंभारता आनहु आनि; सब सम चूरण बाँटहु छानि
शीतल जल सों माशो एक; खाय गर्भ तब रहै विवेक
छह महिना लौं दीजै प्रात; फिरि न देय यह सुनिये बात
मृतवत्सा नहिं बालक मरै; या विधि सों भेषज को करै

पुनः—दोहा

एला हरदी एलुआ, बच अजमोद बिडंग ।
रत्नज्योति चित्रक हरड़, अगर पीपरा संग ॥
वारो अरु पद्माख लै, तीनगुनी देवदारु ।
बीज कसूंभर ताजवी, सम चूरण करि डार ॥
बासी पानी सों पियै, दो माशे नित प्रात ।
खाटो ब्यारो सब तजै, छह महिना भरि खात ॥
मृतवत्सा बालक जियै, मात पितहि सुखदाय ।
कृपा रावरे राम की, वैद्यप्रिया कहि ताय ॥

कष्टी स्त्री का उपाय

जाय ठौन अरु शहदघृत, बीज बिजौरो ल्याय ।
घिसि पीवै त्रिय गर्भिणी,सुखसों क्यों न जनाय॥

पुनः

सात पात अरु सातई, ईंगुर-जड़ कै खंड ।
कटि मधि बाँधै तब जनै, सुखसों सो तिय संड ॥

पुनः

शरफोंका की लाय जड़, तिय कटिमाँझ बँधाउ ।
या ओषधि परभाव यह, सुखयुत तियहि जनाउ॥

पुनः

बच सेंहुड़ को बाँटिकै, सुखनाभी करि लेप ।
कै मुंडी-जड़ आनिकै, तियकटि बाँधै छेप ॥

पुनः

पाढ़ सुहागा पीसिकै, करै लेप भग नार।
उदर-पीर नाशै तुरत, गर्भ खुलै सुखकार॥

पुनः

हेवा चौदसि अष्टमी, सहदेई-जड़ आनि।
कटि बाँधै बनिता तबै, होय कष्ट की हानि॥

पुनः

जड़ छोटी सुकटेहरी, अर्कबार दिन लेहु।
गाय शीश पै तासुको, चारि घरी धरि देहु॥
गूगल-धूनी दीजिए, कटि यष्टी को बाँधि।
तुरतहि फाटे कामिनी, तुरतहि होय समाधि॥

स्त्रियों में गर्भस्थ पुत्री से पुत्रकरण का उपचार

गर्भ धरै जब कामिनी, दो माशे यव खाय।
इकसठि बासठि त्रैसठी, दिन को करिये याहि॥
माशो-माशो नित्य ही, भाँग-बीज निगलाय।
बीस रोज़ भरि नेम सों, दीजै ताहि लिलाय॥
यहि विधि करै उपाय यह, चतुर नायका जोय।
पुत्री ते सुत ऊपजै, यह ईश्वर-गति होय॥

पुनः

स्याह बुटी जड़ लीजिए, टंक चारि परमान।
गाय-दूध सों पीवही, प्रातहि तिया सुजान॥

दोय मास बारह दिवस, भरिकै जो तिय खाय।
पुत्री ते सुत ऊपजै, यह ईश्वर दर्शाय॥

पुनः

बीट कबूतर की गहौ, संग सुहागा पीस।
लिंग लेपि संगति करै, पुत्र देय जगदीश॥

पुनः—अरिल्ल

गजकेसरि देवदारु कूटकी मूलही।
गुटिका जल सों बाँटि बेर सम तूल ही॥
गुटी सात दिन खाय आदि अस्नान ही।
जावै सुत सो बाल सुक्ख मन मानही॥
कृष्णपंचमी राति उदय होय चाँदही।
शतावरी-जड़ ल्याय करौ आनंदही॥
पुत्रवती के हाथ शुद्ध पिसवावही।
करि उत्तरदिशि बदन जु पुरिया बाँधही॥
ऋतुस्नान करि तबै बुलावौ बालही।
यकवरणी गो-क्षीर संग दै हालही॥
तीनि दिवस यहि भाँति प्रात करि देवही।
पुत्रीते ह्वै पुत्र महासुख लेवही॥

पुनः

नवधा लेव धतूरे बीज; नौ माशे गौ को घृत लीज
चुरवै ताहि अग्नि बहु करै; यक यक लै मुखमाहीं धरै

गर्भ धरै पाछे ते लेउ ; इक्यावन बावन दिन देउ
कै इकहत्तरि दिनलौं खाय ; प्रात समय नित एक बचाय
पुत्री ते सुत ह्वैहै सही ; यहै बात नारदऋषि कही

गर्भ डालने का उपाय—दोहा

गावो लाय खजूरि को, दश पल तौलि बनाय।
चारि सेर जल संग धरि, बासन में औटाय॥
पाव सेर बाक़ी रहै, पीउ गुनगुनो बाल।
छाल शाल सब गिरि परै, रहै नहीं उर काल॥

पुनः

राइ कलौंजी पीपलै, पिपलामूल समान।
जल सों काढ़ो कीजिए, गर्भ गिरै तू जान॥
कारि कलौंजी राइ सम, ग्रंथिक लै जयपाल।
गुड़ सों औटै कुंतफल, उदर गर्भ को टाल॥

पुनः

गाजर सोवा बीज लै, भटा-मूल पुनि लाय।
काढ़ो करिकै दीजिए, तुरत गर्भ गिरि जाय॥

छालगिरावन का प्रतीकार

गज को लेंड़ा लायकै, दो माशे नित पीस।
प्रात साँझ के खात ही, छाल गिरै तालीस॥

बाँझकरण का प्रतीकार

शिवा कलेसू फूल लै, खैर-वृक्ष की छाल।

अर्क कोंपलै सम करौ, पीसि तबै ततकाल ॥
चूरण टंक जो पाँच लै, यतनोइ लेवे तेल।
घोरि खाय ऋतु के समय, तुरत फूल को ठेल ॥

पुनः

ढाँखफूल ऋतु के समय, पिय शक्कर के संग।
निश्चय ऋतु नाशै सही, तीनि दिवस परसंग ॥

पुनः—चौपाई

चारि टंक लै लाख मँगाय ; सेर नीर काढ़ो बनवाय
फुलै सेरावत वाको देहु ; बंध्या देहु सहज नहिं नेहु

पुनः—दोहा

किरमाले के बीज दश, टंक न्हान दिन देय।
सात दिवस सित धान जल, पियै तो बंध्या होय ॥

पुनः

मूलबिरोहे के जु तिय, भग के मध्य धरेय।
रंडा व्यभिचारीन को, फूलगर्भ हरि लेय ॥

प्रदररोग की वृद्धि

अति असवारी तुरंग की, अति मैथुन पुनि दाह।
ताते तिय भग में गिरै, रुधिर प्रदर निर्वाह ॥
शीरो पानी पियत ही, पित्तरक्त अधिकायँ।
पित्तहु रक्त विकार ते, दशौ द्वार रहि जायँ ॥
वनिता के अँग होतु है, पीर प्रदर कहि ताय।
महादुखद यह रोग है, ताको करै उपाय ॥

प्रदर-रोग के लक्षण

माथो कर पद नासिका, नयन तप्त तनु जास ।
सर्वदेह मूर्च्छित रहै, सुस्ती अधिक प्रकास ॥
रक्त उष्ण बहु क्षुधा बहु, तृषा और हू होय ।
हाथ पाँव करिहाँ कँधा, पीर सतावै सोय ॥
कानन भन्नाटो सुनै, नारी हय की चाल ।
तिया दुःखदायक प्रदर, जानौ वैद्य विशाल ॥

प्रदर-रोग का प्रतीकार

दारोहरदै सोत घन, वासा मिलमा खाय ।
क्षुद्र किरातक भेद ते, सकल प्रदर मिटि जाय ॥

पुनः

फूल चिरोंहे को शहद, औ रसौंत जो लेय ।
तंडुलजल मधु सों पियै, प्रदर दूरि करि देय ॥

पुनः

पायफूल पुनि मोचरस, माजूफल को आनि ।
लाल सुपारी लायकरि, और रसौंत बखानि ॥
जरैं चौरई की बहुरि, गेरू संग मँगाय ।
कूटि कपरछन कीजिये, पैसा भरि नित खाय ॥
चावल धोवन सों पियै, प्रात नियम करि सोय ।
कै चावल जल चौरई, जल सों प्रदर न होय ॥

पुनः

चावल जल सों पीसिकै, कुशजरसहित मिलाय।
अरु रसौंत पीवै तिया, प्रदर-रोग मिटि जाय॥

पुनः

जीरौ सोरह टंक लै, दूध सेर छह आनि।
ताको खोया कीजिए, होय सो गाढ़ो मानि॥
धान रसौंत उशीर लै, सोंठि पीपरैं सोय।
दाड़िम बकला हरड़ लै, मोथा जीरे दोय।
वंशलोचना पाढ़ पुनि, चातुरजाति मँगाय।
त्यौंपर लीजै और सब, पैसा पैसा भाय॥
बाँटि छानि चूरण करै, देखो यामें सान।
तब वनिता को प्रात उठि, पैसा भरि दे खान॥
अरुचि श्वास तृष्णा बहुरि, दाह प्रदर मिटि जाय।
यह जीरक अवलेह लै, वैद्यप्रिया सुखदाय॥

पुनः

तंडुल जलगत केसरी, तवाखीर बरवाय।
बाल चँदन युत दिये ते, प्रदर-रोग मिटि जाय॥

पुनः

गजकेसरि मिश्रीसहित, तंडुल जल में मेलि।
पथ जो सालिमसूर कहि, प्रदर-रोग को ठेलि॥

पुनः—चौपाई

लेय सोंठि अरु पुष्करमूल; लज्जालू मवरेठी तूल

बहुरि जायफल सितालवंग ; सहित गिलोय जावित्री संग
कस्तूरी कासनी मँगाय ; मगजी ककड़ासिंगी ल्याय
फीम इंद्रयव कहे बखानि ; माजूफल जु मोचरस जानि
समसम वंशलोचना जानि ; बाँटि सबै लै बस्तर छानि
पोस्ता-जल सों गोली करै ; टंक दोय परमाण जु धरै
तंडुल जलसों गोली खाय ; प्रदररोग नारी को जाय
करै पथ्य दो सातैं होय ; खट्टो ब्यारो खाय न सोय

स्त्री के श्वेत धातु का प्रतीकार

फूल बबूर रसौंत मँगाय ; जीरौ बीज करेल जु ल्याय
बारह-बारह टंक जु तौल ; आठ टंक मूसरि लै कौल
चूरण पीसि छानि कै पाय ; पैसा भरि गो-पय सों खाय
सात दिवस में थंभन धात ; वैद्यप्रिया चूरण यह खात

पुनः—दोहा

बासो एला पीपरै, जाठौ भेद पषान।
ल्याय रेणुका गोखुरू, और अंडजर आन॥
पीसि क्वाथ अनुपान सों, खाँड़ शिलाजित डारि।
धातुबंध त्रिय की तुरत, वैद्यप्रिया दुख टारि॥

पुनः

जीरौ चावल आमरे, इनको सत करि हात।
गुदविराली वोवयो, तुलसी मेहँदी.पात॥
सबको रस यकठाम करि, अर्द्धभाग मधु डारि।

करि ताँबे के पत्र सों, अवलेही यह धारि ॥
टंक दोय त्रिय पाय तब, धातु तुरत थँभि जाय।
करै पथ्य नित कामिनी, वैद्यप्रिया सुखदाय ॥

प्रसूति रोग की वृद्धि—चौपाई

तिय पूरे दिन बालक जावै ; तस नहीं सीरो जल प्यावै
भखै पवन बेयुक्तिहि रहै ; जाका दोष तासुको गहै
रुधिर विकार देह में रहै ; बाढ़ै दोष अंग दुख दहै
ताते पहले लंघन योग ; गुड़ अजवाइनि खा संयोग

प्रसूति-रोग के लक्षण

कर पद तस जासुके रहै ; नेत्रदाह अति हिरदय दहै
भारी उदर गलग्रह रहै ; बहु प्रस्वेद तनु ताके बहै
पुनि प्रस्वेद तनुकर पद शीत; चारि कंधही कबहूँ रीत
करिहाँ टूटै पीठि पिराय ; आवै भमा रातिदिन ताहि
चित्त-भ्रम शिर खाली रहै ; परै भनक तिहि बहुदुख दहै
मंदी नाड़ी चलै सुजान ; चीलट वरणी सुनहु सुजान

प्रसूति का का प्रतीकार

कनक-बीज सेर पाव मँगाय ; मालकाँगनी तितिनी ल्याय
पीसि तिली के तेल चुराव ; अंडी मिंगी तौल लै पाव
घामें बैठे मर्दन करै ; अकड़वायु ता तनु की हरै
आलस सुस्ती वायु बिलाय ; शीत प्रसूति पीर सब जाय

पुनः—दोहा

दशमूलै को क्वाथ करि, पीवै पीपरि डारि।
सकल सूतिका रोग की, पीड़ा तुरतहि टारि॥

पुनः—चौपाई

आठटकाभरि सोंठि पिसावै ; बीस टका भरि घीउ मिलावै
दूधटका चौंसठि भरि ल्याय ; घोरि छानि सब पाक बनाय
जीरौ त्रिकुटा लेव सुगन्ध ; अरुअजवाइनिको करि बन्ध
मिश्री चाब चित्र मोथाय ; और कलौंजी इन मधि ल्याय
टका टका भरि ओषधि लेय; बाँटि छानिकै तामें देय
तीनि टका भरि मारौ सार ; रूपौ सोनो तौ निरधार
अरुसब लीजै सम करि डारै; घृत बासन में धरि निरधारै
यह अवलेह सूतिका खाय ; याको गुण अब देत बताय
दीरघसुरुचि बदन बल करै ; आजारी कबहूँ नहिं परै
रहै ज्वान सम त्रिय निरधार ; कबहूँ श्वेत होयँ नहिं बार
आमवात मन्दागिनि जाय; कृमि परसूतिरोग बिनशाय
देह अंग बल देखि खवावै ; दिनदिनजासों रुचि उपजावै
यासों बढ़ै सुहाग तिया को ; कहिदीनोयहगुणइमिजाको

भग-संकीर्ण का उपचार—दोहा

मायी धावै फिटकरी, माजू लोध मिलाय।
हड़बेरी जड़ पायकै, चीरी सींक न जाय॥

पुनः

त्रिफला लोध शुधाय लै, जामुनि-त्वचा जु लेय।
भग में लेपै शहद सों, वृद्ध कुमारी होय॥

पुनः

कस्तूरी करपूर सम, गोली करि मधु पाय।
योनि बीच राखै तिया, चीरी सींक न जाय॥

पुनः

बीज पिकाक्षी बाँटिकै, भग पर लेप लगाय।
या ओषधि के योग ते, अति गाढ़ी हो जाय॥
मठा गाय को आनिकै, भग धोवै नित प्रात।
सिद्ध योग जानो यहै, अति गाढ़ी हो जात॥

योनि की दुर्गंध दूर करने का उपचार

नीम पात को क्वाथ करि, धोवै योनि जो तीय।
दुर्गंधी मिटि जाय सब, अति सुख पावै पीय॥

योनि-शूल का प्रतीकार

हरे हरे पात कपास के, गोली पीसि करेय।
लेप करै त्रिय बहुत दिन, योनि-शूल हरि लेय॥

कुच कठिन करने का प्रतीकार

असगँध मधु औ गजकना, बच कनैर कुठ सोय।
लेपन कीजै नीर सों, कठिन होयँ कुच दोय॥

पुनः

जल तंडुल को आनिकै, नास लेय त्रिय कोय।
रातिदिना ताके सुकुच, कठिन शिला-सम होय॥

पुनः

रस कुम्हेरि को करि कलक, तिल को तेल चुराय।
भिजै रुई वा तेल में, कुच धरि कठिन कराय॥

पुनः

जड़ कनेर बच गजकना, असगँध कूठ सो आन।
राति लेप में राखिये, प्रातहि पीसि सुजान॥
सुंदर माखन मल्हम करि, कुच ऊपर धरि देह।
होयँ नारि के कठिन कुच, तेहि पति गहै सनेह॥

पुनः

रत्नज्योति जल-संग ही, सूक्षम पीसौ तेह।
रस उबालि कै कीजिये, चारि सेर भरि जेह॥
पैसा भरि लै कायफल, सूखो बाँटि मिलाय।
द्वादश पैसा तेल सँग, दीजै तबै चुराय॥
वहै तेल कुच लेपिये, कठिन होयँ बहुजान।
वैद्य-प्रिया या ग्रंथ में, त्रिय-हित कही बखान॥

कुच-क्षीर-करण का उपचार

काढ़ि शतावरि-रस त्रिया, दूध-संग जो खाय।
तौ ताके कुच-कलश में, क्षीर-वृद्धि हो जाय॥

पुनः

दूध गुनगुनो करि त्रिया, पियै पीपरैं डार।
दूध होत ताके कुचनि, गाय भैंसि की धार॥

कुचपाक-घृत

घृत कुम्हरे की जड़ हरद, जल सों पीसि लगाय।
कै ककोरि जड़ते सकल, त्रिय-कुच-रोग नशाय॥

बारहवाँ शृंगार

बालरोग, कास, स्वास, हिचकी, ज्वर, अतीसार-ज्वर, मूत्ररोध, बालकमुखपाक, ग्रहग्रस्त बालक के रोग, छाजन, रक्तपित्त, फिरंग, उपदंश, भगंदर, अरुचि, हेठ और मंदाग्नि रोगों की वृद्धि, लक्षण और प्रतीकार

बालक-रोग का वर्णन—दोहा

बालक को कछु रोग जो, तौ बरजै सब बात।
दूध-पान बरजै नहीं, यह पंडित की बात॥
तुरत भये शिशु पै कहूँ, जो कुच पियो न जाय।
शोधो मधु घृत आमरे, हरड़ जीभ लपिटाय॥

पुनः

कुटकी खाँड़ मँगाय कै, शहद-संग चटवाय।
बाल-वेदना तुरत ही, या ओषधि ते जाय॥

बालक के अतीसार का उपचार

ककड़ासिंगी पीपरैं, मोथा और उशीर।
शहद-संग शिशु चाटहीं, अतीसार-ज्वर दूर॥

पुनः

मोथा सोंठि अतीस पुनि, रुई सुअरणी-मूल।
काथ यहै शिशु को करै, अतीसार निर्मूल॥

बालक-कास-श्वास

ककड़ासिंगी पीपरैं, पुष्करमूल अतीस।
देय शहद सों बालकै, कास श्वास सब खीस॥

पुनः

वंशलोचना बाँटि कै, शहद-संग दे खान।
तौ बालक को वेगिही, कास-श्वास दुख-हान॥

पुनः—चौपाई

ककड़ासिंगी-कना अतीस; बालक चाटै मधुसों पीस
ताप-कर्ष अरु छर्दि नशाय; अथवा शहद अतीस जुखाय

हिचकी का प्रतीकार—दोहा

कुटकी को चूरण करै, खाय शहद के संग।
बालककी हिचकी मिटैं, अरु पुनि वमन-प्रसंग॥

ज्वर का उपचार

दोइ कटाय-फल स्वरस में, पंचकोल चटवाउ।
जो बालक को होय ज्वर, तौ यह यत्न कराउ॥

पुनः

कुटकी खाँड़ मिलाय कै, शहद-संग चटवाउ।
बालक-ज्वर भाजै तुरत, साँची बात बताउ॥

अतीसार का प्रतीकार

मोथा सोंठि अतीस पुनि, ल्यावै पाढ़र मूर।
याहि क्वाथ शिशुकै करै, अतीसार को दूर॥

बालक के अतीसार-ज्वर-खाँसी का प्रतीकार—चौपाई

ककड़ासिंगी पीपरि डारि ; अरु अतीस मोथा निरधारि
शहद-संग शिशु चूरणखाय ; अतीसार ज्वर खाँसी जाय

बालक-मूत्र-रोध का प्रतीकार—दोहा

मिश्री सेंधव पीपरैं, मिरच-संग पिसवाय।
देय शहद सों बालकै, मूत्र-रोध मिटि जाय॥

बालक के मुँह पकने का प्रतीकार

जो बालक को मुखपकै, तो पीपर की छाल।
पीसि नीर लेपन करै, बदन-पाक दे टाल॥

पुनः

सार आम को ल्यायकै, चूरण सरस कराय।
लरिका के मुख-पाक को, औषधि दई बताय॥

बालक के खीझने का उपाय

बेल-पत्र गूगल हरद, उड़द छछूँदरि पीठि।
याकी धूप बनाय कै, दै बालक को नीठि॥
लरिका रोवै राति-दिन, पलभरि रहै न चैन।
ताको याही धूप दै, यह उपाय है ऐन॥

ग्रह-ग्रसित बालक के लक्षण

पलक करै उदवेग पुनि, पल में रोवै घोर।
पल में डारै दूध दृग, चितवै ऊँचे जोर॥
दन्तनि काटै देह निज, अति विषाद के ठौर।
माता को काटै बहुरि, यह तुम जानो और॥

उपचार

करि प्रतिमा पूरब दिशा, धरि आवै सुबनाय।
पूजा करि आवै भवन, यह बलिदान कराय॥
मुरकिन देखै ताहि पुनि, लरिका को दै धूप।
अब ताकी ओषधि सुनौ, बरणौं युक्ति अनूप॥
मोरपंख को ल्याय कै, और बनौरा आनि।
बकला लीजै तासु को, और कटाई जानि॥
जटा मानसी पीपरैं, मिरचै मानुष-केश।
विष्ठा-मंजारी बहुरि, हस्ती-दन्त सुवेश॥
गाय भैंस कै बैल को, सींग हींग लै आउ।
और केंचुली साँप की, ये सब संग बँधाउ॥
इनकी देतनि धूपही, भूत प्रेत उन्माद।
ग्रह पिशाच राक्षस दखल, सब को मिटै विषाद॥

शिर की चायनि का उपचार

जो बालक के शीश में, अति बायें हो जाय।
बाँटै सरसों तेल में, निंबुवा-पत्र मँगाय॥

पुनः

बाँटि चिरौंजी शहद घृत, नित्य लगावै कोय।
चायें लरिका की मिटैं, यासों नीको होय॥

पुनः

छाल कराही की जु लै, जलसों पीसि लगाय।
चायें लरिका की मिटैं, यह ओषधि सुखदाय॥

पुनः—चौपाई

साँप-केंचुली मैन मँगाय ; दश-दश टंक तौलि सम ल्याय
हींग तीन सिंदूर सुतीन ; घुँघची तौल पाव यक लीन
चीनी लेय पाव भरि तौल ; तेल आध-सेरक लै कौल
घालि कराही औटै ताहि ; एक पहर भरि खरलत जाहि
यहिविधि तेल बनायउतारै ; ताको यहि विधि चितमें धारै
प्रथम लेय गो-मूत्र लगाय ; तासों चायें वोवै ल्याय
ता पीछे फिर तेल लगावै ; चायें शिर की तुरत मिटावै

छाजन का प्रतीकार

चित्रक आक कुरे की छालि ; जड़ कनैर गुंजा सम घालि
मनशिल बीजपँवारहि लीन; दाई हरद तासु में लीन
ओषधि आध-आध पल लेय ; दश पल गाय-मूत्र में देय
डबुआ घालि आठदिन धरै ; तब छाजन को लेपन करै
कृच्छ्रदाह सब दाह नशायँ ; छाजन-रोग सबै तजि जायँ
सिंहश्रवानि फंद हैं जेते ; या ओषधि ते रहैं न तेते

पुनः

चोख चितावरि अरु हरतार ; थूथै मिरचैं गंधक डार
पीसि तेल में ओषधि धरै ; सात दिना लौं मर्दन करै
छाजन बहै रोग मिटि जाय ; और दादु को दई बताय
और सेउहाँ रहै न कोय ; खाटे ब्यारो खाय न सोय

पुनः

छतनावारी वर को लेय ; सरसों-तेल तासु कै देय
तौ छाजन तुरतही बिलाय ; यह ओषधि अब दई बताय

पुनः

लहसुन हींग तिलीको तेल ; घोटै अधिक खरल में मेल
तब छाजन को लेपन करै ; यह ओषधि दुख वेगिह हरै

पुनः

पाँच टंक नकछिकनी लेय ; तिती जम्हीरी की जड़ देय
लेय कायफल पाँच सुटंक ; इती जम्हीरी-छालि निशंक
सब एकत्र खरल करवाय ; सवा पहर-भरि देय लगाय
पुनि ताते पानी सों धोय ; वेगहि छाजन नीको होय

रक्त-पित्त के लक्षण—दोहा

शीत-पित्त ते देह में, परैं ददोरा जाय।
कंडू जिमि काँटे बरर, रोग उदर्द दिखाय॥

रक्त-पित्त का उपाय

गूगल सोंठि जो पीपरैं, गंधक टंक प्रमान।
सब सम पीसै नीर में, पीवत पित्ती-हान॥

पुनः

पत्ती ल्यावै बेल की, पल त्रय जल में पीस।
पीके दालो लीजिए, रहै न बिस्वा बीस॥

पुनः

गंधक मनशिल पीपरैं, चित्रक चोख समान।
मर्दन मीठे तेल में, पीवत पित्ती-हान॥

पुनः

ल्याय चिरौंजी पाव-भरि, सो पुनि लेव चबाय।
आधी राखै बाँटिकै, मर्दन अंग कराय॥
इमिली-लकड़ी बारिकै, तासों सेंक कराय।
रक्त-पित्त को वेगि ही, अपने अंग छिनाय॥

पुनः

अजवायनि मेथी-सगा, हरद कलौंजी देउ।
अरु मिरचैं ये औषधैं, टका-टका भरि लेउ॥
गंधक दोय टका भरौ, अद्रक-रस सब सानि।
गोली पैसा आध-भरि, खात पित्त-दुख हानि॥

पुनः

शोधौ घृत तनु चुपरिकै, ओढ़ै कमरा लाल।
सूबा रोग उदर्द को, मिटै ददोरा खाल॥

पुनः

सैंधव घृत गेरू सरस, और कुसुम के फूल।
करै उबटनौ तौ मिटैं, रक्तपित्त यह मूल॥
गुड़ अजमोद मँगायकै, सानै कड़ुआ तेल।
खाय मिटै तनुते अधिक, करत पिती को खेल॥

अम्लन-पित्त के लक्षण—अरिल्ल

वमन पयश्रम होय खायो पचावही।
खाटी कडुवी और डकार सुआवही॥
अरुचि कंठ में दाह सुबहुत बखानिए।
अम्लन-पित्त यह रोग सुलक्षण जानिए॥

अम्लन-पित्त का प्रतीकार—छप्पय

लै कुम्हड़ो परिपक्क छोलि बत्तीस टका-भरि।
डारि सेर छह नीर चुरै ले मंद आँच करि॥
वाको करै कसार गाय के घीउ माँझ अब।
लै पैसा बत्तीस नारियल-गिरी मिलै तब॥
गाय-दूध सों सानि पुनि करि कसारु ये डारिए।
अन्य वस्तु जो भणत मैं ताको लेय सँवारिए॥
पित्तपापरो धना कचूर सियारे चंदन।
लै उशीर यक तौलि सबै यक पैसा संदन॥
चारि सेर गोक्षीर सिता चौंसठि पैसा-भरि।
यहि को पाक बनाय सबै ओषधि मेलै करि॥
गोली पैसा चारि-भरि खात पिती मिटि जाय सब।
अम्लन-पित्त दुख कठिन हर वैद्य प्रिया यह खाय तब॥

पुनः—दोहा

धना वायसो पीपरै, दाख हरद अरु खाँड़।
मधु सों चूरण खाय यह, अम्लन-पित्त अरु माँड़॥

पुनः—अरिल्ल

अभ्फन-पित्त को हरै कुम्हड़ो गुड़ भाखै।
कैआमरेमँगाय कुम्हड़ोखाँड़केसँगचाखै॥
कै गुण पीपरि खाय दूध औटाय कै।
वैद्य-प्रिया दे टारि अभ्फन-दुख टारिकै॥

बालों का उपचार—दोहा

पाँच टंक हरताल ही, चूना लै पुनि पाव।
बाँटि छानि पुनि वस्त्र में, तातो तेल कराव॥
कृष्ण केश पर लेपिए, घटिका मलि मलि एक।
या औषधि को गुण यहै, बाल रहै नहिं एक॥

पुनः

पहिले केशन दूरि करि, तेल करर को लाय।
अथवा कुचिला-नीर में, बहुरि बाल न रहाय॥

पुनः

अजवाइनिअजमोदपुनि, कुचिलाअरुहरताल।
चूना संग कपूर को, कल्क करै ततकाल॥
इनको तेल बनाय कै, केशन देय लगाय।
या औषधि ते देह में, एक बाल न रहाय॥

पुनः

चूना अरु हरताल लै, टंक पीसि परमान।
कदली-रस सों पीसिकै, लेपन करै सुजान॥

मींजि-मींजि मर्दन करै, पहर-पहर परमान।
बाल दूरि भग के करै, त्रिय-दुखफिरिनमिलान॥

केश बढ़ाने का प्रतीकार—चौपाई

निंबुवा-रस आमरे पिसावै ; दिन इकईस केश पर लावै
ताके सरल केश हों श्याम ; गये बार उपजहिं परमान

पुनः

अंबर बेलि आम को बौर ; मधु सुहाग लीजै इक ठौर
तेंदू छाल करी नहवारि ; सब ओषधि चूरण करि डारि
सरसों-तेलहि चूरण करै ; सानि महूखे ओषधि धरै
सुंदर तेल करै मथि ताय ; डाढ़ी-मूँछ-बार जमि जाय
बड़ी युक्ति करि तेल लगावै ; वैद्य-प्रिया हठि बार जमावै

पुनः—दोहा

तिलके फूल अरु गुरुखुरू, मधु घृत शहद मिलाय।
केशनि मथिकै लेपिए, बार लंब ह्वै जाय॥

पुनः स्याह करने का कल्प

चंपे की जड़ पीसि पुनि, बीज करेक्ष मँगाय।
जलसों लेपन कीजिए, बार स्याह ह्वै जाय॥

पुनः

माल काँगनी आमरे, खुरासानि अजवानि।
पीपरि लोहचनि लीजिए, दश-दश टंक बखानि॥
चूरण अरु ये तेल धरि, लोहपात्र दिन सात।
राखि सवार कराय कै, तेल लगावै प्रात॥

पुनि-पुनि ऐसे कीजिये, मर्दे केसरि ल्याय।
बड़ी युक्ति सों स्याह ह्वै, वैद्य-प्रिया मुसिक्याय॥

पुनः

लीसि-पत्र अरु भाँगरो, लोचन त्रिफला ल्याह।
अजा-मूत्र सों लेपिए, होय कल्प अति स्याह॥

पुनः वृद्धिकरण

करी-दंत को भस्मकरि, रसवत देहि मिलाय।
छेरी पय सों लेपिए, स्याह बार बढ़ि जाय॥

मंदाग्नि के लक्षण

सर्व अंग में दव करत, काया बोझिल होय।
भूख हीन करो रहै, खुलिकै दस्त न होय॥
काम-हीन बल-हीन पुनि, श्वास होय मुख फेन।
पेट करेरो सकल तनु, मंद अग्नि कहि देन॥

मंदाग्नि का प्रतीकार

पीपरि त्रवी हरीतकी, शुंठी सोंचर पाय।
तप्त नीर सों पीजिए, मंदी अग्नि पराय॥

पुनः

पीपरि लौन हरीतकी, चित्रक ताँबा घालि।
पीसि पिये जल तप्त सों, मंद अग्नि को टालि॥

पुनः

त्रिफला त्रिकुटा लोन अरु, हींग जवाइनि मेलि।
सम गुड़ गोली खात ही, मंदअग्नि को रेलि॥

पुनः—चौपाई

सैंधव सोंचर बायबिड़ंग ; त्रिफला त्रिकुटा अवी लवंग
चित्रक हींग जवाइनि आनि; जीरे दोऊ दाड़िम जानि
इन ओषधि को चूरण करै ; तीनि पुटनि निंबुवा-रसधरै
टंकदोय दिनप्रति उठिखाय ; मंदअग्नि ता तन ते जाय

अरुचि का प्रतीकार—दोहा

मिरच लायची डारि गुड़, अरु इमली को लेय।
या ओषधि सों तुरत ही, अरुचि दूरि करि देय॥
मिरच कलौंजी दाख गुड़, तंतरीष कंकोल।
जीरो सोंचर करि गुटी, दाड़िम रस में घोल॥
गोली मुख में राखिए,हितचित जानि अपार।
अरुचि दोष यासों मिटै, वैद्य-प्रिया निरधार॥

हेठरोग की वृद्धि

त्रियाउदर में अग्नि पुनि, तामें मीठो खाय।
बालक पुनि मीठो भखै, तब लोहू फटि जाय॥
बंद सबै ढीले परैं, परै निठाई सोय।
रस जंगल हो नीकलै, हेठ बाहिरी होय॥

लक्षण

तृषा लगै कटुता बदन, सूखै अधर सुजान।
रक्त-चदन कर-पद-तपन, नेत्र-दाह गुद जान॥

हेठ-रोग का प्रतीकार

मीड़ि गाय के दूधसों, बैठारे मुद सोय।
कैवसमूसे की लगै, वासों नीको होय॥

पुनः—चौपाई

अमलबेंत अरु बेर पिसाय ; साजी सोंठि दही मथिखाय
गुदा-भंग पीड़ा मिटिजाय ; जोयहओषधि विधिसोंखाय

मुधौरा-रोग का लक्षण—अरिल्ल

ताप दाह भ्रम चित्त वमन अतीसार-ही।
तृष्णा-तप्त अनींद रक्त मुख डारही॥
दन्तसों जिह्वा श्याम-कंठ-है पित्तही।
लखि इन लक्षण रोग मुधौरा चित्तही॥

मुधौरा का प्रतीकार—दोहा

जीरो पुनि मृतमक्षिका, रस गोबर पिसवाय।
रोग मुधौरा ना रहै, जो यह ओषधि खाय॥

पुनः—चौपाई

काश्मीरी मुनक्का दाष ; सम करि पीसै लै पञ्चाष
करेक्काथ पुनि शहद मिलाय; प्रातकाल संयम सों खाय

दोहा

पित्त मुधौरा ज्वाल पुनि, मूर्च्छा वमन हरेय।
तृष्णा भ्रम अतिसारको , यह ओषधि हरि लेय॥

पुनः—चौपाई

कुड़ा-बीज जीरो जयपाल ; चंदन शुंठी नेत्र जु बाल
क्काथ किरात मिलै करि करै; यहै मुधौरा पित्तहि हरै

पुनः—दोहा

चंदन जीरो आनिये, गोहुँन के पुनि संग।
जलसों घोटि पियाइये, होय मुधौरा भंग॥

बितौरी-रोग-वृद्धि

हाथदंत नख के लगै, योनि-दोषते सांच।
बिना दोष उपदंश जे, होत लिंग क्षिति पांच॥

पुनः—वृद्धि

कर-पद तपहिं हिय जरै, आंत सूज उर लाल।
हाथ पांव सूजैं बहुरि, चित्त भ्रमहि बेहाल॥
चढ़ै तुरतही अंग सब, अग्नि पेट भरि जाय।
ज्वाला उपजैलिंग छिद, चीतौरी होजाय॥

लक्षण

माथो दूखै बोझ अति, नारी हय-गति देखि।
ये लक्षण तहँ वैद्य लखि, चीतौरी कहँ देखि॥

चीतौरी का प्रतीकार—चौपाई

सुपारी भस्म टंक एक लेउ ; लोध टंक यह ता महँ देउ
खैर टंक सिंदूर सुटंक ; हरिया थूथो रती निशंक
सबै पीसिकै भुरकी करै ; गाई घीउ पकावन करै
चुरै उतारि लेय पुनि सोय ; सात बेर पानी सों धोय

लै दिन सात लगावै सोय ; चीतौरी खत नीको होय
खाटो खारो निकट न खाय; दरिया दूध रोज पथ खाय

पुनः—दोहा

कोला करि सागौन के, टंक दोय परिमान।
सिंगरफ़ को दो टंक लै, पुरिया करो सुजान॥
चिलम मध्य पुरिया धरो, छह दिन पीवै सोय।
दरिया दूध खवाइये, चीतौरी गत होय॥

पुनः—चौपाई

लै सिंदूर सुपारी टंक; गंधक अरु हरताल निशंक
लोध बहुरि यक टंक मँगाय; चोष चितावरि माशे भाय
पीसि गाय के दूध समोय; पानी सात बार लै धोय
तबै खतासों देय लगाय; वही पंथ चीतौरी जाय

पुनः

तीनि टका पारे को लाय ; गाड़ि एक दिन खरल कराय
नागबेलि-रसदिनइक लेहु ; शहद सहित पुनि खरल करेहु
अकरकराजातीफल आनि; लौंग सोंठिपुनिकहीबखानि
हरड़ और ककही-जड़ लेय; टंक अढ़ाई प्रति करि देय
अफू टंक एक पुनि कही; भँगरा रससों खरलै सही
दिन चौदह में बरी प्रमान; दो दो बरी खाय दिन-मान
सांझ सबेरे ताको खाय; चौदह दिवस रहै निर्वाय
दूध भात पथ प्राणी करै; चीतौरी ते सो निस्तरै

पुनः

लै हरताल टंकभरि गुनी ; हंसपाक लै दूनी गुनी
नीर घालि ऐसै बटवाय ; ईंगुर तार एक हो जाय
रुई पुरानी सों लिपिटाय ; चौदह बाती धरै सुखाय
सांझ बिहाने दै दिन सात ; धूधर धुवनी निर्मल गात
प्राणीगरत जाय जो होय ; वा धूनी सों नीको होय
रोगी दूध भात पथ करै ; परो रहै भीतर के घरै

पुनः

अकरकरा कूजे के फूल ; लीजै छाल टांक की मूल
दो दो टंक सब के अनुमान; लीजै बहुरि अंड के पान
केवला लेइ अंड के और ; धूनी देउ छाँह के ठौर
दूध-भात पथ रोगी करै ; यह ओषधि चींतौरी हरै

पुनः

नीलाथोथा आधो टंक ; पुनि कसीस लै पूरे अंक
दोय फटकरी कही विचारि ; चूना चारि सीप को डारि
सरसों तेल टंक बत्तीस ; बांटि कपरछन मिलवोईश
ओषधि औटि तरह ही जाय ; तब वह तेल लगावहु घाय
इंद्रिय तासु गई गिरि सोय ; पलुहै हंड सुनो रे लोय
नीको वेगि करै कर्त्तार ; यह ओषधि है निश्चय सार

पुनः—दोहा

धोवै त्रिफला काथ सों, घमरा को रस डारि ।
खता लिंग के दूरि करि, अरु फिरंग दै टारि ॥

पुनः

कौहा कंजा नींब-जड़, जामुनि सालर-पात।
कल्क पचावै तेल करि, ताको गुण याजात॥
दाह पाक अरु पीर-युत, जे उपदंश सदोष।
तुरत मिटैं या तेलसों, दाह पाक परतोष॥

पुनः—छप्पय

पारा मिरचै लौंग मस्तगी अकरकरा पुनि।
छठई बायबिड़ंग लेय लव तीनि तीनि सुनि॥
लै भिलवाँ चालीस दोय अगेरबे डारहु।
बारह लव अजमोद इतिक पुनि गुड़ निरधारहु॥
करि गोली द्वैकर्ष भरि इकइक दिनखा नियमकर।
दूध-भात बीरा बहुरि नर मिटाव उपदंश-ज्वर॥

पुनः—दोहा

दो दिनकै दिन चारिकी, भेड़ बियानी होय।
ताके सुतके कतरि कै, रोम लीजिये सोय॥
दो माशे भरि तौलिसो, जीरो माशे तीन।
हरियाथूथो लै बहुरि, माशे तीनि प्रवीन॥
लकड़ी लै वातारि की, तामें धरि दै जारि।
थूथो जबहीं भुँजिचुकै, लीजै तबै निकारि॥
मूँज पुरानी जेवरी, माशे तीनि सुआनि।

ओषधि सब सम आनिकै, लीजै बस्तर छानि ॥
दोय रती भरि ओषधी, धरि कांटे पर लेय।
गाय दही बिच आधपल, धरि खैबे को देय ॥
छाँह परै सपरै नहीं, दही-भात पथ खाय।
सात रोज़ ओषधि कही, संयम बहुरि कराय ॥
चना उड़द की दाल पय, मीठो बहुरि न खाय।
तेल वायली वस्तु जो, तिनके निकट न जाय ॥
दिना बीस पचीस लौं, संयम सों करि लेय।
महाबली उपदंश की, जड़ै काटि सुख देय ॥

पुनः

लेय टका भरि एलुवा, बांटि कराही मेलि।
पाव सेर दै कागदी, निंबुआ को रस ठेलि ॥
चुरै कराही काढ़ि लै, जब गाढ़ो ह्वै जाय।
सांझ सबेरे तौलिकै, दो माशे नित खाय ॥
ऊपर तातो जल पियै, दूध भात पथ देय।
दिन इकईस प्रमाणलागि, रोग फिरंग हरेय ॥

पुनः

आजूफल गुजरायती, लौंग जायफल लेय।
बांटि छानि ताकी तबै, पुड़िया तीनि करेय ॥
इक पुड़िया परभात खा, पीवै तातो नीर।

घीउ गकरिया खाय पुनि, हरै फिरंग कि पीर ॥
तीनि दिना के नियमते, जो नहिं नीको होय।
तौ फिर ओषधि जोरिकै, खाय चारि दिन सोय ॥

पुनः

चिया मँगावै पाउभरि, इमिली के भुजवाउ।
बांटि छानिकै पावभरि, तामें खांड़ मिलाउ ॥
करष बराबरि तौलिकै, नित संयम सों खाय।
खाटो ब्यारो परिहरै, रोग फिरंग मिटाय ॥

पुनः

परवर-पत्र चिरायतो, त्रिफला सुरही खैर।
नींब त्वचा कहँ मेलिकै, काढ़ो करै सबेर ॥
गुड़ची के अनुपानसों, तब रोगी कहँ देय।
उपदंशभगंदरव्रणखता, अंग-वात हरि लेय ॥

पुनः—चौपाई

जड़अरंड अरुआमकी आनि; इनकी छालि बाँटिकै छानि
सिरफोंकाजड़ शिंगरफ लाउ ; पांच पांच सब टंकतुलाउ
याकी पुड़िया चौदह करै ; चूरण सबमें सम करि धरै
नीले सूत पुड़िया लिपिटाउ ; फिरि माटी को हुक्का लाउ
गजक अंड की देय लगाय ; पुड़िया एक चिलम धरवाय
बड़ी बेरि को कैला करै ; तिनकी अग्निचिलममेंधरै
पियै प्रात उठि आंखें बांधि ; पथाथुली गेहूँ की साधि

दूध-संग खैबे को देय ; पुड़िया एक सांझ पी लेय
सातदिवसयहिविधिसोंकरै ; महाप्रबल चीतौरी टरै

पुनः

इंद्राणी जड़ टंक सुतीनि ; पाँच टंक लै मिरचै बीनि
गुड़ दो पैसा भरि दै मेलि ; तीनि पाव पानी दै रेलि
करि काढ़ो इक पाव जु रहै ; छानि ताहि सो पीजै यहै
लगै बिरेच फोड़ा उपदंश ; व्याधि जाय पुनि रहै न अंश
खिचड़ी पथ्य ऊपर ते खाय ; वैद्य-प्रियाकहिकठिनउपाय

पुनः

ल्याय इंदोरन की जड़ पाउ ; सरफोंका-जड़ तितनमिलाउ
लेउ नींब की अंतर छालि ; तितनो ब्रह्मनोनियाघालि
नीर सेर दो दोय मिलाय ; आध सेर औटे रहि जाय
शीशा में भरि राखै तात ; हिसा तीसरे पावै प्रात
दस्त लगै अरु वमन कराय; खिचड़ी पथ दीजै नित ताय
इंद्री तासु गई गिरि सोय ; या काढ़े ते नीकी होय
रोग फिरंग सबै नाशी जाय ; वैद्य-प्रिया यह कह्योउपाय

पुनः

कांसे बासन खारो धरै ; नींब काष्ठ को घोटा करै
पात पवाँर तुलसिका ल्याहि; काढ़ि जुदे रस खरलै ताहि
एकदिवसभरि घोटिनिशंक ; लै फिरि जानो गुड़नौटंक
पात नींब के सूखे ल्याउ ; लेउ टंक दश सबै मिलाउ

पुड़िया ताकी चौदह करै ; सांझ एक खैबो चित धरै
पथ्य चना की रोटी खाय ; रोग फिरंग तुरत मिटि जाय
ता पीछे फिरि ओषधि करै ; वैद्य-प्रिया सो तब उच्चरै

पुनः

साँठी चावल सेरक ल्याय ; आठ दूध पुट दै सुख-पाय
घीउ मध्य तौलों औटाय ; जौलौं कारे परैं दिखाय
डेढ़ टंक खैहै उठि प्रात ; अकरवायु ता तनु की जात
सिमिटी नसैं पसरि सब जायँ ; गरमी नाशै जे नर खायँ
वैद्य-प्रिया यह कह्यो विचार ; खाटो ब्यारो सब तजि डार

पुनः

खुरसानिअजवायनिसोंठि ; पाँच पाँच ये टंक जु गोंठि
लहसुन पाँच पाँच लै आउ ; ईंगुर टंक एक मिलवाउ
गुड़ नौ टंक पुरानो लेय ; सब पुड़िया चौदह करि देय
प्रात साँझ खैबे को लेय ; पथ्य चना की रोटी देय
तजै और चीतौरी जाय ; वैद्य-प्रिया यह कह्यो उपाय

पुनः

काचो मैन टंक लै बीस ; काढ़ि पान-रस तितनो पीस
एक टंक लै पारो डारि ; मेलै करि खरलौ सुख-कारि
इंद्री पै तब लेप कराय ; और शरीर दरोरनि ल्याय
ताते पानी करि अस्नान ; खांड़ भात पथ ऊपर खान
गरमी नीकी वेगिहि होय ; वैद्य-प्रिया यह भाष्यो सोय

तेरहवाँ शृंगार

विष-पाचन, सिद्धांत-योग, विष-घाव, नेत्र-बमनी, निद्रा-नाश, कंठ-दोष, हौलदिल, बतीसीदांत, छरी-रोग, कच्छ-रोग, अनेक-लवण, त्रिफला त्रिकुटा हरीतकी पंचकोल, क्वाथ अवलेह चूर्ण मांड जूषा क्षीर पुटपाक हिमकल्पन विधि तथा विविध रोगों पर अनेक सुप्रसिद्ध और परम लाभकारी प्रयोगों का वर्णन

विषपाचन-प्रतीकार—दोहा

कोऊ काहू पै कहूँ, मरिबे को विष खाय।
वैद्य-प्रिया या ग्रंथ में, ताको कह्यो उपाय॥
खाय धतूरो जो कहूँ, दीजै दूध पियाय।
तेंदू सोंठि अफीम को, दीन्हों सरस बताय॥
निंबुआ-रस हरताल को, हरद कनैर बखानि।
मिरचैं खैरु पिसाय कै, सम्बलखार को जानि॥
जो कपूर कदली भखै, केरा पारौ देय।
उपविष को देवदारु-रस, या विधि विषहरि लेय॥

सिद्धांतयोगता का उपचार—चौपाई

मोरपंख को देय मँगाय; तिन तँतरीत नोचि निकराय
एक सेर कौला अनुमान; बीसै अंश सुहागा जान
मूंदि धरै कपरौटी करै; अग्नि मँझार पहर दो धरै
काढ़ि बहुरि तामें निकराय; ताको जल में धोय पिवाय

सर्प डसै सो खावै नीर ; ताको निरविष करै शरीर
और एक विधि भाषौं गुनी ; और ग्रंथ में मैंने सुनी
मिंगी बिनौरा बाँटौ नीर ; तिहि पीवै विष उतरै वीर
उपविष कोदौ याहि पियाय ; वैद्य-प्रिया में दियो बताय

विष के घाव का लेप—दोहा

हरियाथूथौ लायची, और सुहाग सिंदूर।
सब समान यह लीजिये, होय क्लेश विष दूर॥

पुनः

गंधक मनाशिल नींब-फल, रस करहेला पाय।
तेल लगावै घाव पर, तुरतै विष मिटि जाय॥

नेत्रों के बमनी रोग का उपाय

कीरा होय बबूर के, काँटनि में ते ल्याय।
आँच दिखावै दिया की, ताको रस निकराय॥
माशा एक सिंदूर पुनि, पीपरि माशा लेय।
बँटि आँखि के पलक बिच, ताको लेप करेय॥
सात दिना लेपन करै, खाटो भूलि न खाय।
नये पलक दृग होयँगे, बमनी-रोग नशाय॥

निद्रा दूर करने का उपाय

कस्तूरी शुंठी मिरच, अश्वलार सों खाय।
निद्रा आवै रजनिका, रोग-रहित हो जाय॥

पुनः

बीजपूर फल आनिकै, शीशहि सेज धरेह।
बहु निद्रा तेहि आवही, शौर करै जा गेह॥

कंठ होने का उपाय—चौपाई

मिरच कुलंजन सम करि दोय ; वर्ष एक जो साधै कोय
मधुरक असलक खाय न सोय ; पिक-सम कंठ तासु को होय

पुनः—दोहा

बच मुंडी शुंठी बहुरि, ब्राह्मी पीपरि जान।
सात राति मधुसों भखै, करै सु किन्नर-गान॥

भास बैठने का उपाय—चौपाई

ल्याय खुरासानी बच सोय ; सोंठि कुलंजन लोन सु होय
रातु खैर की मिरचैं लेय ; तवाशीर ये सब सम देय
चूरण पीसि कपरछन करै ; करि पुटरी मुख माहिं धरै
भास खुलै अरु कंठ खुलाय ; जो याको पथ करिकै खाय
दिना सात यह संयम करै ; वैद्य-प्रिया ओषधि चित धरै

तुतराई का प्रतीकार

खुरासानि अजवायनि आनि ; गेरू सोंठि ये तीनों जानि
कर्ष-कर्ष भरि तौलि मँगाउ ; तीनि कर्ष भरि हरड़ मिलाउ
मुलहेठी लै कर्ष सु तीन ; पीसि शहद सँग खाय प्रवीन
टंक दोय जो नित उठि खाय ; तुतराई ताकी मिटि जाय
खाटो न्यारो घीउ छुड़ाय ; वैद्य-प्रिया यह कह्यो उपाय

थुकी चलने का उपाय

खैरसार अरु काथो आन ; लौंग वङ्ग पारो तू जान
खुरासानि अजवानि कपूरि ; अकरकरा चोखी कस्तूरि
इलायची ओषधि सम पीस ; छानि गुटी करि होय न खीस
जल में गुटी बांधि करि राखि; थुकी जाय यह निश्चय भाखि
खाटो ब्यारो आमल खार ; तजै पथ्य करि जाय विकार
अरु मुख गंध रोग तजि जाय ; वैद्य-प्रिया यह कह्यो उपाय

बुद्धि बढ़ाने का सरस्वती चूर्ण—दोहा

अद्रक मोथा हरद लै, बकुची ब्राह्मी लाय ।
बच ये सब सम कूटिकै, मिलै घीउ में खाय ॥
कृष्ण चतुर्दशि माघ की, ता दिन खाय प्रवीन ।
जल बिच ठाढ़े ह्वै भखै, सूरज सम्मुख लीन ॥
जो खातहि पचि जाय बहु, होय कवीश्वर सोय ।
बमन करै तो गान की, विद्या ताको होय ॥
सरस्वति चूरण नाम यह, बड़े यत्न करि खाय ।
वैद्य-प्रिया या ग्रंथ में, भाष्यो रुचिरबनाय ॥

हौलदिल का उपाय

सोंठि मिरच अरु पीपरै, दो दो माशे लेय ।
एक कर्ष भरि तौलि कै, लै गड़बीजा देय ॥
बाँटि छानि कै नीर में, शहद कर्ष भरि डारि ।
पियै सात-दिन नियम करि ; हौलदिली को टारि ॥

पेट में रक्त गिरने का उपचार—चौपाई

बीस टंक दोउ हरद मँगाउ ; सालो पाँच टंक भरि लाउ
कुटकी शुंठी छह छह टंक ; कुरो छालि लै पाँच सु अंक
सोनामक्खी टंक सु पाँच ; पीपरि पाँच कटाई पाँच
ये सब ओषधि बाँटो छानि ; आनि पुराने गुड़ में सानि
टंक एक गोली खा प्रात ; रुधिर विकार पेट को जात
रुधिर पुरानो रहै न कोय ; खाटो ब्यारो खाय न सोय

पुनः ब्रह्म-दंडी अर्क

ब्रह्मदंडी दश सेर लिवावै ; भरि जल मथना घालि पचावै
काढ़ो चौथे दिवस बनाय; डोला-यंत्र पुरावै ताय
अर्क काढ़ि यक पल भरि खाय; रक्त-विकार तुरत मिटि जाय
चुलकंडू देही न रहाय ; सातैं चारि प्रात उठि खाय
मदनहु होय चंद अनुमानि ; होय त्रिदोष देह ते हानि
खाटो ब्यारो खाय न सोय; जौलौं दिन संपूरण होय

पुनः निर्गुंडी अर्क—दोहा

निर्गुंडी दश सेर लै, पीसो मथना नाय।
पानी शोधौ तीनि दिन, डोला-यंत्र कराय॥
शोधौ चौबिस रोजही, खातहि झोला जाय।
वायु शीश तनु ना रहै, देह लाल हो जाय॥
लोहू बाढ़ै पुष्टि तनु, भूख चौगुनो काम।
निर्गुंडी यह अर्क पुनि, जानो सुख को धाम॥

बतीसी दाँत का उपाय

बीजकसौंधो ल्याय कै, बाँटि छानि कै देय।
एक कर्ष भरि नीर सों, नित खैबे को देय॥
द्वादश पथ्य चूकै नहीं, दूध-भात पछ पार।
नई बतीसी बार बहु, स्याह करै करतार॥

छुरी-रोग के लक्षण

ज्यों सेमर के पेट में, काँटे बहुत दिखायँ।
मुख में फुरिया होयँ तिमि, यौवन पीड़ा आय॥

उपाय

जातीफल चंदन मिरच, काढ़ो करै बनाय।
मुख सों लेपै धोय पुनि, यौवन-पीड़ा जाय॥

कच्छुरोग

बाँह बगल अरु काँख में, काँधे पर पुनि श्याम।
फुरिया पीड़ित पित्तते, कच्छु-रोग तिहि नाम॥

ओषधि

कूट शिलाजित दोय सम, औटि लगावै रोज।
वात पित्त कफ को मिटै, कच्छु-रोग को खोज॥

थूहर का नोन बनाने की विधि

थूहर लकड़ी बारि कै, पाँच सेर अनुमान।
पानी सोरह सेर में, घोरि ताहि लै छान॥
कोरी हँड़िया मेलि कै, चूल्हे पै औटाय।
पानी जरिकै सूख ही, नोन तरे रहि जाय॥

पानी सँग लै नोन सों, एक मास भरि खाय।
यासों भूँख लगै घनी, कास-श्वास मिटि जाय॥

आक का नोन

आक-लकड़िया बाँटि कै, चार सेर धरि देय।
राख घोरि कै नीर में, कपड़ छानि सो लेय॥
पानी चौगुन खार ते, हँड़िया लेय पचाय।
जल सूखै नीचे रहै, नोन भलो कहि जाय॥
यक माशा भरि नीर सों, खात कास अरु श्वास।
भूँख बढ़ै कफ को हरै, दंत-पीर को नाश॥

पलाश का नोन

छिउलै लकरी बारि कै, जलसों सींचि बुझाय।
घड़ामाँझ पुनि दाबिये, तीनि दिवस लगि जाय॥
लै उखारिकै घोरि कै, दिन बारह धरि लेय।
बाँटि छानि जल राखसों, हँड़िया में धरि देय॥
अग्नि लगाय पचाइये, नोन तरे रहि जाय।
जलसों माशे एकसो, खात कास कफ जाय॥
अजवायनि जल संगही, सात दिवस जो खाय।
खाँसी धाँसी श्वास पुनि, रक्त विकार मिटाय॥

पँवार का नोन

लकड़ी बारि पँवार की, सींचि दाबि भुइँ माहिं।
नीर चौगुनो घोरिकै, छानि लेहु जल ताहिं॥

कोरी हँड़िया मेलि कै, तब पुनि लेय पचाय।
नोन तरे सो हो रहै, माशे भरि नित खाय॥
झोला कफ खाँसी मिटै, श्वास कास न रहाय।
खाज दाद वा इकतरो, व्याधि सबै मिटि जाय॥

धतूरे का नोन—चौपाई

लै पंचांग धतूरो बारि ; छानि घोरि चौगुन जल डारि
अग्नि पचाव नोन रहि जाय ; मास एक माशे भरि खाय
जल अजवायनि के अनुपान ; कास श्वास कफ रोग परान
काँवल और खाज सब जाय ; वैद्य-प्रिया यह नोन बताय

बड़ का नोन

बड़ की लकड़ी बाँटि छनाय ; लेय चौगुनो नीर भराय
कोरी हँड़िया में पचि जाय ; सूखि नोन नीचे रहि जाय
नीर संग खा माशे एक ; कास श्वास कफ टारै टेक
अस्तंभन बीरज बढ़ि जाय ; काम धातु की बढ़ती आय

पीपल का नोन

पीपल लकड़ी बारि बुझावै ; बीस दिना भरि भूमि गड़ावै
बाँटि घोरि जल चौगुन ल्यावै; अग्नि बारि तब नोन बनावै
यक माशो अजवायनि संग ; कै खावै सो नित यक टंक
कास श्वास कफ झोला बाय; अरु पुनि रक्त विकार नशाय

बाँस का नोन

छानि बारि कै लकड़ी बाँस ; जल चौगुनो मिलै ता पास

अग्नि पचाय राखि लै नोन ; इकमाशो भरि खातहि सोन
खैहर खाँसी कफ अरु श्वास ; झोला शीत जलंधर नास
दबी वायु अरु वायु नशाय ; खाटो ब्यारो नोन न खाय
पथ्य करै संयम सों रहै ; वैद्य-प्रिया यह ओषधि कहै

बिसखापरे का नोन—दोहा

चारि सेर बिसखापरो, बांटि लेय जल जान।
हँड़िया में धरिकै तबै, चूल्हे धरै सुजान॥
बारे अग्नि पचाय तब, नोन तरे रहि जाय।
माशो भरि जल संगही, खात श्वास न रहाय॥
कफ खाँसी झोला मिटै, पित्त विकार मिटाय।
नाश करै पुनि शीत को, फीहा रोग मिटाय॥

बारह वृक्षों का नोन—चौपाई

सिरस बेर अरु इमिली आम ; गोहूँ तेंदू अरु तिल श्याम
चना मोठ जमरासी जानि ; रेसा हरड़ को अंडा आनि
साट बहेरो केलि जवास ; अंड चूक गुरखुरू धमास
कर बथुवा मूरा लै जान ; नीम रसूल सो तरु पहिचान
इते कहे तरु नोन बखान ; वैद्य-प्रिया गुण समुझि समान

त्रिफला विधि—दोहा

हरड़ बहेरे आमले, भाग एक दो चारि।
क्रमसों याही भाँतिसों, त्रिफला कह्यो विचारि॥
दूनी मिश्री डारि कै, करिकै मधु घृत योग।

खाय जाय परमेह-दुख, कोढ़ शोथ दृग-रोग ॥

हरीतकी विधि—चौपाई

जो चबाय उदरागिन बढ़ै ; पीसि खाय तो मल गहि कढ़ै
खाय उसेय बंद तब करै ; भूजिहि हरड़ त्रिदोषहि हरै

त्रिकुटा-विधि—दोहा

सोंठि मिरच पीपरि मिलै, तब त्रिकुटा हो जाय ।
दीपन कफ अरु कोढ़-हर, पीनस-हर यह आय ॥

पंचकोल विधि

चाब चितावरि पीपरै, सोंठि पीपरामूल ।
पंचकोल अफरा अरुचि, वात हरै पुनि शूल ॥

दशमूल

दोय कटाई गुरखुरू, अरणी अरु सालौन ।
पाढ़र बेलु कुम्हेरि लै, सोना अरु पीठौन ॥
यह दशमूल कहावही, याको क्वाथ बनाय ।
रोग प्रसूत मिटै सबै, वात-प्रसूत नशाय ॥

षटषटा

पंचकोल अरु मिरच मिलि, तब षट-षट हो जाय ।
पंचकोल ते अधिक गुण, अग्निहि देय बढ़ाय ॥

शुंठी के गुण—चौपाई

सोंठि भूँजि सैंधव सँग खाय; तासों तृषा अरुचि मिटि जाय
खाय सोंठि जो गुड़ के संग ; मिटै विबंध वात परसंग

शुंठी खाय दूध में मेलि ; देति जु आम उदर ते ठेलि
मठा संग शुंठी के खाये ; आम जरै रहिये सुख पाये

त्रिसुगंध

तज पत्रज को लीजै जानि; और लायची कही बखानि
यह त्रिसुगंध जानिये ताहि; कफ अरु पित्त हरै रुचि लाहि

चातुर्जात—दोहा

तज पत्रज अरु लायची, नागकेसरी पाय।
चातुरजात सो पित्त कफ, तीक्षण हर यह आय॥

पंचक्षीर-वृक्ष

बड़ पीपल ऊमरि बहुरि, पारस पीपरि और।
पाकरि सहित सो क्षीर तरु, कहे पाँचऊ ठौर॥
त्वचा क्षीर तरु पाँच को, शीतल व्रण-हर जान।
अरु विबंध जासों बहुरि, योनि-दोष करि हान॥

पंच-नोन

साम्हर खारी पङ्ग से, सेंधव सोंचर साँच।
यही पंच सो नोन हैं, सब ओषधि को पाँच॥

दो खार

जवाखार साजी बहुरि, दोय बताये खार।
जहाँ कहे दो खार तहँ, ये लीजै निरधार॥

क्राथ-विधि

टका भरी ओषधि जहाँ, जल सोरह भरि जान।
सर्व ओषधी नियम यह, तुम लीजो जिय मान॥

माटी बासन औटिये, रहै दो टका नीर।
अष्ट शेष यासों कहत, जानि वैद्य मति धीर॥
श्रुति कषाय निजहेत अरु, काढ़ो क्वाथ सो साँच।
या विधि पंडित क्वाथ के, नाम कहत हैं पाँच॥

अवलेह-विधि

औटि औटि कै क्वाथ जब, होय जाय जब राब।
कहैं वैद्य अवलेह यह, पल भरि खाय हिसाब॥

चूरण-विधि

सूखी ओषधि कूटि कै, करै कपरछन ताहि।
जस्त कह्यो गुड़ खाँड़ तहँ, दूनी देय मिलाहि॥

मांड़-विधि—चौपाई

टका भरे चाँवल निरधारि ; चौदह टका भरो जल डारि
ऐसे औटै माँड़ बनावै; बुकनी डारि माँड़ में प्यावै
सेंधव नोन सोंठि मँगवावै; कूटि छानि बुकनी करवावै
तामें ढूँढ़ै शीत न पावै ; पाचन दीपन लघु सु बतावै
चाँवल मूँग लेय सम दोय; तनक तनक भूजै वै दोय
तिनको माँड़ बनावै फेरि ; सोंठि मिरच पीपल लै हेरि
सेंधव नोन धना ये दोय ; भूँजी हींग मठा पुनि होय
ये सबरी सु माँड़ में डारै ; माँड़ अष्टगुण नाम बिचारै
गुड़त्रिदोषयासोंमिटिजाय ;दिन२भूखअधिकअधिकाय
करै पुष्टि शोधन यह शाको; गुण बताय दीन्हों इमि ताको

दोहा

कूटि भूँजि यव को करै, बाँधि माँड़ जब होय।
रक्त पित्त कफपित्त गुड़, जानत हैं सब कोय॥
भूँजे चावल खील को, कहियत लाजा माँड़।
ग्राही कफ ज्वर पित्त अरु, करै त्रिदोषै माँड़॥

जूषाविधि—चौपाई

दो पैसा भरि मूँगै दालि ; टका अठारह भरि जल डालि
ताको औटि बनावै गुनी ; डारै तनक आमरे सुनी
मूँग आमरे को यह जूषा ; भेदी बहुत लगावै भूषा
तृषा दाह कफ पित्त नशावै; शीतल मद भ्रम रहन न पावै

श्वास-क्रिया—दोहा

सर्व ओषधी ल्याय के, कूटि लेय यहि भाय।
कपरा में धरिकै तबै, ताहि लेहि निचुराय॥
सर्व ओषधी नाम यह, तौ सूखी लै आउ।
एक अंश ओषधि कही, छह गुण नीर मिलाउ॥
भोजन दीजै रात-दिन, बस्तर में ले छानि।
या विधि सूर-क्रिया कही, वैद्य-प्रिया सुख मानि॥

सुरसनि के गुण—चौपाई

गुरचै सुरस टका भरि लेहु ; खाय शहद सों हरै प्रमेहु
त्रिफला सुरस खाय मधु संग; कमल-वायु को करि है भंग
निंबुआ सुरस शहद सँग चाटै; कमल-रोग की पीड़ा छाँटै

तुलसी सुरस मिरच सँग खाय; कै धूमा सों सुरस मँगाय
या विधि सों इन सुरस निखाय; विषम-ज्वर को देय बहाय
जामुनि सुरस शहद सँग खाय; आम सुरस घृत संग बताय
आमरे सुरस दूध सँग प्यावै ; सेमरि सुरस क्षीर सँग प्यावै
अथवा कुरो वा मूर मँगाय ; इनके सुरस दूध सँग खाय
एक एक इहि विधि सों पीवै; अतीसार नाशै ज्वर जीवै
ईश्वर रसहि शहद सँग खाय; ताको गुण अब देत बताय
हृदयतरेट पार्स्व को शूल; आमवात को रहै न मूल
अंगवायु कटिवायु नशाय; वैद्य-प्रिया गुण दयो बताय
काढ़ि शतावरि रस सुनिचोरि; मधुसँग पियत शूल को टोरि
हरद संग जो देय बहाय; वा उठि प्लीहारोग नशाय
मुंडी चरस दोय फल खाय ; गंडमाल गलगंड बिलाय
कमलवायु को मिटै प्रसंग ; वैद्य-प्रिया भाषो यह रंग
जोकहुँ मिरच मिलाकरि खाय; नेक गुनगुनो ताहि कराय
सूरजवात आधशी जाय ; मथावाय शिर-शूल पराय

पुनः

ब्राह्मी शंखाहूली जानि ; अरु कुम्हड़ा गनके मा आनि
जुदे जुदे यह सुरस निकारि ; अनूपान सों खाय सम्हारि
शहद संगकै कूट प्रसंग ; सब उनमादनि करि है भंग

पुनः

कुम्हड़ा सुरस संग गुड़ खाय ; मस्तक-पीड़ा अरु भ्रम जाय

इतनेसुरसविधिजोसुनिपाय; वैद्य-प्रिया में हितकरि गाय

पुटपाक-विधि

ओषधि बाँटि पीउ करि नीर; पिंड बाँटि तब धरिये धीर
अंड पत्र अथवा पट पत्र; जामुनि पत्र औटिये मित्र
ऊपर ताहि सूत लिपिटावै; माटीसन तब लेप चढ़ावै
अंगुल एक कहौ परमान; अग्नि माँझ तब देय सुजान
ह्वो ईश्वर यक देखे लोय; तब गोलारस लेय निचोय
इति पुटपाक सुरस पल एक; अनूपान मधु कहत विवेक
अथवा कलककचूर्ण सँग देउ; पुटपाकहि की विधि सुनि लेउ

पुटपाक के गुण

करि पुटपाक कुरेको देय; मधु सँग अतीसार हरि लेय

पुनः

करै गँगेरन को पुटपाक; अनूपान मधुसंग निशाक
कै सेमरि की छालि मिलाय; खातहि अतीसार मिटि जाय
दाड़िम को पुटपाक बनावै; पाके ऐड़िन बेर मँगावै
मधु सँग खात जाय अतिसार; वैद्य-प्रिया को यह उपचार

पुनः—दोहा

बीजपूर जड़ आम-जड़, जामुनि-जड़ लै आउ।
अथवा पीजहु पीन को, पीठि बाँटि करवाउ॥
तब पुटपाक बनाइकै, वह रस लेय निकारि।
अनूपान दै शहद सों, छर्दि-रोग को टारि॥

पुनः

पंच अंग लघु छिद्रका, पुटपाकी करि वीर।
सरसों पीपल मेलि कै, कास श्वास की पीर॥

पुनः

अररूसे पुटपाकरस, शहद संग करि खाय।
रक्त पित्त कफ कास ज्वर, खोहर क्षयी नशाय॥

शुंठीपुट-पाक

शुंठी चूरण छाछि में, गाई घीउ मिलाय।
थोड़ो सो करमोइ कै, अंड-पत्र में नाय॥
गोला सों करि तासु को, पुनि माटी लिपिटाउ।
अग्निमाहिंपुटपाककरि, मिश्री साथ खवाउ॥
पल इक दीजै रोगिये, प्रात साँझ यह खाय।
उदर-शूल अतिसार कफ, वात-रोग मिटि जाय॥

पुनः

शुंठी चूरण छानि कै, अंड-मूल-रस लेय।
पिठी बनावे सानि कै, अंड-पात्र महँ देय॥
तब पुट-पाक बनाइ कै, शहद मेलि करि खाय।
आम-वात पीड़ा कठिन, निमिष मांझ हरि जाय॥

पुनः

करिये सूरन-कंद को, रस पुट-पाक बनाय।
खाय तिलनि के तेल सों, कै सेंधव सों खाय॥

अरस विकार मिटै तुरत, याको यह गुण आय।
वैद्य-प्रिया भाषा भणित, रोग हरण सुखदाय॥

पुनः

हिरन-सींग पुट-पाक करि, गो-घृत संग खवाय।
हृदय-शूल की पीर सब, या ओषधि सों जाय॥

हिमकल्पना-विधि

ओषधि लीजै एक पल, षट पल दीजै वारि।
बाँटि छानि तिहि लीजिये, भिषजन कहे विचारि॥
ताको नाम कल्याण हिम, दूजो शीत कषाय।
कहौ ग्रंथ भेषज-प्रिया, वैद्य-प्रिया सुखदाय॥

अमृतादि-हिम

गुरचै पुनि दाड़िम सुपक, कूटि खरल महँ देय।
माया भाजन मेलि कै, तब निशि भोजन देय॥
सो रस संग महूख के, प्रात पियन को दय।
रक्त पित्त जे रोग हैं, निमिष माँझ हरि लेय॥

पुनः

मिरच कूट मधुयाष्टिका, ऊमरि-पय मँगवाय।
कमलगटा सम भाग दै, जल सँग बाँटि बनाय॥
प्रात दीजिये पियन को, करिकै शीत कषाय।
रक्त-पित्त जासों मिटै, सौख्य होय अधिकाय॥

नीलोत्पल-हिम

कमलगटा सम शर्करहु, जाठो दाख उशीर।

मधु पयहू पद्माक लै, अरु कुम्हेरि-फल नीर ॥
राखहु राति भिजाय करि, प्रात बाँटि कै देय।
मिटहि द्वंद्वज्वर दोषज्वर, वात पित्त हरि लेय ॥

जीर्ण-ज्वर पर अमृत-हिम

गुरचै कूट भिजोइये, राति नूत मृत-पात्र।
प्रात छानि पल शहद सों, पिये जीर्ण-ज्वर जात॥

अडूसा-हिम

अरडूसे दल निशि भिजै, प्रात खाँड़ सम खाय।
रक्त पित्त कफ धुवलकी, पीड़ा तुरत नशाय ॥

धान्यादि-हिम

धना कुचरि जल मृत-कलश, निशि रखि प्रात पियाउ।
मिश्री-युत मुख-शोष पुनि, अन्त दाह विनशाउ ॥

काढ़ों के वर्णन में गुड़चादि-क्वाथ

गुड़च धना मोथा सुखग, चंदन पाढ़ उशीर।
शुंठी बेल चिरायतो, पित्तपापरो वीर ॥

चौपाई

इंद्रयवा बारकहु लेउ ; काढ़ो करिकै रोचन देउ
मधु मिलाय कै दीजै लोय ; अतीसार ज्वर डारै खोय
तृषा छर्दि कंडू उरदाह ; अरुचि हरै तन पीर मिटाह

पुनः

गुड़चं पीपरा शुंठी देहु ; पुनि चिरायतो मोथा लेहु
सम तमाल पीजै पल एक ; करि काढ़े कहँ लेय विवेक

वात-पित्त-ज्वर यासों जाय ; वैद्य-प्रिया यह कह्यो उपाय

दोहा

गुड़च पीपरामूल पुनि, सतुआ सोंठि मिलाय।
पाचन दीजै वात-ज्वर, सप्त दिवस तहँ प्याय॥

पुनः

मूल कुम्हड़ औ सारिवा, दाखै हरड़ गिलोय।
काढ़ो करि गुड़ सों पिये, जाय वात-ज्वर सोय॥

पुनः

परपट धना चिरायतो, कुटकी बास प्रियंग।
मध्य जवासो कूटि कै, करै क्वाथ सों संग॥
अष्ट-शेष काढ़ो करै, अनूपान दै खाँड़।
तृषा दाह अरु पित्त-ज्वर, इनको कीजै भाँड़॥

सर्व-ज्वर का क्वाथ

लघु दीरघ क्षुद्रा धना, सोंठि और देवदारु।
काढ़ो करिकै दीजिये, सर्व ज्वरन को टारु॥

पुनः

लघु क्षुद्रा को मूल लै, गुड़च्च सोंठि सम तूल।
काढ़ो पीपलमूल लै, अनूपान जिनि भूल॥
श्वासकासआननकुटिल, अरु पीनस को रोग।
अरुचि शूल स्वरभंगता, जीर्ण-ज्वर तिहि रोग॥

वमनंध का क्राथ—चौपाई

देवदारु सालौन मँगाउ ; हरड़ सोंठि शुंठी सो ल्याउ
काढ़ो करि शीतल पी लेय ; श्वास कास ओकी हरि लेय

चातुर्थिक ज्वर पर—दोहा

कंडूफल मोथा पिपर, रोहिष धनियाँ डारु।
भारंगी शृंगी हरड़, बच शुंठी देवदारु॥
अनूपान मिश्री शहद, दीजै वैद्य विचारि।
श्वासकासमन्दाग्निअरु, चातुर्थिक ज्वर जारि॥

क्रमि का काढ़ा

त्रिफला मोथा सहिंजना, अरु मुरारि देवदारु।
समिता भाग ये लीजिये, काढ़ो यहै विचारु॥
लै बिडंग पीपल शहद, अनूपान सों देय।
पल इक दीजै पियन को, क्रमि-समूह हरि लेय॥

देह-पीडा का उपाय

सुरही किरमालो गुड़च, बिसखापर देवदारु।
सोंठि अंडजर गोखुरू, ओषधि क्राथ बिचारु॥
अनूपान दै सोंठि सों, सकल अंग की बाय।
ग्रीवा पंजर पीठि कटि, जंघ जानु दुख जाय॥

*रास्नादि क्राथ

दुगुन भाग दै रासना, सब ओषधि यक भाग।
आगे देइ बताय करि, जानि दियो दश भाग॥
सोंठि धना सो अंडजर, वृद्ध दारु देवदारु।

विमुख परो मोथा गुड़ूच, सोंठिसिद्धिचवडारु ॥
शहदमूल कटु सेरुवा, किरमालोक अतीस।
धना कटाई आम जड़, समित भागसम पीस ॥
याको काढ़ो दीजिये, अनूपान सों देय।
अंड-तेल शुंठी धना, योगराज सों सेय ॥
अथवा अजमोदादि सों, वा सँग पीवन देय।
सकल अंग की वायु कहँ, निमिष माहिं हरि लेय॥
जानु जंघ कटि कम्प तनु, भुज पीड़ा अरु पीर।
पीठि-पीर शिर-पीर पुनि, गृह सों हरै समीर ॥
श्लीपद क्षय धातु दुख, कुरड़वाय मिटि जाय।
अतिसुवृद्धअ-धमानपुनि, मुख टेढ़ो ह्वै जाय ॥
बीरज रोंक तरेट में, त्रिया-योनि दुख होय।
रसनादिक यह क्वाथ है, त्रिया-रोग को खोय ॥

स्तन-शूल पर क्वाथ

अंड गुरुखुरू बेल जड़, द्वै बृहती जड़ लेय।
क्वाथ करै सब संग में, विधि-समेत करि देय ॥
पथर-संग बिजपूर रस, काढ़ो करिकै देउ।
क्वाथ अंडादि नाम यह, अनूपान सों देउ ॥
अस्तन-शूल अरु कंध दुख, हृदयमूल कटिशूल।
मेटत शूल तरेट दुख, हरे निनाई मूल ॥

क्षुद्रादि-क्वाथ—चौपाई

रातौ चंदन अरु पदमाख ; मोथा और कटाफर भाख
लै चिरायतो कनक गिलोय ; परवर जड़ सु कटेहरी दोय
बासा सोंठि भरंगी धना ; पुष्करमूल इंद्रयव गना
कुटकी छालि नींब की ल्याय ; अष्ट-शेष काढ़ो करवाय
अमल मूलजुरसजुजाय ; अनूपान पीपल सो खाय
सुंदर काढ़ो सुनौ सुजान ; रस-रतनाकर कहौं बखान

देवदारु-क्वाथ

देवदारु बच क्वाथ मँगावै ; पीपल सोंठि कायफल ल्यावै
बारौ मोथ चिराता धना ; हरद करेरी तामें गना
गजपीपल गुरुखुरू धरेय ; कारो जीरो अरणी देय
शृंग जवासो लै त्रयमान ; बहुरि गिलोय अतीस बखान
सुरही सहित औटिये गुनी ; अष्ट-शेष करिये यह सुनी
स्त्री के प्रसूत को देय ; सब वायनि कंडू कर देय

दारुहरद-क्वाथ

दारु हरद देवदारु मँगाय ; बहुरि मँजीठ इंद्रयव पाय
किरमालो अरु पाढ़ कचूर ; गजपीपल पीपरै उशीर
लै चिरायतो अरु त्रयमान ; मोथ सोंठि पद्माक बखान
शृंगी धना खिरहटा होय ; बारौ हरड़ कटाई दोय
जड़ दाभ की पापरो कहौ ; पुनि कुटकी जु जवासो लहौ
पुष्करमूल गिलोय बखान ; ये औषधि सब लेहु समान

विषम-ज्वर जु तिजारी होय, और इकतरौ जानौ सोय
या काढ़े ते रहै न कोय ; वैद्य-प्रिया भाष्यो यह सोय

योगराज-क्वाथ

दारुहरद अरु पुष्करमूल ; देवदारु शुंठी सम तूल
अरु करेड़-जड़ जवनौं सही; ये औषधि सब सम कै लही
पुनि चिरायतो अरु दशमूल ; सिंहवदन शृंगी सम तूल
क्रूर-ज्वर नाशै यह खात ; और उपद्रव सब नशि जात

शृंगी-क्वाथ

शृंगी कुटकी अरु दशमूल ; पुष्करमूल कचूर सुतूल
भारंगी परवर की मूर ; रोग निकारि जवासो दूर
और इंद्रयव लीजै गुनी ; सबै बराबर संख्या सुनी
तेरह सन्नि रहैं नहिं कोय ; आवँ जाय रोगी कै होय

कर्णकुब्जारि-क्वाथ

मोथ कायफल पुष्करमूल ; बच सपाढ़ लै जीरा तूल
हरड़ पापरो अरु देवदारु ; शृंगी पीपल लै सम भारु
कुटकी सोंठि शतावरि कही ; इंद्रयवा भारंगी सही
पुनि कचूर रोहित अरु धना ; अरु दशमूल तासु में गना
कर्ण-कुब्ज है काढ़ो येहु ; दिन त्रिकाल रोगी को देहु
सूरज उवै तबै तम जाय ; कर्ण-कुब्ज यों जाय बिलाय

उबीरसनादि-क्वाथ

सुरही अंडमूरि जड़ लेय ; अरु गिलोय किरमालो सोय

अरुड़ूसौ जु जवासो आन ; इनकी मूरि जु लेहु सुजान
पुनि कचूर दीजै देवदारु ; छामल्ल की जड़ मोथा डारु
सोंठि अतीस हरड़ को देय ; किरमालो गुरुखुरू धरेय
बासोपिया शतावरि लेय ; चाव खिरहटी बच जु करेय
बहुरि कटेरी लीजै जान ; ये सब ओषधि लेहि समान
सोंठि प्रक्षेप देय तब गुनी ; वैद्य-प्रिया में यह मैं सुनी
तेरह सन्नि चौरासी बाय ; या काढ़े को पीवत जाय

माषादि क्वाथ

छामल्ल रज अरु उरद मँगाय ; जड़ करेल्ह रोहिष की ल्याय
पुनि सुरही जु अंड को मूल ; ये पाँचौ लीजै सम तूल
सेंधव हींग प्रक्षेप जु कही ; पक्षाघात जायगी सही
यह माषादि क्वाथ कवि कहै ; अर्द्धंगी काजै संग्रहै

द्राक्षादि क्वाथ

दाख गिलोय कचूर मँगाय ; शृंगी मोथा चंदन ल्याय
कुटकी सोंठि जवासो मूल ; पाढ़ जवासो पुष्करमूल
बृहती अरु पद्माकहि देय ; नेत्रबाल उशीर जु लेय
काढ़ो करि पीपरि सों खाय ; कास-श्वास जीर्ण-ज्वर जाय

षट्पीपरि विधि

पीपरि लेय चारि पल फोरि ; त्रिकुटा बहुरि एक पल जोरि
चारौ बाँटि कपरछन कीन ; देहु शतावरि रस पुट तीन
ता पाछे घृत-मध्य पकाय ; पुनि औटिये दूध में नाय

बहुरि बाँटि कै लेय सुखाय ; पुनि तामें ओषधि ये नाय
मोथ धना तजपत्रज लेय ; छड़ अरु दोऊ जीरे देय
हरड़ नागकेसरि लै आय ; अरु अमरे सों देय मिलाय
बहुरि मह्रूष लेय पल तीनि ; खैर टंक भरि खासो बीनि
ये सब बाँटि एक कर धरे ; टंक टंक की गोली करै
पाँचो गुल्म अठारह शूल ; हरै जलंधर प्लीहा मूल
बल बीरज अरु दीपन करै ; नर को सबै अरोचिक हरै
जो बालक नान्हों रहि जाय ; याके खात वेगि बढ़ि जाय
अरु जेते हैं सबै विकार ; षट पीपल ते जायँ असार

सौभाग्य सोंठि

सेर तीन लै सोंठि मँगाय ; जासों सतुआ कहिये ताय
चूरण बाँटि छानि करि वीर ; तेरह सेर असल गोक्षीर
दीपक अग्नि पचावै सोय ; करछी डारि दागु नहिं होय
खीर मिलै कै धरै उतारि ; तामें तीनि सेर घिउ डारि
तनक राह धरि न्यारो करै ; तामें मिश्री पाकहि करै
तीनि सेर को पाक विचारि ; फिरि तामें ये ओषधि डारि
जड़ मालती लौंग पीपरी ; तज पत्रजहु कूट त्यों खरी
बीज खिरहटी हरड़ मँगाउ ; केसरि नाग तासु में नाउ
अभ्रक सार याहि दै अंत ; ये ओषधि पल पल लै संत
मोथा जीरो हरद निसोत ; असगँध त्रिफला बंगसो होत

सुरही बाय बहेड़ो आनि ; और कचूर शतावरि जानि
पुष्करमूल छुहारे एल ; जातीफल बारे की बेल
दोय दोय ये कर्ष प्रमान ; बीज कुम्हैड़े मिंगी सुजान
अरु खोपरा निरौंजी ल्याय ; आठ आठ पल सबै मँगाय
पीसि छानि एकांते धरै ; घालि पाक में गोली करै
कतली बाँधै पल अनुमान ; प्रात समय तब खाय सुजान
आठौ ज्वर जु बाय कफ जाय ; पित्तकमल सब शूल नशाय
पिंड-रोग सब जाय बिलाय ; हिक्का गुल्म वात सब जाय
आम-वात उन्मादहि हरै ; भूख बहुत बल रूपहि करै
शुक्र-वृद्धि अरु पोरिष आन ; विकसे वदन कमल उनमान
पार्वती शिव पूछयो जबै; यह गुण शंकर भाष्यो तबै
यह सौभाग्य जु सोंठि प्रयोग ; खाये होय योग तन भोग
यह ओषधि गुण करै अपार ; वैद्य-प्रिया भाषो सुख-सार

अश्वघाव का उपाय—दोहा

पीपरि सैंधव बावची, सोंठि सुपारी पाय ।
काँजी सों घिसि लेपिये, अश्वघाव न रहाय ॥

पुनः

कुचिला जीरो बाब्वची, मिरच सुपारी लाल ।
लोध्र सिंदूर मँगाय सम, अर्द्ध भाग हरताल ॥
सर्व पीसिकै एक में, घिसिकै नीर मिलाय ।
सप्त दिवस लेपन करै, अश्व-घाव न रहाय ॥

मसि की क्रिया—चौपाई

जेतो काजर तेतो बोर ; बिजैसार पानी में घोर
कालिदास यह बुद्धि उपाय; कागज जाय पै मसि नहिं जाय

पुनः—दोहा

गोंद तीनि दिन भिजैकै, बाँटि लेय जल छानि ।
तामें भाजन मेलिकै, घोरो काजर जानि ॥
बिजैसार जल आमरे, निंबुआ पुस्ता-नीर ।
सोनामाखी नीर लै, तामें मिलवो वीर ॥
सात दिवस लगि घोटिये, स्याही नीकी होय ।
बड़-पातन में लेउ घिसि, ऐसी सुंदर सोय ॥

पुनः

लाख मेलि जल लीजिये, तामें बासन औटि ।
औरहि जल को डारिकै, काजर नीको घोटि ॥
तीनि दिवस में घोटिकै, डारि दोति में लेय ।
निघटै पानी तासु में, ताको करिकै देय ॥

पुनः—चौपाई

खैर सुहागा कारो बोर ; इन को बाँटि नीर में घोर
सबते आधो काजर जान ; करि इकठौरो घोटि सुजान
तीनि दिवस लौं घोटै कोय ; थाको देखि सराहै लोय
डारि दोति में ग्रंथ लिखाय ; वैद्य-प्रिया यह कह्यो उपाय

युक्ति-कथन-विचार—दोहा

पीपल बायबिडंग गुड़, धना सहित ये डारि ।

नई नई ये जानिये, लीजै यहै विचारि ॥
गुरचै कुरो शतावरी, बासा कुम्हड़ा जानि ।
असगँध सोंठि पसारनी, पियबासा सो मानि ॥
हरी होयँ जो ये सबै, दूनी लीजै जान ।
दूनी लेय गिलोय को, यह वैद्यन को ज्ञान ॥

अरिल्ल

काल कहौ नहिं होय तौ प्रात बताइये ।
अंग कहौ नहिं होय तौ मूल मँगाइये ॥
भाग कहौ नहिं होय तौ मूसम जानिये ।
पात्र कहौ नहिं होय तौ माटी आनिये ॥

दोहा

इक इलाज में बार दो, औषधि कही बखान ।
ताको दूनी लीजिये, याको यह परमान ॥

चौपाई

बर्ष दिवस जाको हो जाय ; सो औषधि गुण-हीन बताय
छह महिना जो बीतैं सही ; गुटिका होय हीन-गुण सही
चारि महीना बीते पाछे ; घृत अरु तेल हीन-गुण आछे
ज्यों ज्यों होय पुराने संत ; सिद्धि धातु रस त्यों गुणवंत

दोहा

भिलमा नहीं रहै तहाँ, डारै चंदन लाल ।

बंशलोचना नाहिं तौ, लौंग खटीते खाल ॥
ये खैबे ओषधि करै, तौ अजमोदा ठौर।
अजवाइनि डारै चतुर, डारै कछू न और ॥
खैबे को मति दीजिये, कारी जीरी जानि।
कारी जीरी ठौर तम, जीरो डारो आनि ॥
खैबे की ओषधि जहाँ, बच गेहूँ मति डारि।
बच के ठौर करंजनै, लीजै यह निरधारि ॥
मुक्ताफल के ठौर लै, मुक्ताफल की सीप।
शहद ठौर प्राचीन गुड़, गुण करि सहित समीप ॥
मिश्री मिलै न खाँड़ लै, साँठी मिलै न धान।
दाख न मिलै कुम्हेरि फल, तबलग यहै प्रमान ॥
तंतरीष नाहीं जहाँ, डारै दाड़िम बीज।
चंदन श्वेत मिलै नहीं, रातौ चंदन लीज ॥
अमलबेत नाहीं जहाँ, चंदन श्वेत सुडारि।
या विधि पाई सो कही, युक्तायुक्त विचारि ॥

अजीर्ण का प्रतीकार—चौपाई

कटहर कै केलाफल पाके; केला का घृत करहि विवाके
घृत को जै जम्हीर-रस दीजे; लौंग जम्हीरी के रस दीजै
लौंग अजीरण चावल पानी; पानी को सेवै मइजोनी
बरो अजीरण फेनी खाय; फेनी को लै लौंग चबाय

होय अजीरण पापर जबहीं ; बीज सहँजने के ले तबहीं
माड़े चाडू पुआ सुहारी ; गुंजा ये रस आम बिचारी
आम अजीरण दूध पियावै ; काज चिरौंजी हरड़ खवावै
महुआ बेल सु कैथ खजूरी ; नींब-बीज के घृत सों दूरी
बड़पीपरिपाकरिऊमरि-फल;सहितसिंघाड़ेकोशीतलजल
जब चिरवा नल बहुत चबाय ; जब अजमोद पीपरै खाय
साँठी काज दही को पानी ; सो सुपचै तुष जल सों जानी
गोहूँ ककरी सों पचि जाय ; उरद संग ते मठा पिवाय
चना पचै मूरा के खाये ; ज्वारि काज अजमोद बताये
मूँग आमरे सों तुम जानो ; उरद खाँड सों पचै बखानो
पोस्ता दाख अतूत बखान ; लौंग भली आवै इनजान
समा काँगुनी मोठ पसाउ ; कोदों को दुधिनीर पिवाउ
कुलथी तेल पचावहि जैसो ; जो दधि नीर सेउ को तैसो
बहुत अहार अजीरण जाय ; काँजी दीन्हों ताहि बताय
शीतल नीर मिठाई काज ; खिचड़ी को सेंधव शिरताज
पीवत छाछि माँड़ पचिजाय ; मछरी भूजै मांस पचाय
तिलकेनरुआ बाँटि खारु करि;सबसालनविकारतासोंहरि
सरसों बपुआ चेंचु बिचार ; पीवहि क्वाथ खैर को सार
मछरी पचै आम के खाये ; कछुआ यवांखार के प्याये
लीलकपील जु खाय कपोत ; कुंशकी जड़ सों इनको खोत

दोहा

परवर अरु कुश बास कै, बहुत करेला खाय।
पीवै क्काथ पलाश को, तुरतहि सो पचि जाय॥

चौपाई

सूरन पचै जबै गुड़ खाय; अरु चावल को धोवन प्याय
पचै पाढ़ आदे के प्याये; पचै कसूरन सोंठि चबाये
दूध गाय को मठा पिवावै; मठा अजीरण जासों जावै
भैंसि दूध को शोधो जानौ; सूख चून दधि तहाँ बखानौ
योंहीं सकल फलनि के खाये; यवाखार को देत बताये
ताते सों शीरो पचि जाय; शीरे सों पुनि तातो खाय
नोन खटाई खाये पचै; पचै खटाई नोनहि रचै
रूखे सों चिकनाई जाय; चिकनाई को रूखो खाय

दोहा

सात बार तातो करै, सोने नीर बुझाय।
वह पानी पीवै तबै, नीर अजीरण जाय॥
जब सोने के नीर सों, होय अजीरण सोय।
तब चाटै मोथा सहत, मुनिन कही मति जोय॥
जिते अजीरण मैं सुने, तिते कहे परमान।
वैद्य-प्रिया या ग्रंथ में, देखहु वैद्य सुजान॥

नासूर का उपाय

रार कबेरौ बिरजरौ, मालकाँगनी आन।

पारो नीला थोथ लै, मेंहदी सेंदुर जान ॥
पाँच पाँच लै टंक ये, चूरण छानि बनाय ।
पाँच टंक लै मोम पुनि, बीस टंक घृत ल्याय ॥
मोम घीउ लै घोटिये, तामें बासन मेलि ।
औटा नीम कहौ गुनी, फिरि चूरण दै ठेलि ॥
गोली करि नासूर कै, लेप रोज करवाय ।
वेगिहि नीको होयगो, वैद्य-प्रिया सुखदाय ॥

चौदहवाँ शृंगार

धातु, उपधातु, विष, उपविष श्रीशोधन-मारण-विधि तथा उनके गुण-दोषों का वर्णन

धातु-क्रिया-विधि, सोने का शोधन—दोहा

छालि आनि कचनार की, कूटि निकारै नीर।
तीनि बेर सोनो बुझै, बुद्धि जानिये बीर॥

सोना-मारण—चौपाई

वा सोने के तबक बनावै ; ता सँग पारो तौलि मँगावै
खरल घालि घोटे अनुमान ; ताको गोला करै सुजान
दोऊ सम करि गंधक लेय ; तर ऊपर गोला के देय
सरवा को कपरौटी करै ; गोला लै सरवा में धरै
सूखे अरने कंडा ल्याय ; गज-पुट ताको आँच दिवाय
चौदह पुट गंधक या भाय ; सोनो भस्म होय मरि जाय

पुनः

कुंदन रेतो रातो लेय ; पारो नाग तासु को देय
निंबुआ रस खरलै दिन एक ; गज-पुट दीजै यही विवेक
गज-पुट संपुट सरवा धरै ; सरवा दे कपटौरी करै
निंबुआ-रस खरलै दिन तीन ; नाग बहुरि नहिं लगते कीन
होय सुभस्म श्याम नहिं होय ; यामैं संशय करै न कोय
युक्ति भली है उत्तम येह ; जनि जिय में आनो संदेह

पुनः

कुंदन के करि पत्र बढ़ाहि ; कंटक भेदी जानो ताहि
जो तोले भरि पत्र करेय ; सोनामाखी माशो देय
निंबुआ के रस लेपन करै ; सरवा संपुट गज-पुट धरै
पुनि पुनि माखी लेप करेय ; फेरि फेरि गज-पुट सों देय
तीनि बेर ऐसी विधि कही ; गुरु-प्रसाद ग्रंथन में लही
यही युक्ति रूपे की जानि ; ऐसो कुंदन कहौं बखानि
सोनामाखी देय सु इन्हैं ; भस्म होय अति कवियन भनैं
एक लक्ष गुण कवियन जान ; ता रस अस गुण कहे बखान

पुनः

सुरमा भँगरा को रस लेय ; सोने-पत्र लेप करि देय
सरवा मुद्रा गज-पुट धरै ; तो या विधि सों कंचन मरै

पुनः

जो न होय भूपति परतीति ; तो शकुनी यह करियो रीति
इंगुर गंधक अरु हरताल ; मनशिल लेय कनैरी लाल
एक एक माशो ये लेय ; बारि एक दिन खरल करेय
यक में हीर कुंदन की आन ; दुहूँ अंग तेहि लेप सुजान
पहले मोहर खपरिया धरै ; चूल्हे अग्नि खैर की करै
यह तातो होइ वा खरु वरै ; चकसोंनी-रस ऊपर धरै
बुंद दशक को छिनको करै ; पुनि वह मोहर उलटि कै धरै
बहुरि बूँद दश उतहू देय ; यहि विधि सों जो शोधि करेय

बाढ़त भस्म होय गुण येह ; वैद्य-प्रिया कह्यो निःसंदेह
बूँद बूँद यों देय बनाय ; परै मोहर अरु अंत न जाय
यहै शुद्ध-गति याते कही ; पलटत वरण प्रीति नहिं रही
यहि विधि कंचन मरै सुजान ; अब याके गुण सुनो बखान

सोने के गुण

सोनो करै अभंग शरीर ; यकचित मन दै सुनियो बीर
करियो मीठो अरु चीकनो ; तीनि भाँति सोने को गुनो
सोनो ऐसो गुनियो रीत ; ज्यों चंदन मलयागिरि शीत
बुद्धि बढ़ै बल बीरज करै ; दीपन होय अरुचि को हरै
बदन नासिका शिर के रोग ; नयन रोग जैहैं जिनि योग
एक लाख गुण कुंदन तनै ; ते सब जानि विधाता भनै

अशुद्ध के अवगुण

कुंदन ऐसो अवगुण करै ; क्षुधा और बल बीरज हरै
कुष्ठ करै अति दुष्ट न दहै ; सोनो जो अनशोधो रहै

थूथा-शोधन—दोहा

तेल मठा गोमूत्र अरु, कंजा कुलथी क्वाथ।
त्रिफला क्वाथ में शोधिकै, सफल धातु करि हाथ॥

रूपा-मारण-विधि

पारे रूपे के तबक, दोऊ लेय समान।
घोटै दोऊ खरल करि, जबलग पिठी समान॥

फिरि सरवा में धरि करै, कपरौटी दै आँच।
तीनि बेर या विधि करै, रूपा मरि है साँच॥

पुनः

एक रुपैया लीजिये, निंबुआ रस में सानि।
तर ऊपर ताके धरै, सोनामाखी आनि॥
दोय टंक दश तबक धरि, सरवा गज-पुट जानि।
तीनि बेर या विधि करै, तौ रूपा की हानि॥
वैद्य-श्रेष्ठ ने यह कह्यो, उत्तम ओषधि पाय।
सुंदर है यह रूप-रस, वैद्य-प्रिया सुखदाय॥

रूपे के गुण

रूपा है कसायलौ सुनौ; खाटो शीरो अरु चीकनौ
बोझिल खारो वायु को हरै; बल बीरज अरु कांतिहि करै
अरु जो गुण कुंदन ते होय; अरु रूपे ते जानो सोय
रूपा गुण हज़ार को धनी; वर्णि सकै को ताको गुनी
रूपा सप्त धातु को हरै; पूरुष जाय निबीरज करै
आय रुकम के अवगुण जेते; वर्णि सकै को कविता तेते

ताँबा-शोधन

लै गुवारि-रस शोधिये, मूत्र गाय को पाय।
फिरि काँजी सों शोधिये, ताम्र शुद्ध हो जाय॥

ताँबा-मारण-विधि

घोटि जँभीरी रंग सों, पारो गंधक दोय।

पत्रन लेपै ताम्र के, तासों या विधि कोथ ॥
सरवा में धरि पत्र सों, कपरौटी सु कराय।
तीनि बेर इमि आँच दे, ताम्र भस्म हो जाय ॥

पुनः—चौपाई

नीम पान-रस खरलै ताय; पुट-मर्याद एक दिन आय
पुनि चँदियानि करि सुखवै धूप; गज-पुट देय खाय तब भूप

पुनः—दोहा

नागरमोथा और पुनि, निरगुंडी को लाय।
तर ऊपर सरवा धरै, कपरौटी सु बनाय ॥
गज-पुट दीजै आँच सों, वन के कंडा लाय।
या विधि सों पैसा तबै, फूलि बतासा भाय ॥
ऐसी विधि ताँबा मरै, एक रती भरि खाय।

पुनः

एक पुरानो ढूंढ़ि कै, पैसा भरि लै साँच।
भरि कुल्हिया में दूध सों, ऊमरि पैसा पाँच ॥
संपुट कपरौटी करै, गज-पुट आँच दिखाय।
यहै और विधि जो करौ, ताम्र भस्म हो जाय ॥

पुनः

अजा-क्षीर गंधक मिलै, मर्दन अधिक कराय।
तांबे पत्रन लेपिये, गज-पुट आँच दिवाय ॥

यासों ताँबा भस्म है, मरै फेरि दै आँच।
वैद्य-प्रिया या ग्रंथ में, सुनि लीजै गुण साँच॥

ताँबा-गुण—चौपाई

ताँबा करुवो मीठो कहै; और कसायलो जानो यहै
आम-वात जो कफ है पित्त; रक्त विकार जाय क्षण मित्त
आठौं शूल बीस परमेह; दोष काढ़ि करि निर्मल देह
गुण जु सात से कहियो गुनी; यह मैं बात पुराणनि सुनी
बाय पिलीहा गुल्म नशाय; अफरा श्वास उदर-कृमि जाय
याके गुण को कहै बखानि; ताम्रै वैद्य-प्रिया सुख-दानि

ताँबे के अवगुण

अनशोधो ताँबे की बात; वमन होय तो तबहीं खात
पिंड रोग अरु उपज विराग; अपस्मार है जानो लाग
आठौं शूल सबुरी बलाय; अनशोधो जो ताँबा खाय
अवगुण जिते ताम्र के माहिं; वैद्य-प्रिया नहिं वरणि सकाहि

पीतर-काँसा-शोधन-मारण-विधि—दोहा

विधि जु बताई ताम्र की, मारण कै या भाँति।
पीतरि काँसो मारिये, यों ही वैद्य बिसाँति॥

पीतर के गुण

पीतरि रूखी तिक्त अरु, खारी शोधक आय।
पिंड-रोग अरु कृमि हरै, यह विधि दई बताय॥

काँसे के गुण

काँसो तिक्त कसायलो, रूखो उष्ण गरिष्ठ।
लेखन कफ-हर पित्त-हर, लोचन करहि बलिष्ठ॥

सार-शोधन

करि सरिया गज-बेलि को, जल में लेय बुझाय।
कै त्रिफला के क्वाथ में, तबहिं सिद्ध हो जाय॥

सार-मारण

रेतन करि गज-बेलि को, मन भावै सो लेय।
अभ्रक-सार मँगाय कै, चूरण के सम देय॥
खरल घालि रस घालिये, एक पहर खरलाय।
गोला करि संपुट करे, कपरौटी करवाय॥
गज-पुट की दै आँच पुनि, सार मरौ यों जानि।
पुनि त्रिफला के क्वाथ-रस, खरल करै तिहि सानि॥
त्रिफला की यह विधि सुनो, देन कही पुट बीस।
यही युक्ति सों सार नित, चंद्र करै जगदीस॥
दाड़िम के लै पत्र तब, बाँटि नीम-रस लेय।
कही तासु की भावना, सात सार को देय॥
दोय बारती सार तब, यह विधि सुनौ सुजान।
एक रती भरि तब कहौं, राजनिहूँ को ठान॥

पुनः

करिसरिया गज-बेलिका, रेतन मिहीं कराय।

अंश बारहों तासु को, ईंगुर संग मिलाय ॥
एक पहर भरि घोटिये, घृत कुम्हेरि के नीर।
सरिया धरि ताको तबै, कपरौटी करि धीर ॥
सात बार इमि देय पुट, गज-पुट फिरि फिरि आँच।
होय बार तिर तब मरै, सार जान यह साँच ॥

पुनः

रेतन लै गजबेलि को, दो पल के अनुमान।
जामुनिहूँ की छालि रस, पल आठक भरि आन ॥
धरि डबुआ में बंद करि, ठिपुरी माटी घोरि।
ताको लैके धरहि पुनि, चामैं मध्य बहोरि ॥
चारि घरी लै राखिये, उफनन लगै सुजान।
लै गज-पुट की आँच दे, सार मरै यह मान ॥

पुनः—चौपाई

अब जो सार अग्नि बिनु होय; ऐसी युक्ति सुनो रे लोय
पारो गंधक सम करि लेय; सूखी कजरी बाँटि करेय
लोहचन बहुरि सबन सम आनि; रस में ग्वारि पहर दो सानि
करि गोला तब हाँड़ी धरै; सरवा मुँह दै मुद्रा करै
जब हाँड़ी धरि कै दै घाम; चढ़ी पुखारी होय सो याम
दिना तीनि लौं तामें राखि; काढ़ि बहुरि धरि कूटै भाखि
लागत बाहु सार परि जरै; एक युक्ति सोंग्यहि विधि मरै
सो जरि होय भस्म क्षणमाहिं; क्रिया-सिद्धि है संशय नाहिं

पुनः

रस गुवार ईंगुर खरलाय; सार पत्र पर लेप कराय
सरवा मुद्रा गज-पुट आँच; दीजै लोह भस्म होय साँच

सार-गुण—दोहा

पाँडु-रोग अक्षय-रोग अरु, कास भर्म कफ-शूल।
अरस वमन पीनस गुलम, श्वास करै निरमूल॥
अरुचि प्रमेह हरै सु यह, और प्रकंपन बाय।
शीतल ऊहित लोह के, ये गुण दये बताय॥

अवगुण

लोहो रहै अशुद्ध तौ, रोग करै बहु गात।
ताते शुद्ध कराय कै, खात शहद सुनि बात॥

कीट-शोधन—चौपाई

लेय बहेरो काठ मँगाय; ताकी करै कठौती भाय
गाय-मूत्र लै तामें भरै; बारि बहेरो कोला करै
कीट तचावै ताकी आँच; बोरै गाय-मूत्र महँ साँच
बार आठ या विधि करि जानो; ऐसे कीटशुद्ध तुम मानो

मारण

पचहत्तरि पल न्हानो करो; लोह-चलानि ता ऊपर धरौ
सब झरि कीट कठौती कपरै; तौलौं चलनी तचिबो करै
तब सब लै सरवा में धरै; ताको लै गज-पुट में धरै
बहुरि सिराने काढ़ि सुलेय; आक क्षीर सों खरल करेय
बहुरि सात थूथे के क्षीर; सात बहोरि ग्वारि-रस वीर

बेर बबूर आमरे और ; सात सात पुट इनके ठौर
बहुरि सात त्रिफला रस देय; या विधि कीट सिद्धि करि लेय
जो पचास पल कीट सुहोय; तौ पल पल ये ओषधि देय
भारंगी अरु कारो बोर; टंकन सारस खाया सोर
त्रिफला त्रिकुटा लीजै आन ; बाँटि छानि धरि मिलै सुजान
टंक अढ़ाई के अनुमान ; उष्णोदक सों खाय सुजान

गुण—दोहा

कामरि कृमि पाँचौ गुल्म, अरस अठारह शूल।
रक्त जलंधर अश्मरी, बंध्या-दुख को मूल॥
छर्दि जलंधर बाय कफ, संग्रहणी मिटि जायँ।
जिते रोग मानुष उदर, सो सब यासों जायँ॥

बंग-मारण-विधि—चौपाई

पहिले दूध आक को ल्यावै ; तासों लै हरताल पिसावै
बंग-पत्र सों वह हरताल ; लिपटावै इत उत ततकाल
पीपरि बकला चूरण परै ; सूखे ले ता ऊपर धरै
करि कपरौटी सरवा नाय ; गज-पुट आँच देय फिरि जाय
सात बार या विधि पुटल्याय ; पीपरिबकलायहिविधिनाय
बार बार तब आँच दिवाय ; मरै राँग तब कामें आय

पुनः

शोधो राँग मारि बुधिमान ; सात भाँति के बरणों जान
राँग खपरिया देय चढ़ाय ; तामें दे अजवायनि ल्याय

ढाँक लकड़िया टारै सोय ; पहर दोय में भस्म सु होय
ऐसी युक्ति कही अब आनि ; तैसी भाँति मंगली जानि
ऐसे ही इमली की छालि ; कूटि कूटि कै खरलि सुघालि
उज्ज्वल महा होयगो बंग ; ता खाये बनिता सों संग

पुनः

पत्र राँग पतरेले करै ; तेले माँझ चीतरा धरै
पुरत पुरत दे बैठे ऐसे ; गेंद गसतु है लड़िका जैसे
जैसो राँग पाँच पल लेय ; तौ चींथरा साठि पल लेय
सो लै कूटे माँझ धराय ; पुनि नीके कै बाँधि बनाय
ऊपर ताहि अग्नि जो धरै ; जो निर्वाह गेंद सो बरै
एक कही है ऐसी रीति ; खाय होय बनिता सों प्रीति

पुनः

और एक विधि भाष्यो भली ; ताकैं बात होय निर्बली
शोधो राँग आठ पल लेय ; तामें पारो दो पल देय
गाँठि पारि कै खरलै गारि ; पल भरि देय शंखिया डारि
एक दिवस जो खरलै ऐसे ; बैठि न रहै एक पल जैसे
बहुरि सुखै कै सीसा भरै ; करि मुद्रा चूल्हे पर धरै
यंत्र बालुका देय खँचाय ; चारि पहर लौं अग्नि बराय
अल्प अग्नि दे सुनहु सुजान ; शीशी सात करै घोवीन
या बंगे खैहै नर सोय ; जाके जोय बहुत सी होंय

पुनः

एक काँच को भाँड़ा धरै ; दो दिन माहिं भस्म ह्वो मरै
ताके खात बहुत दिन यहै ; याही ते शय्या सुख लहै

गुण-वर्णन

नाग-बंग सीरा ही जान ; खाटो तीक्षण तहौं बखान
इनको संग्रह करि है सोय ; जाके होयँ बहुत सी जोय
बल बीरज बाढ़ै दिन मान ; याही ते संग्रहै सुजान
नाग-बंग गुण कहै अपार ; को कहि सकै तासु विस्तार
बंग-नाग गुण भाषों जेते ; खपराहू के जानौ तेते
तामें ये गुण सबी तनै ; वेई गुण काँसे के भनै

अवगुण-वर्णन

नाग-बंग की यह है बात ; अनशोधो मंडल भरि खात
जेते कुष्ठ अठारह कहे ; नाग-बंग अनशोधे लहे
और करै सब उदर विकार ; ग्रहणी संग्रहणी जुवतार
और गिलाय शिथिल होजाय; जो नर अनशोधो कहुँखाय

सीसा-मारण—दोहा

बासा रस सों खरलि कै, दे रसौंत पुट तीन ।
डारि शिलाजित आँच दे, सीसो भस्म प्रवीन ॥

पुनः—चौपाई

कारे खपरा सीसो धरै ; धरि चूल्हे पर आँच जु करै
कंजा की जर खोदि मँगाय ; हाथ भरे ते घटि जिनि लाय

तासों सीसो रगरहु जाय ; हाथ रहे नहिं सोयो भाय
ज्यों ज्यों कंजा लकरी जरै ; त्यों त्यों सीसो या विधि मरै

पुनः

मनाशिल अर्क दुग्ध घुटवाय ; सीसे पत्र लेप करवाय
धरि सरवा कपरौटी करै ; गज-पुट आँच देय तब मरै

उपधातु-वर्णन

अभ्रक दो माखी हरताल; मनाशिल नीलांजन सुनु हाल
हरिया थूथो जसद प्रशस्त ; कही सात उपधातु प्रमस्त

अभ्रक-शोधन—दोहा

कारी अभ्रक आगि में, तातो बहुत कराय।
फेरि बुझावै दूध में, वह ह्वाँते निकसाय॥
न्यारे न्यारे पत्र करि, चौरइ रस निकराय।
चारि पहर घोटै बहुरि, वाही रस में ताय॥
चारि पहर पुनि आम के, रस में घोटै जाय।
आठ पहर इमि घोटि कै, शुद्ध कहत है वाय॥

मारण-विधि

भाग एक अभ्रक कहौं, अरु द्वै भाग सुहाग।
करि इकठौरो देइये, घोटि वैद्य बड़-भाग॥
करि कपरौटी डारि कै, हँड़िया में यह साँच।
यन्त्र समेत जु मैं कह्यों, ताही विधि दे आँच॥
स्वांग शीत के होतं ही, तब वाकी रज लेय।

अनूपान सों वैद्य तब, सबल रोग कहँ देय ॥
अभ्रक घृत गो-मूत्र में, दश छह सोरह भाग।
औटि कराही में करै, अमृत-करन सुहाग ॥

पुनः—चौपाई

प्रथम लेय दश सेर धना तब ; कै गुड़ कै जु सानि जै रातब
सरवा वाके धरै बनाय ; जितौ तितौ सरवा में माय
पुनि सरवा ढाँकै सुनि साँच ; गज-पुट दै कंडन की आँच
तबै अग्नि दीजै परजारि ; जैसे रहै याम सों चारि
ता पाछे त्रिफला को नीर ; चौरासी पुट दै पल वीर
पुनि टंकन दीजै पुट एक ; होय निचंद्रक यहै विवेक
ता पाछे अमृत लै पाँच ; पाँच एक पुट दीजै साँच
पुनि घृत मिश्री शहद मिलाय ; पुनि चारौं पुट देय बनाय
ईंगुर वर्ण होयगा लाल ; देखत ता रीझै भूपाल
जिते नागहू के गुण जाने ; तितने अभ्रक कहे बखाने

पुनः

लै धनाव जितनी मनमान ; आक-क्षीर सों सान सुजान
पुनि सरवा में धरै बनाय ; खाली रहै न बाहर जाय
तब सरवा सरवा सों ढाँकि ; गज-पुट दै कंडन की झाँकि
ऐसी विधि कै दीजै आगि ; चारि पहर जो ज्वाला जागि
आक-क्षीर ऐसी विधि सात ; ताते साह सबनि की बात

कनक-पात-रस ग्वारि सो वीर; पुनि लीजे थूथे का क्षीर
ता पाछे छूले की छालि ; बहुरो औटि बिरजरो घालि
पीपल बड़ की अन्तरछाल ; पेठे की लै होय निहाल
गुड़ सुहाग अरु लीजे लाख ; पुनि त्रिफलापाछे के राख
सात सात पुट सबकी जांनि; चौरासी पुट कही बखानि
औटि बनाय लीजिये छालि ; ता पाछे अभ्रक में घालि
गुड़ सुहाग पै छोरे नीर ; करै गुणी जाकी मति धीर
होय निचन्द्रो गुण को दानि ; वैद्य-प्रिया में कही बखानि
रस-रतनाकर को यह सार ; वैद्य-प्रिया में कह्यो विचार
यह अभ्रक साधै जगपाल ; जाके होय अखारो बाल

गुण—छप्पय

अभ्रक मधुर कषाय धातु कर शीतल जानो।
पिलही कोढ़ प्रमेह उदर विषक्रमिहरपानो॥
व्रण त्रिदोष पुनि हरै करै दृढ़ देह मदन बल।
आक बढ़ावै बहुत मृत्यु-भय हरै सकल कल॥
अरु बूढ़ो नहिं होय सुनि याको नित सेवन करै।
इहि भाँति जानि अभ्रक गुणनि पारद सम मन महँ धरहि॥

दोहा

बदर बेर ककरी भटा, छाँड़ि खटाई तेल।
और करेला छोड़ि दे, तब अभ्रक को खेल॥

सोनामाखी-शोधन

सोनामाखी लै त्रय भाग ; एक भाग शोधो अनुराग
डारि जम्हीरी को रस तामें ; ल्याय कराही मेलै वामें
चूल्हे पै जु कराही धरै ; ताके तरे आँच फिरि करै
ल्याय करछुली बारंबार ; तासों टारै यह निरधार
तब लगि टारै वाही ख्याल ; जब लगि होय कराही लाल
तब सोनामाखी शुधि जाय ; करै बहुत गुण ओषधि खाय

गुण—दोहा

तिक्त मधुर क्षय कोढ़ कफ, पित्त प्रमेही हस्त ।
सुवरणमक्षिकशीतअति, ये गुण वैद्य प्रशस्त ॥

रूपामाखी-शोधन—चौपाई

मेढ़ासिंगी और ककोरि ; और जम्हीरी ल्यावै तोरि
तिनको रस निकराय धरावै ; रूपामाखी शुद्ध करावै
एक एक रस रोज डरावै ; रूपामाखी शुद्ध करावै
एक एक रस रोज डरावै ; रस-युत माखी घाम धरावै
सोनामाखी इमि दै आँच ; रूपामाखी मारे साँच

गुण—दोहा

सोनामाखी गुण कहे, ये कछु तिनते घाटि ।
रूपामाखी गुण कहे, यहै वैद्य-परपाटि ॥

हरताल-शोधन—चौपाई

बीनि तबक हरतालहि लेय ; कारे खपरा माँझ धरेय

धरि चूल्हे पर अग्नि करेय ; ऊपर पान बोरि कै देय
गरि हरताल नीर हो जाय ; शुद्ध होय यह कही सुगाय

मारण-विधि—दोहा

टूक टूक पहिले करै, सरस ल्याय हरतार।
फिरि कपरा महँ धारिकै, पुटरी करै विचार॥
कौहा को रस छाछि अरु, त्रिफलाजल तिल-तेल।
अरु चूना को जल सकल, ये जोरे सब खेल॥
इन मधि डोला-यंत्र करि, पहर पहर की आँच।
देइ पकै हरताल जब, शुद्ध होय यह साँच॥
फिरि पत्रन हरताल यह, पुनर्वारिसँग डार।
घोट खरल में एक दिन, सूखन दै निरधार॥
फिर वाही हरताल को, गोला दृढ़ हो जाय।
धरै घाम में सूखि कै, गोला करै बनाय॥
पुनर्नवा को खार करि, हँड़िया आधी पूर।
गोला धरि ऊपर बहुरि, भवै खार की धूर॥
हाँड़ी को मुहँ मूँदि कै, रहै जो सरवा लागि।
हँड़िया चूल्हे पै धरै, नीचे बारै आगि॥
पाँच दिना-लौं राति दिन, बारै आगि निदान।
मरै तबै हरताल पुनि, मात्रा रती प्रमान॥

पुनः—चौपाई

पल पाँचक लीजै हरतार ; लेय सिरस भरि कै पल छार

खरल घालिकै सुखै जु पीस; पुनि शीशी घालै कवि-ईस
यंत्र बालुका में जो धरै; ताके मुखप नीम दै करै
पुनि ताके तर आगि जराय; पहरक में जु नीर हो जाय
जब जानौ पछिलौ हरताल; चारि टंक सो शोरा डाल
दूर भये ते शोरा डारि; ऊपर ताहि अग्नि पर जारि
जानै निकसि गई तब झाँकि; तब मुद्रा के शीशी ढाँकि
बाहिर यहै फेटि कटवार; तब नीचे बैठै हरतार
जाको ऊँचो भाग्य लिलार; तापै तौ सुंदर हरतार
कुष्ठ हरै सब रक्त-विकार; और बात जानैं करतार

पुनः

लै हरतार सेर भरि मीत; ताके तवक होइ अति प्रीत
अंडी को लै मिंगी कराय; एक सेर है तामें आय
पक्के काँद गोंदरा आनि; तिन्हैं दौंचि रस लीजै छानि
ता रस खरलि सुनो विधि कहैं; तीन पहर जे हाथनि रहैं
आध-सेर शीशा में धरै; करि मुद्रा जुवारिका धरै
चढ़ती चढ़ती आँच जु कही; सोरह पहर जारि जो सही
शीतल भये काढ़ि सो लेय; खरल माँझ फिर करिकै देय
बहुरो रस जु प्याजको जोय; पुनि सु पहर बारह धरि देय
जारि सु ताही शीशै बैठि; ताके रहै लक्षिमी पैठि
जापर कृपा धनी की होय; या विधि सों करि जानै सोय

पुनः

लै पलाश जड़ रस कढ़वाय ; तासों घिसिहरताल बनाय
पुनि लीजै तिहि अग्नि पचाय; तो हरतार तुरत मरि जाय

पुनः

समके लै पारौ हरतार ; खरल घालि तब करै विचार
पुट इकईस नीम की लेय ; ग्वारि बहुरि इकईस करेय
जितनी थूथो तितनी आक ; देहु दूध पुट पहिली ताक
घालि कचहली मुद्रा करै ; बारह पहर बालुका धरै
ऐसे शीशी तीनि चढ़ाय ; जौलौं बैठि न तरहर जाय
मानस रोग देह यह घनैं ; ताके खात होत सब मनैं

पुनः

बीस टंक लीजै हरताल ; नान्हों पीसि खपरिया घाल
सरफोका की जड़ की छालि; ताको चूरण करिये घालि
खपरा चूल्हे पर जु राखिये ; बाखर चूरण सौं ढापिये
ता तर अग्नि अलपसी धरै ; एक पहर जो मंदी करै
जहँ जहँ बाखरु धुआँ करेय ; तिहि तिहि माहीं चूरण देय
खपरा चारि पहर जो तपै ; गुणी नाम जो जाको जपै
तब रोगी को दीजै खान ; कुष्ठ अठारह जायँ निदान
जेते शोणित तनैं विकार ; जाते ये सब देहिं उबार

गुण—दोहा

कटुकखाय चिकनों हरौ, हरै कोढ़ अरु खाज।

रक्त-विकार जु व्रण हरै, कै अरु कोढ़ समाज ॥
शुद्ध-कांति बीरज बढ़ै, कढ़ै आँवँ यह ख़्याल ।
यह अशुद्ध रोगनि करैं, या गुण को हरताल ॥

मनशिल-शोधन

रस अगस्त के पात को, कै आदे को लेय ।
सात भावना दीजिये, मनशिल सुक्ख करेय ॥

गुण

मनशिलगुण-गणउष्णअरु,कुटविषहरपुनिआय।
पित्त चीकनों श्वास उर, कास जाय जब खाय ॥

नीलांजन-शोधन

नीलांजन दो भाँति को, श्वेत कृष्ण पुनि होय।
औटै त्रिफला नीर सों, शुद्ध होय वे दोय ॥

गुण

नीलांजन ग्राही मधुर, शीतल क्षय-हर जान ।
कंडू विष-हर पित्त-हर, कोढ़ विनाशक मान ॥

हरियाथूथे का शोधन

बीट बिलार कपोत की, तासों घोटि बनाय ।
दशयें अंश सुहाग दै, गज-पुट आँच दिवाय ॥
पुनिफिरिदधिकीशहदकी, दो पुट दे कहि दीन ।
हरियाथूथो शुद्ध पुनि, होय वमन भ्रम-हीन ॥

गुण

लघु कटु रीनो नोन हित, भेदो लेखन जानि ।

कंडू-कृमि-विषपित्त-कफ, कोढ़-विनाशक मानि ॥
पथरी-मेद-प्रमेह-हर, वैद्य बतावहि जाहि ।
हरिया-थूथो आनिये, वैद्य-प्रिया गुण आहि ॥

जस्त-शोधन

जस्त पचावै सात दिन, गाय-मूत्र में धीर ।
करिकै डोलायंत्र वह, होय जो शुद्ध शरीर ॥

गुण

खारी लघु-कर बदन-कर, शीतल लेखम आय ।
कफ-विष कंडू-कृच्छ्रहर, सुख-हित दयो बताय ॥

पारो-शोधन

पारो शोधन जे कहत, ता महँ है जंजार ।
ईंगुर को पारो कहत, ताते विरचि विचार ॥

चौपाई

पहिले चोखो ईंगुर ल्यावै ; ताको खरल माँझ डरवावै
ता-माधि निंबुआ को रस डारि ; पहर एक-लौं घोटि सम्हारि
ईंगुर हँड़िया मध्य धरीजै ; हँड़िया के मुँह हँड़िया दीजै
दोऊ हँड़ियन को मुहँ जोरि ; कपरौटी करि खैंचि मरोरि
जा हँड़िया में ईंगुर नाखै ; सो हँड़िया चूल्हे पर राखै
वा हाँड़ीतर अग्नि बरावै ; ना अतिजोर न मंद करावै
ऊपर की हँड़िया की तरी ; भिजै धरै कपरा की झरी
ऊपर की हँड़िया में जैसे ; उड़ि लागै वह पारो ऐसे

हँड़िया तौ खरोचि कै ताहि ; काँसे थारी लेहि दुराहि
इमि काढ़ो ईंगुर को पारो ; वह सब भाँति शुद्ध निरधारो
रस आदिक ताको करि देय ; तहाँ शुद्ध यह पारो लेय

दोहा

पारे के गुण सकल सुनि, कहै कहाँ लौं कोय ।
तनक मरो पारो मिलै, अजर अमर नर होय ॥

पुनः

ले नवीन गाढ़ी गजी, परत दोय के तीन ।
तामें छानै बार त्रय, पारो शुद्ध प्रवीन ॥

पारे के गुण—चौपाई

पारे के गुण कहौं बखान ; इक-चितमन दै सुनौ सुजान
प्रथम शरीर पवित्र जु करै ; जाके दरश आपदा हरै
कुष्ठ अठारह आठौ शूल ; अरु संग्रहणी रहैं न मूल
बीस प्रमेह जाय जब खात ; अरु भागे चौरासी बात
अरस अष्ट अरु रक्त-विकार ; उदर-दोष सब गुल्म विकार
पाँडू-रोग भगंदर जाय ; मानस-रोग निकट नहिं आय
क्रांति होय बल बीरज करै ; उन्मद बनितानि के बल करै
बली पलित भागै ढिग होय ; काया कलप जानिये लोय
यह पारो देवता अधीन ; सो जानै सबही गुण-हीन
ऋद्धि-सिद्धि अरु मुक्तिहि दानि ; ताके गुण को कहै बखानि

दोहा

पारे के गुण-गण कहे, कहै कहाँ लौं कोय।
अमर करत नर आपु मरि, करुणामय यह होय ॥

अवगुण—चौपाई

अनशोधो जो पारो खाय ; होय नपुंसक जानो राय
अवगुण कहँ लगि करौं बखान; अनशोधो जो निर्भहि जान

गंधक-शोधन—दोहा

गंधक घृत यह डारिकै, मंद आँच पिघिलाय।
कपरा मधि होइ दूध में, डारि सिद्धि हो जाय ॥

गुण

गंधक कटु-रस तिक्त अरु, उष्ण-वीर्य कहि जात।
पित्त रक्त कटु पाक अरु, वासों कोढ़ बिलात ॥
कंडू पिलही बात क्षय, कृमि कफ-रोग नशाय।
गंधक के गुण सरिस ये, वैद्य-प्रिया कहि ताय ॥

सिंदूर-शोधन

निंबुआ को रस डारि घिसि, सिंदुर घाम सुखाय।
चावल धोवन डारि घिसि, सुखै सिद्ध हो जाय ॥

गुण

सिंदुर उष्ण विसर्प विष, कंडू कोढ़ हरंत।
व्रण-शोधन यह जानिये, टूटे हाड़ जुरंत ॥

ईंगुर का शोधन

कोमल कोढ़ जु वात ज्वर, आम-वात कफ-पित्त।
नयन-रोग विष-हर हरै, धाइ ईंगुर गुण चित्त॥

अवगुण

ईंगुर रहै अशुद्ध जो, हरै नयन की ज्योति।
कफ भ्रम मोह प्रमेह ये, करे क्षीणता होति॥

समुद्र-फेन का शोधन

निंबुआ को रस डारिकै, समुद-फेन पिसवाय।
तितने ही में शुद्ध कहि, यह विधि दई बताय॥

गुण

सालक तीतल निपरहित, दीपन पाचन भाय।
कान-पीर शिर-पीर हरि, समुद-फेन कहि ताय॥

सुहागे का शोधन

फुलै आग्नि पर लीजिये, शोधन यह अनुराग।
जो रहि जाय अशुद्ध तो, भ्रम वमि करै सुहाग॥

गुण

वात जुड़ाई वमि हरे, करे उदर की आग।
जे सोने अरु रजत के, ते गुण जानि सुहाग॥

शिलाजीत का शोधन—चौपाई

जबै जोर ग्रीषम-ऋतु आवै; सूरज अपनो तेज बतावै
बादर पवन न जा दिन देखै; तब समानचित् भाग विशेखै
लुहँड़ा चारि घाम मधि धरै; एकहि मध्य शिलाजित करै

दुगुण शिलांजितते जलडारै; तिते तनैं तातो निरधारै
करसों मीड़ि शिलाजितडारै ; घाम जोरसों तापै पारै
घाम लगै जल महँ उतराई ; श्याम मलाई लेहु उठाई
लुहँड़ा और दूसरो तामें ; श्याम मलाई धरिये वामें
फिरि वा मधि तापै जल डारै ; धरै घाम-मधि वैद्य विचारै
वह जल माँझ लेय उतमाई ; काढ़िलेहिवह श्याममलाई
लुहँड़ा लेय तीसरो त्योंहीं ;वहजलभरितातोकरिज्योंहीं
वा जल-मध्य उतारि सुलीजे ; चौथे लुहँड़ा-मध्य धरीजे
बार-बार ऐसो पुनि करै ; शुद्धशिलाजिततबमनधरै
मैल होय वह नीचे जाय ; शोध जौनु ऊपर उतराय
शुद्ध भयो जानों इमि जबहीं ; काढ़ि धरै न्यारो इमितबहीं
धरै अग्नि पर धूपन करै ; जरै लिंग उपमा की धरै
लेइ सींक जो जल-महँ डारै ; तरहर जाइ तितै निरधारै
बासु गाय के मूत्र-समान ; श्याम-रंगवह जो परिमान
ऐसे लक्षण जबहीं देखै ; शिलाजीततबशुद्धविशेखै

पुनः—सवैया

ल्याय शिलाजित गायके दूधमें एकदिना भरि ताहि घुटावै
दूजे दिना त्रिफला-रस डारिकै खरल करै द्वैसंग घुमावै
काढ़िकै तीजे दिना घमिरा-रस ताही सों मर्दन त्यों करवावै
चौथेदिनासोंसुखायकैघाममें शुद्धशिलाजितयोंबनिआवै

गुण—छप्पय

कटुकर साधन तिक्त उष्ण कृमि कफ क्षय खोवै।
उदर अश्मरी शोथ पांडु अरु कंडु बिलोवै॥
वमन कोढ़ परमेह अरस-स्पर्श न राखत।
काम काछ अरु वात रहै नहिं यह मुनि भाखत॥
परै अंग गुजरकन अरु श्वेतबार आवै न पुनि।
यहि भाँति लेय गुण-गण जबै सकलशिलाजित लेहु सुनि॥

विष-शोधन—दोहा

टूक टूक विष के करो, पुटरी बाँधि चुराय।
अजा-दूध में पहर भरि, डोला-यंत्र कराय॥
कै गइया के दूध में, चुरै पहर भरि लेय।
त्योंहीं डोला-यंत्र में, शुद्ध सुविष करि देय॥

गुण—चौपाई

विषगुण सुनौ रसायनआय; बलकर्त्ता अति दयो बताय
वात ज्वराई हरै बनाय; तिक्तकषाय कटुक वहआय
मदकारी सुखदाता और; हरै शीत थंभन के ठौर
वात रक्त अरु कोढ़ नशावै; दाह अधिक उर में उपजावै
पिलहभगंदरकासहु श्वास; उदर-रोग सब करै विनास
अरुणपांडुव्रण-नाशकभारी; उदर-अग्निउपजै अधिकारी

उपविष-नाम

दूध आंक सेंहुड़ को होय; और कनेरि करहरी सोय।
घुँघची अरुअफीमकहिजात; और धतूरो उपविष खात॥

सेंहुड़ आदि का शोधन—दोहा

सेंहुड़ आक कनेरि को, शुद्ध नीक नहिं आय।
गाय-मूत्र सब दिन भजै, शुद्ध करहरी ताय॥

आक-गुण

आक कोढ़ कंडू पवन, विष कफ-हर सरआय।
जब्बत उदर बाइहि अरस, गुलमहु जूड़ा जाय॥

सेंहुड़ के गुण—चौपाई

सेंहुड़ चेतन दीपन भारी; तीक्षण कटू शूल-मल-हारी
गुल्म उदर-विष अफरा हरै; पिलहा वात कोढ़ पुनि टरै
अरु उन्माद रोग को हरै; और पांडु ताही को भरै
शोथव्यथा पुनिरहननपावै; सेंहुड़ के इमि गुणगणगावै

कनेरि के गुण—दोहा

नेत्र-कोप कृमि कोढ़-हर, कंडू व्रण लघु शोर।
उष्ण कनेरि बताइये, खाये विष जे जोर॥

करहरी के गुण

कोढ़शोथव्रणसकलकृमि, अरस हरे लघु लेखि।
करहारी सर पित्त कर, गर्भ गिरावन देखि॥

गुंजा-शोधन

औटि पहर भरि घोंघची, काँजी मध्य डराय।
कहत वैद्य इहि भाँति सों, तबै शुद्ध हो जाय॥

गुंजा के गुण

नयन-रोग व्रण पित्त कफ, इंद्र-लुप्त हरि लेय।
बार बढ़ावै वेगिही, खाल लाल करि देय॥

अफीम-शोधन—अरिल्ल

आदे को रस काढ़ि भावना दीजिये।
एक आगरी बीस बात सुनि लीजिये॥
होइ जाय तब शुद्ध अफीम कहै गुनी।
वैद्य-प्रिया यह कहै भलीविधि सो सुनी॥

अफीम के गुण—छप्पय

वातपित्त को हरै हरै ग्रहणी कफ शोषक।
मद-तृष्णा अरु दाह करै सो कह गुण पोषक॥
करै धातु को थंभ करै पाचन अरु दीपन।
अतीसार को हरै हरै ग्रहणी दुख पीकन॥
क्रम क्रम सों सेवै जबहिं तब गुणदायक होय वह।
या विधि अफीम-गुण लेहु सुनि वैद्य-प्रिया गुणदायकह॥

धतूरा-शोधन—दोहा

चारि पहर गोदूध में, भिजै धतूरे बीज।
कूटि दूरि बकला करै, सुखै शुद्ध करि दीज॥

गुण

अग्निवर्ण मदवर्ण कर, हरद खाजु व्रण जोर।
कृमिज्वरहरविषउष्णगुण, हरता कनक कठोर॥

कुचिला-शोधन

कुचिला घृत महँ भूजिकै, लेय शुद्ध हो जाय।
तब ओषधि में डारिकै, करै बहुत गुण भाय ॥

कुचिला के गुण

तिक्त तीक्ष्ण कुचिला त्रिकुट, उष्ण हरतु है वात।
फोड़ा को विष कफ हरै, अरु उनमत्त बिलात ॥

जैपाल-शोधन—चौपाई

पहिल खोजि ल्यावै जैपाल ; दूरि करै बकला ततकाल
बहुरि भैंसि को गोबर ल्यावै ; तीनि दिना ता मध्य धरावै
फिरि ताते पानी में धोय ; डारि खरल में घोटै सोय
बहुरि नयो खपरा लै आवै ; वह लैकै वासों लिपटावै
तेल सूखि वाको जब जाय ; होय जु रजसम जानो ताय
देय जु पुट निंबुआ रस जाय ; अजैपाल जब शुद्ध कराय

गुण—दोहा

सारक तीक्षण पित्त-हर, कफ-हर लै ततकाल।
उदर-गुल्म पिलहा हरत, गुरतरु है जैपाल ॥

श्वेत अभ्रक-शोधन—चौपाई

अभ्रक श्वेत बाँटि इमि कहे ; चना-द्रिउलसों कवियन कहे
पाँच सेर लै जोखि सुजान ; तामें तीनि सेर लै धान
गजी दोहरी थैली करै ; मोहरा सीं अति गाढ़ो करै
तामें धान गगन कर भरै ; थैली बहुरि नाँद में धरै

तामें थैली मरदन करै ; मरदत जल है गाढ़ो ढुरै
अभ्रक निकरि परै बाहिरो ; पुनि वह जल मथना में भरो
बादउ और नयो जल देय ; गाढ़ो मर्दन अधिक करेय
ऐसे फेरि फेरि मरदेय ; रंच-रंच कै अभ्रक लेय
तब वह मथना रहै तिराय ; वह पानी तब देय बहाय
सूखे ते अति सूक्षम होय ; यह जानत जानै सब कोय
यहपहिलेगुणसहित बखानो; ताते वैद्य-प्रिया पहिचानो

हीरा-मारन

ल्याय चना की जड़ैं पुरानी; नागबेलि की लै त्योरानी
बाँटि नीर सों गोला करै ; ताके माहिं वज्र को धरै
कपरौटी करि गज-पुट देय ; फेरि-फेरि पुट सात करेय
हीरा-भस्म होय गो गात ; अब याके गुण की सुनि बात

हीरा के गुण

हीरा शीरो तीक्षण जानि ; सब ग्रंथनि में कह्यो बखानि
कुष्ठ अठारह आठौ शूल ; हीरा खात रहै नहिं मूल
तेरह सन्नि बाय गुण करै ; चौरासी बाइन को हरै
एक कोटि गुण करै सुजान ; जो प्राणी संयम करि पान
बादशाह कै राजा होय ; हीरा के गुण जानो सोय

अवगुण

अनशोधो अति अवगुण करै; अजितवर्ण देही को करै
अजितवर्णअवगुणहोइखात; जानो यहै व्यंग्य की बात

पंद्रहवाँ श्रृंगार

गुरुखुरू, मूसरी, पीपरी, हरड़, सुपारी, आमला, लहसुन, असगंध, अजवाइन, शतावरि आदि के पाक तथा विरुद्ध भोजन का वर्णन

पाक-विधि, प्रथम गुरुखुरू-पाक—चौपाई

आध सेर गुरुखुरू मँगावै ; कूटि कपरछन करै बनावै
लौंग नागकेसरि लौं ल्याय ; और जायफल दिये बताय
जावित्री पुनि नीकी आन ; पाँच-पाँच ये टंक प्रमान
सोंठि पीपरा मूलहि लेय ; चपला निर्गुंडी को देय
बारह टंक तौलि इमि कही ; जुदी जुदी इमि कूटै सही
बहुरि गुरुखुरू मेलै करौ ; दूध सेर पंद्रह लै धरौ
ताको खोवा करो बनाय ; मैदा सब सम रुचिर दिखाय
सेर पाँच तब खाँड़ मँगाय ; ताको पाक करै रुचि भाय
शिंगरफ पाँच टंक मँगवाय ; लेय चिनी या माशे भाय
सब को मिलै पाक में देय ; ताको चौकी सिद्धि करेय
सातैं तीनि खाय बल होय ; बहुत मुटाय सुनो रे लोय
काम धातु अधिकारी होय ; धातु बहुरि नहिं फाटै सोय
दूध अहार बहुत कै खाय ; जो कहुँ भूलि खटाई खाय
धातु फाटि जा नर की जाय ; संयम करि ओषधि को खाय
पथ तौ लौं पूरण हो जाय ; वैद्य-प्रिया यह कह्यो उपाय
ओषधि खाय शुद्ध तनु धरै ; पाछे मुकते भोजन करै

श्वेत-मूसली-पाक

दश पल मूसरि श्वेत मँगाय ; पयसँग दिवस एक औटाय
सुखै खरल में कूटै जानि ; बहुरि लेय सो बस्तर छानि
तालमखाने दो पल लेय ; दो पल तवाशीर करि देय
पाँच टंक माजूफल जानि ; भुरकी करो छिरहटा आनि
दोई टंक मैनफल लेय ; लौंगैं पाँच टंक भरि देय
तीनि टंक जावित्री कही ; टंक अढ़ाई केसरि सही
तीनि टंक ले कूट मँगाय ; पीपरि पाँच टंक सम भाय
सोंठि टंक सोरह परमान ; पिपरामूल सात टंकान
ले इलायची सातौ टंक ; कौंच-बीज दश टंक निशंक
दाखै सात टंक लै सोय ; पाँच टंक लै कुलथी टोय
ककरासिंगी इतनी लेय ; गुड़च टंक दश तामें देय
सात टंक बादाम मँगाय ; कहे छुहारे दो पल भाय
सवा सेर मिश्री ले भाखु ; ताको दरिया करि धरि राखु
बाँटि औषधै बस्तर छानि ; बीस सेर गोदूध बखानि
ताको खोवा करै बनाय ; मनु कसार मैदा को आय
चारि सेर भरि खाँड़ सुहोय ; चिनी बराबरि की सुनि सोय
ताको पाक करौ इमि सोय ; मैल तासु में रहै न कोय
डारि तासु में ओषधि देय ; खोवा करि चौकी करि लेय
प्रात समय उठि दो पल खाय ; म्रातैं तीनि प्रमाण बताय

झोला वायु देह की हरै ; श्वास कास की पीड़ा टरै
भ्रम मूर्च्छा मंदागिनि जाय ; काँवल माथे पीर पराय
सुवा रोग परसूत मिटाय ; और दाह की पीड़ा जाय
फीहा और जलंधर होय ; याके खात रहै नहिं कोय
भूख लगै बहु करै अहार ; शयन समय पानी निरधार
खाटो ब्यारो तजै बनाय ; जौलौं या ओषधि को खाय
बहुत रोग ता तनु के हरैं ; जो प्राणी संयम सों करैं
यह अति सुंदर मूसरि-पाग ; याको करै बड़ो अनुराग

पीपरि-पाक

पीपरि पाउ सेर लै आय ; पीसि कपरछन करै बनाय
दूध सेर पाँचक लौं लेय ; चुरै सुखै नीचे धरि देय
केसरि एक टंक मँगवाय ; लीजे नागकेसरी भाय
माई धाय टंक लै सात ; टंक देय ब्रह्मी जुलपात
टंक तीनि माजूफल जानि ; वंशलोचना इतनो आनि
लेय मोच-रस टंक सो तीनि ; पाँच टंक लज्यालू दीनि
बहुरि कचूर टंक दो आनि ; पुनर्नवा दो टंक बखानि
बीस टंक ले तवाजुशीर ; लेउ कचूर टंक दो वीर
पुनि इलायची टंक सुतीनि ; लेय रेणुका तितनी चीनि
लोचनबाला टंक सुदोय ; मुरवा लेय टंक सो दोय
माशे भरि चीनिया कपूर ; ओषधि सबै पीसि करि धूर

दूध सेर बीसक लै आय ; ताको खोवा करै बनाय
गाढ़ो हो कसार सो जाय ; तबसब ओषधि देय मिलाय
खाँड़ चौगुनी चिनी मँगाय ; चुरै तासु को मिलै कढ़ाय
सबै मिलै चौकी करि देय ; प्रात समय खैबे को देय
इक पल रोज खात बहु भूख ; नशै रोग बहु नशै अहूख
आलस खेहर खाँसी श्वास ; सुस्ती जाय होय कफ नास
खाटो ब्यारो भूलि न खाय ; पुष्ट देह जल्दी हो जाय

गादि-पाक

गादि खैर की लै दो पाव ; चून समान कूटि लै आव
गोघृत में तिहि लेय चुराय ; तब वामें ये ओषधि नाय
सोंठि टंक लै बीसक आनि ; बहुरि टंक दश पीपरि जानि
पिपरामूल टंक दश लेय ; केसरि माशे तामें देय
लौंग सुपाँच टंक पुनि होय ; लेय जायफल तितनो टोय
जावित्री लै टंक सुपाँच ; फूल सुपारी सोई साँच
शिलाजीत लै पाँचौं टंक ; मिरच अढ़ाई टंक निशंक
पोस्ता आध पाव लै आउ ; पाव-सेर खोपरा मँगाउ
बहुरि टंक छह लै बादाम ; इतनो करो दाख को काम
सबै ओषधैं पीसि कै लेय ; लैकै गादि मिलै फिरि देय
खाँड़ चुरै कै मैलु निकारि ; ता पाछे सब ओषधि डारि
चौकीले लडुआ करि देय ; सातैं तीनि खान को देय

झोला बाय जाय तनु शीत ; थंभन वीर्य बढ़ै त्रिय प्रीत
काया पुष्ट होय बल गात ; तनुके बहुत बिकार बिलात
त्रियाखायनिरदोखिल जिया ; चाह करै दिन-दूनी पिया
स्त्री दोष न तनु में रहै ; बालक होय बहुत सुख लहै

हरड़-पाक

हरड़ै एक सेर मँगवाय ; जल में घालि अग्नि औटाय
गुठिली तिनकी बाहिर करै ; तिनके बीच मसालो धरै
अजवायनि पुनि जीरा लेय ; सुहाग कलौंजी समकरिदेय
आमाहरदी लेय मँगाय ; मिश्री सम करि नीकी ल्याय
ये सब पीसि हरड़ में धरै ; काचे सूत लपेटन करै
बाँधै सबै शहद में नाय ; दिना बीसलौं निकट न जाय
ता पाछे सब काढ़ि जु लेय ; प्रात समय खैबे को देय
चौदह दिन संयम सों खाय ; रोग बाय चौरासी जाय
पित्त विकार मिटै कफ नाश ; वातपित्त कफज्वर को नाश
मूर्च्छा अरुचि विशूचि नशाय; शूल उदर को दूरि पराय
शिरके नयन सहित सब रोग; कंठ रोग को रहै न योग
हिचकी किरमि रोग जो होय; हरड़ पाक ते रहै न कोय

सुपारी-पाक

चेउली सेर सुपारी ल्याय ; पहर चारि पय में औटाय
पीछे काढ़ि सुखै कै डारि ; पीसि कपरछन करै सम्हारि

ताके बीच मसाले नाय ; धाय टंक दश लेय मँगाय
जड़ दश टंक केसरि की लेय; त्रिफला पंद्रह टंक सुदेय
लज्जालू दश टंक बखान ; खैर गादि लै पाव प्रमान
ताको भूजि घीउ में देय ; गरी पाव भरि चोखी लेय
बहुरि पाव भरि लेय सिंघारे; पाँच कमर कस टंक सुधारे
टंक सो पाँच तेज-बल होय ; खरहटि बीज टंक दश सोय
ईसबगोल टंक ले पाँच ; समुद्रशोष लै सोई साँच
धनियाँ पाँच टंक भरि लेय ; गायशोष की इतनी देय
ओषधि बाँटि छानि कै धरै ; सेर पाँच दश खोवा करै
तामें ओषधि सबै मिलाउ ; धरि घामे में ताहि सुखाउ
चारिहि सेर खाँड़ को पाग ; तामें मेलै सब अनुराग
प्रात खाय पल तीनि प्रमानि; सबल बाइ ता तनु ते हानि
देह अधिक बल पुष्टि कराय ; सुवा रोग परसूत नशाय
संग्रहणी उर-शूल सु खोय ; उदर कठिन परमेह बिगोय
बज्रंगी देही पुनि करै ; तनु के रोग निरसई हरै
सुंदर यहै सुपारी पाग ; बढ़ै धातु ऐसो अनुराग

आमले का पाक

सेरक पके आमले ल्याय ; जल में डारि अग्नि औटाय
ज्वैऔटिकरि लेयनिकारि ; बहुरि शहद में तिनको डारि
दिना बीस पाछे लै काढ़ि ; तब तिनको खैबे को बाढ़ि

सातैं तीनि एक नित खाय ; पित्त-दोष सब तुरत नशाय
मलअरुबाइत्रिदोषनहोय ; लोहू शुद्ध देह को जोय
खाजु खासरो रोग नशाय ; आलस खेहर शूल मिटाय
आतप सुस्ती बाइ बिनास ; करै देह से सबको त्रास
खाटो ब्यारो भूलि न खाय ; आँखैं अंग भंग हो जायँ

लहसुन-पाक

लहसुन लैकै पोथी आनि ; तौल सेर भरि कहौं बखानि
छोलि शहद में धरिये सोय ; बासन माहिं एक दिन होय
फिरि ताको घूरे में गाड़ि ; दो महिना बीतैं पुनि काढ़ि
सींके पै धरि राखै ताहि ; पहिले दिन इक पोथी खाहि
बढ़ै सातदिन इकइक मान ; फिर इकइक घटि चलै सुजान
चौदहदिनइकक्रमसोंखाय ; झोला बाइ तुरत मिटि जाय
और पुरानो रक्त विकार ; वेगि कहै यह ओषधि चार
नयो रक्त फिरि तनु में करै ; वात पित्त कफ मल को हरै
आलस खेहर खाँसी श्वास ; निद्रा हिय-गद तृषा विनाश
शूल सकल नाशैं तू जान ; यह लहसुन के पाक प्रमान

दूसरी-विधि—चंचरी-छंद

लेय लहसुन सेर भरि पुनि हींग कूट विरंगही ।
सोंठि पीपरि मिरच मूसरि आमले इन संगही ॥
जवाखार बहेड़ सेंधो हरड़ अजमोदा कही ।

पाँच पाँच सुटंक ये सब तौलि के कूटै सही ॥
तेल सरसों आनि तामें औटि लहसुन लीजिये ।
डारि चूरण तेल में धरि काँच बासन दीजिये ॥
पाँच टंक प्रभात नित उठि खाय रोग बिलातही ।
अर्द्धंग मूर्च्छा अकर सर्दी श्रवण अरु पक्षघातही ॥
कटि पीर बहिरी देह जाको तेल खातहिं खोवही ।
यहकह्योलहसुन पाकजोसुनिग्रंथ रामविनोदही ॥
साठि दिन यह कह्यो संयम पथ करे सुख पाइये ।
ये रोग सब नशि जात तनु ते वैद्य-प्रिया सुगाइये ॥

करेछ-पाक—चौपाई

बीज करेछ सेर यक आन ; भिजवै ताते नीर सुजान
दिना एक जल राखै घालि ; काढ़ि सुखैकै दरिकै दालि
तीनिदिनालौंदालिभिजोय; पाछे बाँटि पिठी करि सोय
गाय घीउ में बरा पकावै ; तिनको शहद माँझ भिजवावै
दिनाबीस तिनको भरि देय; पल इक बहुरि खान को देय
दिन इकईस खाय परमान ; काम-धातु की बढ़ती जान
देह बहुरि पुनि मोटी होय ; रक्त पुरानो रहै न कोय
वातपित्तकफ सकलनशाय ; भूख लगै मंदागिनि जाय
यह करेछ को पाक सुदेश ; धातु-व्यथा को रहै न क्लेश

असगंध-पाक

असगँध एक सेर लै आनि ; पीसि ताहि ले बस्तर छानि

पीपरि लौंग जायफल लेय ; जावित्री गजकेसरि देय
पंच टंक ये लेउ विधान ; केसरि एक टंक परिमान
कुरो पाँच कुलँजन द्वै पीस ; टंक पाँच देवदारु अतीस
इंद्रयवा यक टंक बखान ; माजूफल दो टंक प्रमान
कीकर फूल टंक दै तीनि ; पाँच टंक सित मूसरि चीनि
सोई मूसरि श्याम जो आनि ; धरो बाँटि कै बस्तर छानि
साठि टंक गरीं लै आउ ; पाँच पचास सिंघाड़े पाउ
गोखुरू टंक तीनि भरि आनि ; सौंफ टंक दो कही बखानि
गेंदा फुली टंक यक लेउ ; लज्जालू खेलहि यक देउ
इतनी गादि खैर की ल्याउ ; भूजि सबनि के संग मिलाउ
दूध सेर बीसक लौं आनि ; खोवा करि कसार सम आनि
चूरण के सम खोवा होय ; तामें ओषधि मिलवै सोय
खाँड़ चाशनी डारि जु लेय ; पाक मिलाय ल्याय करि देय
आध पाव लडुआ परमान ; लडुआ प्रात दीजिये खान
सर्व अंग की बाइ बिलाय ; झोला सहित प्रसूत नशाय
खाँसी धाँसी पित्त न होय ; श्वास-कास कफ रहै न कोय
घरी दोय लौं साधै नीर ; खाटो खारो खाय न वीर

अजवाइन-पाक

सेर एक अजवाइनि आनि ; पीसि लीजिये बस्तर छानि
टंक पचास सिंघाड़े लेउ ; टंक सुबीस कलौंजी देउ

सोंठि टंक पाँचक ले तौल ; इतनी लेय तिकुंभी कोल
तेज कमरबल दो दश टंक ; बीजबंद ले पाँच सुअंक
नीलबरी दो टंक मँगाउ ; माजूफल ले दोऊ भाउ
ले दो टंक मोच रस भाय ; मूसरि ले दश टंक मँगाय
टंक ससाठि खैर की गादि ; सब ओषधि पीसै निरदादि
खाँड़ चौगुनी सबते लेय ; करि चाशनी पाक में देय
आध-पाव लडुआ कहि धरै ; बड़े प्रात नित खैबो करै
झोला बाइ रोग सब जाय ; जाफा-रोग न अंग रहाय
रोग सुवा परसूत न होय ; काया भली शुद्ध गनि लोय
सर्व अंग की अकर बिलाय ; खाटो खारो सब तजि जाय

मेथी-पाक

मेथी ले इक सेर मँगाय ; पीसि छानिकै धरै बनाय
आध-सेर खोपड़ा जो लेय ; तितने तौलि सिंघाड़े देय
इकपलबहुरिकलौंजीआनि; इकपलअसगँधकहौंबखानि
पाव-सेर लै गादि मँगाय ;सब ओषधि सँग पीसि बनाय
खाँड़ चौगुनी पाक बनावै ; लडुआ करि त्रय सातैं खावै
आध-पाव को कहो प्रमान ; शीत बाय झोला की हान
अकर बाइ परसूत नशाय ; पित्तदोष त्रय कफ मल जाय
रक्त विकार चाँदनी बाइ ; इते रोग यासों मिटि जाँइ
बाकी बचै सु पाछे खाय ; इक पल तितने कहौंसुनाय

काया शुद्ध तासु की होय ; खाटो ब्यारो खाय न सोय

नीम-पाक

मस्ती-नीम सेर यक लेउ ; घोरि दूध में औटन देउ
बीस-सेर को खोवा करै ; ताके बीच मसाले भरै
जातीफल जावित्री ल्याय ; लौंग लायची कही बनाय
दालचिनी गजकेसरि आन ;इक इक पल ये तौलि सुजान
चोबचिनी पल चारि मँगाय ; रूममस्तगी पैसा भाय
तीनि टंक देवदारु जु लेय ; निरगुंडी पल तीनि सु देय
माशा एक कपूर मँगाय ; बाँटि छानि सब धरो बनाय
खाँड़ चौगुनी चोखी जानि ; तासों पाक करै सुख मानि
दे कपूर की भुरकी ताय ; बाँटि छानि मिलि धरो बनाय
एक-मास जो खैहै कोय ; मोटी देह तासु की होय
रक्त-विकार तासु को जाय ; नयो रक्त तामें अधिकाय
धातु-वृद्धि कफ,पित्त नशाय ; खाटो ब्यारो तबै न खाय

सोंठि-पाक

आध सेर लै सोंठि सुजान ; पाव-सेर असगंध बखान
गजकेसरि माजूफल लोध ; टंक पाँच प्रति लीजो शोध
कुरो मैनफल पिपरामूल ; पीपरि और रेणुका तूल
तीनि तीनि ये टंक प्रमान ; पाँच पाँच अब सुनहु सुजान
लौंग जायफल ककीर-फूल ; निरगुंडी जावित्री तूल
तालमखाने मिलवो आनि ; चोबचिनी दश टंक बखानि

पाव-सेर ले गादि सुजाय ; पाव-सेर गुरुखुरू मँगाय
तवाखीर घृत आनि सिंहारे ; डेढ़ पाव सम ये निरधारे
भूजि घीउ में चूरण लेउ ; खाँड़ चौगुनी पाक करेउ
खोवा सेर बीस को करै ; मिलै सबै ये ओषधि धरै
ताके लड्डू धरै बनाय ; सातैं तीनि प्रात उठि खाय
त्रय पल खैबे को परमान ; भली पुष्टि बंधेज विधान
बाय जाय झोला नहिं रहै ; शीत-शूल को नाशन कहै
सन्निपात संग्रहणी होय ; सोज व्यथा तनु रहै न कोय
बाय शूल परसूत नशाय ; सुवाखारु खसरी मिटि जाय

मिरच-पाक

टोरा मिरच सेर ले पाव ; पल भरि पीपरि तौलि मँगाव
मोथा लेय पाँच पल तौल ; कौंच बीज यक पल को कौल
खूबकला पल एक जु आनि ; लज्जालू पल एक सुजानि
पाँच टंक गजकेसरि होय ; दो पल तवाखीर ले टोय
टंक सुतीनि मोचरस आनि ; पाँच टंक पुनि लौंग बखानि
बहुरि सिंघाड़े ले पल पाँच ; तीनि टंक माजूफल साँच
बंशलोचना टंक सु तीनि ; टंक तीनि ले सोंठि सु चीनि
तालमखाने ले दश टंक ; पाँच टंक जातीफल अंक
तीनी टंक इंद्रयव लाउ ; फूल सुपारी तितने भाउ
कीकर फूल टंक ले तीन ; सिरस बीज दो टंक प्रवीन

टंक सु तीनिहिं सोवा-बीज ; कुरो टंक इक नीको लीज
मैदा आध-सेर बनवाय ; ताको घी में देय भुजाय
पिस्ता ले जो आधो सेर ; आध-सेर ले गरी निबेर
पीसि ओषधै सबै मिलावै ; खाँड़ चौगुनी चोखी ल्यावै
ताको पाक करै रुचिरंग ; खोवा करि तब मिलवै बंग
जाको एक पलै परमान ; खाय प्रात गुण सुनो सुजान
सातैं तीनि खाय जो कोय ; विष देही को रहै न सोय
कोतो खाज खासरा जाय ; आलस रक्त-विकार नशाय
निद्रा छर्दि उबाकी जाय ; वात पित्त कफ सबैं नशाय
मल के जेते कहे विकार ; नाशै या ओषधि निरधार

कलौंजी-पाक

दश पल तौलि कलौंजी आनि; ले पल पाँच बावची जानि
गरी सिंहाड़े ले पल चारि , तवाखीर यक पल निरधारि
बीज खिरहटी ले पल तीनि ; लौंग टंक यक लीजै बीनि
कंमरबल दो टंक मँगाउ ; टंक सो पाँच तेजबल ल्याउ
यक पल खाय प्रात उठि सोय ; खाँड़ चौगुनी खाय समोय
मस्तक-शूल अधाशी जाय ; ठनका शिरको जाय बिलाय
काया होय कनक की खानि ; भूँखअधिकनितबढ़ैसुजानि
रक्त-विकार रहै नहिं कोय ; बहुरि रोग पीनास न होय
सेहर खाँसी धाँसी जाय ; जो प्राणी संयम सों खाय

सिंहाड़े का पाक

पीसि सिंहाड़े ले यक सेर ; खैर गादि को पाव निबेर
आध-सेर ले गरी मँगाय ; लौंगैं और जायफल ल्याय
इनको दो दो टंक प्रमान ; सोंठि मिरच जावित्री जान
नागकेसरी ये सब होय ; दो दो टंक जानिये सोय
माशो एक चीनियाँ आनि ; ये सब ओषधि पीसै छानि
घीउ मँगाय भूँजि सो लेउ ; खाँड़ चौगुनी मिलवन देउ
माशो प्रात एक उठि खाय ; काया संबोधन ह्वै जाय
काम धातु की बढ़ती होय ; पुष्ट देह ताकी सो होय
मृगी प्रमेह रोग सब जायँ ; उन्मादी गद जायँ परायँ
बहती धातु चिनगिया जाय ; खासी ह्वै अति निर्मल काय
यहै सिंघाड़ा पाक सुजान ; वैद्य-प्रिया में कह्यो बखान

मूसरी-पाक

करि मूसरि चूरण भरि पाव ; बीजबंध तोलो भरि ल्याव
दो गुरुखुरू इंद्रयव लीजै ; सालिम मिश्री करेछ-बीजै
चंदन लाल और देवदारु ; धना श्वेत चंदन लै धारु
सोंठि पीपरै जीरे दोय ; तोले तोले भरि सब लोय
दालचिनी एला लघु ल्याय ; छह माशे ले लौंग मँगाय
धरैं आँच पर टारि मिलाय ; तागु होय तब देय रलाय
नौ माशे भरि खाय विचार ; पुष्ट होय तनु मिटै विकार

शुक्र-दोष गरमी परमेह ; विषम-ज्वर को नाश करेह
दाह जरनि पुनि रहै न कोय ; यहै मूसरी-पाक जु होय

कल्याणो-पाक

कल्याणो इक सेर मँगाय ; बाँटि छानिकै शुद्ध कराय
दूध सेर सातक लै जाय ; खोवा करि कसार सों जाय
सोंठि मिरच तज पत्रज देय ; गजकेसरि अरु पीपरि लेय
खुरासानि ले पिपरामूल ; लौंग लायची ले सम तूल
जीरो जटामानसी लेय ; कमलगटा की मिंगी करेय
लीजे पाँच पाँच सब टंक ; टंक अढ़ाई केसरि अंक
सात टंक पाँचक लों लेय ; ब्रह्मदंडी दश टंक धरेय
पारो बहुरि टंक दश आनि ; इतनै लेय जायफल जानि
खोवा बाँटि सु छानि मिलाय ; चिनी खाँड़ त्रय सेर मिलाय
ताको पाक भली विधि करै ; सब ओषधि ले वामें भरै
गोली बाँधै टंक सु पाँच ; ताके गुण सुनि लीजै साँच
धातु बढ़ै पित्त-ज्वर नाश ; शुक्र-दोष को करै विनाश
जौन आदमी सूखत जाय ; जाकै धातु पुष्टि हो जाय
यह कल्याणो-पाक प्रवीन ; बहुते रोग करत है छीन

चितावरि-पाक

चित्रक की मैदा लै पाव ; पुनि ये बस्तैं जोखि मँगाव
पीपरि और लौंग ले साँच ; चंदन टंक टंक ये साँच
दालचिनी एला लघु लेय ; पाँच पाँच ये टंक सुदेय

सोंठि हरड़ को बकला आनि; जंगी-हरड़ दूसरी जानि
बहुरि पटोल बहेरो ल्याय ; ये सब दश दश टंक मँगाय
अकरकरा सोइ टंक सुजान ; कूटि कपरछन करो निदान
सवा-सेर पुनि शहद मँगाय ; पानी तीनि टका भरि नाय
पाग बनै सब ओषधि सान ; पाँच टंक परभातहि खान
संध्या प्रात बेर दो खाय ; लागै भूख पुष्ट हो जाय
मंदागिनि तब दोष न होय; सन्निपात-भ्रम-मोहहि खोय

शतावरि-पाक

बकला सरस शतावरि आनि; पाव-सेर मैदा करि छानि
तोले चारि सोंठि पुनि होय ; बकला हरड़ सु तोले दोय
जंगी हरड़ बहेरे आनि ; बकला तोले दो दो जानि
तोले दोय पटोल समान ; इक इक तोले कहे प्रमान
पीपरि मिरच धनेहल आनि ; चारो चंदन लेय सु जानि
तेजपात दो जीरे ल्याय ; सोनामाखी देय मँगाय
दालचिनी सो लायची लाय ;इक इक तोले सब करि भाय
कबाबचिनी माशे छह आनि ; इतनो तौलि कुरंजनमानि
अकरकरा अरु सुरही जानि ; खुरासानिबचकही बखानि
लौंग इंद्रयव मर्कट-बीज ; ककरासिंगी सौंफ सु लीज
सालम मिश्री चोखी आनि ; छह छह माशे सबरी जानि
पीसि कपरछन करै बनाय ; सेर एक पुनि शहद मिलाय

गुलाब-नीर को छिड़का देय ; ओषधि पाग सिद्धि करिदेय
दमरी तीनि बराबरि खाय ; रक्त शीतांग तुरत मिटि जाय
मथासूर अरु गठिया-बाय ; दाह-पीर की पीड़ा जाय
भ्रम मूर्च्छा अरु दाह बिलात ; मिटे रोग बहु जाके खात

अंडी-पाक

अंडी सेर छोलिकै लेय ; सोंठि टंक दश तामें देय
ले दश टंक सु मर्कट-बीज ; औरे टंक पाँच भरि लीज
हरड़ बहेरे बकला लेय ; सालम मिश्री आनि धरेय
और आमरे मिरचै ल्याय ; इंद्रयवा पीपरि सम भाय
जावित्री पुनि बीरजबंद ; दालचिनी माशे छह छंद
लौंग लायची पुनि छह मासे; बाँटि छानि बस्तर ले खाँसे
तौलि सेर भरि महियर लेय; छह पैसा भरि पानी देय
जो सु देय सब ओषधि डारि;मिलै भली विधि लेय उतारि
दमरी पाँच बराबरि खाय ; प्लीहा और जलंधर जाय
अंड-वृद्धि पुनि औरो रोग ; रक्त-पात को रहै न योग

सोनामकरी-पाक

पाव-सेर ले सोनामकरी ; और डेढ़ पल चंदन-लकरी
धना सौंफ दो जीरे आन; तोले तोले कहे प्रमान
शहद सेर भरि पाग कराय ;बाँटि छानि सब ओषधि लाय
मिले भली विधि दमरी तीन; साँझ सबेरे खाय प्रवीन

सकल प्रमेह चिनगिया जाय; काया पुष्ट बहुत है जाय
सोनामकरी पाग पुनीति ; जो कोउ यासों करिहै प्रीति

कुम्हड़ा पाक

पको कुम्हैड़ो लै निरधार ; छोलि टूक करि धरौ सम्हार
पाँच सेर जल में दे डारि ; चुरवे मंदी आग्नि प्रचारि
घुलो जानि कुम्हड़ा उतरावै ; पीसि मिहीं करि पिठी बनावै
घीउ टका सोरह भरि डारु ; कुम्हड़ा को करि सरस कसारु
पाँच सेर मिश्री को पारु ; ऐसो कीजै टूटै तारु
त्रिफला त्रिकुटा धना विचारि; तज पत्रज एला लघु डारि
लेय नागकेसरि जीरो अरु; फिरितालीसशतावरिशुद्धकरु
नागबला श्यामस सहदेय ; अरु तालीस निसोत सु लेय
गजपीपरि मेथी दातौन ; तालबुखारो तिल पीठौन
दाख गुरुखुरू मोथा लेउ ; चावकूट अरु असगँध देउ
अरु करेछ बीजा आचार ; जाठो अरु कचूर निरधार
वंशलोचना पिपरामूल ; लौंगै कमलगटा करि तूल
जातीफल जाती कंकोल ; कंदबिलाई ल्यावै मोल
सेमर-छालि सु सेंधव-नोन ; मूसरिकंद कहोले तोन
भाग सिंघाड़े ये सब लेव ; सोरह सोरह माशे देव
इनको चूरण करो विचार ; अभ्रक दोय टंक भरि डार
ये-सब मिलै पाग महँ डारहु; सिद्धि होय तब देखि उतारहु
ताकी गोली धरै बनाय ; गोली प्रात टंका भरि खाय

धातुपुष्टिकरिअग्निबढ़ावन ;अमलपित्तक्षयपांडुनशावन
रक्तपित्त अरु श्वास नशावहि; रोगप्रमेहनजीकनआवहि
असी वर्ष को मानुष खाय ; सोऊ ज्वान समान दिखाय
उजल कपरे न केहू अंग ; दिन दिन दूनों बढ़ै अनंग
सुरति-शक्ति यासों अतिहोय ; बाढ़ै कांति बुद्धि ये दोय
कुम्हड़ापाग रसायनिजानि ;याविधियाकेगुणनिबखानि

विरुद्ध-आहार—दोहा

गुर विरुद्ध आहार है, सोहै गरल समान।
राखे ताके ज्ञान को, नृप-वर चतुर सुजान॥
कछुक दिना बीते तुरत, तहाँ अनंत विरुद्ध।
छाँड़ि अहार विरुद्ध जहँ, तहँकरिभोजन शुद्ध॥
ब्याधि दुबरई मरण अरु,सबल जीव बल-हानि।
करत अहार विरुद्ध तहँ, याते बरजे जानि॥

छप्पय

कुलथी मदिरा सँग लोन फल बेलि कढ़ाई।
खार-मीन दधि मांस शहद सँग मुनिन बताई॥
दूध दुष्ट हो जाय खाय इनके सँग जबहीं।
उष्ण कूट पय तेल तंतु कुकरां मधु तबहीं॥
दूध घीउ सतुआ बहुरि केर मान इन सँग जबहिं।-
जो खाय दूधके कारण नर करहि देह ताके तबहिं॥

दोहा

बीति गये ते दश घरी, दूध सु होय विकार।
बीस घरी उपरांत सो, विष-सम यह निरधार॥
बिन औटो पय दश घरी, औटो बीस प्रमान।
जौलौं जानिये मधुर पय, तौलौं पथ्य समान॥
मीन मांस अरु गुरुखुरू, जो चूरा के संग।
दूध खाय तब देह में, करे कोढ़ परसंग॥
तीतुर लवा बटेर मृग, मोर सकल वन-जीव।
मांस संग इनके कहूँ, भूलि दूध जनि पीव॥

छप्पय

सकल खटाइन माँझ आमरो सरस बतायो।
सकल नोन तिन माँहिं नोन सेंधव मन भायो॥
जो है सकल खाय हरड़ तिन महँ सब लायक।
सबल जु है कटु-वर्ग सोंठि तिन महँ सुखदायक॥
तिक्त माँझ परवर सरस मधुर माँझ है खाँड़वर।
इन साथ दूध उत्तम कहौं औरे साथ विकार-कर॥

दोहा

मूरा मधु तातो सलिल, गोहूँ मांस वराह।
दश दिन जो धरि राखिये, खातहि डारे मारि॥

छप्पय

अंड-तेल सों गोह लवा तीतुर अरु केकी।
गुड़ मधु मधि मष-उष्ण संग मृगरी सु विशेषी॥

अरु कपोत का मांस तेल सरसों को तामें ।
राँधो होय विकार अगुण सुनिये सो यामें ॥
भाँति-भाँति के मांस ये राँधे सब एकत्र करि ।
अब जानि लेहु याके अगुण खानहार वह जाय मरि ॥
जो हरिया को मांस दारुहरदी की जड़ सों ।
छेदि हरद की आगि तहाँ सेंकै दरवरसों ॥
खानहार को खाय मांस वह यह गुण जानो ।
मैं यह तुमसे भेद साँचही साँच बखानो ॥
मांस काग को छेदि करि सेंकि खाय नीकी तकित ।
सुरा मोठ संग त्यों अहितकै बगुलीको मांस चित ॥
निबू ब्यास करपुर खीर सँग विच्चर त्योंहीं ।
तेलहि साथ अफीम भातु वासों अति योंहीं ॥
शूकर बस सों मांसु सिद्धि बगुला को डारहु ।
घृत-मधु-सम ये तेल मेलि जल चित तैं धारहु ॥
घृतआदिक सों विष बहुरि मिलैं दोषयुत जानिवति ।
यहि भाँति वैद्यवर कहत सब यह विरुद्ध आहारगति ॥
वमन विरेचन करैं भटा ताते अति खाये ।
धोय खरी सँग राँधि एक कर दोय बताये ॥
दालि उरद की खाय संग मूरा के त्यों बहु ।
गुलमशूल अरु आँव करै अवगुण सुनि ले यहु ॥

बड़हर घृत दधि दूध मांस सँग अति दुखदाई।
पीपरि मधु घृत संग काकमारची बताई॥
भूजे घृत अरु तेल मांस कछरी वह बासी।
दुष्ट बतावै वैद्य होइ केकी अति खाँसी॥
मठा संग ये वस्तुएँ जे खाए ते बिगरै सुअँग।
यह खाय दुष्ट आहार तौ जानिपूछि कैहू न ठँग॥

दोहा

दूध खाय कै राति को, सोवै नहिं यह तंथ।
आयुर्दा सोये घटै, ताते दिन महँ पंथ॥
भैंसि दुहा वह राति को, दिन महँ सुक्ख दुहाय।
राति दिना के दूध को, या विधि भेद बताय॥
वर्षा-ऋतु हेमंत अरु, शिशिर मास दधि खाय।
ग्रीषम शरद वसंत में, दूध भलो नहिं आय॥

सोलहवाँ शृंगार

लक्ष्मी-विलास, चंद्रोदय, तामेश्वर, आनंद-भैरव आदि रस, दिनाई-उपचार, रक्त-स्राव, पाँयपसीना, सरस्वती-चूर्ण, बावचीकल्प, सन्निमर्याद, तौल पारिमाण, मंत्र-यंत्रविधान आदि का वर्णन

लक्ष्मी-विलास—छप्पय

एक टका भरि लै पहिले निरबक पुनि अभ्रक।
दश माशे रस-राज शोधि दश माशे गंधक॥
भाँग धतूरे बहुरि बिदारहु तिनि के बीजा।
लौंग बिदारी-कंद जायफल लीजै तीजा॥
गुड़च करेछ गँगेरुवा और शतावरि गुरुखुरू।
सोरह माशे लेइ पुनि पीसि करहु चूरणसुरू॥
सोरह माशे बहुरि जायपत्री बुध जानो।
दश माशे जु कपूर मिलै सब जलसों सानो॥
खरल माँझ यहि डारि घोरि चिकनी करवावै।
इनकी विधि मुनि कही सुनौं ते सकल बतावै॥
सुखइ करै गोली बहुरि खाय प्रात उठि एक पुनि।
याकेविचारगुण कहत अब सरस लेहु ते सकल सुनि॥
सन्निपात अरु वात पित्त के रोग जाहिं सब।
कोढ़ अठारह जायँ बीस परमेह हरै कब॥

नारी-व्रण व्रण-रोग गुदाके रोग भगंदर।
श्लीपद अरु गलरोग मिटै अतिसारउ सुंदर ॥
आँतवृद्धि पीनस क्षयी अरस कास अरुमेद गद।
आमवात कृशतन उदर कान नाक मुखरोगदर ॥
उदर-शूल शिर-शूल जीभ-को नाभि-गल-ग्रह।
त्रिय जन के जे रोग तुरत ही हरि डारै वह ॥
अनूपान दधि दूध और मिष्टान्न मठा-जल।
सुरा संग जो खाय बृद्धि पावै जु तरुणबल ॥
गज कैसो बल होय दृष्टि पहुँचै शतयोजन।
देह पुष्ट अति होय बात यह सुनि चित दै मन ॥
यह लक्ष्मीविलास रस नारद ऋषि हरिसे कह्यो।
तबजाय कृष्ण तिहुँलोकपतिलाखनारिवल्लभभयो॥

चंद्रोदय-रस

एक टका भरि लेय तबक सोने के सुंदर।
आठ टका भरि लेय फेरि पारो सर्बस तर ॥
लावै गंधक शोधि टका सोरह भरि सोऊ।
घोटै लाल कपास फूल केसरि सो कोऊ ॥
घृत कुम्हेरि को ल्याय यह रस तासों सब घोटिये।
शीशी मँगाय कपरौटिकरि तामहँ रसभरि राखिये ॥
सीशी को मुँह मूँदि एक हँड़िया में भरिये।
ता हँड़िया में ल्याय फेरि बारू गहि भरिये ॥

तीनि दिना लगि भीतरही हँड़िया के करिये।
स्वांग शीत जब होय लेय तब यह न बिसरिये॥
नये पात सम लाल तहँ टका-टका भरिलेहु गह।
कपूर लौंग अरु जायफल पीपरि पल लेय यह॥
मृगमद माशे चारि डारि बुकनी सब की करि।
माशे-माशे तौलि सबनि की पुरिया करि धरि॥
पानसरा यह खाय त्रियन के गर्भ नवावै।
स्थावर जंगम गरल दरद कबहूँ नहिं पावै॥
वर्ष दिना लगि खाय बहुरि चंद्रोदय नाम रस।
मृत्यु जाय इमि तिमि सुनर अजर अमर वह होय तस॥

ताम्रेश्वर-क्रिया

कंटक बेदी पत्र बहुरि तामें के ल्यावै।
तेल मठा गो मूत्र छाछ ता माँझ बुझावै॥
पत्र चौगुनो ल्याय सुसैंधव नोन मँगावै।
अर्क दूध सों पीसि ताहि तर ऊपर ल्यावै॥
एक राति धरि राखि प्रात ताको कढ़वावै।
क्रिया शुद्ध बुद्धि बिक्र युक्ति याकी जो पावै॥
हरताल पत्र ते चौगुनो निंबुआ को रस डारि पुनि।
चंद्रहीन घुटवावही लिपिटावै सब पत्र सुनि॥
कपरौटी करि ताहि पत्र माटी में ल्यावै।
सुखै ताहि करि लेय गड़ा गजपुट खुदवावै॥

आँच देय परचंड पहर बारह इमि कहिये।
स्वांगशीत जब होय शुद्ध ताकहँ तब लहिये ॥
रस घुँघची परमान यह अनूपान सों खाय नर।
मिश्री माशे चारि पुनि पीपरि माशे चारि-भर ॥

दोहा

वात-रक्त मङ्गल बहुरि, खाजु दादु उपदंश।
रक्त-विकार विसर्प को, यासों रहै न अंश ॥

आनंदभैरव-रस

लै विषनाग जु ईंगुरहि, मिरचै टंकन खार।
पीपरि ये सब औषधैं, सम करि लेहु विचार ॥
पकी जम्हीरी काढ़ि रस, पहर चारि मरदाय।
गोली मिरच प्रमाण करि, खात कास मिटि जाय ॥
सन्निपात खाँसी मृगी, ग्रहणी छर्दि प्रमेह।
अपस्मार अरु शूल पुनि, भैरव-रस हरि लेह ॥

अमररस-कंदरस

लीजै सार मँगाय कै, पारो गंधक दोय।
त्रिफला त्रिकुटा जायफल, अकरकरा तज होय ॥
ताल-पत्र मोथा बिड़ँग, गजकेसरि बछनाग।
सरसों चित्रक लायची, चूरण करि सम भाग ॥
सबते दूनों डारि गुड़, गोली सम लघु बेर।
खात असी दुख बाइ के, रहत न ल्यावै भेर ॥

मृगी सान्नि तेरह हरै, गुदा श्वास अरु कास।
वैद्य-प्रिया इन रोग को, तुरतहि करै विनास॥

चिंतामणि-रस—चौपाई

रस विष गंधक टंकनखार ; यवाखार सज्जी निरधार
पाँच नोन अरु अभ्रक-सार ; जीरौ त्रिकुटा सौंफ बिचार
अद्रक नीम पान-रस लेय ; जुदे जुदे करिकै पुट देय
करि इकत्र फिरि खरलै कोय ; गुञ्जा-सम खैबे को होय
कास श्वास चौरासी बाय ; तेरह सान्नि आठ ज्वर जाँय
बहिरी और भगंदर जाय ; मुखते स्रवत रुधिर रहिजाय
अकड़वायु मुखरोगविनास ; जानो चिंतामणिरस जास
भूत प्रेत जासों न रहाय ; पान-संग खा भर्म न पाय
यह रस सबगुणकी जु विभूति; वैद्य-प्रिया भाषै करतूति

पुनः

ले अजमोद मिरच देवदारु ; पीपरि सोवा चित्रक डारु
सैंधव चित्रक बायबिड़ंग ; ये ओषधि सब लीजै संग
सोंठि बिधारो पीपरिमूल ; ये ओषधि लीजै सम तूल
टका तीनि पुनि चूरण खाय ; असी वायु डेरा तजि जाय

वायु की धुनी

पारो असगँध भिलवाँ क्वाथ; लहसुन हरद हींग ले साथ
अर्क छालि लीजै हरताल ; अकरकरा मोथा अरु राल
बेलगिरी लीजै अजमोद ; वंश-लोचना सैंधव लोध

सोनामाखी जरिया-छालि ; दोय टका इनकी जर घालि
तुलसी-पान काढ़ि रस लेय ; ये ओषधि एकत्र करेय
फिरि याकी करि धूनी देय ; कपड़ा ओढ़ि बंद करि लेय
धुआँ तासु बाहिर नहिं जाय ; सकल वायु यासों तजि जाय
धूनी दे यह साँझ सबेरा ; असी वात को रहै न डेरा
रामविनोद धूप यह भाखी ; वैद्य-प्रिया अपने चित-राखी

हरताल-विधि

ले हरताल गुवरिहा गुनी ; पैसा चारि तौल हम सुनी
माटी की कुल्हिया मँगवावै; करै क्रिया सों ताहि बिछावै
माशे चारि फटकरी ल्याय ; पहिले भीतर देय बिछाय
गुवारिपठा को गूदो ल्यावै ; पैसा भरि तापै बिछवावै
डारि तासु ऊपर हरताल ; फिरि मूंदै तिहि ऊपर घाल
उती फटकरी भुरकन करै ; फिरि कुल्हिया मुख मूंदा करै
कपरौटी करि गज-पुट देय ; इमि हरताल शुद्ध करि लेय
श्वेत रंग ताको हो जाय ; एक रती भरि जो नित खाय
कुष्ठ-रोग तनु ते मिटि जाय ; पथ्य चना की रोटी खाय
नोन त्यागि सब वस्तु बिसारि ; काया शुद्ध होय सुख कारि
यह विधि भिषजप्रिया मैं सुनी; ताते वैद्य-प्रिया मन-गुनी

पुनः रस—चौबोला

अभ्रक ले मारो सार जुडारो नागैबच्छ कटाई।
मिरचै जावित्री सोंठि सु ये सब चारि टंक प्रति गाई ॥

सिंदूर आमलासार मँगावै दो दो टंक प्रमानं।
ले चित्रकपीपरिअकरकरापुनि करि सलहिखैमसानं॥
नागरमोथा और जायफल तालपत्र लघु एला।
तीनि तीनि ये टंक बखानी सब ओषधि करि मेला॥
पीसि कपरछन करै पान के रसमें बाँधै गोली।
रती एक दो प्रात-साँझ भखि मिटिहै शीतँग झोली॥
सुस्ती मिटै वायु चौरासी देह-रोग सब भागैं।
वैद्य-प्रिया यह रस कहि दीन्हों खाटो ब्यारो त्यागैं॥

पुनः सर्वेश्वर-रस—दोहा

गुड़ बमूर बकला कहो, यक यक मनभरि तोल।
नये सिंघाड़े ल्यायकै, डेढ़ सेर भरि कोल॥
हथिगन पाढ़रभाग पुनि, अरणी-बेल सुनाय।
दोय टका भरि गुरुखुरु, लै कुम्हेरि-फल आय॥
गुरुगुडुआ खारक नये, अरुसालौनि मँगाव।
सेर सेर भरि तौलिये, कुटकी आधो पाव॥
अगर टंक ले बीस पुनि, केसरि टंक सुपाँच।
पाँच टंक करपूर ले, कस्तूरी सोइ साँच॥
बच सुहाग बकुची तगर, बायबिड़ंग अतीस।
ककरासिंगी तूमरा, खुरासानि तज पीस॥
कलकचिरौंजी कायफल, लहसोरे पदमाख।

कवछकुलंजन गजकणा, लै कसूम सम भाख ॥
आधो आधो सेर ये, पुनि माजूफल लेय।
सौंचर सौंफ चिरायतो, खैर सुचंदन लेय ॥
आखस अरु अजमोद लै, पाव पाव भरि ल्याय।
क्रमते ये ले करि सबै, जल में देहि मिलाय ॥
डोला-यंत्र बनायकै, दारू लेहु कढ़ाय।
कै चोगा सों काढ़ि कै, तोला भरि पी जाय ॥
साँझ प्रात नित खातही, सबै रोग नशि जाय।
बल-बीरज ताको बढ़ै, बहु-त्रिय भोग कराय ॥
बहुत रूप सुंदर बढ़ै, गुण अनेक दातार।
याके गुण यक सहस हैं, वर्णत होय अबार ॥
देह अर्ध लाली परै, जानो सुख को धाम।
वैद्य-प्रिया भाषो यहै, रस सर्वेश्वर नाम ॥

दिनाई का उपचार—चौपाई

समुद्र-फेन सैंधव लै आउ ; मिरचैं खैर पात पिसवाउ
घी में डारि पियै नर कोय ; जाय दिनाई निश्चय सोय

पुनः

ऊँटकटाई की जड़ आन ; तामें बड़की बोड़ी सान
नीर-सहितसबछानिबनाय ; मंडल भरि जो रोगी खाय
जाय दिनाई इहि उपचार ; विषही को जुकही है गँवार
नाहरबार दियो जो होय ; बाँझ-करेलो लावै सोय

रेशम के डोरा सों बाँधि ; डारै गरे अँगुरिया साधि
धरिये डोर नाश पुनि होय ; सुनि वा डारै खैंचै सोय
बाज करेजे लागे वार ; श्रोणित खैरु करे करतार
योगीदास कहै या भाय ; तबै वैद्य को करो उपाय

पुनः

जब जु कलीले बाढ़ै पेट ; श्वास न मास दीजिये हेठ
धरिये करहि हिटोसो ठारि ; करि उपचार देहि वह डारि

पुनः

साँप पसुरिया चामर होय ; जो कहुँ काहू दीनों सोय
तौ विष-गर्भ तैल चुपरेय ; अमरस कंद खान को देय

पुनः

आफू को तेंदू अरु सोंठि ; देहु लभेरे चहिये घोटि

पुनः

दुसह धतूरो पचवै राख ; सो मल को मिरचें अरु दाख
जो कपूर कदली को खाय ; केउला वारि उतरि सो जाय
तोरे पैसा को परिमान ; ऐसी विधि सों जानि सुजान
दै कनैरि को उरद बताय ; हरतारे निंबुआ चुखवाय
जाते विष निर्विष होजाय ; पुनि पारे को खैर चिताय
सब पर तामो नाग बखानि ; विष को देय बहेड़े आनि
ताको तैसो ही उपचार ; वैद्य-प्रिया यह कहो विचार

गर्मी से लोहू गिरने का उपचार—दोहा

लाल अजा को दूध ले, पाव सेर मँगवाय ।

डारि खटाई औटि कै, फटि पानी छनवाय ॥
पैसा भरि डारै गरी, अमरबेलि ता माँझ।
या शर्बत के खातही, जरनि दाह हो बाँझ॥
अरु लोहू थँभि जाय सब, सुख पावै बहु गात।
वैद्य-प्रियायहलिखिदयो, अब खैबो पथ भात॥

पैरों के प्रस्वेद का नाशन

पान बमूरहि मेलि कै, जंगी हरड़ पिसाय।
मर्दन कीजै प्रात-निशि, पद प्रस्वेद मिटिजाय॥

सरस्वती-चूर्ण-कल्प—चौपाई

हरड़ बहेरे लेय मँगाय; निरगुंडी आमरे मँगाय
शंखाहुली गँगेरनि आनि; नवे नवे ये टंक बखानि
फिरिगिलोयशतचित्रकल्याउ; अरु पमार के बीज मँगाउ
बत्तिस बत्तिस जानहु टंक; यह चूरणकरि धरहु निशंक
सीरे जल सँग चूरण खाय; गुण मोपै बरणो नाहिं जाय
सोंठि पचास टंक ले आउ; अकरकरा बाईस मँगाउ
अरु बाईस टंक गोखुरू; इती बावची करिये शुरू
सवा सेर गुड़ जूनो ल्याय; बाँटि कूटिकै जुदी धराय
करि गोली घमिरा-रससान; बाँटि धरो आमरै प्रमान
प्रात समय नित गोली खाय; ऊपर सीरो नीर पिवाय
बारह मास खाय नर जोय; अब ताके गुण सुनिये सोय
एकमास दिनप्राति जब खाय; पेट-दोष सब जाय बिलाय

दूजो मास बीति जब जाय, तब बहु तेज शरीर दिखाय
तीजे मास खासरा जाय; चौथे नेत्र रोग बिनशाय
पाँच मास बीतैं जब खात; श्वेत बार कारे हो जात
छठे मास काया हो कल्प; बल अधिकाय रोग सब अल्प
सात मास जब होहिं व्यतीत; बिसरी विद्या उपजै मीत
अष्टम मद सों होवे मास; सबै जानि उपजै इतिहास
मास औरहो बीतैं जबै; राज-मान होवै बहु तबै
बारह मास जायँ जब बीति; सिद्धि लहै विद्या की जीति
नाम सरस्वती चूरण आव; याके गुण को बड़ो प्रभाव
जो दोऊ चूरण ये खाय; वैद्य-प्रिया ताको सुखदाय

निर्गंधबावची-कल्प

ल्याय बावची सुंदर धरो; अनूपान सों सैबो करो
मंडल भरिकै याको खाय; ताके गुण अब कहौं सुनाय
अजवायन सँग खैहै कोय; काया पुष्ट तासु की होय
सोंठि संग ते बाइ नशाय; मिरच प्रसंग शूल नाशि जाय
पीपरि साथ भूख बहु होय; शहद संग ज्वर डारै खोय
खाय दही सों पुष्टिहि करै; पान साथ थंभन चित धरै
खाँड़ साथ ते तप अरु पित्त; नेत्र-ज्योति गोघृत सँग नित्त
मठा संग जालंधर हरो; बिजया सँग अस्तंभन करो
खैर गोंद सँग खैहै कोय; हड़-फूटनि सब डारै खोय

चोखदोय ता जलसँगखाय ; रोग प्रमेह तुरत नशि जाय
निंबुआ रसते पित्तविकार ;दाह उदर की करे निखार
खाय सुपारी चूरण मेलि ; श्वेत कोढ़ को देहै ठेलि
कारी छेरी के पय संग ; करै तिजारी को दुख भंग
गाय-मूत्र सँग खैहै कोय ; कायाबहुउज्ज्वल द्युतिहोय
जंगी हरड़ संग जो खाय ; बंद गोष्ठी सब मिटि जाय
जीरे सँग ते शीतल देह ; तेल संग ते कल्प करेह
देह संग जो मर्दन करै ; पीड़ा चीभनि सबही हरै
सुंदर कल्प बावची कहो ; याके खात देह सुख लहो
नियम पथ्य संयम सों खाय ; वैद्य-प्रिया ताको सुखदाय

सूजन का उपाय

गुवारिपठा को गूदो आनि ; पैसा चारि भरो लै जानि
सोंठि एक पैसा भरि लेय ; आधो-पैसा सेंधव देय
मिलै रोज पैसा भरि खाय ; सूजन ताको वेगि नशाय
दिना चारि पाँचकलों खाय ; वैद्य-प्रिया में कहो उपाय

रोग-मर्यादा

दशदिन पित मर्याद बखान ; सात बात के दिना प्रमान
द्वादश दिन अश्लेषम रहै ; मल सोरह दिन भेषज कहै

रोग-मर्याद जाति

धातु बीज स्वर आठ बखान ; अतीसार छह भाँति सुजान
राज-रोग छह भाँति सुपाँख ;शूलजु छहकरि जानहु साँच

चारि भाँति की माथे पीर ; कामल ज्वर छह जानहु धीर
अपस्मार रह तीनि सुजाति ; पाँच मूत्र जानो या भाँति
बिस्फोटक छह कहे बिचारि ; पाण्डु-रोग छह लेहु सँभारि

तेरह सन्नि-मर्याद

संधिक सात दिवस दुख करै ; चित्तभ्रम जु ।दिवस कहँ धरै
बीस दिना रुगदाह सुजान ; शीतांगी पंद्रह दिन मान
अभयानक पंद्रहदिनकहिये; तंद्री दिना पचीसक लहिये
कंठ-कुब्ज दिन तेरह रहै ; और प्रलापकु चउदह लहै
जिह्वक सोरह जानौ गुनी ; कर्णकमासतीनि सुनि गुनी
भंगनेत्र दिन आठ प्रमान ; रक्ताष्टक दिन बारह जान
अन्तक दिन पंद्रह सो कहौ ; तेरह सानि मर्याद सो लहौ

तौल-प्रमाण—दोहा

जानि न ओषधि को परै, तौल बिना परमान ।
ताते मैं अब तौल को, क्रमते करत बखान ॥

चौपाई

छेद झरोखा कहूँ लखावै ; रवि की किरणि तासुमें आवै
तामें रजकण उठैं अनेक ; छह किनका को बंशी एक
बंशी छह मारीच जो जानो ; छह मरीच सु राई मानो
राई तीनी सरसों एक ; सरसों आठ एक यक टेक
जवा चारि की गुंजा कही ; छह गुंजा को माशो सही
माशे चारि तौल इकठान ; ताको कहिये टंक प्रमान

दोय टंक को कोल कहावै ; दोय कोल को कर्ष कहावै
कर्ष बरोबरि पैसा होय ; ओषधितौलि लियेसबकोय
पैसा दोई को पल जानो ; शुक्तिनाम ताको पहिचानो
दोय शुक्ति को यक पल होई ; दो पल प्रात एक सुनि सोई
दोयप्रस्थको अञ्जुलि आई; आठ टका भरि तौल बताई
दोयअँजुलिसरवाकरिकौल; सोरह टका भरी लै तौल
दो सरवा को प्रस्थ बतायो ; चारि प्रस्थ को आढकु गायो
आढकु चारि द्रोण इक भाषो ; दोई द्रोण को कुम्भ सुराखो
दोय कुंभ की द्रोणी मानि ; द्रोणी चारि सुखारी जानि
खारी दोय तौल सो होय ; तासों कर्ष कहत सब कोय
या विधि जानो तौल प्रमान ; सो मैं कीनो सर्व बखान
तौल अनेक भाँति की होय ; ग्रंथ ग्रंथ मत वरणों सोय
जनिआश्चर्य करो सुनिगुनी;लिखीबिचारिजितीहमसुनी

मंत्र-विधान

ॐ नमो काली कुरबली कुशधरनी ईढ़ापोधरकरनी माथे बसे जटाक फूक चूकै नल धरनी ऐपारे आवै चटाक गुरू की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्रवाचा चूकै तौ ऊभौ सूकौ इति मन्त्र ॥

विधि—दोहा

पैसा भरि अजमोद लै, पैसा भरि गुड़ होय।
सात बेर या मन्त्र सों, मंत्रि लेय ये दोय ॥

रोगी को ठाढ़ो करै, तासु पेट पकराय।
पढ़ि पढ़िकै औषधि गुटी, ताको देय खवाय॥
तौलौं गुनिये मंत्र को, जौलौं बैठै ठाम।
धन्नि वेगि नीकी करै, जाय सूखि होय धाम॥
सिद्धि मंत्र करि राखिये, धूप जाप करि ताहि।
वैद्य-प्रिया जप सहस इक, मन्त्र सिद्धि हो जाहि॥
ॐ चक्रवाकी स्वाहा।

मंत्र-विधि

क्वारी कन्या कातही, तौन सूत ले आउ।
ताको डोरा बटि तबै, कर में ले मंत्राउ॥
बार एक-सौ- आठ पढ़ि, बाँधि नहरुआ पास।
जरि जैहै यासों तुरत, अनूपान परकास॥

ॐ नमो लङ्कासा कोट समुद्रसी खाई पुंगी बाजै तौ बाबा हनुमन्त की दुहाई॥ तूंबा की तूंबी जासासार पुंगी बाँधौं दशौं दुआर॥ पुंगी वामैं नगगन गाजै तो गुरु गोरख लाजै गुरू की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र॥

इति मन्त्रविधि।

दोहा

सात बेर पढ़ि मन्त्र को, लै विभूति करबीच।
गरे लपेटत ही बँधै, मोहन बाजै मीच॥

आस पास निज देह के, रेखा खींचै पहल।
बाँधन पाछे कीजिये, बाजीगर को टहल ॥

ॐ नमो आदेशगुरुको तालूराखै तालिका कालिका जो राखै कालि कहियो राखै हनुमान पीठि राखै नारसिंहवीर शीश राखै शोषावीर की रक्षा वीरकी रक्षा सवामन लोह का कोठा तिसमें हमारा पिण्ड प्राण बैठा श्रीगोरखनाथ रखवारी हमारा डील-ऊपर छल करै छिद्र करै सो भी मरै गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच ॥ इति मन्त्राविधि ॥

दोहा

लै विभूति सो हाथ में, पढ़ै मन्त्र दशबार।
देह सबै कर फेरिकै, रक्षा करहिं छ बार ॥
भूत प्रेत अरु मूढ़-दुख, दृष्टि न लागहि ताहि।
सिद्धि भये ते भय मिटै, वैद्य-प्रिया सुखचाहि ॥

ॐ नमो विसमाला महमदा पीर तइया सिजारडावै हाथ पावँकजीमनै हाथकमान बाबा जलेखाके पूत तेरी आन गाजता आवै दौरता आवै किलकारता आवै सवामन लोह की सांकर फिरावता आवै तहां हिन्दू का भूत बांधि प्रेत बांधि तुरत काख ईस बांधि गाहि लो खाईस बांधि गोगाखबीस बांधि मनकाई देवी बांधि अष्टभूत

भैरव बांधि प्रेत बांधि मसाडा बांधि एक लाख असी हज़ार पैगंबर की दुहाई ते बीड़ा तूलहु हमारा चोर हमको देहु गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच ॥

इति मन्त्रविधि ॥

दोहा

कर विभूति के उड़द लै, पढ़ि पढ़ि मारहु ताहि ।
भूत प्रेत डाकिनि सकल, भय को नाश कराहि ॥

पुनः

ॐ नमो आदेश गुरु को श्वेत घोड़ा श्वेतपलान तिनि चढ़ि आयो खुद रहीम पश्चिम दिशा को धनी साधुलोक को राखै अजमानिगजको जाना आसाधको ओढ़ै डाकिनी मोड़ै शाकिनी मोड़ै दिशि मोड़ै कण्टक मोड़ै कलहेबार संग्रामजेतथोरे मुड़मोड़ै कामना मोड़ै पिसान चुरे बाघसिंहराखै सबलहरे बावनबीर चौंसठि योगिनी बावन क्षेत्रपाल छप्पनकोटि चामुण्डा नवकोटि कात्यायनी छत्तीस बाराही स्वामीदासयसत्यसारिबुलाया आवै पठवाजाई अभखभखै अमदमदमै असाध्यसाधै ॥ डाकताखई राक्षस-भूत-प्रेतइनि डण्डासूनी फले गुरुकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच ॥ इति मन्त्रविधि ॥

दोहा

जैसी ऊपर की कही, सोई याकी जानि ।

यासों फेर कठिन टरै, वैद्य-प्रिया सुख मानि ॥

पुनः

ॐ धूलि धूलि महाधूलि धूलि देखि आव तौ मुख पसारी घालै घाउ तिनि बीस गुरु डले जाय कीलूं तेरी नाईं बाप जहां तू जाय खीलूं कीलूं तेरा घाट बाट जहां तू आया खीलूं तेरी बहना भानैज जहां तू खिलीय खीलूंलूं तेरा घाट बाट जहां तू आया खीलूं तेरी बहना भानैज जहां तू खिलीय खीलूंलूं तेरा घाट बाट जहाँ तू आया खीलूं तेरी बहना भानैज जहां तू खिलाया खूल धरतोधरखीलूं आकाश कोससरयालौं काटसांसु गुकिलन कासरया गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच ॥ इति मन्त्रविधि ॥

दोहा

तीनि ककरियाँ मन्त्रिये, सात सात सो बार।
डारै समही सरफतर, कीलन होय अपार ॥

ॐ नमो आदेश गुरुको ओढ़न काली-कामरी पहिरावन गवावे समैं तो सरपाछोड़ियात फिरि चारु चारु देश ॥ इति मन्त्रविधि ॥

दोहा

पढ़ि ककरी फिरि डारिये, तुरत सर्प-छुटवाय।
वेगिउ कीलन कीजिये, बीर बीस पढ़ि ताय ॥

पुनः

ॐ नमो चामुण्डे हन हन दह दह पच पच मथ मथ अमुकज्वरेनांगृहगृह हुंफट् फट् स्वाहा ॥इति मन्त्राविधि॥

दोहा

नींब-पत्र को मंत्रिये, बार एक-सै-आठ ।
करुये तेलहिं होमिये, पत्र पत्र प्रति पाठ ॥
बेर एक-सै-आठ पढ़ि, मन्त्र सिद्ध जब होय ।
चढ़ै ताप तिहि शत्रु को, वैद्य-प्रिया दुख खोय ॥

गौरी पीसै पीसनो, हनुमत घालै घाउ । आवै लोहू पके न घाव मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच ॥

अथ विधि ।

चौपाई

कलश साजि निर्मलजल भरै; नींब सींक लै त्रियकर धरै
पाठ मन्त्र को करता जाय ; जल में सींक फेरता जाय
वा जलसों छिरकै जब घाय ; बहतो रुधिर सूखि जबजाय
फेरि न फूटै पकै न सोय ; बार बीस इक पढ़ै जु कोय

पुनः

ॐ नमो ह्रीं ह्रा अं हुं स्वाहा ॥

दोहा

बार बीस इकईस लौं, पढ़ि फेरै मुख हाथ ।
यह प्रयत्न नितही करै, रोग जाय ता साथ ॥

खंगारी कहाँ चली कैलास पर्वत पै कैलास पर्वत पर कहा करैगी ताप तिजारी इकतरै नहरुवा डोरु आधा शीशी मन्थिका शूल बहरी बिसारी जारी पखारीथने लोहवाड़वा महुआ विसुडढ आखि सांपु बीछी विहानो कुत्ता जे छत्तीस विष हैं तिनके गोड़े काटि समुद्र में बहाय आयहौं मैं निज्याय ईश्वर गौरा पार्वती निज्येकी बहानिजे कोकहा निजिये सो शरण सो शरण सों सकति नाशितिर बिषनाशंति माटीहरी मेडुकी अमृतभरी सवा लाख विष निजन चलि निजै कोकहा निजिये सो शरण सकति-नाशति रे विषनाशंति माटी चल मन्त्र चलै फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच ॥ इति मन्त्राविधि ॥

चौपाई

पढ़ै मन्त्र सो उड़द मँगाय ; घालै काढ़ो करिकै नाय
कहूँ रोग पै नींबहि झारै ; कहूँ नीर प्यावै विस्तारै
यहिविधिपढ़िरोगनझरवाय ; वैद्य-प्रिया सब-रोग नशाय

हतेरी तन हनुमत बसैं, भैरव बसैं लिलार।
चारि युक्त की मोहनी, बेंदा सोहै लाल॥
माथे न्हाउ माथे धोउ, नामैं मरी मसानैं जोउ।
सुमिरों देवी जालिपा, मनमानै तिन जाउ॥

इति मन्त्रविधि।

दोहा

एकादश दिन जाय पुनि, मन्त्र-एक-सै-साठ।
विधि समेत करि यत्न सों, करै देव की पाठ॥
पढ़ि जिहि वश चाहै कियो, जपै बार इकईस।
नाम-सहित त्रिय होय वश, जानौ विस्वा बीस॥

इति मन्त्रविधि।

यंत्र-विधि—सोरठा

धूप दीजिये पहिल, दिन इकईस प्रमाण लगि।
तनु कीजै यह टहल, रक्त हिये को काटि लिखि॥
यन्त्र नींब के पत्र, अग्नि पचावै नाम कहि।
चढ़ै ताप तिहि शत्रु, वैद्य-प्रिया यह यन्त्रविधि॥

दोहा

अष्टगन्ध सों यन्त्र लिखि, भोज-पत्र शिर बाँधि।
सोने के तावीज़ में, सिद्धि लक्ष्मी साधि॥

८
३५ ६
६ १ १० २ १
८ ४
३

पुनः

छिंगुनी उँगली को लहू, काढ़े जो नर सोय।
तासों लिखि यह यन्त्र शिर, राखि भूप वश होय॥

लिखि करि माथे राखिये, नित्य धूप दै ताहि।
ऋद्धि सिद्धि अठ लक्ष्मी, राजप्रजा वश ताहि॥

५	७		९	९
		३		
५	८		१०	१०

दोहा

कागज़में लिखियन्त्रयह, कुल्हिया में धरि ताहि।
किराबीच धरि दीजिये, धान सूखि नाहिं जाहि॥

९९	९९	९७	२६	१४	२४	७१	६४	६९
९४	९६	८८	२९	२३	२५	६६	६८	७०
९५	९०	८३	२२	२७	३७	६७	७२	६१
४४	३७	४३	६२	५५	६०	८	७३	७८
३९	४३	४१	४७	५९	६१	७५	७७	७९
४०	४५	३८	५८	६३	५६	७६	८१	७४
१३	४६	९१	९६	३५	३६	३५	२८	३३
४८	५०	५२	९३	९५	९७	३०	३३	३४
४९	५४	४७	९४	९१	५२	३१	३६	२९

दोहा

कागज़में लिखियन्त्रयह, सूत बांधि दै धूप।
नहरू ऊपर बांधिये, सूखि मिटै तिहि रूप॥

६१	७५	८०
९९	७०	९
९८	५०	७१

पुनः धान-यन्त्र—चौपाई

लिखै ठीपुरी कारी बीच ; देय धूप डारो वहि बीच
यन्त्र किरामें इहिविधि नाय; कीड़ा जाय धान हरियाय

६१७	७६	६६
६	५	६
ॐ	ॐ	म७१

दोहा

लिखि धरिये तावीज्ज में, बाँधै बालक ग्रीव।
अष्टगंध सों धूप दै, तजै चुरैल जु सीव॥
बालक त्रिय को जो लगै, करडू फेरि चुरैल।
बाँधे याको धूप दै, मिटै तासु को फैल॥

२३	१८	१५	८
११	१२	१६	२२
१७	२४	६	१४
१३	१०	२१	२२

पलीता-यंत्र

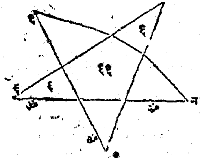
लिखै पलीता यन्त्र यह, नासु दीजिये ताहि।
सर्व जाति फेरे लगै, ते सब याते जांहि॥

१	५	०	।)	६५
३	२	६	५	७८
७	८	१४	५	४
६	५	६६	५०	५७
॥	५	६	५०	५५

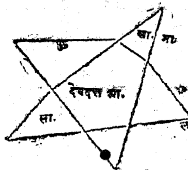
नागबेलि के पत्र पै, लिखि करि देय खवाय ।
जाय सासुरे सो त्रिया, सब उचाट मिटि जाय ॥

ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं

लिखिये दाहिन हाथसों, बाँधै होम कराय ।
यन्त्र यहै लिखि दीजिये, पीपर पान कराय ॥



लिखै यन्त्र काग़ज़ सुगुनि, रवि जपि धूप दिवाय ।
बाँधै कर सों प्रातही, तुरत इकतरो जाय ॥



जाके कोठा बीच में, लिखि रोगी को नाम।
महाकठिन जो ताप हो, जाय आपने धाम॥

कं	ठः	सैं	नः
रीः	जूः	डा	दाः
वै	पैः	कः	छुः

काग़ज़ पै लिखि यन्त्र यह, बाँधि धूप दै ताहि।
बाँधै जहँ जरि मरहि कोउ, जरनि पक निमिटि जाहि॥

भैः	जौ	नैः	ह्योः
वः	भः	सः	ले
दाः	घ	चो	रेः

यहै यन्त्र लिखि धूप दे, माथे बाँधहु शुद्ध।
रविवारे करतो रहै, भूप सुजीतहि युद्ध॥

हिरगहिरेग

॥ देवदत्त॥

यन्त्र-विधि समाप्त

ग्रंथ की समाप्ति का वर्णन—दोहा

गुरु की कृपाकटाक्ष ते, कह्यो ग्रंथ गुण धाम।
तिन श्री गुरु के चरण को, बारंबार प्रणाम॥
चूक क्षमा करि आदरहिं, ग्रंथ सकल अभिराम।
बुध-जन जे वर-वैद्य पुनि, तिनको दंड-प्रणाम॥
कछू न चातुरता कही, बुधि कछु नाहीं जोर।
ग्रंथन ते ओषधि कही, कहा अधिकता मोर॥
ताते मो बिनती सुनो, चूक भूल सब कोय।
मनसा वाचा कर्मणा, सेवक जानो मोय॥
पर-निंदा पर-ईरषा, पर-दुख सदा सुहाय।
तिनको बहु बिनती करौं, दोष सो हृदय लगाय॥
देव-कोटि तेंतीस पुनि, जिन सब रचे सुपंथ।
तिनकोउरधरिध्यानरचि, वैद्य-प्रिया यह ग्रंथ॥

ग्रंथ का संवत्सर

संवत शत अष्टादशहि, अधिक बहत्तरि जानि।
मार्ग शुक्ल पांचे जु शनि, तिहिदिनग्रंथबखानि॥
पूरण कीनो ग्रंथ यह, रोगी को सुखदाय।
याहि समुझि कै वैद्यवर, ओषधि करियो ताय॥

इति।